ISSN 2278-5655

नवंबर - दिसंबर , 2025

खंड-XIV, विशेषांक - III(a)

AMIERJ

अर्हत मल्टीडिसिप्लिनरी इंटरनॅशनल एज्युकेशन रिसर्च जर्नल

DOI Indexed Journal

SJIF Impact Factor: 8.343

2025

doi

OPEN ACCESS

संपादक

प्रो.(डॉ.) कामायनी गजानन सुर्वे

डॉ.वैशाली विठ्ठल खेडकर

आई.एस.एस.एन- 2278-5655

AMIERJ

एक बहुविषयी अंतरराष्ट्रीय द्विमासिक संदर्भित जर्नल

प्रिंट/ऑनलाइन पीयर-रिव्यू जर्नल

डी.ओ. आय. अनुक्रमण **एस जे आय एफ इम्पैक्ट फैक्टर:** 8.343

संपादक

प्रो.(डॉ.) कामायनी गजानन सुर्वे

डॉ.वैशाली विठ्ठल खेडकर

अर्हत मल्टीडिसिप्लिनरी इंटरनेशनल एजुकेशन रिसर्च जर्नल्स
एक बहुविषयी अंतरराष्ट्रीय द्विमासिक संदर्भित जर्नल
प्रिंट/ऑनलाइन पीयर-रिव्यू जर्नल
डी.ओ. आय. अनुक्रमण
आई.एस.एस.एन- 2278-5655

खंड-XIV, विशेषांक - III(a)
नवंबर - दिसंबर , 2025

कॉपीराइट:
© सर्वाधिकार सुरक्षित। इस प्रकाशन के किसी भी भाग को प्रकाशक की पूर्व लिखित अनुमति के बिना पुनरुत्पादित, किसी पुनर्प्राप्ति प्रणाली में संग्रहीत या किसी भी रूप में अथवा किसी भी माध्यम से—इलेक्ट्रॉनिक, यांत्रिक, फोटोकॉपी, रिकॉर्डिंग और/या अन्य किसी प्रकार से—प्रेषित नहीं किया जा सकता है।
अस्वीकरण:
जर्नल में व्यक्त किए गए सभी विचार व्यक्तिगत लेखकों के हैं। लेखकों द्वारा किए गए कथनों या व्यक्त किए गए विचारों के लिए संपादक एवं प्रकाशक उत्तरदायी नहीं हैं।

प्रबंधकारिणी संपादक एवं प्रकाशक: प्रमिला डी. ठोकळे (8850069281)
(ईमेल आईडी: amierj64@gmail.com)

प्रकाशन:
अर्हत पब्लिकेशन और अर्हत जर्नल्स
158, हस्तपुष्पम बिल्डिंग, बोरा बाजार सेंट,
बोराबाजार परिसर, बॅलार्ड इस्टेट, फोर्ट, मुंबई, महाराष्ट्र . 400001
ईमेल आयडी: aarhatpublication@gmail.com

ISSN–2278-5655

AMIERJ Aarhat Multidisciplinary International Education Research Journal

Volume–XIV, Special Issues– III(a) Nov– Dec, 2025

OPEN ACCESS Original Research Article

Index

Sr. No.	Title & Author	Page No.
1	अनुवाद की सामाजिक-सांस्कृतिक समस्याएँ एवं समाधान ***प्रो. (डॉ.) सविता शिवलिंग मेनकुदळे***	1
2	अनुवाद की समस्याएँ *प्रो. (डॉ.) भारत श्रीमंत खिलारे*	8
3	कविता और अनुवाद ***प्रो. डॉ. अनंत केदारे***	15
4	हिंदी अनुवाद की वैश्विक संभावनाएँ (डिजिटल अनुवाद के विशेष संदर्भ में) ***प्रो. (डॉ.) कामायनी गजानन सुर्वे***	25
5	हिंदी साहित्य के अनुवाद में सांस्कृतिक समस्याएँ ***डॉ. प्रदीप माणिकराव शिंदे***	32
6	भारतीय भाषाओं के अंतः संबंध में अनुवाद की भूमिका ***डॉ. संजय भाऊसाहेब दवंगे***	37
7	रक्षा क्षेत्र और अनुवाद ***डॉ. वैशाली विठ्ठल खेडकर***	42
8	लोक साहित्य और अनुवाद ***डॉ. तृप्ति उकास***	46
9	अनुवाद का महत्त्व और उपयोगिता ***डॉ. प्रमोद परदेशी***	54
10	नाटक और अनुवाद : महेश एलकुंचवार का नाटक 'युगांत' के विशेष संदर्भ में ***डॉ. शीतल दुर्गाडे***	59
11	अनुवाद की समस्याएँ ***डॉ. बेबी श्रीमंत खिलारे***	63
12	अनुवाद की समस्याएँ ***डॉ. सजित खांडेकर***	67
13	काव्य के क्षेत्र में अनुवाद ***डॉ. सोनाली रामदास हरदास***	73
14	वैश्वीकरण के परिप्रेक्ष्य में अनुवाद का महत्व ***प्रा. दिपाली दत्तात्रय तांबे***	77
15	नाटक और अनुवाद: एक शैक्षिक अध्ययन ***सतीश अशोक दवंगे***	83

ISSN–2278-5655

AMIERJ Aarhat Multidisciplinary International Education Research Journal

Volume–XIV, Special Issues– III(a) Nov– Dec, 2025

OPEN ACCESS Original Research Article

16	कहानी और अनुवाद – संप्रेषण के नए आयाम ***सुमति नायक***	86
17	लोक साहित्य और अनुवाद : संस्कृति के संरक्षक का माध्यम ***रेखा ऋषिकेश निसाल***	91
18	कथा साहित्य और अनुवाद ***ऋजुता हेमंत चतुर***	97
19	कविता और अनुवाद ***अलका गोसावी एवं डॉ. संजय दवंगे***	101
20	अनुवाद की समस्याएँ ***प्रा. त्रिवेणी विश्वजीत जाधव***	105
21	प्रादेशिक भाषाओं के विकास में हिंदी अनुवाद का योगदान ***डॉ. एम. डी. राजहंस***	110
22	अनुवाद की समस्याएँ ***प्रा. स्नेहा प्रदीप हिंगमिरे***	116
23	अनुवाद की समस्याएँ ***डॉ. अजित विठ्ठल लिपारे***	124
24	नाटक और अनुवाद ***वैशाली राजेन्द्र मोहिते***	130
25	वैश्विक संचार में अनुवाद और जनसंचार की भूमिका ***अर्चना भुस्कुटे***	137
26	काव्य में अनुवाद की समस्याएँ ***सावित्री सूर्यकांत मांढ़रे***	143
27	प्रादेशिक भाषाओं के विकास में अनुवाद का योगदान ***शेख आसमा रशीद एवं डॉ. संजय दवंगे***	149
28	कविता और अनुवाद ***उज्वला चांगदेव पिंगळे***	153
29	लोकसाहित्य और अनुवाद : एक शोधात्मक अध्ययन **क्रिश्मा नवलकिशोर संगर**	158
30	अनुवाद की समस्याएँ एवं निवारण ***उदय चिमा बेंढारी एवं प्रो. (डॉ.) पुरुषोत्तम कुंदे***	162
31	अनुवाद : समीक्षा एवं मूल्यांकन ***डॉ. मोहन शिंदे***	166
32	भाषा एवं साहित्य के विकास में अनुवाद की भूमिका ***प्रो.(डॉ.)बाळासाहेब सोनवणे***	168

ISSN–2278-5655

AMIERJ Aarhat Multidisciplinary International Education Research Journal

Volume–XIV, Special Issues– III(a) Nov– Dec, 2025

OPEN ACCESS Original Research Article

33	सामाजिक और सांस्कृतिक बदलाव में अनुवाद का योगदान ***डॉ. झेलम चंद्रकांत झेंडे***	175
34	भाषा एवं साहित्य के विकास में अनुवाद की भूमिका ***प्रा. रेश्मा भरत कांबळे***	180
35	भारतीय भाषाई प्रदेश में अनुवाद की स्थिति ***डॉ. दिपक जाधव***	183
36	वैज्ञानिक साहित्य के अनुवाद की समस्याएँ ***डॉ. बाबासाहेब गव्हाणे***	188
37	कश्मीरी से हिंदी में 'ललद्यद' के अनुवाद के माध्यम से मीरा कांत की अनुवाद-दृष्टि ***प्रा. मनोहर भाऊसाहेब आव्हाड***	192
38	यांत्रिक अनुवाद : स्वरूप, समस्याएँ और समाधान ***डॉ. संदीप जोतिराम किर्दत***	196
39	अनुवाद का महत्व ***मेघा श्रीनिवास अंदुरे***	204
40	नाटक और अनुवाद ***डॉ. सुजाता श्रीधर पाटील***	209
41	कविता और अनुवाद ***जपकर महादेव दगडु एवं प्रो. डॉ. अशोक द्रोपद गायकवाड***	212
42	भारतीय ज्ञान परम्परा और अनुवाद ***जयवीर सिंह एवं डॉ. प्रवीण तुलशीराम तुपे***	216
43	हिंदी काव्यानुवाद में निर्मित अनुवाद की समस्याएँ व समाधान (विशेष संदर्भ विंदा करंदीकर की कविता) ***प्रा. प्रतिक्षा शिवाजी तनपुरे***	223
44	भाषा और साहित्य के क्षेत्र में अनुवाद की भूमिका ***रेश्मा निलंगेकर***	227
45	अनुवाद की व्याप्ति और महत्व ***डॉ. सचिन संपत जगताप***	231
46	अनुवाद में रोजगार की संभावनाएँ ***योगिता अविनाश चौकटे***	234

Copyright © 2025 The Author(s): This is an open-access article distributed under the terms of the Creative Commons Attribution 4.0 International License (CC BY-NC 4.0) which permits unrestricted use, distribution, and reproduction in any medium for non-commercial use provided the original author and source are credited.

ISSN–2278-5655

AMIERJ Aarhat Multidisciplinary International Education Research Journal

Volume–XIV, Special Issues – III (a) Nov – Dec, 2025

OPEN ACCESS Original Research Article

अनुवाद की सामाजिक-सांस्कृतिक समस्याएँ एवं समाधान

** प्रो. (डॉ.) सविता शिवलिंग मेनकुदळे*

**हिंदी विभागाध्यक्ष, छत्रपति शिवाजी कॉलेज, कर्मवीर भाऊराव पाटील विश्वविद्यालय, सातारा – 415001 (महाराष्ट्र)*

शोध सार :

विश्वसंस्कृति के विकास में अनुवाद का योगदान अत्यंत महत्वपूर्ण रहा है। अनुवाद के कारण विश्व का असीम ज्ञान विश्व की बहुत-सी भाषाओं में आ सका है। विश्व में आपसी आदान-प्रदान अनुवाद के माध्यम से ही संभव हो पाया है। अनेक संस्कृतियों का आपसी परिचय अनुवाद द्वारा ही कराया जा सकता है। विभिन्न संस्कृतियों, सभ्यताओं, धर्मों एवं सामाजिक स्तरों का अन्य भाषा में अंतरण करने का सशक्त माध्यम अनुवाद होता है। फिर भी विश्व के विभिन्न राष्ट्रों तथा राज्यों की सामाजिक तथा सांस्कृतिक मान्यताओं के अनुसार बोलचाल, खान-पान, रहन-सहन, वेशभूषा, परंपराएँ अलग-अलग होती है। अतः अन्य राष्ट्रों की सामाजिक तथा सांस्कृतिक स्थिति को देखे तो वह विभिन्न होने से अनुवाद की जटिल समस्याएँ निर्माण हो जाती है। किसी समाज के मूलभूत विश्वास, मूल्य और दुनिया को देखने का तरीका संस्कृति का एक अमूर्त हिस्सा है। अनुवाद और संस्कृति एक दूसरे से गहराई से जुड़ी है। समाज की विशिष्टताएँ भाषा से अभिव्यक्त होती है और अनुवाद एक ऐसी प्रक्रिया है जो संस्कृतियों को जोड़ती है। विभिन्न भाषाओं का अनुवाद करते समय समान शब्द तथा अभिव्यक्ति न मिलने पर मूल भाषा का सही प्रभाव नहीं बन पाता है। अनुवाद में सामाजिक तथा सांस्कृतिक पहचान सुरक्षित होना आवश्यक होता है। लेकिन मूल भाषा की व्यंजकता, सटीकता, लक्ष्य भाषा में लाने में अनेक सामाजिक तथा सांस्कृतिक समस्याएँ उत्पन्न होती है। केवल भाषाओं के ज्ञान मात्र से कोई व्यक्ति अनुवाद नहीं कर पाता। अनुवादक को दोनों भाषा-भाषियों की सामाजिक-सांस्कृतिक परंपराओं का ज्ञान होना अनिवार्य है।

कुंजी शब्द *– अनुवाद, संस्कृति, समाज, परंपराएँ, वैश्विक, विकास, सभ्यता आदि।*

Copyright © 2025 The Author(s): This is an open-access article distributed under the terms of the Creative Commons Attribution 4.0 International License (CC BY-NC 4.0) which permits unrestricted use, distribution, and reproduction in any medium for non-commercial use provided the original author and source are credited.

प्रस्तावना :

अनुवाद आधुनिक युग की महत्वपूर्ण उपलब्धि है। सच तो यह है कि आज दुनिया का समग्र ज्ञान-विज्ञान किसी एक ही भाषा में निहित नहीं है। इस कारण दुनिया के विभिन्न भाषाओं में बिखरे हुए ज्ञान-विज्ञान को प्राप्त करने के लिए अनुवाद जैसा साधन नहीं है। अनुवाद के कारण दुनिया नजदीक आ रही है। विश्व के विभिन्न प्रदेशों की जनता के बीच संप्रेषण की प्रक्रिया के रूप में अनुवाद की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण रही है। आज साहित्य से ज्यादा ज्ञान-विज्ञान की सामग्री के कारण विकास के नए-नए सोपान अपनी चरमसीमा लाँघ रहे हैं। भूमंडलीकरण के दौर में विभिन्न भाषाओं, आचार-विचारों, संस्कृतियों के बीच अनुवाद सेतु का कार्य करता है। विभिन्न देशों की शिक्षा, संस्कृति, साहित्य, ज्ञान-विज्ञान, आचार-विचार, वाणिज्य एवं

ISSN–2278-5655

AMIERJ Aarhat Multidisciplinary International Education Research Journal

Volume–XIV, Special Issues – III (a) Nov – Dec, 2025

OPEN ACCESS Original Research Article

व्यापार आदि विभिन्न क्षेत्रों में अनुवाद की माँग दिन-ब-दिन बढ़ रही है।

विश्वसंस्कृति के विकास में अनुवाद का योगदान अत्यंत महत्वपूर्ण रहा है। अनुवाद के कारण विश्व का असीम ज्ञान विश्व की बहुत-सी भाषाओं में आ सका है। विश्व में आपसी आदान-प्रदान अनुवाद के माध्यम से ही संभव हो पाया है। अनेक संस्कृतियों का आपसी परिचय अनुवाद द्वारा ही कराया जा सकता है। विभिन्न संस्कृतियों, सभ्यताओं, धर्मों एवं सामाजिक स्तरों का अन्य भाषा में अंतरण करने का सशक्त माध्यम अनुवाद होता है। फिर भी विश्व के विभिन्न राष्ट्रों तथा राज्यों की सामाजिक तथा सांस्कृतिक मान्यताओं के अनुसार बोलचाल, खान-पान, रहन-सहन, वेशभूषा, परंपराएँ अलग-अलग होती है। अतः अन्य राष्ट्रों की सामाजिक तथा सांस्कृतिक स्थिति को देखे तो वह विभिन्न होने से अनुवाद की जटिल समस्याएँ निर्माण हो जाती है।

अनुवाद की सामाजिक-सांस्कृतिक समस्याएँ :

अनुवाद और समाज का गहरा संबंध है। विभिन्न भाषाओं और संस्कृतियों का आपसी तादात्म्य अनुवाद से ही संभव है। जिससे सामाजिक सामंजस्य, सांस्कृतिक आदान-प्रदान और वैश्विक जुड़ाव बरकरार रहा है। अनुवाद के कारण विचारों और सूचनाओं के आदान-प्रदान में सहायता मिलती है। साथ ही समाज के विभिन्न वर्ग एक दूसरे को समझ सकते हैं। अनुवाद विश्व के विभिन्न क्षेत्रों जैसे – प्रशासन, शिक्षा तथा व्यापार में सामाजिक आवश्यकता बन गया है। प्रत्येक समाज की अपनी संस्कृति होती है। अनेक संस्कृतियों का आपसी परिचय अनुवाद के माध्यम से ही कराया जा सकता है। जिससे वे एक-दूसरे को समझ सकते हैं और आपसी संघर्ष की स्थिति से उभरकर आपसी सद्भाव जाग्रत हो सकता है। संस्कृति से समाज के आचार-विचार और विकास परिलक्षित होता है। 'नालंदा विशाल शब्द सागर' में संस्कृति का तात्पर्य दिया है – "किसी व्यक्ति, जाति, राष्ट्र आदि की वे सब बातें जो उसके मन, रुचि, आचार-विचार, कला-कौशल और सभ्यता के क्षेत्र में बौद्धिक विकास की सूचक होती है।"1 किसी समाज के मूलभूत विश्वास, मूल्य और दुनिया को देखने का तरीका संस्कृति का एक अमूर्त हिस्सा है। अनुवाद और संस्कृति एक दूसरे से गहराई से जुड़ी है। समाज की विशिष्टताएँ भाषा से अभिव्यक्त होती है और अनुवाद एक ऐसी प्रक्रिया है जो संस्कृतियों को जोड़ती है। विभिन्न भाषाओं का अनुवाद करते समय समान शब्द तथा अभिव्यक्ति न मिलने पर मूल भाषा का सही प्रभाव नहीं बन पाता है। अनुवाद में सामाजिक तथा सांस्कृतिक पहचान सुरक्षित होना आवश्यक होता है। लेकिन मूल भाषा की व्यंजकता, सटीकता, लक्ष्य भाषा में लाने में अनेक सामाजिक तथा सांस्कृतिक समस्याएँ उत्पन्न होती है।

विवाह-संस्कारों से संबंधित शब्दावली :

भारतीय सांस्कृतिक परंपरा का अत्यंत महत्वपूर्ण अंग विवाह संस्कार है। भारत में विवाह केवल सामाजिक अनुबंध नहीं बल्कि एक धार्मिक सांस्कृतिक संस्कार है। वैदिक विवाह-संस्कार की मूल संरचना समान रहते हुए भी प्रत्येक प्रांत, जाति, समुदाय में विवाह विषयक रीतियों में भिन्नता नजर आती है। उसके अनुसार विवाह संस्कार से संबंधित शब्द पाए जाते हैं। जैसे- राजस्थान में रोक्का, मंगनी, विदाई, पिठी, पनिहारो, निकासी, बायना आदि। पंजाब में चूड़ा चढ़ाना, सगन, घोड़ी, आनंद कारज, लावां आदि। गुजरात में गोल-धाना, मांडेवा, पंथी, मोढू दीखडूं आदि। उत्तर प्रदेश में जैमाला,

ISSN–2278-5655

AMIERJ Aarhat Multidisciplinary International Education Research Journal

Volume–XIV, Special Issues – III (a) Nov – Dec, 2025

OPEN ACCESS Original Research Article

वरण, पाणिग्रहण, लाज-होम, मंगल-आषाढ़ आदि वैवाहिक संस्कार के शब्द हैं। महाराष्ट्र में केळवण, गडगणेर, करवला, रुकवत, आहेर, अंतर्पाट, सप्तपदी, मंगलसूत्र आदि विवाह संस्कार से संबंधित शब्द पाए जाते हैं। विदेशों में विवाह संस्कार की परंपरा प्रचलित न होने के कारण इन शब्दों का मिलना असंभव है और अनुवाद तो दूर की बात है। कई भारतीय भाषाओं में भी इन शब्दों के समानार्थी शब्द प्राप्त नहीं होते। इन शब्दों का सटीक अनुवाद करना समस्या जनित होता है।

पूजा, व्रत-उपवास से संबंधित शब्दावली :

भारतीय संस्कृति में पूजा, व्रत-उपवास आदि का प्रचलन खूब पाया जाता है। भारत में अनेक मंदिरों में जाकर पूजा-पाठ करने की परंपरा है। विभिन्न व्रत-उपवास किए जाते हैं। पूजा, व्रत-उपवास से संबंधित कई ऐसे शब्द हैं जिन्हें स्रोत भाषा से लक्ष्य भाषा में सही अर्थ में ले जाना दुष्कर है। करवा चौथ, छठ पूजा, हरियाली तीज, कजरी तीज, भंडारा, मूर्तिपूजा, आरती, भोग, तीर्थ-प्रसाद, पंचामृत, श्लोक, मंत्र, पुष्पांजलि, मंगलागौरी, हरतालिका आदि ऐसे अनेक शब्द पूजा-पाठ में पाए जाते हैं। मुस्लिम धर्मियों में रोजा, हिंदुओं में एकादशी आदि व्रत-उपवास ही है। विभिन्न प्रांतों में पूजा, व्रत-उपवास से संबंधित ऐसे कई अलग-अलग शब्द पाए जाते हैं। इन शब्दों के लिए पाश्चात्य भाषा में पर्यायी शब्द नहीं मिल पाते। प्रो. अर्जुन चौहान इस संदर्भ में लिखते हैं, "विभिन्न समाज की संस्कृतियों में ऐसे विभिन्न व्रत-उपवास एवं तद्विषयक अनेक नाम प्रचलित मिलते हैं। जिनको लाख कोशिश करने पर भी लक्ष्य भाषा में पर्यायी शब्द नहीं मिलते। इस तरह के शब्द अनुवाद में समस्या बनते हैं। पाश्चात्य भाषाओं में तो इनका अनुवाद करना अग्निपरीक्षा-सा है।"2 पूजा, व्रत-उपवास से संबंधित शब्दावली स्रोत भाषा के अनुवाद में सांस्कृतिक समस्या बन जाती है।

वेशभूषा तथा श्रृंगार संबंधी शब्दावली :

विभिन्न राष्ट्रों में तथा राष्ट्र के अलग-अलग प्रांतों में भिन्न-भिन्न वेशभूषा की जाती है। प्रत्येक प्रांत की अपनी-अपनी संस्कृति के अनुसार वेशभूषा रहा करती है। भारत की राष्ट्रीय पोशाक प्रांतीय पहनावे विशेषकर दूरदराज के क्षेत्र में प्रचलित विविधतापूर्ण जनजातीय पहनावों के प्रकारों के नाम व उनका अभिरुपण कठिन होगा। जैसे- महाराष्ट्र के 'नऊवारी लुगडे', 'शालू', 'लंगोट', 'बंडी' आदि वस्त्रों के लिए भारतीय तथा पाश्चात्य भाषाओं में सही पर्याय शब्द नहीं मिलते। साथ ही चूड़ीदार, पाजामा आदि शब्दों का अनुवाद करना भी कठिन है। इन्हें यथावत रखकर ही समझाया जा सकता है। वैसे ही पाश्चात्यों की वेशभूषा के लिए हिंदी में समानार्थी शब्द प्राप्त नहीं होते। जैसे- कोट, पैंट, टाई, जीन-पैंट, टी-शर्ट आदि शब्दों का अनुवाद नहीं हो सकता श्रृंगारसंबंधी शब्दावली के बारे में विचार किया जाए तो उन शब्दों का अनुवाद भी संभव नहीं है। जैसे- चूड़ियाँ, जूड़ा, वेणी, चूड़ा, काजल, मंगलसूत्र, नथनी, पायल, पाजेब, लच्छे, डोरला, तोड़ा, वज्रटीका, गंगावन, चंद्रहार, झुमका, डूल आदि शब्द भी अनुवाद की सीमाओं से बाहर हैं। निष्कर्षतः प्रत्येक समाज की अपनी संस्कृति के अनुसार श्रृंगार तथा वेशभूषा तथा श्रृंगार रहा करता है और अनुवाद करते समय वेशभूषा तथा श्रृंगारसंबंधी शब्दावली समस्या बनती है।

ISSN–2278-5655

AMIERJ Aarhat Multidisciplinary International Education Research Journal

Volume–XIV, Special Issues – III (a) Nov – Dec, 2025

OPEN ACCESS Original Research Article

खानपान से संबंधित शब्दावली :

विभिन्न देशों में वहाँ की भौगोलिक स्थिति तथा रस्म-रिवाज के अनुसार खानपान की चीजें अलग-अलग प्रकार की होती है। एक देश की संस्कृति की खाद्य सामग्री प्राय: दूसरे देश की खाद्य सामग्री से सर्वथा भिन्न होती है। प्रत्येक देश के प्रांतों-प्रांतों का, समाज का, हर व्यक्ति का अपनी-अपनी संस्कृति के अनुसार खान-पान दिखाई देता है। दैनंदिन व्यवहार में आने वाले अनेक पदार्थ संस्कृति का अंग बन जाते हैं। दूध, दही, घृत, मिष्टान्न, चावल, जौ, नारियल आदि से निर्मित पकवान और उनके असंख्य रूपों को क्षेत्र-विशेष से बाहर या विदेशी भाषा में व्यक्त करना मुश्किल है। खान-पान की सामग्री के विविध नामों को स्रोत भाषा से लक्ष्य भाषा में लाते वक्त तद्विषयक शब्दों के समानार्थी पर्याय देकर अनुवाद में लाना समस्यामूलक होता है। मराठी में खानपान से संबंधित ऐसे कई शब्द हैं जिनके लिए हिंदी तथा अन्य भाषाओं में पर्यायी शब्द मिलना दुर्लभ है। जैसे- डोहाळ जेवण, उसळ, घुँघनी, घुघया, थालीपीठ, चिल्ला, माडगे, सांडगे, मांडा, घारी, गुजिया, अलौरी, इमरती, भर्ता, करंजी, पूड़ी, कचौरी, रसगुल्ला, रायता, कोशिंबीर, पूरनपूरी, कढ़ी, संदेश आदि ऐसे अनेक शब्द हैं जिनका अनुवाद करना कठिन होता है। डॉ. देवेंद्रनाथ शर्मा के शब्दों में, "खानपान की वस्तुओं में भात, दाल, रोटी, पूड़ी, कचौरी, रसगुल्ला, संदेश, पेड़ा, जलेबी, हलवा आदि के रूपांतरण सिर पटकने पर भी अंग्रेजी फ्रेंच या रूसी में नहीं मिलेंगे।"3 विभिन्न भाषाओं के खान-पान के ऐसे कई शब्द हैं जिनका अनुवाद असंभव है। जैसे- पायसा, मजीगे (कन्नड़), चोरू, थोरन, नडन पथिरि (मलयालम), पोंगल, अप्पम (तमिल), खार, टेंगा (असमिया) बाटी, चूरमा, गट्टे (राजस्थानी) आदि शब्दों के समानार्थी शब्द अन्य भाषाओं में मिल पाना कठिन है। निष्कर्षत: यही कहा जा सकता है कि खान-पान की सामग्री की शब्दावली का अनुवाद करना कठिन और असंभव है।

आचार-विचार-संस्कार की शब्दावली :

भारतीय संस्कृति प्रारंभ से ही अत्यंत उदात्त, समन्वयवादी, सशक्त एवं जीवंत रही हैं। अनेक विचारकों ने भारतीय संस्कृति की सराहना करते हुए इनके आचार-विचार-संस्कार को महनीय बताया है। आचार-विचार-संस्कार के अनुसार कुछ शब्द, वाक्यांश तथा मुहावरें ऐसे हैं जिनका अन्य भाषा में अनुवाद करना मुश्किल हो जाता है। कुछ शब्द जैसे- वैकुंठवासी, स्वर्गवासी, कैलासवासी, आदि का शब्दश: अनुवाद हास्यास्पद होगा। विधवा स्त्री की चूड़ी टूटना, माँग उजड़ने से जोड़ा जाता है। दुकान बंद करना को दुकान बढ़ाना, दीपक बुझाने को दीपक बढ़ाना जैसे शब्दों के प्रयोग अनुवाद की सीमाओं से अलग होते हैं। इसी प्रकार पाखाना जाना के अनेक शब्द हैं - टट्टी जाना, नदी जाना, झाड़ी जाना, बिलायत जाना, पाकिस्तान जाना, मैदान जाना, ऑफिस करना आदि। गर्भवती स्त्री के लिए-पाव भारी पड़ना, दिन चढ़ना, अंधे को सूरदास, रसोइए को पण्डित, आचारी, महराज आदि कहते हैं। अतिथियों को आपही का घर है, घर पवित्र हुआ, दर्शन हुए, पधारिए आदि। संबोधन में- भाइयों, बहनों, माताओं, देवियों, सज्जनो आदि का प्रयोग दिखाई देता है। गाली सूचक शब्दों के अनुवाद भी नहीं हो सकते अबे, साले, दुष्ट, नालायक, चिड़ीमार, सनकी, चन्नेखाँ, बन्ने खाँ, गवार, हरामी, पिशाच, डाइन, बैताड़ आदि शब्दों को लक्ष्यभाषा में लाना कठिन होता है। विधि-विधान संबंधी शब्दों के पर्याय खोजना भी कठिन

ISSN–2278-5655

AMIERJ Aarhat Multidisciplinary International Education Research Journal

Volume–XIV, Special Issues – III (a) Nov – Dec, 2025

OPEN ACCESS Original Research Article

होता है। क्योंकि प्रत्येक समाज के विधि-विधान अलग-अलग होते हैं जैसे तर्पण, श्राद्ध, सुन्नत, साखरपुड़ा, औक्षण आदि। निष्कर्षतः यही कहा जा सकता है कि आचार-विचार-संस्कार की शब्दावली का अनुवाद करना कठिन और असंभव है।

रिश्ते-नाते संबंधी शब्दावली :

भारत की संस्कृति दुनिया की सबसे पुराणी और समृद्ध संस्कृतियों में से एक मानी जाती है। इसमें परिवार, समाज, परम्पराएँ और मानव सबंधों की गर्माहट का बहुत ही महत्त्व है। भारत में रिश्तों से संबंधित ऐसे अनेक शब्द होते हैं जो अलग-अलग समाज में अलग-अलग अर्थ रखते हैं। जैसे- उत्तर प्रदेश में 'दादा' का नाता पिता के बड़े भाई से होता है किंतु महाराष्ट्र में बड़े भाई से नाता लगाया जाता है। कहीं-कहीं पिता के पिता से भी अलग-अलग नामों से (दादा, नाना) पहचाना जाता है। मराठी में 'काका' चाचा को कहते हैं बंगाली में 'काका' का अर्थ बच्चा होता है। यहाँ कुछ शब्द दिए जा रहे हैं जिनका विदेशी भाषा में पर्याय नहीं होता। जैसे- ताई-ताऊ, मौसा-मौसी, बुआ-फूफा, साला-सलहज, साबू-सड़साल (साले का साला), बहनोई, जीजा आदि। मराठी भाषा में ताई- बड़ी बहन, आत्या-बुआ, भाऊ-भाई, जीजा, माम-ससुर पत्नी का पिता, माँ का भाई, इन्हीं अर्थों में मामी, मेहुना-मेहुनी, साला-बहनोई, मामा का बेटा, बुआ का बेटा आदि से संबंधित है। परिणाम स्वरूप रिश्ते-नाते से संबंधित शब्दावली में स्थित अर्थ की सूक्ष्मता लक्ष्यभाषा मे लाना कठिन है।

सांस्कृतिक संदर्भ एवं परंपराओं से संबंधित शब्द एवं उनके अनुवाद की समस्या :

सांस्कृतिक संदर्भ एवं परंपरासूचक शब्द प्रत्येक समाज की अपनी पहचान होती है। जिसे एक भाषा से दूसरी भाषा में अंतरण करना कठिन होता है। यद्यपि ऐसे शब्द सामान्य रूप से प्रयोग किए जाते हैं किंतु वे अपनी व्यंजक शक्ति के कारण व्यापक अर्थ रखते हैं। यह सच है पौराणिक पात्र, कथा, प्रसंग आदि प्रतीकात्मक रूप में इस तरीके से प्रस्तुत होते हैं कि उसी अर्थ में दूसरी भाषा का प्रयोग हास्यास्पद हो सकता है, ऐसे कुछ शब्द दिए जा रहे हैं- हिंदी में 'दधीचि की हड्डी', 'हनुमान की पूँछ', 'भगीरथ प्रयास', 'भीष्म प्रतिज्ञा', 'द्रौपदी का चीर', 'शबरी के बेर', 'सुदामा के चावल', 'भरत प्रेम' आदि। डॉ. अर्जुन चौहान के अनुसार "ये सभी सांस्कृतिक संदर्भ एक ओर अभिव्यक्तियों को धारदार बनाते हैं तो दूसरी ओर अनुवाद में दुरुहता लाते हैं और लक्ष्य भाषा के लिए अनानुद्य हो बैठते हैं। अनुवादक स्रोत भाषा के सांस्कृतिक संदर्भों से परिचित न होने पर तो इनको अनुवाद में लाना और भी मुश्किल हो जाता है।" हर भाषा के सांस्कृतिक संदर्भों से परिचित होने पर ही इनका सही अनुवाद हो सकता है। भारतीय तथा पाश्चात्य भाषाओँ में इन सांस्कृतिक संदर्भों की अपरिचितता होने के कारण इनका अनुवाद करना समस्यामूलक होता है। डॉ. भोलानाथ तिवारी के अनुसार, "अँग्रेजी में Democle's Sward, old Adam, Baptism of blood, with chhunt, one's water loo आदि भी ऐसी ही अभिव्यक्तियाँ हैं।"4 मराठी में भी ऐसे अनेक सांस्कृतिक संदर्भ हैं जिनका अनुवाद समस्यामूलक हैं। जैसे- 'सुदाम्याचे पोहे' (सुदामा के तंदुल), 'खारीचा वाटा' (गिलहरी का हिस्सा), 'सतीचे वाण' (सती जैसी दृढ़ प्रतिज्ञा) आदि।

गुरु परंपरा का 'गुरु' शब्द अध्यापक किंतु उसे शिक्षक या teacher नहीं कह सकते। 'गुरु' के साथ श्रद्धा, विश्वास, पूल्य भाव जुड़ा है वह ईश्वर से भी बड़ा है। 'सेवाश्रम' शब्द को

ISSN–2278-5655

AMIERJ Aarhat Multidisciplinary International Education Research Journal

Volume–XIV, Special Issues – III (a) Nov – Dec, 2025

OPEN ACCESS Original Research Article

अंग्रेजी में A centre of service, A centre of social service कह सकते हैं किंतु सेवाश्रम शब्द के साथ त्याग, सेवाभाव, अहिंसा, अनुशासन, संयम जैसे भाव जुड़े हैं यह अंग्रेजी में नहीं आ रहे हैं। दूसरे इस शब्द में गाँधीवादी चेतना निहित है इसलिए यह शब्द अपने आप में आदर भाव को जागृत करता है।

चौका अर्थात Kitchen रसोईघर, स्वयंपाक खोली आदि शब्द इस चौका शब्द के लिए गहराई नहीं व्यक्त कर रहे हैं। चौका शब्द में पवित्रता भारतीय गृहिणी का बोध तथा स्वच्छता की व्यंजना निहित है। कहने का तात्पर्य यह है ऐसे शब्द और उनके अर्थ परकाया प्रवेश का सुख नहीं दे सकते।

समाधान :

अनुवाद करते वक्त जो सामाजिक-सांस्कृतिक समस्याएँ आती हैं उनका व्यावहारिक समाधान इसप्रकार दिया जा सकता हैं- पर्यायी शब्दों के प्रयोग अवश्य करना चाहिए किंतु कोष्टक में मूल शब्द भी देना चाहिए जिससे उसका सही सम्प्रेषण हो सके। पर्याय न उपलब्ध होने की दशा में मूल शब्द ही रखना चाहिए और कोष्टक में उसका सांस्कृतिक संदर्भ व परंपरा का भाव स्पष्ट कर देना चाहिए। लक्ष्य भाषा में समान पर्याय न मिलने पर मूल शब्द को लिपि के रूप में भी लिखा जा सकता है जैसे- Guru, Chouka आदि। संस्कृति कोश का प्रयोग भी अनुवादसंबंधी समस्या का समाधान कर देता है। बहुभाषी 'संस्कृति कोश' का उपलब्ध होना सांस्कृतिक समस्याओं को हल करने में उपयोगी सिद्ध हो सकता है। विवाह संस्कार, व्रत-उपवास, पूजा-पाठ, खान-पान, वेशभूषा, आचार-विचार, रिश्ते-नाते, सांस्कृतिक संदर्भ, आदि से संबंधित समान शब्दावली न मिलने पर तद्विषयक यथोचित स्पष्टीकरण, जानकारी एवं आवश्यक सामग्री की सूची बनाकर उसे स्वतंत्र परिशिष्ट में देने से मूल अर्थ समझने में सहायता हो सकती है। परिशिष्ट में तत्संबंधी शब्द का चित्र देकर भी उसके संप्रेषण में सुलभता आ सकती है। केवल भाषाओं के ज्ञान मात्र से कोई व्यक्ति अनुवाद नहीं कर पाता। अनुवादक को दोनों भाषा-भाषियों की सामाजिक-सांस्कृतिक परंपराओं का ज्ञान होना अनिवार्य है।

निष्कर्ष :

अनुवाद एक व्यापक क्षेत्र है। अनुवाद कार्य जितना बहुत महत्वपूर्ण और आवश्यक है उतना ही कठिन तथा जटिल होता है। अनुवाद करते समय अनेक बाधाएँ एवं समस्याएं आती है। हर क्षेत्र की बाधाएँ अलग-अलग होती है। अनुवाद में सांस्कृतिक समस्याओं में मुख्यतः सांस्कृतिक अभिव्यक्ति से अपरिचितता होने के कारण लक्ष्य भाषा में समतुल्यता नहीं हो पाती। सांस्कृतिक शब्दों की कमी के कारण सांस्कृतिक बारीकियों को समझ पाना और सटीक समकक्ष शब्द मिल पाना मुश्किल हो जाता है। किसी संस्कृति में प्रचलित मुहावरें और कहावतों का सीधा अर्थ खो जाता है। सांस्कृतिक संदर्भों की दृष्टि से देखा जाए तो रीति-रिवाज, परंपराएँ, धार्मिक प्रथाएँ तथा ऐतिहासिक घटनाएँ किसी दूसरी संस्कृति में एक जैसी नहीं होती। कुछ शब्द या वाक्यांश केवल किसी विशिष्ट संस्कृति में मौजूद होने के कारण इन शब्दों का अनुवाद करना एक चुनौती हो सकती है।

ISSN–2278-5655

AMIERJ Aarhat Multidisciplinary International Education Research Journal

Volume–XIV, Special Issues – III (a) Nov – Dec, 2025

OPEN ACCESS Original Research Article

संदर्भ सूची:

1. *संपा. नवलजी - नालंदा विशाल शब्द सागर, आदिश बुक डिपो, दिल्ली, संस्करण-1988, पृ. 1388*
2. *प्रो. चव्हाण अर्जुन - अनुवाद समस्याएं एवं समाधान, अमन प्रकाशन, कानपुर, द्वितीय संशोधित संस्करण-2020, पृ. 118-119*
3. *शर्मा देवेंद्रनाथ - राष्ट्रभाषा हिंदी समस्या और समाधान, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद, तृतीय संस्करण-1983, पृ.140*
4. *डॉ. तिवारी भोलानाथ - अनुवाद विज्ञान, शब्दकार प्रकाशन, दिल्ली, पृ.173*

Cite This Article:

प्रो. (डॉ.) मेनकुदळे स. शि. (2025). *अनुवाद की सामाजिक-सांस्कृतिक समस्याएँ एवं समाधान.* **In Aarhat Multidisciplinary International Education Research Journal**: Vol. XIV (Number VI, pp. 1–7).

ISSN–2278-5655

AMIERJ Aarhat Multidisciplinary International Education Research Journal

Volume–XIV, Special Issues – III (a) Nov – Dec, 2025

OPEN ACCESS Original Research Article

अनुवाद की समस्याएँ

* प्रो.(डॉ.) भारत श्रीमंत खिलारे

* अध्यक्ष, हिंदी विभाग, स्नातकोत्तर अध्यापक एवं शोध निर्देशक, यशवंतराव चव्हाण महाविद्यालय,पाचवड, ता.वाई, , जि. सातारा. 415513

शोध सार :

किसी एक भाषा की सामाग्री का दूसरी भाषा में रूपांतर करने को 'अनुवाद' कहते है। संभवत मानव जन्म के साथ ही अनुवाद का जन्म हुआ। मनुष्य की भावनाओं की अभिव्यक्ति की अकुलाहट ने ही अनुवाद को जन्म दिया। प्रस्तुत शोध पत्र में जहां अनुवाद के अर्थ, परिभाषा एवं स्वरूप तथा विभिन्न समस्याओं का संक्षिप्त परिचय दिया गया है। आज अनुवाद प्रयोजन की दृष्टि से बहुमुखी और बहुआयामी बन चुका है। अनुवाद अन्य भाषा और मानव समुदाय में विकसित ज्ञान–विज्ञान के आयात का माध्यम बन गया है। यह आज देश–विदेश के राजनीतिक जीवन की अनिवार्यता भी बन गया है। अनुवाद का भारत जैसे देश में बहुत ही महत्व है है। प्रस्तुत शोध पत्र में इन्हीं कुछ बिंदुओं पर प्रकाश डाला गया है। अनुवाद की समस्याओं पर चर्चा करना प्रस्तुत शोध पत्र का प्रमुख प्रयोजन है।

Copyright © 2025 The Author(s): This is an open-access article distributed under the terms of the Creative Commons Attribution 4.0 International License (CC BY-NC 4.0) which permits unrestricted use, distribution, and reproduction in any medium for non-commercial use provided the original author and source are credited.

प्रस्तावना :

भाषा का अनुवाद से महत्वपूर्ण संबंध है। यानि मूल भाषा या स्त्रोत भाषा का लक्ष्य भाषा में रूपांतर करना ही अनुवाद है। अनुवाद कला का प्रारंभ किस काल से हुआ, यह कोई नहीं कह सकता है, किंतु अनुवाद का मौखिक रूप बहुत पुराना है। संस्कृत साहित्य में अनुवाद का प्रयोग मिलता है। वेद, पुराण आदि में अनुवाद शब्द का प्रयोग के अर्थ में मिलता है। पुनः कथन यानि पहले कही गई बात को फिर से कहना। अनुवाद में हम एक भाषा में कही गई बात को उसके कहे जाने के बाद भाषा में कहते है। इसी प्रकार लिखित अनुवाद में एक भाषा में लिखी गई रचना को अन्य भाषा में फिर से लिखित या रूपांतर करने को अनुवाद कहा जाता है। एक भाषा में व्यक्त विचारों को दूसरी भाषा में व्यक्त करना अनुवाद का कार्य है। भाषा के दो रूप हमारे सामने हैं– मौखिक रूप और लिखित रूप। आमतौर पर अनुवाद की आवश्यकता मौखिक भाषा में रहती है जबकि लिपिबध्द भाषा में अनुवाद की आवश्यकता और भी अधिक हो जाती है। अनुवाद लिपिबध्द हो या मौखिक, वक्ता और श्रोता के बीच में अथवा लेखक और पाठक के बीच में एक मध्यस्थ की आवश्यकता रहती है। जिसे हम दुभाषिया या अनुवादक कहते है। अतः यह तो स्पष्ट है कि जिस भाषा में अनुवाद अपेक्षित है उसे हम मूल या श्रोत भाषा कहते है तथा जिसमें अनुवाद किया जाता है. उसे लक्ष्य भाषा कहते है। इससे प्रतीत

ISSN–2278-5655
AMIERJ Aarhat Multidisciplinary International Education Research Journal
Volume–XIV, Special Issues – III (a) Nov – Dec, 2025
OPEN ACCESS Original Research Article

होता है कि अनुवाद प्रक्रिया में भाषा का विशेष महत्व होता है।

शोध प्रविधि :

प्रस्तुत शोध पत्र अनुवाद प्रक्रिया के स्वरूप, विभिन्न समस्याओं जैसे महत्वपूर्ण बिंदुओं पर प्रकाश डालता है। शोध पत्र के प्रथम चरण में अनुवाद के अर्थ, परिभाषा तथा पूर्वपीठिका आदि को दर्शाया गया है। दूसरे चरण में अनुवाद के क्षेत्र में आ ही रही विभिन्न प्रकार की व्यावहारिक समस्याओं चित्रण किया गया गया है जबकि तीसरे चरण में अनुवाद की आवश्यकता, क्षेत्र एवं संभावनाएं उल्लिखित हैं। उक्त शोध पत्र में सर्वेक्षण विधि को अपना कर सामग्री एकत्रित की गई है।

अनुवाद : अर्थ एवं स्वरूप :

अनुवाद शब्द 'अनु' उपसर्ग तथा 'वाद' शब्द के संयोग से बना है – अनु + वाद = अनुवाद। 'अनु' उपसर्ग का अर्थ होता है पीछे या अनुगमन करना तथा 'वाद' शब्द का संबंध है 'वद्' धातु से, जिसका अर्थ होता है कहना या बोलना। इस प्रकार अनुवादक शब्द का शाब्दिक अर्थ होगा किसी के कहने या बोलने के बाद बोलना। पाणिनी ने अपनी अश्टाध्यायी में 'अनुवाद' शब्द का प्रयोग किसी ज्ञात बात को कहने के संदर्भ में किया है– 'अनुवाड़े चरणानाम्''। जैमिनिय न्यायमाला में भी अनुवाद को ज्ञात का पुनर्कथन ही माना गया है– ''ज्ञातस्य कथनमनुवादः''। इस प्रकार कहा जा सकता है कि अनुवाद में हम एक भाषा में कही गई बात को उसके कहे जाने के बाद दूसरी भाषा में कहते है। एक भाषा में व्यक्त विचारों को दूसरी भाषा में व्यक्त करना अनुवाद का कार्य है।

आज अनुवाद एक स्वतंत्र विषय एवं महत्वपूर्ण विधा के रूप में न केवल अपना विशेष स्थान बना चुका है बल्कि उसका व्यवस्थित ढंग से उत्तरोतर विकास भी होता जा रहा है। किसी भी देश–समाज की साहित्यिक और सांस्कृतिक उत्कृष्टता का दर्पण मौलिक सृजन के समान अनुवाद भी होता है। विश्व सभ्यता के विकास में अनुवाद की सराहनीय भूमिका रही है। यह भूमिका साहित्य, विज्ञान एवं प्राद्यौगिकी के क्षेत्र तक ही नहीं, अपितु सामाजिक–सांस्कृतिक और आँय कई संदर्भों में भी सराहनीय रही है, क्योंकि अनुवाद ही वह एकमात्र माध्यम है जिसकी सहायता से विभिन्न सभ्यताओं और संस्कृतियों, धर्मों एवं सामाजिक स्तरों से देश–विदेश में संवाद स्थापित हो पाता है।

आज के इस वैज्ञानिक युग में, विज्ञान के क्षेत्र में अनेकानेक भाषाओं में जो निरंतर चिंतन–मनन, अध्ययन–अनुसंधान और लेखन कार्य हो रहा है। उसे अन्य भाषा–भाषियों तक पहुँचाने के लिए भिन्न–भिन्न भाषाओं में उसके अनुवाद की आवश्यकता होती है क्योंकि संपूर्ण विश्व में ज्ञान–विज्ञान के क्षेत्र में हो रही संवृध्दी और अद्दतन जानकारी आदि को अन्य भाषाओं में 'अनुवाद' के माध्यम से जाना जा सकता है। इसी प्रकार कहानी, उपन्यास, निबंध, नाटक आदि सृजनात्मक साहित्य की देश अथवा समाज विशेष की सांस्कृतिक संपदा का बोध हमें तब तक नहीं

ISSN–2278-5655

AMIERJ Aarhat Multidisciplinary International Education Research Journal

Volume–XIV, Special Issues – III (a) Nov – Dec, 2025

OPEN ACCESS Original Research Article

हो पाता जब तक कि उन समस्त श्रेष्ठ कृतियों का अपनी भाषा में अनुवाद न उपलब्ध हो । वैसे एक ही देश कि भौगोलिक सीमा के भीतर कई स्वीकृत व्यावहारिक भाषाओं के कारण भी अनुवाद की आवश्यकता दिनोंदिन बढ़ती जा रही है। इस प्रकार अनुवाद की मूल चेतना के परिप्रेक्ष्य में देंखे तो अनुवाद विभिन्न भाषा–भाषियों के बीच परस्पर विचार–विनिमय का 'माध्यम' है, दो भाषा के बीच 'सेतु' है।

अनुवाद की परिभाषाएँ :

अनुवाद की परिभाषाओं के रूप में प्राचीन भारतीय ग्रंथों में अनुवाद को भले ही परिभाषित नहीं किया गया है, परंतु परोक्ष रूप से इस संबंध में बहुत कुछ बताया गया है।

परिभाषा की दृष्टि से आधुनिक लेखकों व विचारकों ने अनुवाद की विभिन्न परिभाषाएँ दी हैं। भारतीय विचारकों की परिभाषाएँ निम्नवत् हैं :

(1) डॉ. भोलानाथ तिवारी के अनुसार, ''भाषा ध्वन्यात्मक प्रतीकों की व्यवस्था है और अनुवाद इन्हीं प्रतीकों का प्रतिस्थापन।''[1] अनुवाद विज्ञान, पृ.16

(2) ''अनुवाद वह प्रक्रिया है जिसके द्वारा सार्थक अनुभव को एक भाषा समुदाय से दूसरे भाषा समुदाय में संप्रेषित किया जाता है।'' –पटनायक

(3) ''समस्त अभिव्यक्ति अनुवाद है क्योंकि वह अव्यक्त (या अदृश्य आदि) को भाषा (या रेखा या रंग) में प्रस्तुत करती है।''[2]– स. ही. वात्स्यायन, अनुवाद : कला और समस्याएँ, 1961, पृ. 4

मेरे विचार से अनुवाद की सरलतम परिभाषा निम्नवत् हो सकती है :

(4) स्त्रोत भाषा से लक्ष्य भाषा में किसी विषयवस्तु या संदेश की समतुल्य अभिव्यक्ति अनुवाद है।

(5) भाषा भेद के विशिष्ट पाठ को दूसरी भाषा में इस प्रकार प्रस्तुत करना अनुवाद है जिसमें वह मूल के भाषिक अर्थ, प्रयोग के वैशिष्ट्य को यथासंभव संरक्षित रखते हुए दूसरी भाषा के पाठक को स्वाभाविक रूप से ग्राह्य प्रतीत हो।[3]

– डॉ. सुरेश कुमार : अनुवाद सिद्धांत की रूपरेखा

पाश्चात्य विचारकों ने अनुवाद को इस प्रकार परिभाषित किया है :

(6) अनुवाद एक संबंध है, जो दो या दो से अधिक पाठों के बीच होता है, ये पाठ समान स्थिति में समान प्रकार्य संपादित करते हैं। हैलिडे[4] 1964 : 124

(7) एक भाषा की पाठ्य सामग्री को दूसरी भाषा में समानार्थक पाठ्य सामग्री से प्रतिस्थापित करना अनुवाद कहलाता है। – कैटफोर्ड

The replacement textual material in one language by equivalent textual matereal in another language – Catford.

(8) मूल भाषा के संदेश के सममूल्य संदेश को लक्ष्यभाषा में प्रस्तुत करने की क्रिया को

ISSN–2278-5655

AMIERJ Aarhat Multidisciplinary International Education Research Journal

Volume–XIV, Special Issues – III (a) Nov – Dec, 2025

OPEN ACCESS Original Research Article

अनुवाद कहते हैं। संदेशों की यह मूल्य समता पहले अर्थ और फिर शैली की दृष्टि से तथा निकटतम एवं स्वाभाविक होती है।[5] नाइडा एवं टेबर (1961:12)

Translation consis in producing in the receptor language the closest natural equiralent to the message of the source language, first in meaning and Secondly in style. Naida & Tabar (1961:12)

(9) किसी एक भाषा के पाठ की विषयवस्तु को दूसरी भाषा के पाठ में अंतरित करना अनुवाद है। –फारेस्टेन

अनुवाद की समस्याएँ :

अनुवाद बहुत सरल प्रतीत होने वाली क्रिया है परंतु वास्तविकता यह है कि अनुवाद अत्यधिक जटिल प्रक्रिया है। अनुवाद में जब हम व्यवहार की ओर उन्मुख होते हैं तब हमारा पाला विभिन्न प्रकार की समस्याओं से पड़ता है। अतः अच्छे अनुवादक के लिए यह नितांत जरूरी हो जाता है कि वह इन समस्याओं से परिचित हो जाए व इनके निराकरण का प्रयास करे। अनुवाद में आने वाली समस्याएँ अनुवादक की क्षमता पर भी निर्भर होती हैं। यदि अनुवादक को लक्ष्य भाषा, स्त्रोत भाषा और विषय पर अधिकार नहीं होगा तो उसकी समस्याएँ बढ़ती ही जाएँगी व हर कदम पर उसे कठिनाई का सामना करना पड़ेगा। लेकिन स्त्रोत भाषा, लक्ष्य भाषा और विषय का ज्ञान रखने पर भी अनुवाद में समस्याएँ आती ही हैं। अनुवाद में आनेवाली समस्याएँ तो अनेक हैं लेकिन हम यहाँ प्रमुख समस्याओं पर ही चर्चा करेंगे :

1. **व्याकरण संबंधी समस्याएँ** : प्रत्येक भाषा का अपना व्याकरण होता है व प्रत्येक भाषा व्याकरण के नियमों से नियंत्रित होती है। अतः लक्ष्य भाषा और स्त्रोत भाषा दोनों में ही व्याकरण कोटियाँ भिन्न होती हैं। वाक्य रचना व वचन प्रक्रिया लिंगविधान भिन्न होते हैं, उदाहरण के लिए He goat एवं she goat का वह बकरा, वह बकरी अनुवाद करना त्रुटिपूर्ण होगा क्योंकि अंग्रेजी का लिंग विधान सीमित है। इसलिए He और She का प्रयोग किया गया है। इसी प्रकार He is my father का अनुवाद वह मेरा पिता है करना तर्कसंगत नहीं है, हमें कहना होगा–वे मेरे पिता जी हैं। हिंदी में 'जी' अतिरिक्त प्रयोग है और 'हैं' का प्रयोग सम्मान देने के लिए किया है। अंग्रेजी का वाक्य एकवचन में होते हुए भी इसका अनुवाद बहुवचन में हुआ है। इसलिए यह नितांत जरूरी है कि व्याकरण, रचना प्रक्रिया और भाषागत विशेषताओं/भिन्नताओं को समझकर अनुवाद किया जाए।[6]
2. **भाषागत प्रयुक्तियाँ** : प्रत्येक भाषा के प्रयोग के अपने नियम होते हैं अतः एक भाषा में जो अनिवार्य होता है दूसरी भाषा में वह अर्थहीन हो जाता है। यदि हम अंग्रेजी में कहें–There are five birds on the tree. इसका हिंदी में शाब्दिक अनुवाद होगा। वहाँ पेड़ के ऊपर पाँच चिड़ियाँ हैं। परंतु सही अनुवाद होगा, पेड़

ISSN–2278–5655

AMIERJ Aarhat Multidisciplinary International Education Research Journal

Volume–XIV, Special Issues – III (a) Nov – Dec, 2025

OPEN ACCESS Original Research Article

पर पाँच चिड़ियाँ हैं। यहाँ हम देखते हैं कि There तथा The का अनुवाद नहीं किया गया है। इस प्रकार हमें भाषा की प्रकृति एवं उसके प्रयोग को भी सदैव ध्यान में रखकर अनुवाद करना चाहिए। अन्यथा यह विकट समस्या बन जाती है।

3. **संकल्पनाओं संबंधी समस्याएँ** : भाषा निरंतर प्रवाहमान एवं गतिशील रहती है। नई–नई खोजों, नए–नए प्रयोगों और संकल्पनाओं का भाषा में निरंतर प्रयोग होता ही रहता है। ऐसी संकल्पनाएँ अनुवादकों के लिए बहुत समस्याएँ पैदा करती हैं। यदि आप बैंकिंग में अनुवाद कर रहे हों, और आपके पास शब्द आया Factoring आपने इसका अनुवाद फैक्ट्री के अर्थ में कर दिया तो अर्थ का अनर्थ हो जाएगा। इसलिए जिस विषय का अनुवाद कर रहे हों उस विषय के पारिभाषिक कोश का अवश्य सहारा लें या फिर संकल्पनाओं का लिप्यंतरण कर दें। हास्यास्पद अनुवाद कभी न करें। यदि कोई अभिव्यक्ति समझ में न आए तो विषय के विशेषज्ञ से संपर्क करें।[7]

4. **शब्द चयन संबंधी समस्याएँ** : अनुवाद में शब्द चयन की समस्या सबसे महत्त्वपूर्ण है। यदि आप विषय को समझने में थोड़ी सी लापरवाही बरत दें या शब्दकोश देखकर सीधा–सीधा अनुवाद कर दें तब भी बहुत सी समस्याएँ उत्पन्न हो सकती हैं। मैंने अभी हाल ही में एक बैंक की रबर मुहर का अनुवाद देखा था जो मात्र उचित शब्द चयन की अक्षमता के कारण हुआ था–मुहर थी–Please pay/deliver to the order of – इसका अनुवाद इस प्रकार था–को या उनके आदेश पर 'प्रसव' करें। प्रसव यानी बच्चे को जन्म देना। यह तो ईश्वर के आदेश पर ही संभव है। बैंक की मुहर से प्रसव नहीं कराया जा सकता। वस्तुतः शब्दकोश में डिलिवर का अर्थ था–प्रसव, सुपुर्दगी, व्याख्यान देना आदि इस मुहर में डिलिवर का आशय था सुपुर्द करना, लेकिन अनुवादक ने बिना यह सोचे कि इस मुहर का उद्देश्य क्या है, उक्त शब्द लिया और अनुवाद कर दिया। अतः उचित शब्द चयन नहीं हो पाया है। इसी प्रकार एक ही शब्द के अनेक अर्थ होते हैं। किस समय कौन से शब्द का उपयोग किया जाए यह जानना अनुवादक का पहला धर्म है।

5. **शब्द शक्तियाँ व लक्षणामूलक प्रयोग** : अनुवाद की एक समस्या यह भी होती है कि कभी–कभी शब्दों का सीधा अर्थ नहीं निकलता है बल्कि उनके लक्षणा या व्यंजना–मूलक अर्थ होते हैं, कहीं–कहीं पर व्यंग्य होते हैं। मूल पाठ में ऐसे लक्षणा या व्यंजना–मूलक शब्दों या व्यंग्य अथवा व्यंग्यात्मक शैली की पहचान कर लेनी चाहिए उसके उपरांत शब्द को दृष्टि में न रखकर अभिव्यक्ति का अनुवाद किया जाता है।

6. **साहित्यिक विधाओं के अनुवाद की समस्याए** : साहित्य, भावना की सुव्यवस्थित अभिव्यक्ति होती है। इस अभिव्यक्ति हेतु

ISSN–2278-5655
AMIERJ Aarhat Multidisciplinary International Education Research Journal
Volume–XIV, Special Issues – III (a) Nov – Dec, 2025
OPEN ACCESS Original Research Article

साहित्यकार जिन माध्यमों का उपयोग करते हैं, वे साहित्य की विधाएँ कहलाती हैं, जैसे–कविता, कहानी, निबंध, उपन्यास, नाटक, रिपोर्ताज, चंपू आदि। साहित्य के अनुवाद में सबसे बड़ी कठिनाई यह होती है कि यह भावना प्रधान होता है, अतः कथ्य में वर्णित कोमलता को उसी रूप और उठी कोमलता से दूसरी भाषा में ले जाना वस्तुतः एक जटिल कार्य है। काव्य की कल्पना शक्ति व उसकी अनेकार्थता को उसी रूप में अनुवाद करना दुष्कर कार्य है। बिहारी के दोहे जो कई–कई अर्थ देते हैं व उनकी श्लेषपरक उक्तियों को उसी गहराई से दूसरी भाषा में पहुँचा सकता है। हिंदी काव्य की आनुप्रासिकता को कैसे सहेजा जाएगा–भावना की सूक्ष्मतम गहराइयों को कैसे पाटा जाएगा? काकु वक्रोक्ति, बिंबविधान, अलंकार, उपमेय और उपमानों को कैसे व्यक्त किया जाए। भारतीय जनमानस उल्लू को मूर्ख और अशुभ समझता है जबकि विदेशी संस्कृति (विशेषतः ब्रिटेन के अंग्रेज) में इसे शुभ मानते हैं, इस प्रकार के अंतर्विरोधों के बावजूद यही अभिव्यक्तियाँ कैसे व्यक्त की जाएँ, यह समस्या सदैव अनुवादकों को परेशान करती आई हैं। परंतु इसका भी हल है। निश्चित समाधान है। इसके लिए हम जिस लक्ष्य भाषा में अनुवाद कर रहे हैं उसके उपमेय और उपमानों का प्रयोग करें, मंदिर की जगह चर्च ले जाएँ और दीप की जगह मोमबत्ती अर्थात् भाषा के सांस्कृतिक सामाजिक परिवेश को देखकर ही अनुवाद करें तो साहित्य का अनुवाद अधिक रुचिकर होगा साहित्यिक अनुवाद हू–ब–हू न होकर रूपांतरण (Adoption) शैली में होना चाहिए। सौंदर्य प्रतिमान एवं बिंब विधान की लक्ष्य भाषा के अनुरूप बदल दिए जाने चाहिए। पात्रों के नाम भी देश, काल के अनुरूप बदल देने चाहिए।

7. **पौराणिक प्रतीक** : अनुवाद की एक समस्या यह भी होती है कि पौराणिक प्रतीकों, दंत कथाओं आदि के संदर्भ आने पर उन शब्दों को कैसे व्यक्त किया जाए जैसे भीष्म प्रतिज्ञा, विभीषण आदि के पीछे जो तथ्य और प्रतीकात्मकता छिपी होती है उसे अनुवाद के द्वारा व्यक्त करना कठिन कार्य है, परंतु इसी प्रकृति के पात्रों के गुण के समान यदि लक्ष्य भाषा में कोई पात्र हो तो उनका उल्लेख करना चाहिए अथवा जिस प्रतीक के लिए इनका उपयोग हुआ है उस प्रतीक की व्याख्या करके अनुवाद संपन्न करना चाहिए

निष्कर्ष :

अतः हम यह कह सकते है कि अनुवाद मात्र एक साहित्यिक कार्य नहीं है, अपितु उसकी पहचान जीवन के हर क्षेत्र में सक्रिय साधन के रूप में उभरी है। प्रशासन, चिकित्सा, कला, संस्कृति, विज्ञान, विधि, प्रौद्योगिकी, तकनीकी अनुसंधान, व्यवसाय, पत्रकारिता, जनसंचार, आदि विभिन्न क्षेत्रों में अनुवाद के बिना कुछ नहीं हो सकता। भारत जैसे बहुभाषी और विविधताओं से भरे देश में राष्ट्रिय एकता के सूत्रों को समेटने में भी

ISSN–2278-5655

AMIERJ Aarhat Multidisciplinary International Education Research Journal

Volume–XIV, Special Issues – III (a) Nov – Dec, 2025

OPEN ACCESS Original Research Article

अनुवाद की अपनी विशिष्ट भूमिका है। इसी तरह साहित्य के तुलनात्मक अध्ययन और अनुसंधान की विभिन्न दिशाएँ अनुवाद से ही नियंत्रित होती है। अनुवाद एक स्वतंत्र व्यवसाय एवं आजीविका का साधन बन गया है। ज्ञान–विज्ञान, आद्योगिक विकास और वाणिज्य–व्यवसाय के विभिन्न क्षेत्रों में अनुवाद के व्यापक उपयोग ने इसे अधिकाधिक लोकप्रिय बनाया है। बहुभाषी देश भारत में बहुभाषी शिक्षा प्रणाली की संभावनाओं के साथ भी अनुवाद का गहरा रिश्ता है। अनुवाद आज की आवश्यकता है और भविष्य की अपरिहार्यता के रूप में अनुवाद की संभावनाएं असीम है।

संदर्भ संकेत :

1. *अनुवाद विज्ञान : पृ. 16*
2. *वात्स्यायन स.ही. : अनुवाद कला और समस्याएँ, सरस्वती प्रकाशन, नई दिल्ली, प्र.सं.1961, पृ.4*
3. *डॉ.सुरेशकुमार : अनुवाद सिद्धांत की रुपरेखा, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, प्र.सं.1968, पृ. 40*
4. *हैलिडे : अनुवाद कला, कमल प्रकाशन, नई दिल्ली, प्र.सं.1964, पृ.124*
5. *नाईडा एवं टेबर : अनुवाद परिचय, पंचवटी प्रकाशन, ओडिसा, प्र.सं.1961, पृ.12*
6. *डॉ.नौटियाल जयंती प्रसाद : अनुवाद सिद्धांत एवं व्यवहार, राधाकृष्ण प्रकाशन, दरियागंज, नई दिल्ली, प्र.सं.2000, पृ.51*
7. *वही – पृ. 52*

Cite This Article:

प्रो.(डॉ.) भा. श्री. खिलारे (2025). अनुवाद की समस्याएँ. **In Aarhat Multidisciplinary International Education Research Journal**: Vol. XIV (Number VI, pp. 8–14).

ISSN–2278-5655

AMIERJ Aarhat Multidisciplinary International Education Research Journal

Volume–XIV, Special Issues – III (a) Nov – Dec, 2025

OPEN ACCESS Original Research Article

कविता और अनुवाद

** प्रो. डॉ. अनंत केदारे*

** हिंदी विभाग, कला, वाणिज्य व विज्ञान महाविद्यालय, सात्रल, तहसील राहाता, जिला अहिल्यानगर (महाराष्ट्र) पिन 413 713*

शोध सार :

अनुवाद एक गहन, गंभीर एवं व्ययसाध्य कार्य है। उसके निश्चित सोपान हैं। गद्य की तुलना में कविता का अनुवाद कठिन कार्य है। कविता का अनुवाद एक जटिल और सूक्ष्म प्रक्रिया है जिसमें केवल शब्दों का परिवर्तन नहीं बल्कि कविता के भाव, रस, लय, अलंकार और सौंदर्य का पुनः सृजन है। यह एक व्ययसाध्य परंतु गंभीर कार्य है। अनुवादक को मूल कविता की गहरी समझ के साथ तकनीकी, कलात्मक और सांस्कृतिक आयामों का ध्यान रखना आवश्यक होता है। हिंदी में कविता के अनुवाद की परंपरा पुरानी है। संस्कृत काव्य का हिंदी में सफल अनुवाद हुआ है। प्राचीन कवियों के काव्य का अनुवाद भी लक्षणीय है। हिंदी में पर्याप्त मात्रा में अँग्रेजी कविताओं का अनुवाद हुआ है। देशी भाषाओं का काव्य भी हिंदी में अनूदित हुआ है जिसमें मराठी, बांगला तथा उर्दू भाषा के काव्य का समावेश है। कविता का अनुवाद करते समय कवि के सूक्ष्म और गहरे भाव शब्दशः खोने की सबसे बड़ी चुनौती है। लय, तुक, अलंकार और सांस्कृतिक संदर्भ बनाए रखना भी कठिन होता है। अनुवादक को प्रतीक, बिंब, पौराणिक-ऐतिहासिक संदर्भ और भाषा की सांस्कृतिक भिन्नताओं के अनुसार उपयुक्त रूपक और शब्द चयन करना पड़ता है। कविता और अनुवाद एक-दूसरे के पूरक हैं। जहाँ कविता पाठक को रस, भाव और सौंदर्य प्रदान करती है वहीं अनुवाद इसे दूसरी भाषा में जीवंत बनाकर व्यापक पाठक वर्ग तक पहुँचाता है। कविता का अनुवाद सृजनात्मक, संतुलित और बहुआयामी कार्य है, जो साहित्यिक सौंदर्य और सांस्कृतिक संवाद दोनों को समृद्ध करता है।

संकेत शब्द (keywords): *कविता, अनुवाद, अनूदित साहित्य, भावानुवाद, अलंकार और बिंब, सांस्कृतिक संदर्भ, भाषा और शब्द चयन, कवि की मौलिकता, सृजनात्मकता और संतुलन आदि।*

Copyright © 2025 The Author(s): This is an open-access article distributed under the terms of the Creative Commons Attribution 4.0 International License (CC BY-NC 4.0) which permits unrestricted use, distribution, and reproduction in any medium for non-commercial use provided the original author and source are credited.

कविता और अनुवाद:

कविता का मानव जीवन में अनन्यसाधारण स्थान है। यह मानवीय संवेदनाओं और अनुभवों का सजीव रूप है। कविता अनादिकाल से मानव जीवन की साथी रही है। साहित्य किसी बपौती नहीं है बल्कि समस्त मानवता की सामूहिक चेतना का स्वर है। प्रत्येक समुदाय अपना जोरदार साहित्य है। कुछ लोगों के पास अपनी भावनाओं को शब्दों में ढालने की क्षमता होती है जबकि कुछ उन्हें केवल महसूस करते हैं। कविता साहित्य की वह विधा है जो मानव हृदय के सबसे समीप है। इसका कारण यह है कि साहित्य की आरंभिक अभिव्यक्ति कविता के

ISSN–2278-5655

AMIERJ Aarhat Multidisciplinary International Education Research Journal

Volume–XIV, Special Issues – III (a) Nov – Dec, 2025

OPEN ACCESS Original Research Article

रूप में ही हुई थी। संसार का कोई भी देश या समुदाय ऐसा नहीं है जहाँ कविता का अस्तित्व न रहा हो। कविता केवल मनोरंजन या सौंदर्य प्रदर्शन का माध्यम नहीं है। कविता और साहित्य का क्षेत्र किसी एक वर्ग, भाषा या समुदाय तक सीमित नहीं रह सकता। यह सार्वभौमिक है और समूचे मानव जीवन के हर आयाम से जुड़ा हुआ है। भाषा और लिपि का आविष्कार मानव सभ्यता की महान उपलब्धियों में से एक रहा है। इन्हीं के माध्यम से विचारों और भावनाओं को स्थायी रूप मिला और लिखित साहित्य का जन्म हुआ। इस लिखित परंपरा ने ज्ञान, संस्कृति और अनुभवों को पीढ़ी-दर-पीढ़ी आगे बढ़ाने का मार्ग प्रशस्त किया। यही कारण है कि साहित्य को सात ललित कलाओं में स्थान दिया गया क्योंकि यह ज्ञान के विकास और सौंदर्यबोध की दिशा में मानवता का पथ आलोकित करता है।

अनुवाद एक जटिल प्रक्रिया है जिसमें स्रोत भाषा के विचार, भाव और शैली को लक्ष्य भाषा में इस प्रकार रूपांतरित किया जाता है कि अर्थ और सौंदर्य अक्षुण्ण रहें। इसका उद्देश्य मूल पाठ में न कुछ जोड़ना है न कुछ छोड़ना बल्कि सामाजिक और सांस्कृतिक परिवेश का ध्यान रखते हुए भाषा का रूपांतरण करना है। अनुवाद भाषा के प्रतीकात्मक ढाँचे का पुनर्निर्माण है। भाषा ध्वनियों और शब्दों के प्रतीकों पर आधारित होती है, जिनसे अर्थ का संप्रेषण होता है। "भाषा ध्वन्यात्मक प्रतीकों की व्यवस्था है और अनुवाद इन्हीं प्रतीकों का प्रतिस्थापन।"[1] अनुवाद में इन्हीं प्रतीकों को बदलकर दूसरी भाषा के अनुरूप नए प्रतीक रखे जाते हैं ताकि वही अर्थ और संदेश लक्ष्य भाषा में भी व्यक्त हो सके।

कविता के अनुवाद में यह कार्य और भी कठिन हो जाता है क्योंकि इसमें भाव, लय, संगीत और अनुभूति का पुनः सृजन करना पड़ता है। भाषाओं के बीच संवाद स्थापित करना और संदेशों का आदान-प्रदान करना मानव समाज में ज्ञान और संस्कृति के प्रसार के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण है। इसी संदर्भ में अनुवाद का क्षेत्र अत्यंत व्यापक और बहुआयामी है। "अनुवाद ज्ञान का वह क्षेत्र है जो विभिन्न भाषाओं के बीच में किसी विषय अथवा संदेश को जब हम समतुल्य अभिव्यक्तियों द्वारा पठनीय अथवा संप्रेषणीय बनाते हैं, तब अनुवाद की क्रिया संपन्न होती है।"[2] अनुवाद केवल भाषाओं के बीच शब्दों का आदान-प्रदान नहीं है बल्कि यह संदेश, अर्थ और भाव का समतुल्य रूप में प्रेषण भी है। इसीलिए अनुवाद की परिभाषा देते हुए कहा गया है कि "एक भाषा में व्यक्त विचारों को, यथासंभव समान और सहज अभिव्यक्ति द्वारा दूसरी भाषा में व्यक्त करने का प्रयास अनुवाद है।"[3] अर्थात अनुवादक का उद्देश्य मूल संदेश को सरल, स्पष्ट और प्रभावपूर्ण रूप में दूसरी भाषा में प्रस्तुत करना है।

प्रसिद्ध चिंतक कैटफोर्ड के अनुसार अनुवाद की इकाइयाँ चार स्तरों पर कार्य करती हैं- शब्द, पदबंध, वाक्य और पाठ। इन सभी स्तरों पर समतुल्यता बनाए रखना आवश्यक होता है। अनुवाद के चार प्रमुख चरण होते हैं- सही शब्द का चयन, उपयुक्त शैली का निर्धारण, भाषिक संरचना का सामंजस्य और सहज प्रवाह। इन्हीं से अनुवाद आकर्षक और सत्य के निकट पहुँचता है। भाषा की संरचना पर ध्यान देते हुए परिभाषित किया गया है कि "भाषा ध्वन्यात्मक प्रतीकों की व्यवस्था है और अनुवाद है इन्हीं प्रतीकों का प्रतिस्थापन, अर्थात् एक

ISSN–2278-5655

AMIERJ Aarhat Multidisciplinary International Education Research Journal

Volume–XIV, Special Issues – III (a) Nov – Dec, 2025

OPEN ACCESS Original Research Article

भाषा के प्रतीकों के स्थान पर दूसरी भाषा के निकटतम (कथनतः और कथ्यतः) समतुल्य और सहज प्रतीकों का प्रयोग।"[4] अनुवाद केवल शब्दों का परिवर्तन नहीं है बल्कि अर्थ और कथ्य के स्तर पर समतुल्यता स्थापित करने की प्रक्रिया है। तभी तो कहा गया है कि "अनुवाद कथनतः और कथ्यतः निकटतम सहज प्रतिप्रतीकन है।"[5] अनुवादक का कार्य केवल भाषाई प्रतिस्थापन नहीं बल्कि मूल रचना की भावनात्मक, सांस्कृतिक और बौद्धिक गहराई को दूसरी भाषा में संरक्षित रखना भी है।

अनुवाद का उद्देश्य मूल भाषा के अर्थ, भाव और संदर्भ को बनाए रखते हुए उसे दूसरी भाषा में समान अर्थ वाले शब्दों या वाक्यों के माध्यम से व्यक्त करना है। इसमें रूप या शब्दशः समानता नहीं, बल्कि अर्थ की समानता महत्वपूर्ण होती है। प्रसिद्ध विचारक कैटफोर्ड ने भी इसी प्रकार विचार प्रकट किए हैं। "एक भाषा की पाठ्य सामग्री को दूसरी भाषा में समानार्थक पाठ्य सामग्री से प्रतिस्थापित करना अनुवाद कहलाता है।"[6] यही कारण है कि अनुवादक को अर्थ, शैली और प्रसंग तीनों का ध्यान रखते हुए मूल संदेश को लक्ष्य भाषा में संतुलित रूप से प्रस्तुत करना पड़ता है।

अनुवाद का अर्थ है एक भाषा में लिखी या कही गई बात को दूसरी भाषा में उसी अर्थ और भाव के साथ प्रस्तुत करना। "एक भाषा की किसी सामग्री का दूसरी भाषा में रूपांतर ही अनुवाद है।"[7] यहाँ रूपांतर का अर्थ केवल शब्द बदलना नहीं बल्कि भाव, विचार और अर्थ को सुरक्षित रखते हुए दूसरी भाषा में व्यक्त करना है। किसी भी भाषा की अपनी संरचना, संस्कृति और अभिव्यक्ति की विशेषताएँ होती हैं इसलिए अनुवाद मूल रचना की ठीक वैसी प्रतिकृति नहीं हो सकता। अनुवादक भले ही अर्थ को यथासंभव समान रखने की कोशिश करे, फिर भी भाषा की सीमाएँ और सांस्कृतिक भिन्नताएँ इसे पूर्ण समान नहीं बनने देतीं। इसीलिए अनुवाद को समरूप नहीं बल्कि समतुल्य माना जाता है।

अनुवाद की प्रक्रिया कई चरणों में संपन्न होती है। सबसे पहले अनुवादक को मूल पाठ का गहन पठन और विश्लेषण करना होता है। इसके बाद भाषांतरण की प्रक्रिया में वह स्रोत भाषा की भावनाओं को लक्ष्य भाषा में रूपांतरित करता है। तत्पश्चात लक्ष्य भाषा की प्रकृति के अनुसार शब्द, वाक्य और शैली में आवश्यक समायोजन करता है। अंत में अनुवाद की मूल पाठ से तुलना कर उसकी सटीकता और समानता की जाँच की जाती है। अनुवाद का शैक्षिक और सैद्धांतिक पक्ष भी अत्यंत महत्वपूर्ण है।

अनुवाद एक बहुआयामी प्रक्रिया है जिसे समझने के लिए विभिन्न दृष्टिकोण अपनाए जाते हैं। कुछ विद्वान इसे मानविकी के क्षेत्र में रखते हैं और कला संकाय के अंतर्गत वर्गीकृत करते हैं क्योंकि अनुवाद में शैली, भाव और सृजनात्मकता का महत्वपूर्ण योगदान होता है। "कुछ विद्वान अनुवाद को मानविकी वर्ग में शामिल करते हैं तथा इसे कला संकाय के अन्तर्गत वर्गीकृत करते हैं।"[8] इसके विपरीत अन्य विद्वान अनुवाद को विज्ञान की श्रेणी में रखते हैं क्योंकि इसमें तकनीकी दक्षता, विधि और कुछ निर्धारित सिद्धांतों का पालन आवश्यक होता है। "अनुवाद को विज्ञान की श्रेणी में रखता है क्योंकि अनुवाद में प्रविधि व तकनीकी का प्रयोग होता है व इसके कुछ निर्धारित सिद्धांत भी होते हैं।"[9] अनुवाद में कला और विज्ञान दोनों के तत्व संतुलित रूप से विद्यमान हैं। कला के तत्व में शैली, भाव और सर्जनात्मकता शामिल होते हैं जो

ISSN–2278-5655

AMIERJ Aarhat Multidisciplinary International Education Research Journal

Volume–XIV, Special Issues – III (a) Nov – Dec, 2025

OPEN ACCESS Original Research Article

भावनाओं और अभिव्यक्ति की गहराई प्रदान करते हैं। वहीं विज्ञान के तत्व में तकनीकी पक्ष, नियम और सिद्धांतों का पालन आवश्यक होता है जिससे अनुवाद की सटीकता और तकनीकी शुद्धता सुनिश्चित होती है। इस प्रकार अनुवाद एक ऐसा क्षेत्र है जो मानविकी और तकनीकी ज्ञान दोनों का संगम प्रस्तुत करता है।

साधन है। यह पाठकों और विद्वानों को विभिन्न समाजों की साहित्यिक और सांस्कृतिक परंपराओं से परिचित कराता है। अनुवादित कविता के माध्यम से विभिन्न संस्कृतियों के मूल्यों, विश्वासों और कलात्मक अभिव्यक्तियों को समझा जा सकता है। तुलनात्मक कविता के अध्ययन में अनुवाद विद्वानों को विषय, रूप, रूपक और प्रतीकों जैसे काव्य तत्वों की तुलना करने और उनके अंतर को समझने में सक्षम बनाता है।

अनुवाद की प्रक्रिया कई चरणों में पूर्ण होती है। सबसे पहले अनुवादक मूल पाठ को ध्यानपूर्वक पढ़कर उसका अर्थ, भाव और सांस्कृतिक संदर्भ समझता है। इसके बाद कठिन शब्दों, मुहावरों और शैली का विश्लेषण किया जाता है। फिर पाठ का निहितार्थ समझकर भावानुवाद की तैयारी होती है जहाँ शब्दों से अधिक भाव की समानता पर बल दिया जाता है। इसके बाद सामग्री को लक्ष्य भाषा की व्याकरण, शब्दावली और शैली के अनुसार ढालकर स्वाभाविक रूप से लिखा जाता है। पुनर्लेखन के बाद संशोधन और परिशोधन द्वारा भाषा, भाव और शैली की त्रुटियाँ सुधारी जाती हैं। अंत में अनुवाद को अंतिम रूप दिया जाता है ताकि वह मूल के प्रति निष्ठावान और प्रभावपूर्ण लगे।

एक भाषा से दूसरी भाषा में कविताएँ प्रस्तुत करते समय अनुवादक को काव्य तकनीकों, शैलियों और संरचनाओं की जटिलताओं पर विशेष ध्यान देना आवश्यक होता है। इस प्रक्रिया में कविता के कलात्मक और तकनीकी आयाम उजागर होते हैं और तुलनात्मक अध्ययन अनुवाद के दौरान किए गए रचनात्मक विकल्पों की गहन समीक्षा की सुविधा देता है। साथ ही कविताओं के सांस्कृतिक और ऐतिहासिक संदर्भ को समझना अनिवार्य होता है। अक्सर अनुवादों में नोट्स और स्पष्टीकरण शामिल किए जाते हैं जो पाठकों और विद्वानों को कविता के संदर्भ और बारीकियों की गहन समझ प्रदान करते हैं।

गद्य का अनुवाद अपेक्षाकृत सरल होता है जबकि कविता का अनुवाद सबसे कठिन माना जाता है क्योंकि उसमें अर्थ के साथ भाव, लय और सौंदर्य का संतुलन बनाए रखना आवश्यक होता है। यह सबके बस की बात नहीं है। इसके लिए प्रतिभा, संवेदनशीलता और गहन समझ चाहिए। कविता का अनुवाद विशेष रूप से चुनौतीपूर्ण होता है क्योंकि कवि के सूक्ष्म, कोमल और भावनात्मक अनुभवों को पहचानकर उन्हें लक्ष्य भाषा में उतारना पड़ता है। शब्द-पद-स्थापना और भाव-संप्रेषण में संतुलन बनाए रखना अत्यंत आवश्यक है। यह कार्य जल्दबाजी या जबरदस्ती से नहीं बल्कि साधना और धैर्य से पूरा होता है। व्यावहारिक दृष्टि से अनुवाद एक भाषा के शब्दों या प्रतीकों को दूसरी भाषा में बदलने की प्रक्रिया है। यह एक भाषा के सार्थक अनुभव, विचार या संदेश को दूसरी भाषा में समान अर्थ और प्रभाव के साथ पहुँचाने का कार्य करता है। इसके माध्यम से स्रोत भाषा की विषयवस्तु, भाव, प्रयोग और उद्देश्य को लक्ष्य भाषा में समतुल्य रूप में व्यक्त किया जाता है। अनुवाद दो भाषाओं के बीच समान कार्य संपादन और समानार्थक सामग्री के प्रतिस्थापन की प्रक्रिया है जिसमें मूल

ISSN–2278-5655

AMIERJ Aarhat Multidisciplinary International Education Research Journal

Volume–XIV, Special Issues – III (a) Nov – Dec, 2025

OPEN ACCESS Original Research Article

भाषा के कथ्य या संदेश को दूसरी भाषा में स्थानांतरित कर सममूल्य अर्थ प्रदान किया जाता है।

अनुवाद विभिन्न भाषाई समुदायों की काव्य विरासत को संरक्षित और प्रसारित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। यह सुनिश्चित करता है कि महत्वपूर्ण कविताएँ समय के साथ लुप्त न हों और व्यापक पाठक वर्ग द्वारा उनका अध्ययन और आनंद लिया जा सके। तुलनात्मक कविता यह जांच भी करती है कि विभिन्न सांस्कृतिक संदर्भों में कविताओं को कैसे ग्रहण और व्याख्यायित किया जाता है। अनुवादित संस्करण यह जानकारी देते हैं कि कविताओं को अन्य भाषाओं में किस प्रकार अनुकूलित, सराहा या पुनर्कल्पित किया गया। 'मैकबेथ' के पद्य अनुवाद की प्रवेशिका में बच्चन ने लिखा है- "इसका अनुवाद करते समय मैंने चार विशेष लक्ष्य सामने रखे थे, अनुवाद छाया अनुवाद न होकर अभिनव हो, शेक्सपियर की कविता की रक्षा की जाए, नाटक सामान्य शिक्षित जनता के सामने खेला जा सके और चरम लक्ष्य यह कि अनुवाद अनुवाद न मालूम हो।"[10] अनुवाद केवल भाषाई कार्य नहीं, बल्कि एक संवेदनशील, सर्जनात्मक और बहुआयामी प्रक्रिया है, जो भाषा, संस्कृति और कला के समन्वय से पाठक तक पूर्ण और समतुल्य अनुभव पहुँचाने का माध्यम है।

कविता का अनुवाद एक रचनात्मक प्रयास है, क्योंकि अनुवादक को लक्ष्य भाषा में ऐसे समकक्ष खोजने होते हैं जो मूल के सार और सौंदर्य को पकड़ सकें। अनुवाद पर अपने विचार प्रकट करते हुए मिश्रबंधु का कथन है "अनुवादों का निर्माण ऐसा होना चाहिए कि वह मूल ग्रंथ की भाषा न जानने वाले पाठक को भी रुचिकर लगे, और यह तभी संभव है जब कुछ न कुछ स्वच्छंदता से काम लिया जाए।"[11] इसका रचनात्मक पहलू कविता की समृद्धि में वृद्धि करता है। कविता दुनिया के विभिन्न हिस्सों से कविता की खोज करती है और काव्य परंपराओं का वैश्विक दृष्टिकोण प्रस्तुत करती है। अनुवाद अंतरराष्ट्रीय कविता के अध्ययन और काव्य रूपों व विषयों में समानताओं और अंतरों की जाँच को सक्षम करके इस परिप्रेक्ष्य को व्यापक बनाता है। यह एक पुल के रूप में कार्य करता है जो अंतरसांस्कृतिक समझ और कविता के तुलनात्मक विश्लेषण की सुविधा प्रदान करता है।

कविता का स्वभाव, प्रभाव और आंतरिक ताप पाठक के मन और मस्तिष्क पर गहरा असर डालते हैं। यह भावनात्मक, मानसिक, सौंदर्यात्मक और सामाजिक स्तरों पर अनुभव की जाती है। अनुवाद करते समय मूल कविता की गहरी समझ आवश्यक है ताकि उसके भाव, रस, प्रतीक और सांस्कृतिक संदर्भ स्पष्ट रहें। अनुवाद शब्दों का केवल रूपांतरण नहीं, बल्कि भाव-केन्द्रित होना चाहिए, ताकि कविता की आत्मा सुरक्षित रहे। लय, छंद, अलंकार और बिंबों का प्रभाव लक्ष्य भाषा में भी बना रहना चाहिए। भाषा सरल, स्वाभाविक और भावपूर्ण होनी चाहिए, ताकि कविता का सौंदर्य और रस पाठक तक पहुँच सके।

भारत में अनुवाद की परंपरा अत्यंत प्राचीन है। यह संस्कृत, पालि, प्राकृत और अपभ्रंश भाषाओं से होती आधुनिक कल तक पहुँची है। भारतीय साहित्य में अनुवाद ने हमेशा महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। अनुवाद के माध्यम से विभिन्न भाषाओं और संस्कृतियों के साहित्यिक आदान-प्रदान ने भारतीय भाषाओं को समृद्ध किया है। कालिदास के **'कुमारसंभवम्'** और **'रघुवंशम्'** जैसे काव्यों का हिंदी अनुवाद हुआ है।

ISSN–2278-5655

AMIERJ Aarhat Multidisciplinary International Education Research Journal

Volume–XIV, Special Issues – III (a) Nov – Dec, 2025

OPEN ACCESS Original Research Article

महावीर प्रसाद द्विवेदी ने एक ओर संस्कृत के ग्रंथ **'वैराग्य शतक', 'गीत गोविंद', 'श्रृंगार शतक', 'महिमा स्तोत्र', 'गंगा लहरी', 'ऋतु संहार'** आदि का हिंदी अनुवाद किया तो दूसरी ओर **बायरन की 'ब्राइडल नाइट'** का भी हिंदी रूपांतर किया। संस्कृत के अनेक नाटकों और काव्यों के सफल हिंदी अनुवाद ने भारतीय काव्य-परंपरा को नई दिशा दी। मराठी और हिंदी काव्य-अनुवाद परंपरा अत्यंत समृद्ध रही है। संस्कृत के अनेक काव्यों का हिंदी में अनुवाद किया गया है। गीता, महाभारत, भागवत तथा पंचतंत्र की कहानियों का भी कई भाषाओं में अनुवाद हुआ है। मध्यकाल में अनुवाद की यह परंपरा और भी सशक्त रूप में दिखाई दी। विद्यापति, सूरदास, तुलसीदास और बिहारी जैसे कवियों के काव्यों का अनुवाद हिंदी में किया गया। अंग्रेज़ी के प्रसिद्ध कवियों- शेक्सपियर, मिल्टन, पोप, सैमुअल जॉनसन, गोल्डस्मिथ, विलियम वर्ड्सवर्थ, बायरन, शेली, कीट्स, टेनिसन और लॉन्गफेलो की कविताओं का भी हिंदी में अनुवाद किया गया। हिंदी में संस्कृत, अंग्रेज़ी, बांग्ला, मराठी और फारसी भाषाओं के श्रेष्ठ काव्यों का अनुवाद हुआ है, जिससे हिंदी साहित्य की काव्य परंपरा समृद्ध और व्यापक बनी है।

श्रीधर पाठक, रामचंद्र शुक्ल, महावीर प्रसाद द्विवेदी जैसे कवियों ने अनुवाद कार्य में विशेष योगदान दिया। रामचंद्र शुक्ल ने अर्नोल्ड की महान कृति **'लाइट ऑफ एशिया'** का हिंदी में **'बुद्धचरित'** शीर्षक से अनुवाद किया। रामचंद्र शुक्ल 'बुद्धचरित्र' की भूमिका में लिखते हैं- "यद्यपि ढंग ऐसा रखा गया है कि इसका ग्रहण एक स्वतंत्र हिंदी काव्य के रूप में हो सके।"[12] जितेंद्र कुमार ने महाकवि **किट्स** की कविताओं का अनुवाद **'महाकवि किट्स का काव्यलोक'** नाम से तथा वर्ड्सवर्थ की कविताओं का अनुवाद **'महाकवि वर्ड्सवर्थ का काव्यलोक'** शीर्षक से किया। फारसी के प्रसिद्ध कवि **सादी** की कविताओं का भी हिंदी में अनुवाद किया गया है। इसी प्रकार, बांग्ला भाषा के कवियों- माइकल मधुसूदन दत्त और रवींद्रनाथ ठाकुर- की रचनाओं का भी हिंदी में अनुवाद हुआ है। ठाकुर की **'गीतांजलि'** का हिंदी रूपांतरण विशेष रूप से प्रसिद्ध हुआ। मराठी कवियों जैसे देशपांडे और मोरोपंत की कविताएँ भी हिंदी में अनुदित की गई हैं।

अनुवाद कार्य में अनेक कवि और विद्वान अग्रणी रहे हैं। जगमोहन सिंह ने कालिदास के ऋतुसंहार और विक्रमोर्वशीयम् का ब्रजभाषा में अनुवाद किया। श्रीधर पाठक ने भागवत के दशम स्कंध के 31वें अध्याय का अनुवाद 'श्री गोपीका गीत' शीर्षक से प्रस्तुत किया। उन्होंने गोल्डस्मिथ की कृतियों 'टेवलर', 'डिजर्टिड विलेज' और 'हर्मिट' का क्रमशः 'शांत पथिक', 'उजाड़ ग्राम' तथा 'एकांतवासी योगी' शीर्षकों से अनुवाद किया गया है। जगन्नाथ रत्नाकर ने पोप की प्रसिद्ध कविता 'एसे ऑन कृतिसिज़्म' का हिंदी में अनुवाद किया है। मैथिलीशरण गुप्त ने 'मेघनादवध' तथा 'उमर खैय्याम की रुबाइयाँ' का हिंदी अनुवाद किया है। मैथिलीशरण गुप्त 'मेघनादवध' के निवेदन में लिखते हैं- "जहाँ तक हो सका है, मूल के भाव की रक्षा करने की कोशिश की गई है परंतु अज्ञानता के कारण अनेक त्रुटियाँ रह गई होंगी। संभव है, कहीं-कहीं भाव भी भंग हो गए हों।"[13] देवीप्रसाद 'पूर्ण' ने 'मेघदूत' तथा 'धराधरधवन' का हिंदी अनुवाद किया है। राष्ट्रकवि दिनकर ने 'सीपी और शंख' और 'धूप-छाँव' जैसी कृतियों का अनुवाद किया है। दिनकर ने 'धूप छाँह' के प्राक्कथन में लिखा है- "अनुवाद प्रायः सर्वत्र ही स्वच्छंद हुआ है और

ISSN–2278-5655

AMIERJ Aarhat Multidisciplinary International Education Research Journal

Volume–XIV, Special Issues – III (a) Nov – Dec, 2025

OPEN ACCESS Original Research Article

अधिकांश रचनाओं को 'अनुकरण' कहना ही अधिक उपयुक्त होगा।"[14] हरिवंशराय बच्चन ने 'उमर खैय्याम की रुबाइयाँ' तथा शेक्सपियर की 'मैकबेथ'तथा 'हमलेट' का भावपूर्ण अनुवाद हिंदी में प्रस्तुत किया। हरिवंशराय बच्चन 'खय्याम की मधुशाला' की भूमिका में लिखते हैं- "अपने अनुवाद के विषय में मुझे केवल यह कहना है कि मैं शब्दानुवाद करने के फेर में नहीं पड़ा, भावों को ही प्रधानता दी है।"[15] राजेन्द्र द्विवेदी ने 'शेक्सपियर के सोनेट्स' शीर्षक से हिंदी अनुवाद किया है। कविता अनुवादक के लिए चुनौतीपूर्ण होती है क्योंकि इसमें केवल भाषा ही नहीं बल्कि भाव, रस, लय, छंद, सांस्कृतिक संदर्भ और सौंदर्य को भी दूसरी भाषा में स्थानांतरित करना होता है। अनुवादक को कवि की भावभूमि और संवेदना को समझकर, लक्ष्य भाषा में नई कविता जैसी सर्जनात्मक रचना करनी होती है। अनुवाद करते समय मूल कविता की प्रकृति, रस और प्रभाव बने रहने चाहिए, लय और सौंदर्य अक्षुण्ण रहना चाहिए, सांस्कृतिक संकेत स्पष्ट होने चाहिए और भाषा सहज व प्रभावशाली होनी चाहिए। कविता का अनुवाद केवल भाषा का परिवर्तन नहीं बल्कि उसकी आत्मा, भाव और सौंदर्य का पुनर्जन्म है। सही अनुवाद कविता को नई भाषा में जीवन और प्रभाव प्रदान करता है जिससे वह विश्व-साहित्य का हिस्सा बन जाती है और पाठकों पर गहरा प्रभाव डालती है।

काव्यनुवाद में अनुवादक की भूमिका महत्वपूर्ण होती है। एक सफल अनुवादक के लिए अनेक गुण आवश्यक हैं। उसे स्रोत और लक्ष्य दोनों भाषाओं पर पूर्ण अधिकार होना चाहिए। भाषिक, सांस्कृतिक और सामाजिक समझ, विषय का समुचित ज्ञान, पारिभाषिक शब्दावली का अभ्यास तथा शब्दकोशों का दक्ष प्रयोग उसके लिए अनिवार्य हैं। इसके साथ ही मूल के प्रति निष्ठा, साहित्यिक रुचि, सौंदर्यबोध, विवेकशीलता, अनुभव और निरंतर अभ्यास भी आवश्यक हैं। "प्रायः मूल पद्य का ही पद्य में अनुवाद किया जाता है किंतु मूल गद्य का भी पद्य में अनुवाद हो सकता है और ऐसे अनेक अनुवाद विभिन्न भाषाओं में हुए हैं। इसे छंदानुवाद या छंदबद्ध अनुवाद भी कहते हैं।"[16] अनुवादक में लोककल्याण की भावना, लक्ष्य समूह की जानकारी तथा लिप्यांकन और लिप्यंतरण में दक्षता भी होनी चाहिए।

काव्यानुवाद का क्षेत्र अत्यंत सृजनात्मक और बहुआयामी है। अनुवाद केवल शब्दों का परिवर्तन नहीं, बल्कि मूल काव्य की रचनात्मकता, भाव और सौंदर्य को नई भाषा में पुनः प्रस्तुत करने की प्रक्रिया है। इसमें मूल पद्य का अनुवाद प्रायः किया जाता है, किंतु गद्य का अनुवाद भी संभव है। ऐसे अनुवादों को छंदानुवाद या छंदबद्ध अनुवाद कहा जाता है। "इसमें जो छंद होता है वह तुक-मात्रा आदि इन बंधनों से मुक्त होता है जो पद्यानुवाद के लिए आवश्यक हैं।"[17] अधिकांश अनुवाद मूल पद्य से किए जाते हैं लेकिन गद्य का भी अनुवाद संभव है। इस प्रकार के अनुवाद में केवल शब्दों का परिवर्तन नहीं होता बल्कि मूल काव्य की रचनात्मकता और सौंदर्य का ध्यान रखते हुए उसे नई भाषा में प्रस्तुत किया जाता है। के अनुसार, मुक्त छंदानुवाद में कविता की तुक, मात्रा या पारंपरिक छन्दबद्धता की सीमाओं से स्वतंत्र रूप से भाव और अर्थ प्रकट किए जाते हैं। शेक्सपियर के कई हिंदी अनुवाद इसके उत्कृष्ट उदाहरण हैं। सामान्यतः जब मूल सामग्री मुक्त छंद में होती है, तभी इसका मुक्त छंदानुवाद किया जाता है, लेकिन यह सिद्धांत गद्य या पद्य दोनों पर लागू हो सकता है। "यह अनुवाद गद्य,

ISSN–2278-5655

AMIERJ Aarhat Multidisciplinary International Education Research Journal

Volume–XIV, Special Issues – III (a) Nov – Dec, 2025

OPEN ACCESS Original Research Article

पद्य या मुक्त छंद किसी में भी हो सकता है। यों प्रायः काव्य का अनुवाद पद्य का मुक्त छंद में ही किया जाता है।"[18] अतः काव्यानुवाद एक ऐसा सृजनात्मक क्षेत्र है जिसमें भाषा, छंद और शैली के पारंपरिक बंधनों से स्वतंत्र होकर भाव और अर्थ का उत्कृष्ट संचार संभव होता है। यह केवल भाषांतरण नहीं बल्कि मूल काव्य के सौंदर्य और रचनात्मकता का संवेदनशील पुनः निर्माण है।

साहित्यकार और अनुवादक दोनों के कार्य क्षेत्र भिन्न होते हैं। कुछ लोग रचना में सफल होते हैं पर अनुवाद में असफल, कुछ अनुवाद में सफल पर रचना में असफल, और कुछ दोनों में सफल होते हैं। दोनों के लिए बुद्धि, कर्तव्य और रुचि अलग-अलग हैं किंतु दोनों एक-दूसरे पर निर्भर भी हैं। उचित तालमेल और साधना के आधार पर कोई भी लेखक अच्छा अनुवादक बन सकता है। कुसुमाग्रज और मंगेश पाडगांवकर ने अंग्रेजी कविताओं का मराठी में अत्यंत सफल अनुवाद किया। इससे स्पष्ट होता है कि एक सच्चा कवि उत्तम अनुवादक भी बन सकता है, यदि उसमें भाषिक और भावात्मक दक्षता हो। इतालवी लेखकों का मत है कि 'सुंदर स्त्रियाँ वफादार नहीं होती और वफादार स्त्रियाँ सुंदर नहीं होती।' अर्थात् अनुवाद यदि सुंदर होगा तो मूलनिष्ठ नहीं होगा और मूलनिष्ठ होगा तो सुंदर नहीं होगा।

काव्यानुवाद में अनुवादक की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण और रचनात्मक होती है। वह केवल शब्दों को दूसरी भाषा में बदलता नहीं है बल्कि कविता के भाव, रस, लय, अलंकार और सौंदर्य को भी उसी प्रभाव के साथ पाठकों तक पहुँचाने का प्रयास करता है। महावीर प्रसाद द्विवेदी जी 'कुमारसंभवम्' की भूमिका में उन्होंने लिखा है- "भाव ही प्रधान है, शब्द स्थापना गौण। शब्दों का प्रयोग तो केवल भाव प्रकट करने के लिए होता है। अतः भाव प्रदर्शन करने वाला अनुवाद ही उत्तम अनुवाद है।"[19] अनुवादक इन्हें यथासंभव लक्ष्य भाषा में जीवंत बनाए रखने का प्रयास करता है ताकि संगीतात्मक और सौंदर्यात्मक प्रभाव बना रहे। साथ ही सांस्कृतिक भिन्नताओं का ध्यान रखना भी अनुवादक की जिम्मेदारी है। यदि कविता में प्रयुक्त प्रतीक, बिंब या संदर्भ दूसरी भाषा के पाठकों के लिए स्पष्ट न हों तो अनुवादक उन्हें उपयुक्त रूप में अनुकूलित करता है। शब्द चयन में भी सावधानी रखनी पड़ती है ताकि अर्थ, ध्वनि और भावनात्मक प्रभाव सही बना रहे।अनुवादक का मुख्य उद्देश्य यह होता है कि पाठक वही संवेदना अनुभव करे जो मूल कविता में विद्यमान है। इसके लिए सबसे पहले वह मूल कविता का भाव, उद्देश्य और गहन अर्थ समझता है। चाहे कविता का रस श्रृंगार, करुणा, वीरता या शांति का हो, अनुवादक सुनिश्चित करता है कि अनुवादित कविता में वह उतना ही प्रभावशाली रूप से महसूस हो।

अनुवादक का एक और महत्वपूर्ण कर्तव्य है कि वह कवि की मौलिकता और रचनात्मकता को सुरक्षित रखे। वह अपनी कल्पना या शैली थोपे बिना मूल भावनाओं को संरक्षित करता है। यदि अनुवाद बहुत शाब्दिक हो तो कविता का रस खो जाता है और यदि बहुत स्वतंत्र हो तो मूल कविता से दूर चला जाता है। महावीर प्रसाद द्विवेदी जी के अनुवाद संबंधी विचारों को भोलानाथ तिवारी ने अपनी पुस्तक में उद्धृत करते हुए लिखा है कि "किसी पुस्तक का अनुवाद आरंभ करने से पहले अनुवादक को अपनी योग्यता का विचार कर लेना नितांत आवश्यक है।"[20] काव्यानुवाद में अनुवादक केवल भाषा का माध्यम नहीं बल्कि कवि और पाठक के बीच सेतु होता है।

ISSN–2278-5655

AMIERJ Aarhat Multidisciplinary International Education Research Journal

Volume–XIV, Special Issues – III (a) Nov – Dec, 2025

OPEN ACCESS Original Research Article

उसकी संवेदनशीलता और सृजनात्मकता ही अनुवाद को सफल बनाती है और कविता की आत्मा, रस और सौंदर्य को दूसरी भाषा में जीवंत करती है।

कविता का अनुवाद करना अत्यंत कठिन कार्य होता है क्योंकि इसमें केवल शब्द बदलना ही नहीं बल्कि कविता के भाव, रस, लय और सौंदर्य को भी दूसरी भाषा में सही और प्रभावपूर्ण रूप से प्रस्तुत करना होता है। सबसे बड़ी चुनौती भावानुवाद में आती है क्योंकि कवि के भाव अक्सर बहुत सूक्ष्म, गहरे और संकेतपूर्ण होते हैं। कई बार शब्दशः अनुवाद करने से ये भाव खो जाते हैं और कविता का असर कम हो जाता है। कविता की लय और छंद भी अत्यंत महत्वपूर्ण होते हैं। उसकी तुक, लय, अलंकार और छंद कविता की आत्मा होते हैं लेकिन इन्हें दूसरी भाषा में उसी रूप में बनाए रखना अक्सर कठिन होता है विशेषकर जब दोनों भाषाओं की छंद-प्रणाली अलग हो। इससे कविता का संगीतात्मक सौंदर्य कम हो सकता है। सांस्कृतिक भिन्नताएँ भी अनुवाद में बड़ी चुनौती पेश करती हैं। संस्कृत कवि श्रीधर पाठक ने 'उज्जैन ग्राम की विज्ञप्ति' में लिखा है- "एक देश के काव्य का, जिसमें वहाँ की विशेष बातें होती हैं, दूसरे देश की भाषा के पद्य में अनुवाद कर पूर्ण रस दिखा देना यदि संभव नहीं तो अत्यंत कठिन कार्य है।"[21] कविता में प्रयुक्त प्रतीक, बिंब, लोकजीवन से जुड़े प्रसंग या पौराणिक-ऐतिहासिक संदर्भ नई भाषा के पाठकों के लिए सहज नहीं होते। अनुवादक को इन्हें समझाना या समकक्ष बिंब खोजने पड़ते हैं। शब्द चयन, अलंकार और ध्वनि-सौंदर्य भी अनुवाद की प्रक्रिया में कठिनाई उत्पन्न करते हैं।

कविता में प्रत्येक शब्द महत्वपूर्ण होता है और अक्सर कई भाव और अर्थ एक साथ लिए होता है। अनुप्रास, यमक, रूपक, उपमा जैसे अलंकार और ध्वनि-सौंदर्य को दूसरी भाषा में उतारना चुनौतीपूर्ण होता है। अनुवादक को कवि की मौलिकता और शैली को भी सुरक्षित रखना आवश्यक है। भाषा की संरचना और मुहावरों की सीमाएँ कभी-कभी अर्थ का सटीक अनुवाद नहीं होने देतीं। इसलिए अनुवाद ऐसा होना चाहिए कि पाठक को सहज, भावपूर्ण और काव्यात्मक अनुभव प्राप्त हो। यदि अनुवाद बहुत शाब्दिक हो, तो कविता का रस खो जाता है; और यदि स्वतंत्रता अधिक हो तो अनुवाद मूल कविता से दूर चला जाता है। कविता का अनुवाद एक संतुलित और सूक्ष्म कला है, जिसमें भाव, लय, अलंकार, संस्कृति और भाषा का सही तालमेल बनाए रखना अनिवार्य है।

समारोप:

कविता का अनुवाद एक जटिल और सूक्ष्म प्रक्रिया है जिसमें केवल शब्दों का परिवर्तन नहीं बल्कि कविता के भाव, रस, लय, छंद, अलंकार और सांस्कृतिक संदर्भों का पुनः सृजन शामिल होता है। यह कार्य केवल भाषाई दक्षता की मांग नहीं करता बल्कि कला, शैली और तकनीकी नियमों का संतुलन भी आवश्यक है। अनुवादक का उद्देश्य मूल कविता की मौलिकता, सौंदर्य और भावनात्मक प्रभाव को बनाए रखते हुए इसे दूसरी भाषा में सहज और प्रभावपूर्ण रूप में प्रस्तुत करना होता है। भावानुवाद इस प्रक्रिया की सबसे बड़ी चुनौती है क्योंकि कवि के सूक्ष्म भाव शब्दशः अनुवाद से खो सकते हैं। लय, तुक, छंद और अलंकार को बनाए रखना भी कठिन होता है विशेषकर जब स्रोत और लक्ष्य भाषा की छंद-प्रणाली भिन्न हो। सांस्कृतिक भिन्नताएँ, प्रतीक, बिंब और ऐतिहासिक संदर्भ अनुवाद को और चुनौतीपूर्ण बनाते हैं। ऐसे में अनुवादक

ISSN–2278-5655

AMIERJ Aarhat Multidisciplinary International Education Research Journal

Volume–XIV, Special Issues – III (a) Nov – Dec, 2025

OPEN ACCESS Original Research Article

को उपयुक्त शब्द चयन, ध्वनि-सौंदर्य और शैली का संतुलन बनाए रखना आवश्यक होता है। कविता और अनुवाद एक-दूसरे के पूरक हैं। जहाँ कविता पाठक को रस, भाव और सौंदर्य प्रदान करती है वहीं अनुवाद इसे व्यापक पाठक वर्ग तक पहुँचाता है। अनुवाद तुलनात्मक अध्ययन में सहायक होता है विभिन्न काव्य परंपराओं के विषय, रूपक, प्रतीक और शैली की तुलना संभव बनाता है और मूल कविता की मौलिकता सुरक्षित रखता है। सफल अनुवादक बनने के लिए भाषाई दक्षता, सांस्कृतिक समझ, साहित्यिक अनुभव और सृजनात्मक संवेदनशीलता की आवश्यक है। अनुवाद केवल शब्दों का परिवर्तन नहीं बल्कि कविता के भाव, रस, लय, अलंकार, सांस्कृतिक संदर्भ और सौंदर्य का संतुलित और समग्र संवर्धन भी है। यह एक सृजनात्मक कला है जो मूल कविता के प्रभाव और सौंदर्य को पाठक तक जीवंत रूप में पहुँचाती है।

संदर्भ :

1. *तिवारी, भोलानाथ , 'भाषा और अनुवाद: सिद्धांत एवं प्रक्रिया', किताबघर प्रकाशन, नयी दिल्ली, 2019, पृ. 61*
2. *वही, पृ. 63*
3. *वही, पृ. 63*
4. *वही, पृ. 61*
5. *वही, पृ. 64*
6. *वही, पृ. 61*
7. *वही, पृ. 59*
8. *वही, पृ. 65*
9. *वही, पृ. 65*
10. *वही, पृ. 49*
11. *वही, पृ. 46*
12. *वही, पृ. 47*
13. *वही, पृ. 46*
14. *वही, पृ. 49*
15. *वही, पृ. 49*
16. *वही, पृ. 69*
17. *वही, पृ. 69*
18. *वही, पृ. 69*
19. *वही, पृ. 44*
20. *वही, पृ. 44*
21. *वही, पृ. 45*

Cite This Article:

***प्रो. डॉ. केदारे अ.** (2025). कविता और अनुवाद.* **In Aarhat Multidisciplinary International Education Research Journal**: Vol. XIV (Number VI, pp. 15–24).

ISSN–2278-5655

AMIERJ Aarhat Multidisciplinary International Education Research Journal

Volume–XIV, Special Issues – III (a) Nov – Dec, 2025

OPEN ACCESS Original Research Article

हिंदी अनुवाद की वैश्विक संभावनाएँ (डिजिटल अनुवाद के विशेष संदर्भ में)

** प्रो.(डॉ.) कामायनी गजानन सुर्वे*

** प्रोफेसर एवं अध्यक्ष, हिंदी विभाग, महात्मा फुले महाविद्यालय, पिंपरी, पुणे.*

शोध सार :

हिंदी भारत की राजभाषा के साथ-साथ विश्वभाषा भी है,जो आज डिजिटल मंच पर प्रचूर मात्रा में विस्तारित हो रही है। भाषा को प्रौद्योगिकी के साथ जोड़ना समयानुकूल है।वैश्वीकरण के इस दौर में इंटरनेट, मोबाइल एप्लिकेशन, और सोशल मीडिया ने भाषाई सीमाओं को लाँघा है। डिजिटल अनुवाद समय की माँग है। डिजिटल युग में अनुवाद कार्य कृत्रिम बुद्धिमत्ता, मशीन लर्निंग और प्राकृतिक भाषा प्रसंस्करण पर आधारित सॉफ़्टवेयर प्रणालियाँ करने लगी हैं। आज अनुवाद केवल अनुप्रयुक्त भाषाविज्ञान का नहीं, अपितु डेटा विज्ञान का भी अंग बन चुका है। प्रस्तुत शोध-निबंध में हिंदी अनुवाद के वैश्विक विस्तार, डिजिटल तकनीक में प्राकृतिक भाषा प्रसंस्करण की भूमिका एवं वर्तमान चुनौतियों का विश्लेषण किया गया है। प्रस्तुत अध्ययन इस बात की ओर संकेत करता है कि डिजिटल क्रांति के इस युग में हिंदी अनुवाद का दायरा शिक्षा,वाणिज्य,बैंकिंग, मनोरंजन, मीडिया के क्षेत्र में सांस्कृतिक डेटा प्रशिक्षण,बृहत्तम कॉर्पस निर्माण,भाव विश्लेषण से युक्त डीप मशीन लर्निंग जैसी संभावनाओं के साथ व्यापक हो रहा है। डिजिटल युग में अनुवाद केवल भाव और शैली का अंतरण नहीं, अपितु वह डेटा-संचालित, उपयोगकर्ता-केंद्रित और सामासिक संस्कृति का संवाहक बन गया है।

बीज शब्दावली - *हिंदी अनुवाद, डिजिटल अनुवाद, वैश्विक संभावनाएँ, कृत्रिम बुद्धिमत्ता, कॉर्पस*

Copyright © 2025 The Author(s): This is an open-access article distributed under the terms of the Creative Commons Attribution 4.0 International License (CC BY-NC 4.0) which permits unrestricted use, distribution, and reproduction in any medium for non-commercial use provided the original author and source are credited.

प्रस्तावना (Introduction):

स्रोतभाषा में अभिव्यक्त विचार लक्ष्यभाषा में अर्थ और शैली की समतुल्यता के तहत पुनःकथित करना अनुवाद है। जब कोई मनुष्य अनुवाद करता है तब उसका इन दोनों भाषाओं पर अधिकार होना अत्यंत आवश्यक है। तभी वह बेहतरीन ढंग से अनुवाद कर पाएगा। परंतु डिजिटल अनुवाद की स्थिति ऐसी नहीं है क्योंकि यहाँ मशीन एवं सॉफ्टवेयर से काम चलाया जाता है। डिजिटल अनुवाद की सहायता से सामग्री पाने वाले व्यक्ति का दोनों भाषाओं पर अधिकार न हो तो भी अनुवाद की स्थिति यहाँ संभव है क्योंकि यह अनुवाद या तो गुगल ट्रांसलेट या तो अन्य सॉफ्टवेयर की सहायता से करके उपलब्ध होता है। परंतु इसे समतुल्य बनाने के लिए दोनों भाषाओं पर अधिकार होने वाले मनुष्य की आवश्यकता है।इक्कीसवीं शताब्दी की डिजिटल क्रांति ने विश्व संवाद की रूपरेखा बदल दी है। इस परिवर्तन ने अनुवाद को पारंपरिक साहित्यिक प्रक्रिया से आगे बढ़ाकर एक ऐसी तकनीकी-

ISSN–2278-5655

AMIERJ Aarhat Multidisciplinary International Education Research Journal

Volume–XIV, Special Issues – III (a) Nov – Dec, 2025

OPEN ACCESS Original Research Article

संचालित प्रणाली के रूप में स्थापित किया है जिसमें डेटा, एल्गोरिद्म, सांस्कृतिक संदर्भ और उपयोगकर्ता के अनुभव समान रूप से महत्त्वपूर्ण माने जाते हैं। Ethnologue (2024) के अनुसार हिंदी आज विश्व में तीसरे स्थान पर है। विश्व के 609 मिलियन लोग हिंदी बोल सकते हैं। यह स्थिति हिंदी को डिजिटल अनुवाद प्रणालियों में एक निर्णायक स्थान प्रदान करती है।

उद्देश्य (Objectives):

प्रस्तुत शोध-निबंध के उद्देश्य निम्नलिखित हैं—

1. डिजिटल अनुवाद के तहत हिंदी भाषा के वैश्विक विस्तार का विश्लेषण करना।
2. हिंदी अनुवाद में उपयोग होने वाली प्रमुख डिजिटल तकनीकों का अध्ययन करना।
3. वर्तमान अनुवाद-संरचनाओं में मौजूद तकनीकी एवं सांस्कृतिक चुनौतियों की पहचान करना।
4. डिजिटल युग में हिंदी अनुवाद की विविध संभावनाओं को प्रस्तुत करना।

शोध-सर्वेक्षण (Review of Literature) :

डिजिटल अनुवाद के बारे में संपन्न पूर्ववर्ति शोध-कार्य इस प्रकार हैं-

1. मीना, राम लखन. प्रयोजनमूलक हिन्दी के विकास में मशीनी अनुवाद की भूमिका. भाषिकी, ISSN 2454-4388, 2017
2. शेंद्रे , अमरपाल . मशीनी अनुवाद विधियाँ एवं विकास. ResearchGate, Mar. 2025.
3. सुप्रभ , सुयश . मशीनी अनुवाद : तकनीकी और वैचारिक दृष्टिकोण. Apnimaati, 29 Sept. 2024.
4. तिवारी , शिवम. मशीनी अनुवाद का ऐतिहासिक अध्ययन और संभावनाएँ. Apnimaati, 30 Sept. 2024.

उपर्युक्त शोधालेखों में मशीनी अनुवाद के तकनीकी पक्ष पर बल दिया गया है ।हमारे अनुसंधान की वैचारिकी डिजिटल अनुवाद के तकनीकी पक्ष के साथ ही साथ अनुप्रयोत्मक पक्ष एवं संभावनाओं पर अधिक बल देती है।

अनुसंधान पद्धति (Research Methodology):

प्रस्तुत शोध-निबंध हेतु अनुसंधान की वर्णनात्मक एवं विश्लेषणात्मक पद्धति अपनाई गई है। डिजिटल अनुवाद तकनीक का अध्ययन यहाँ किया गया है।तकनीकी-आधारित अनुवाद संसाधनो (google translate,Microsoft translate,DeepL) की कार्यप्रणाली का तुलनात्मक अध्ययन किया गया है।

चर्चा एवं विश्लेषण (Discussion and Analysis):

1. डिजिटल अनुवाद की अवधारणा :

डिजिटल अनुवाद का अर्थ है —स्रोत भाषा पाठ, भाषण या दृश्य सामग्री को ए.आई. संचालित डिजिटल उपकरणों,सॉफ़्टवेयर की सहायता से लक्ष्यभाषा पाठ में अंतरित करना। मशीन अनुवाद (Machine Translation – MT) जैसी स्वचालित प्रणाली,कृत्रिम बुद्धिमत्ता आधारित अनुवाद (AI Translation), मशीनी अनुवाद में मानव द्वारा संपादन की प्रक्रिया, Google Translate, DeepL, Microsoft Translator जैसे डिजिटल ऐप्स और प्लेटफ़ॉर्म डिजिटल अनुवाद के विविध उपकरण हैं। शीघ्र और सुलभ अनुवाद प्रक्रिया, बहुभाषिक संवाद के अवसर,शिक्षा, व्यवसाय, पर्यटन जैसे विविध क्षेत्रों में अंतरराष्ट्रीय सहयोग डिजिटल अनुवाद से

ISSN–2278-5655

AMIERJ Aarhat Multidisciplinary International Education Research Journal

Volume–XIV, Special Issues – III (a) Nov – Dec, 2025

OPEN ACCESS Original Research Article

प्राप्त होने वाले कुछ लाभ हैं । परंतु साहित्यिक अनुवाद,भावानुवाद,डेटाबेस उपलब्ध न होने वाली भाषाएँ,सॉफ्टवेयर की सीमाएँ डिजिटल अनुवाद को चुनौती देने वाले तत्व हैं । भारत में डिजिटल अनुवाद को बढ़ावा देने हेतु भाषिणी परियोजना ,भारतीय भाषा प्रौद्योगिकी केंद्र,आई.आई.टी.खड्गपुर,आई.आई.टी हैद्राबाद द्वारा संचालित परियोजनाएँ कार्यान्वित हैं ।

2. डिजिटल युग में हिंदी का वैश्विक विस्तार:

औपनिवेशिक काल में गिरमिटिया मजदूरों ने फ़िजी, मॉरीशस, दक्षिण आफ्रीका, त्रिनिदाद, सूरीनाम, गुयाना आदि देशों में अपनी बोली-भाषा हिंदी को (मुख्यतः भोजपुरी, अवधी, मैथिली, और खड़ी बोली हिंदी) विश्व स्तर पर जीवित रखा। उत्तर औपनिवेशिक काल में जापान, अमरीका,कैनडा,रूस,यू.के.,यू.ए.इ जैसे स्थानों पर प्रवासी भारतीयों की शिक्षा, व्यापार और नौकरी के अवसरों के कारण हिंदी विश्व स्तर पर अधिक विस्तारित हुई। हिंदी विश्वभाषा बनने के कारण साहित्य,शिक्षा,वाणिज्य एवं व्यापार,सांस्कृतिक आदान प्रदान, जनसंचार, विज्ञान, सामाजभाषा विज्ञान,सरकारी एवं गैरसरकारी संगठन, जैसे विविध क्षेत्रों में दुनिया की अन्यान्य भाषाओं से हिंदी में और हिंदी से दुनिया की अन्यान्य भाषाओं में अनुवाद की आवश्यकता महसूस होने लगी । यह अनुवाद तेज गति से संपन्न कराने के लिए डिजिटल अनुवाद व्यवस्था महसूस हुई । वर्तमान मशीन युग में तुरंत ही एक भाषा में कही गयी बात दूसरी भाषा में समझना आवश्यक लगा । यही कारण है कि डिजिटल अनुवाद का आरंभ हुआ । आज विदेशी विश्वविद्यालयों में 'हिंदी ट्रान्सलेशन स्टडीज' विषय का अध्ययन-अध्यापन किया जा रहा है।नेटफ्लिक्स, अमेझॉन प्राईम ,डिस्ने+ जैसे मंच अब हिंदी में डबिंग या सबटाइटलिंग को प्राथमिकता देते हैं। Google, Meta, Microsoft जैसी तकनीकी कंपनियाँ हिंदी इंटरफ़ेस और अनुवाद इंजन विकसित कर रही हैं। "विभिन्न राष्ट्रों के द्रुत गति से बढ़ते हुए संपर्क और संचार माध्यमों के विकास के कारण व्यक्तिसाध्य अनुवाद की प्रक्रिया अपर्याप्त सिद्ध होने लगी है, अतः उसके स्थान पर कंप्यूटर द्वारा संपत्र मशीनी अनुवाद का प्रयोग निरंतर बढ़ता जा रहा है और' तात्कालिक आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए, अपनी अनेक सीमाओं के रहते हुए भी, यह संचार का अत्यंत आवश्यक माध्यम बन गया है ।"(नगेंद्र 82-83)

3. डिजिटल अनुवाद के तकनीकी आयाम:

डिजिटल अनुवाद तकनीक के तीन चरण इस प्रकार हैं—

1. **नियम-आधारित अनुवाद (Rule-Based MT)** – डिजिटल अनुवाद हेतु विकसित यह भाषा संरचना के नियमों पर आधारित सीमित मॉडल है ।
2. **सांख्यिकीय अनुवाद (Statistical MT)** – डिजिटल अनुवाद के इस मॉडल में शब्दों की आवृत्ति और संभाव्यता पर आधारित प्रणालियों का समावेश है ।
3. **न्यूरल अनुवाद (Neural MT)** – यह गहन न्यूरल नेटवर्क पर आधारित मॉडल है जो संदर्भ, प्रसंग और अर्थ-सूक्ष्मताओं को पहचानते हैं।इसमें प्राकृतिक भाषा प्रसंस्करण(Natural Language Processing) का समावेश है ।एन.एल.पी.कंप्यूटर विज्ञान और कृत्रिम बुद्धिमत्ता (ए.आई.) आधारित मॉडेल है, जिसका उद्देश्य कंप्यूटर को मनुष्य की तरह भाषा समझने और

ISSN–2278-5655

AMIERJ Aarhat Multidisciplinary International Education Research Journal

Volume–XIV, Special Issues – III (a) Nov – Dec, 2025

OPEN ACCESS Original Research Article

प्रतिक्रिया देने में सक्षम बनाना है। यहाँ अर्थग्रहण और अर्थांतरण की प्रक्रिया कॉर्पस के आधार पर मशीन करती है । सार्थकता, सटीकता, प्राकृतिकता, समतुल्यता, सांस्कृतिक संगति, सदर्भ-संवेदनशीलता जैसे अनुवाद के मापदंड यहाँ लागू होते हैं। यह अंग्रेजी से हिंदी या अन्य किसी भाषा में अनुवाद करते समय अत्यंत सहायक है। वह केवल शब्दानुवाद नहीं करता, अपितु संदर्भ और व्याकरण की दृष्टि से समतुल्यता लाने का प्रयास करता है। इसके गूगल ट्रान्सलेट और डीपएल जैसे एप्लिकेशन स्वचालित रूप से अनुवाद करते हैं।इसके अंतर्गत टाइपिंग एवं वर्तनी सुधार में सहायक एप्लिकेशन्स का भी समावेश है । यह सटीक शब्दों को चुनता है। Nural Machine Translation प्राकृतिक भाषा प्रसंस्करण की एक उन्नत शाखा है।इससे google translate, Microsoft translate apps द्वारा अंग्रेजी से हिंदी में किए गए अनुवादों के कुछ उदाहरण द्रष्टव्य हैं।जैसे - bank - नदी का किनारा है या वित्तीय बैंक है।वह व्याकरणिक संरचना को भी समझता है। जैसे- हिंदी में कर्ता- कर्म-क्रिया का क्रम ।She drinks water. वह पानी पीती है।There are five people in the room. कमरे में पाँच लोग हैं।The CPU temperature is high. सी.पी.यू. का तापमान अधिक है।A drop in Ocean का डिजिटल अनुवाद सागर में एक बूँद प्राप्त हुआ न कि उँटके मुँह में जीरा । It rains cats & dogs. का डिजिटल अनुवाद है-बहुत बारिश होती है। यहाँ मूसलाधार शब्द छूट गया है । herculin task का डिजिटल अनुवाद अत्यंत कठिन कार्य प्राप्त हुआ ,भगीरथ प्रयास नहीं ।अतः मुहावरों और कहावतों की इन सारी अभिव्यक्तियों में सांस्कृतिक समतुल्यता का अभाव है।

4. डिजिटल हिंदी अनुवाद की प्रमुख चुनौतियाँ:

विश्व की अन्य भाषाओं से हिंदी में अनुवाद करते समय निम्नलिखित चुनौतियाँ परिलक्षित होती हैं-

1. **बोलियों के अनुवाद** – अवधी, भोजपुरी, ब्रजभाषा आदि हिंदी की बोलियों से संबंधित पर्याप्त डिजिटल सामग्री उपलब्ध नहीं है ।अतः इनके डिजिटल अनुवाद चुनौतीपूर्ण हैं ।
2. **सांस्कृतिक अभिव्यक्तियाँ** – मुहावरों, लोकोक्तियों और रूपकों का अर्थ मशीनें सटीक नहीं समझ पातीं हैं।सांस्कृतिक संदर्भ ग्रहण करने में मशीन को कठिनाई आती है ।
3. **तकनीकी चुनौतियाँ** – डिजिटल अनुवाद हेतु आवश्यक व्यापक हिंदी कॉर्पस, विशेषकर तकनीकी शब्दावली का अभाव परीलक्षित होता है,जिससे डीप मशीन लर्निंग संभव नहीं हो पाता ।
4. **डेटा की कमी** – प्रशिक्षण डेटा सीमित होने पर मशीनें गलत या असंगत अनुवाद उत्पन्न करती हैं।
5. **लिपि-संबंधी चुनौतियाँ** – डिजिटल अनुवाद द्वारा लक्ष्यभाषा पाठ बनते समय देवनागरी यूनिकोड प्रस्तुतीकरण में प्रायः त्रुटियाँ परिलक्षित होती हैं।

डॉ. कैलाशचंद्र भाटिया के अनुसार "'व्याकरणिक संरचना' का जितना सूक्ष्म विश्लेषण, शब्द की जितनी सूक्ष्मातिसूक्ष्म अर्थच्छटाएँ (शब्दकोश के साथ) वाक्यान्तर्गत पदबन्धों

ISSN–2278-5655

AMIERJ Aarhat Multidisciplinary International Education Research Journal

Volume–XIV, Special Issues – III (a) Nov – Dec, 2025

OPEN ACCESS Original Research Article

की संरचना तथा प्रोक्ति संरचना के नियमों-उपनियमों को कम्प्यूटर को 'प्रोग्रामिंग' की विधि से दिया जाएगा तो उतना ही अनुवाद मूल के निकट होगा और सपादन में कम समय लगेगा। यह प्रक्रिया उन दोनों भाषाओं पर लागू होगी जिनके मध्य ट्रान्सफर व्याकरण' का निर्माण करता है जिससे कम्प्यूटर में प्रस्थापित 'इंटरप्रेटर' ठीक-ठीक अनुवाद-कार्य का सम्पादन कर सके।"(भाटिया,37)

5. हिंदी अनुवाद की वैश्विक संभावनाएँ :

निम्नलिखित क्षेत्रों में डिजिटल अनुवाद की वैश्विक संभावनाएँ परिलक्षित होती हैं-

1. शिक्षा एवं अनुसंधान:

डिजिटल अनुवाद के कारण विदेशी छात्रों को हिंदी सीखने में आसानी महसूस हो रही है।पाठ्यपुस्तकों, शोधपत्रों और विश्वसाहित्य का हिंदी अनुवाद विविध विदेशी विश्वविश्वविद्यालयों में अध्ययन-सामग्री बन रहा है। SWAYAM प्लेटफ़ॉर्म के कोर्सेस में "Data Science for Beginners" का हिंदी संस्करण उपलब्ध है Khan Academy द्वारा गणित और विज्ञान के वीडियो हिंदी में अनूदित किए गए हैं Google Scholar Translate फीचर से अंग्रेज़ी शोध-पत्रों का त्वरित हिंदी अनुवाद उपलब्ध हो रहा है।

2. ई-कॉमर्स:

Amazon, Flipkart जैसे प्लेटफॉर्म हिंदी इंटरफ़ेस के माध्यम से नए ग्राहकों तक पहुँचे हैं।।बहुराष्ट्रीय कंपनियाँ भारतीय बाज़ार में प्रवेश के लिए हिंदी अनुवाद को प्राथमिकता दे रही हैं।

3. साहित्य:

हिंदी साहित्य का वैश्विक अनुवाद और विश्व साहित्य का हिंदी में अंतरण दोनों में वृद्धि हो रही है । हिंदी साहित्य (जैसे प्रेमचंद, निराला, निर्मल वर्मा, उदय प्रकाश) का अनुवाद डिजिटल प्लेटफ़ॉर्मों के माध्यम से विश्वभर में पढ़ा जा रहा है। साथ ही साथ विश्व साहित्य के हिंदी अनुवाद में भी बढोत्तरी हो रही है। वैश्विक स्तर पर साहित्यिक एवं सांस्कृतिक पुनर्प्रतिष्ठा की दृष्टि से यह बात महत्त्वपूर्ण है । Google Arts & Culture के Indian Section में हमारी सांस्कृतिक धरोहरों की जानकारी हिंदी में उपलब्ध है । इससे विश्व स्तर पर संस्कृति और कला की उपलब्धियों को पहुँचाने में सहायता मिल रही है ।

4. जनसंचार:

यूएन, बीबीसी, और वॉयस ऑफ़ अमेरिका जैसे संस्थान हिंदी में समाचार प्रसारित कर रहे हैं ।यह डिजिटल अनुवाद के कारण ही संभव हुआ है। इससे हिंदी मीडिया वैश्विक स्तर पर सशक्त हो रहा है । YouTube Auto-Translate Subtitles द्वारा अंग्रेज़ी वीडियो का हिंदी सबटाइटल प्राप्त हो रहा है जिससे भाषिक व्यवधानों को हटाया जा रहा है।Twitter/X Translation Button पोस्टों का स्वचालित हिंदी अनुवाद प्रस्तुत कर रहे हैं जिसके द्वारा सामाजिक संवाद का दायरा विस्तृत हो रहा है ।

"नई कंप्यूटर प्रौद्योगिकियों के विकास से आज अनुवाद के क्षेत्र में महत्वपूर्ण परिवर्तन आया है, जो उत्तरोत्तर और उन्नत तथा विकसित ही होगा। लेकिन यह एक

ISSN–2278-5655

AMIERJ Aarhat Multidisciplinary International Education Research Journal

Volume–XIV, Special Issues – III (a) Nov – Dec, 2025

OPEN ACCESS Original Research Article

नया व्यवसाय नहीं है। यह अनुवादकों की उत्पादकता और गुणवत्ता को बढ़ाने का महत्वपूर्ण साधन है। वहीं नई प्रौद्योगिकी को मानव-सहायक और उसका इष्टतम उपयोग करने की संभावना वाली उस प्रौद्योगिकी का रूप देने की आवश्यकता है जो अपेक्षाकृत अधिक यथार्थ, परिशुद्ध, संगत और उत्पाद के रूप में सहायक सिद्ध हो। अनुवादकों से यह अपेक्षा की जाती है कि वे नई प्रौद्योगिकियों को अपनाएँ और उसमें शिक्षित-प्रशिक्षित हों ताकि वे अपनी उत्पादकता और गुणवत्ता बढ़ाने के लिए इन प्रौद्योगिकियों की संभावनाओं और क्षमताओं का अधिकतम लाभ उठा सकें। वस्तुतः मशीनी अनुवाद प्रणाली में अनुवादकों की भी महत्ती भूमिका है।" (सेठी,226)

6. डिजिटल हिंदी अनुवाद की भविष्यगत दिशाएँ:

डिजिटल युग में हिंदी अनुवाद की भविष्यगत दिशाएँ इस प्रकार हैं -

1. **संकर अनुवाद प्रणाली (Hybrid MT-Human Model)** – मशीन की गति और मानव की संवेदनशीलता का संयोजन भविष्य के उच्च-गुणवत्ता अनुवाद की नींव बनेगा।
2. **हिंदी कॉर्पस का विस्तार** – उच्च-स्तरीय NMT बनाने के लिए लाखों वाक्यों वाले विविध कॉर्पस की आवश्यकता है। कॉर्पस भाषाविज्ञान पर विमर्श की आवश्यकता है
3. **सांस्कृतिक-प्रशिक्षण मॉडल** – मशीनों को सांस्कृतिक संदर्भों की समझ देने वाले NLP मॉडल अनिवार्य होंगे।
4. **डेटा-सहयोग (Data Collaboration)** – शिक्षा संस्थानों, सरकार और निजी कंपनियों को संयुक्त रूप से भाषा-संसाधन विकसित करने होंगे।

कृत्रिम मेधा आधारित डिजिटल अनुवाद की संभावना के बारे में बालेंदु शर्मा 'दाधीच लिखते हैं- "जिस अविश्वसनीय और चमत्कारिक अंदाज में कृत्रिम बुद्धिमत्ता चीजों को बदल रही है, उसे देखते हुए अगले एक-दो दशकों में हम भाषा-निरपेक्ष विश्व की ओर बढ़ सकते हैं। ऐसा विश्व जिसमें हिंदी जैसी भाषाएँ बोलने-लिखने वाला व्यक्ति अवसरों से वंचित न हो, क्योंकि प्रौद्योगिकी एक भाषा से दूसरी भाषा में अनुवाद को इतना सटीक, सहज, सरल तथा सार्वत्रिक बना सकती है कि आप अंग्रेजी की सामग्री को हिंदी में पढ़ सकेंगे और हिंदी की सामग्री को अंग्रेजी में। आप हिंदी में बोलेंगे और लोग आपको अंग्रेजी में सुन सकेंगे, जबकि अंग्रेजी बोलने वाले व्यक्ति को आप हिंदी में सुन सकेंगे।"(दाधीच)

निष्कर्ष:

डिजिटल अनुवाद ने हिंदी भाषा के अंतरराष्ट्रीय विस्तार को विशेष गति प्रदान की है। यह तकनीक न केवल संचार को सरल बनाती है, बल्कि हिंदी को वैश्विक शिक्षा, डिजिटल अर्थव्यवस्था, सांस्कृतिक विनिमय और ज्ञान-सृजन के एक महत्वपूर्ण माध्यम के रूप में स्थापित करती है। यद्यपि तकनीकी सीमाएँ और भाषावैज्ञानिक चुनौतियाँ मौजूद हैं, परंतु AI-संचालित अनुवाद और मानव विशेषज्ञता के समन्वय से हिंदी अनुवाद भविष्य में और अधिक संवेदनशील, सटीक और वैश्विक बनेगा। हिंदी अब केवल साहित्यिक क्रिया तक सीमित न रहकर विश्व-स्तरीय डिजिटल संवाद का एक प्रभावशाली मध्यम बन चुकी है।

ISSN–2278-5655

AMIERJ Aarhat Multidisciplinary International Education Research Journal

Volume–XIV, Special Issues – III (a) Nov – Dec, 2025

OPEN ACCESS Original Research Article

संदर्भ:

1. *दाधीच, बालेंदु शर्मा. "कृत्रिम बुद्धिमत्ता करेगी हिंदी का कायाकल्प." Panchjanya, 22 Feb. 2023, panchjanya.com/2023/02/22/267775/sci-tech/artificial-intelligence-will-rejuvenate-hindi/.*
2. *(डॉ.)नगेंद्र.संपा. अनुवाद विज्ञान: सिद्धांत एवं अनुप्रयोग.दिल्ली विश्वविद्यालय,1993*
3. *(डॉ.) भाटिया,कैलाशचंद्र. अनुवाद कला : सिद्धांत और प्रयोग.नई दिल्ली: तक्षशीला प्रकाशन,2000*
4. *Indira Gandhi National Open University. खंड-4 मशीनी अनुवाद. Contributors: सेठी, हरीश कुमार; अरोड़ा, करुणेश; ठाकुर, अनिल. eGyanKosh,2015.PDF.https://egyankosh.ac.in/handle/123456789/49317*
5. *SIL International. Ethnologue: Languages of the World. 27th ed., SIL International, 2024.*

Cite This Article:

प्रो. (डॉ.) सुर्वे का. ग. (2025). *हिंदी अनुवाद की वैश्विक संभावनाएँ (डिजिटल अनुवाद के विशेष संदर्भ में)* **In Aarhat Multidisciplinary International Education Research Journal**: Vol. XIV (Number VI, pp. 25–31).

ISSN–2278-5655

AMIERJ Aarhat Multidisciplinary International Education Research Journal

Volume–XIV, Special Issues – III (a) Nov – Dec, 2025

OPEN ACCESS Original Research Article

हिंदी साहित्य के अनुवाद में सांस्कृतिक समस्याएँ

* डॉ. प्रदीप माणिकराव शिंदे

* कर्मवीर भाऊराव पाटील विश्वविद्यालय, (घटक महाविद्यालय) छत्रपति शिवाजी कॉलेज, सातारा

शोध सार :

भाषा और संस्कृति के मध्य अनुवाद सेतु के रूप में कार्य करता है। यह मात्र शब्द-परिवर्तन की प्रक्रिया नहीं, बल्कि संवेदनाओं, प्रतीकों और जीवन-दृष्टियों की प्रतिस्थापना है। किसी देश-विदेश की संस्कृति की चेतना अन्य किसी संस्कृति में प्रवेश करती है तो विविध स्तरों पर उसका अर्थ, भाव और संवेदना बदल जाती है। इस प्रक्रिया के दौरान सांस्कृतिक असमानताएँ प्रकट होती हैं। हिन्दी साहित्य के क्षेत्र में अनुवाद की परंपरा विकसित हो रही है- कबीरदास से लेकर समकालीन वैश्विक साहित्य तक। इस परंपरा में एक प्रश्न उपस्थित रहता है कि क्या अनुवाद एक भाषा का रूपांतरण है या संस्कृति की पुनर्स्थापना?

Copyright © 2025 The Author(s): This is an open-access article distributed under the terms of the Creative Commons Attribution 4.0 International License (CC BY-NC 4.0) which permits unrestricted use, distribution, and reproduction in any medium for non-commercial use provided the original author and source are credited.

परिचय :

डॉ. नामवर सिंह का कथन है- "अनुवाद सिर्फ दो भाषाओं के बीच नहीं होता है बल्कि दो संस्कृतियों के बीच होता है।" भाषा संस्कृति की पहचान होती है। हर भाषा अपने समाज की अनुभूति, प्रतीक और ऐतिहासिकता को साथ लेकर आगे बढ़ती है। अर्थात जब किसी रचना का भाषांतरण किया जाता है तो यह केवल शब्दों का रूपांतरण नहीं, बल्कि संस्कृति का स्थानांतरण होता है। उदाहरणस्वरूप, हिन्दी में "प्रणाम" शब्द में जो भावना, नम्रता और आदर है, वह संस्कार का भाग है; उसे अंग्रेजी भाषा में "Hello" कहकर अभिव्यक्त नहीं किया जा सकता। इस प्रकार यह सांस्कृतिक अंतर है जिससे अनुवाद में कठिनाइयाँ उत्पन्न होती हैं। हिन्दी साहित्य की विविध विधाओं के अनुवाद में सामाजिक, राजनीतिक तथा सांस्कृतिक विचारों और परंपराओं की लेन-देन हुई है। संस्कृत के ग्रंथों का लोकभाषा में अनुवाद, पाली तथा प्राकृत भाषाओं की महान परंपरा के साथ यूरोपीय साहित्य के हिन्दी अनुवाद को लेकर हर समय एक प्रश्न उपस्थित रहता है कि क्या अनुवाद में हर संस्कृति का स्वतंत्र अस्तित्व रह पाता है?

यह अध्ययन हिन्दी साहित्य के संदर्भ में अनुवाद की सांस्कृतिक चुनौतियों का विश्लेषण करता है, जिसमें भक्ति काल से आधुनिक काल तक के उदाहरणों का तुलनात्मक परीक्षण किया गया है। उद्देश्य यह है कि अनुवाद प्रक्रिया में सांस्कृतिक संवेदनशीलता की भूमिका को उजागर करना।

हिन्दी साहित्य में अनुवाद की परंपरा :

1. भक्ति काल में सांस्कृतिक अनुवाद :

मध्ययुगीन भक्ति परंपरा ने धार्मिक और दार्शनिक विचारों को लोकभाषा में रूपांतरित करने का महत्वपूर्ण योगदान दिया। तुलसीदास ने वाल्मीकि रामायण का भाषिक

ISSN–2278-5655

AMIERJ Aarhat Multidisciplinary International Education Research Journal

Volume–XIV, Special Issues – III (a) Nov – Dec, 2025

OPEN ACCESS Original Research Article

अनुवाद नहीं किया, अपितु रामचरितमानस के रूप में संस्कृत का सांस्कृतिक अनुवाद किया। उन्होंने संस्कृत की परंपरा को अवधी लोकसंस्कृति में रूपांतरित किया । उदाहरण- "सियाराममय सब जग जानी" यह पंक्ति धार्मिक भावना के साथ-साथ भारतीय जीवन-दृष्टि को उजागर करती है । अंग्रेजी में इसे "I see the whole world as filled with Rama and Sita" कहा गया, पर यह "सियाराममय" की सांस्कृतिक गहराई को व्यक्त नहीं करता । सूरदास जी ने ब्रज संस्कृति की लोकभाषा को अपनाकर श्रीकृष्ण की बाल-लीला तथा वात्सल्य का वर्णन किया है। उनके काव्य का अनुवाद अंग्रेजी में करते समय मातृत्व और वात्सल्य, लोकभाषा में लोकगीतों का स्वर तथा बाल कान्हा और माँ की ममता के सांस्कृतिक संबंधों का अंतर समाप्त हो जाता है।

2. आधुनिक काल और अनुवाद :

आधुनिक काल में भारतेंदु हरिश्चंद्र, प्रेमचंद, जयशंकर प्रसाद, महादेवी वर्मा जैसे साहित्यकारों ने विदेशी साहित्य के प्रभाव में भारतीय समाज के अनुसार साहित्य को समृद्ध किया। भारतेंदु का नाटक "भारत दुर्दशा" यूरोपीय नाट्यशैली से प्रेरित है, परंतु नाटक का अनुवाद अंग्रेजी में करते समय भारतीय प्रादेशिक पीड़ा का भाव नष्ट हो जाता है। प्रेमचंद के 'गोदान' उपन्यास और 'कफन' कहानी के अंग्रेजी अनुवाद में लोक संस्कृति, सामाजिक यथार्थ और धार्मिकता को समान भाव में रूपांतरित करना कठिन हुआ। 'गोदान' का चरित्र "होरी" मात्र किसान नहीं, वह भारतीय ग्रामीण संस्कृति और जीवनशैली का प्रतिनिधित्व करता है। अनुवाद में यह प्रतीक मात्र "a poor peasant" (एक गरीब किसान) बनकर रह जाता है।

अनुवाद और सांस्कृतिक समस्याएँ :

1. सांस्कृतिक प्रतीकों की समस्या :

किसी भी भाषा में प्रयुक्त प्रतीक उसी समाज के सांस्कृतिक परिवेश से संबंधित होते हैं। उदाहरण: गंगा जल, गाय, मंगलसूत्र- भारतीय संस्कृति में गंगाजल पवित्रता, गाय माँ तथा अहिंसा का प्रतीक है और मंगलसूत्र शादीशुदा स्त्री का पवित्र अलंकार है। यूरोपीय भाषाओं में इसका कोई समानार्थी शब्द नहीं है। 'कमल' बौद्ध संस्कृति में शुद्धता और पवित्रता का प्रतीक है, जबकि पश्चिमी संस्कृति में कमल का कोई धार्मिक अर्थ नहीं रखता।

कालीदास की 'मेघदूत' की पंक्ति- "मृगाः प्रचण्डातपतापिता भृशं तृषा महत्या परिशुष्कतालवः।" हवन की अग्नि के समान ग्रीष्म ऋतु में सूर्य की किरणें तपती हैं। "हवन" आदि का अंग्रेजी में अनुवाद करना कठिन है। "गच्छ स्वं प्रियामनुस्मरन्" का अंग्रेजी अनुवाद "Go, remembering your beloved" भावार्थ तो देता है, पर 'अनुस्मरण' की भारतीय मनोविज्ञान- आत्मिक भाव-स्मरण की उत्कटता की सांस्कृतिक संवेदनशीलता खो देता है।

2. लोक-संस्कृति, परंपरा और जीवन-शैली की समस्या :

लोकभाषाओं में स्थित सांस्कृतिक प्रतीक और मूल्य अनुवाद में हमेशा खो जाते हैं। 'गोदान' से संबंधित ग्रामीण संस्कृति के शब्द जैसे "बारह-बदली", "करवाचौथ", "चांद-सलोनी", "लहना-ब्याह", "मूसल-धरा", "बिखरी-धूल" और "सफेद-चादर"। "गोवर्धन पूजा", "सावन" और "अन्नकूट" जैसे शब्दों का उपयोग ग्रामीण

ISSN–2278-5655

AMIERJ Aarhat Multidisciplinary International Education Research Journal

Volume–XIV, Special Issues – III (a) Nov – Dec, 2025

OPEN ACCESS Original Research Article

त्योहारों से संबंधित घटनाओं में किया जाता है। अंग्रेजी अनुवादक जॉन मिलर ने इन्हें क्रमशः "festival swing", "cowdung ceremony" आदि रूप में अनुवाद किया, परंतु इन शब्दों से सांस्कृतिक तालमेल नहीं बैठता।

'मैला आँचल' में इस्तेमाल किए गए कुछ आंचलिक शब्द जैसे "गमकौआ" (एक तरह का साबुन), "बावन की डीह" (बावनदास के मृत्युस्थल), "चेथरिया पीर" (एक लोक-मान्यता के अनुसार पीर), "कनियाँ" (कण-कण या छोटा-छोटा), "काजली" (एक तरह का काज), "पतरिया" (पतला), "निक्कर" (शॉर्ट्स), "खरियानी" (खलिहान), "झिरझिरिया" (एक तरह की ओस या धुंध) और "चैती" (गेहूं काटते समय गाया जाने वाला लोकगीत) इस प्रकार बोली और पौराणिक संदर्भ का सही रूपांतरण लगभग असंभव रहा।

3. धार्मिक और सांस्कृतिक संदर्भ संबंधित समस्याएँ :

धर्म, मिथक और आस्था के प्रतीक हर समाज में अलग-अलग होते हैं। "धर्म" शब्द का अंग्रेजी में "religion" अनुवाद सही नहीं है। "Religion" केवल आस्था या पूजा से संबंधित है, जबकि "धर्म" का अर्थ कर्तव्य, नीति, आचरण और सामाजिक उत्तरदायित्व से भी जुड़ा है। इसी प्रकार, "जल" का "water" अनुवाद धार्मिक संदर्भ में गलत हो सकता है क्योंकि "जल" में काव्यात्मक, औपचारिक और आध्यात्मिक अर्थ गहरे होते हैं। निर्वाण, साल्वेशन (salvation) और मोक्ष के बीच सांस्कृतिक भिन्नताएँ अनुवाद को विकृत करती हैं। निर्वाण बौद्ध दर्शन में दुःख, तृष्णा और अनित्यता के चक्र से पूर्ण मुक्ति है, जो शून्यता की शांत निष्क्रियता है। पश्चिमी "salvation" पापमुक्ति और ईश्वरीय राज्य पर आधारित है, जबकि हिन्दू "मोक्ष" आत्मा का परमात्मा से मिलन है। ये अनुवाद सांस्कृतिक अनुकूलन के कारण प्रचलित हैं किंतु बौद्ध की अद्वितीय नास्तिकता को विकृत कर देते हैं।

4. हास्य, व्यंग्य और सामाजिक यथार्थ की समस्या :

हास्य और व्यंग्य सांस्कृतिक अनुभव पर आधारित होते हैं। हरिशंकर परसाई का व्यंग्य- "हम तो पहले ही कह रहे थे कि ईमानदार आदमी को नौकरी नहीं मिलती।" इसका अंग्रेजी अनुवाद "We always said that an honest man never gets a job" शाब्दिक रूप से ठीक है किंतु भारतीय प्रशासनिक तंत्र पर व्यंग्य का सांस्कृतिक संदर्भ नहीं आता। ज्ञान चतुर्वेदी की कहानी "हम न मरेंगे" में मृत्यु को टालने वाले 'अमर' व्यक्ति का चित्रण मध्यवर्गीय लालच पर कटाक्ष है। अनुवाद "We Shall Not Die" में हास्य रहता है पर 'अमरत्व' की भारतीय लोक-धारणा और 'मौत से डर' की सांस्कृतिक विडंबना खो जाती है। कुँवर नारायण की कविता "चक्रवर्ती" में राजा की 'पूर्णता' का व्यंग्य आधुनिक शासकों पर है। "The Emperor" अनुवाद में 'चक्रवर्ती' का वैदिक-राजनीतिक संदर्भ सतही रह जाता है। शरद जोशी का हास्य "अंधा युग" या "लौट के बुद्धू घर को आए" जैसी कहावतों से जुड़ा है जिसका सीधा अनुवाद असंभव है।

5. सामाजिक और राजनीतिक संदर्भों की समस्या :

सामाजिक और राजनीतिक मुहावरे एक संस्कृति के प्रतिबिंब हैं। "लाइसेंस राज", "दलित विमर्श", "संविधान निर्माता"- इनका अंग्रेजी अनुवाद सामाजिक अर्थ खो देता है। "दलित" का "Dalit" अनुवाद पश्चिमी पाठक के लिए

ISSN–2278-5655

AMIERJ Aarhat Multidisciplinary International Education Research Journal

Volume–XIV, Special Issues – III (a) Nov – Dec, 2025

OPEN ACCESS Original Research Article

अर्थबोधहीन होता है।

6. **भावनात्मक और अभिव्यक्तिगत भिन्नता:** "घर" शब्द भारतीय संस्कृति में परिवार और स्नेह का प्रतीक है। अंग्रेजी "Home" इसकी गहराई नहीं ला पाता।

सांस्कृतिक समस्याओं के समाधान :

1. **सांस्कृतिक समकक्ष :** अनुवादक को लक्ष्य-भाषा में समान भावनात्मक प्रभाव वाले शब्द खोजने चाहिए। उदाहरण: "नमस्ते" का "Greetings with respect" अनुवाद मूल भावना बनाए रखता है। अंग्रेजी कहावत "only wearer knows where the shoe pinches" का हिंदी अनुवाद "जाके पाँव न फटी बिवाई, सो क्या जाने पीर पराई" अधिक प्रभावी है।
2. **रूपांतरण या अनुकूलन :** सांस्कृतिक रूप से समान बात खोजकर रूपांतरण आवश्यक है। जैसे, "दीवाली की रात" को "Festival night of lights" कहना।
3. **अनुवादक की सांस्कृतिक संवेदनशीलता :** अनुवादक दोनों संस्कृतियों का संवेदनशील ज्ञाता होना चाहिए। जैसा कि सुसान बैसनेट ने कहा है- "To translate means to inhabit two worlds at once."

4. उदाहरणों के साथ तुलनात्मक विश्लेषण :

स्रोत-भाषा पाठ (हिंदी)	लक्ष्य-पाठ (अंग्रेजी)	समस्या
अतिथि देवो भव	Guest is like God	आध्यात्मिक अर्थ नैतिक बन जाता है।
कफ़न (प्रेमचंद)	The Shroud	सामाजिक-आर्थिक प्रतीक एक वस्त्र का नाम रह जाता है।
पूस की रात में भूख का चित्रण	A Night in Paus	ग्रामीण संघर्ष की सांस्कृतिक विडंबना समाप्त।
पग घुंघरू बाँध मीरा नाची रे	Meera danced with anklets tied	भक्तिकालीन तन्मयता खो जाती है।

अनुवाद: सांस्कृतिक संवाद का माध्यम :

डॉ. विश्वनाथ त्रिपाठी ने कहा है- "अनुवाद एक सांस्कृतिक संवाद है जो भाषाओं के बीच नहीं, मनुष्यों के अनुभवों के बीच सेतु बनाता है।" हिन्दी साहित्य के अनुवादों ने विश्व साहित्य से संवाद का मार्ग खोला है। उदाहरणस्वरूप, डॉ. अम्बेडकर की 'बुद्ध और उनका धम्म' का अंग्रेजी से हिंदी अनुवाद बौद्ध मानवतावाद की सांस्कृतिक पुनर्रचना है जो दलित विमर्श और समानता के आयाम जोड़ता है।

निष्कर्ष:

अनुवाद का उद्देश्य सिर्फ शब्दों का हस्तांतरण नहीं अपितु दो संस्कृतियों के बीच भावनात्मक संवाद है। सांस्कृतिक बाधाएँ अनुवाद की चुनौतियाँ हैं किंतु संवेदनशील अनुवादक अपनी विवेक और सांस्कृतिक संवेदना से इन्हें सुलझाते हैं। हिंदी साहित्य में तुलसी, प्रेमचंद, परसाई जैसे रचनाकारों के कार्य दर्शाते हैं कि अनुवाद भाषाओं का नहीं बल्कि सांस्कृतिक पुनर्संरचना है। सफल अनुवाद वह है जो संस्कृति, समाज और इतिहास की आत्मा को जीवंत रूप से स्थानांतरित कर दे। भविष्य में अनुवाद अध्ययन में द्विभाषिक संवेदनशीलता पर अधिक शोध आवश्यक है।

ISSN–2278-5655

AMIERJ Aarhat Multidisciplinary International Education Research Journal

Volume–XIV, Special Issues – III (a) Nov – Dec, 2025

OPEN ACCESS Original Research Article

संदर्भ सूची :

1. *Bassnett, S. Translation Studies. London routledge. 1980*
2. *कुमार, आर . अनुवाद की समस्याएँ, हिन्दी साहित्य संकलन, 15(2), 45-60. 2020*
4. *पटेल, यू. तुलनात्मक साहित्य और सांस्कृतिक अनुवाद। KCG Journal of Humanities, 112-130. 2020*
5. *शुक्ला आर. इकाई 11: अनुवाद का सामाजिक-सांस्कृतिक संदर्भ, 2021*
6. *सिंघ एन. कविता के कुछ प्रश्न, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली.2000*
7. *त्रिपाठी व्ही. हिन्दी साहित्य का इतिहास, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली. 2015*
8. *प्रतीक, क. अनुवाद का सामाजिक सांस्कृतिक संदर्भ, 2024*
9. *शर्मा, रामविलास, भाषा और समाज, नई दिल्ली, राजकमल प्रकाशन 1954*
10. *सिंह, नामवर ,अनुवाद : एक सांस्कृतिक सेतु ,आलोचना ,1987*
11. *प्रेमचंद, गोदान ,इलाहाबाद : सरस्वती प्रेस, 1936*
12. *तुलसीदास , रामचरितमानस, गीता प्रेस, गोरखपुर*
13. *नवल, नंदकिशोर. हिंदी में अनुवाद की परंपरा, लोकभारती प्रकाशन, 1995*
14. *त्रिपाठी, विश्वनाथ.अनुवाद और भारतीय संस्कृति, नई दिल्ली, साहित्य अकादमी ,2002*
15. *बसु, बासुदेव. हिंदी अनुवाद का सिद्धांत और प्रयोग ,नई दिल्ली ,साहित्य अकादमी,2008*
16. *सं. डॉ. माहेश्वरी, सुरेश. कार्यालयी हिंदी एवं कार्यालयी अनुवाद तकनीक,कानपुर, 2010*
17. *आंबेडकर,बी.आर., बुद्ध और उनका धम्म*

Cite This Article:

डॉ. माणिकराव प्र. (2025). *हिंदी साहित्य के अनुवाद में सांस्कृतिक समस्याएँ* **In Aarhat Multidisciplinary International Education Research Journal**: Vol. XIV (Number VI, pp. 32–36).

ISSN–2278-5655

AMIERJ Aarhat Multidisciplinary International Education Research Journal

Volume–XIV, Special Issues – III (a) Nov – Dec, 2025

OPEN ACCESS Original Research Article

भारतीय भाषाओं के अंतः संबंध में अनुवाद की भूमिका

** डॉ. संजय भाऊसाहेब दवंगे*

** सहयोगी प्राध्यापक, हिंदी विभाग, के. जे. सोमैया महाविद्यालय कोपरगाव, जि. अहिल्यानगर.*

शोध सार :

भारत एक विशाल भू-प्रदेश से बना देश है। भारत में विविध प्रदेशों में विविध भाषाएँ बोली जाती है, इसी कारण भारत को बहुभाषी देश भी कहा जाता है। 'आठ कोस पर बदले पानी, बारह कोस पर बानी' इस प्रसिद्ध कहावत के अनुसार भारत में असंख्य भाषाएँ, बोलियाँ एवं उप-बोलियों का प्रयोग होता है। परंतु यह भाषिक विविधता होने के बावजूद भी सभी प्रदेशों को एकता के सूत्र में पिरोने का काम अनुवाद करता है। विचारों के आदान-प्रदान, व्यवसायिक सफलता और विभिन्न संस्कृति के मनोमिलन में अनुवाद की भूमिका महत्वपूर्ण होती है। भारत की विभिन्न भाषाओं के साहित्य को जोड़ने का कार्य अनुवाद करता है। आज़ादी के दौर से लेकर अब तक कई सरकारी एवं गैर-सरकारी संस्थाएँ भारतीय साहित्य के अंत:संबंध को मजबूत बनाने में योगदान दे रहे हैं। भारत में अनुवाद के ज़रिए मराठी और हिंदी भाषा के बीच जो संबंध सुदृढ़ हुए है उसमें हिंदी के आरंभिक प्रचारकों, हिंदी प्रेमियों, अनुवादकों और कई साहित्यिक संस्थाओं की भूमिका अहंम् रही है। प्रस्तुत आलेख में हिंदी और मराठी भाषा को केंद्र में रखकर भारतीय भाषाओं के परिप्रेक्ष्य में अनुवाद की भूमिका पर विचार किया गया है।

बीज शब्द: *अनुवाद, सांस्कृतिक समन्वय, विश्वसंस्कृति, सेतू भाषा, समतुल्य शब्द खोज, सरकारी तथा गैर-सरकारी संस्थाएँ, भारतीय ज्ञानपीठ, बृहद शब्दकोश, अंत:सांस्कृतिक एवं अंत:भाषिक संप्रेषण।*

Copyright © 2025 The Author(s): This is an open-access article distributed under the terms of the Creative Commons Attribution 4.0 International License (CC BY-NC 4.0) which permits unrestricted use, distribution, and reproduction in any medium for non-commercial use provided the original author and source are credited.

भारत एक बहुभाषी देश है और भारत की विभिन्न भाषाएँ देश की भाषिक समृद्धि का प्रतीक है। भारत में 22 भाषाएँ स्वीकृत हैं और प्रत्येक भाषा का अपना मौलिक साहित्य है। लेकिन इसके बावजूद प्रत्येक साहित्य में व्यक्त विचार, भाव और संवेदनाएँ समान है। इन भाषाओं में रचे गए साहित्य में संवाद स्थापित कर भारत की संस्कृति को पारदर्शी बनाना जरूरी है और यह संवाद अनुवाद के सेतु से ही संभव है। भोलानाथ तिवारी के अनुसार–"भाषा का जन्म व्यक्तियों में आपसी विचार-विनिमय के प्रयत्न से हुआ तो अनुवाद का जन्म दो भाषा-भाषी व्यक्तियों या समुदायों में विचार-विनिमय संभव बनाने के लिए।"[1] बीसवीं सदी के उत्तरार्ध में भारतीय भाषाओं के बीच अंत:संबंध बढ़ गया और इस अंत:संबंध से आपसी पहचान बढ़ी है। सांस्कृतिक समन्वय के लक्ष्य की पूर्ति में इस पहचान ने महत्वपूर्ण भूमिका निभाई

ISSN–2278-5655
AMIERJ Aarhat Multidisciplinary International Education Research Journal
Volume–XIV, Special Issues – III (a) Nov – Dec, 2025
OPEN ACCESS Original Research Article

है। पंडित नेहरु इस संदर्भ में कहते हैं–"भारत की समस्त भाषाओं की जड़ें तथा प्रेरणाएँ अधिकांशत एक-सी हैं और जिस मानसिक परिवेश में उनका विकास हुआ है, एक-सा ही है। भारत का प्रत्येक साहित्य-चाहे वह हिंदी, मराठी, उर्दू, तेलुगू, तमिल, मलयालम, गुजराती अथवा बंगला, उड़िया या असमिया किसी भी भाषा में हो, समग्र रूप से देश की वैचारिकता और संस्कृति का एक प्रकार से प्रतिनिधित्व करता है।"[2]

विभिन्न देशो ं की प्रगति में अनुवाद का कार्य सराहनीय रहा है। हर एक देश में अनुवाद ने अपनी छाप छोडी है। विश्व संस्कृति के विकास में भी अनुवाद की अहंम भूमिका है। प्रख्यात अनुवाद चितंक प्रो.जी.गोपीनाथन इसके समर्थन में कहते हैं-"अनुवाद एक ऐसा सेतु बंधन का कार्य है जिसके बिना विश्वसंस्कृति का विकास संभव नहीं है। अनुवाद के द्वारा हम मानव के इस विश्व कुटुम्ब में संपूर्ण एकता एवं समझदारी की भावना विकसित कर सकते हैं, मैत्री एवं भाईचारे को विकसित कर सकते हैं और गुटबंदी, संकुचित प्रांतीयतावाद आदि से मुक्त होकर मानवीय एकता के मूल बिंदु तक पहुँच सकते हैं।"[3] मानवीय मूल्यों के मूल स्वर को साहित्य के माध्यम से संवाद के रूप में समाज तक पहुंचाने का काम अनुवाद आसानी से करता है। इसी बात की पुष्टि देते हुए श्री संतोष खन्ना लिखते है "भाषाओं के अपरिचय के कुहासे में भारतीय साहित्य में प्रतिपादित समरसता, सामंजस्य और सहिष्णुता जैसे मानवीय मूल्यों के मूल स्वर सभी तक नहीं पहुँच पाते। संवादहीनता की स्थिति कहीं भी कभी सुख नहीं देती, साहित्य में तो बिल्कुल नहीं। इसलिए भारतीय भाषाओं के साहित्य के बीच अनुवाद के माध्यम से संवाद स्थापित कर उसके मूल स्वर को सबके समक्ष उद्घाटित किया जाना चाहिए।"[4] अनुवाद का कार्य केवल साहित्य को साझा करने का माध्यम नहीं है बल्कि अनुवाद भाषाओं और संस्कृतियों के बीच संवाद और समझ बढाने का जरिया है। अनुवाद को मूल सृजन से भी ऊँचे स्तर का कार्य बताते हुए अनुवाद चिन्तक हरीश कुमार सेठी कहते हैं-"अनुवाद मूल सृजन से भी ऊँचे स्तर तक पहुँच जाता है। दो समाजों-संस्कृतियों, परिवेशों एवं भाषाओं के बीच का यह संवाद-सूत्र, अज्ञात को ज्ञात, अपरिचित को परिचित एवं भिन्न को अभिन्न बनाने की दिशा में महत्वपूर्ण प्रयत्न करता है–

भाषा की सौन्दर्य चेतना
दर्शाता अनुवाद है।
दो भाषाओं से आपस का
यह प्यारा संवाद है।"[5]

भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन में भी अनुवाद ने महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। राष्ट्रप्रेम की अनेक कविताएँ विभिन्न भाषाओं में अनुदित हुई । आजादी के बाद कई सरकारी तथा गैर-सरकारी संस्थाओं का उदय हुआ, जो भारतीय साहित्य को एक इकाई के रूप में देखने का प्रयास करती है। भारतीय साहित्य की पहचान के विराट लक्ष्य की पूर्ति में कई संस्थाएँ आज कार्यरत हैं। सरकार द्वारा भारतीय साहित्य की उत्कृष्ट

ISSN–2278-5655

AMIERJ Aarhat Multidisciplinary International Education Research Journal

Volume–XIV, Special Issues – III (a) Nov – Dec, 2025

OPEN ACCESS Original Research Article

कृतियों को पुरस्कृत करने से अंत:संबंध की कड़ी मजबूत हुई है। आज केंद्रीय साहित्य अकादमी, भारतीय ज्ञानपीठ, भारतीय भाषा परिषद आदि इस क्षेत्र में सक्रिय है। 'ज्ञानपीठ पुरस्कार' आधुनिक भारतीय भाषाओं के विकास में एक मील का पत्थर बन गया। साहित्यकार अज्ञेय जी कहते हैं–"ज्ञानपीठ पुरस्कार से एक संभाव्य लाभ यह है कि विभिन्न भारतीय भाषाओं के साहित्य पर अलग-अलग विचार न करके उन्हें एक देशव्यापी प्रतिमान दिया जा सकता है। यह साहित्यिक विकास के मूल्यांकन के लिए भी अच्छा है और स्वयं प्रादेशिक प्रतिमानों की परख के लिए भी।"[6] भारतीय ज्ञानपीठ भारतीय भाषाओं की उत्कृष्ट कृतियों को पुरस्कृत कर भारतीय भाषाओं के बीच मैत्री और सद्भाव लाने में सफल हुई है। साहित्य अकादमी की गतिविधियों का व्यापक प्रभाव भारतीय साहित्य पर पड़ा। देश में भाषाओं के बीच का रिश्ता अधिक मजबूत बन गया। पुरस्कार-अनुवाद प्रकाशन, संगोष्ठियाँ, पत्रिकाएँ आदि की व्यवस्था करके अकादमी ने भारतीय भाषाओं के अंतर्संबंध को दृढ़ करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। आकाशवाणी हर वर्ष 26 जनवरी को सभी भारतीय भाषाओं की कविताओं का हिंदी में अनुवाद प्रसारित करती हैं। मूल कविता का पाठ स्थानीय भाषा में और फिर हिंदी में किया जाता है। यह कार्यक्रम 'सर्वभाषा कवि सम्मलेन' के नाम से जाना जाता है।

भारत के सभी राज्यों में स्वतंत्रता आंदोलन के दौरान हिंदी का प्रचार-प्रसार हुआ। महाराष्ट्र राज्य ने भी हिंदी भाषा और साहित्य को पूरी निष्ठा के साथ स्वीकारा। हिंदी भाषा की अनेक कृतियों के मराठी में अनुवाद प्रकाशित हुए हैं, तो मराठी साहित्य का भी हिंदी भाषा में अनुवाद हुए। मराठी में पिछले दशकों से अच्छे हिंदी साहित्य का अनुवाद हो रहा है। महाकाव्य में रामचरितमानस से लेकर आधुनिक हिंदी की विविध विधाओं के साहित्य से मराठी के पाठक परिचित हैं। प्रेमचंद, जैनेंद्र, यशपाल, भीष्म साहनी, भगवतीचरण वर्मा, वृंदावनलाल वर्मा, विष्णु प्रभाकर आदि हिंदी विद्वानों के साहित्य से मराठी के पाठक परिचित हुए। मराठी के संत तुकाराम, संत नामदेव, कुसुमाग्रज, पु.ल.देशपांडे, वी.एस.खांडेकर, रणजीत देसाई जैसे कवि-लेखकों से आज हिंदी समाज परिचित है उसका सारा श्रेय अनुवाद को है। मराठी से हिंदी में अनुदित वर्तमान गद्य साहित्य में उपन्यास, कहानी, नाटक, लघुकथा और जीवनी शामिल है। ययाती जैसी रचना सांस्कृतिक आदान-प्रदान को बढावा देती है। मराठी साहित्य कृती बालगंधर्व का गोरख थोरात द्वारा अनुवाद हुआ है। भाषाओं के बीच कड़ी बनते हुए अनुवाद सांस्कृतिक आदान-प्रदान का महत्त कार्य करती है।

19 वी सदी ं के उत्तरार्ध से हिंदी में अनुवाद करने की परंपरा शुरू हुई। हिंदी सहित्य की कई मौलिक कृतियों के अनुवाद के साथ-साथ तुलनात्मक अध्ययन का कार्यक्षेत्र भी खुला। हिंदी भाषियों और मराठी भाषियों को विपुल मात्रा में इससे लाभ मिला। हिंदी से मराठी में अनुवादित कुछ प्रसिद्ध उपन्यास जो मराठी में अनुवादित हुए है उनमें मुंशी प्रेमचंद का गोदान, गबन,निर्मला और भीष्म साहनी का तमस भी शामिल है। हिंदी में मुख्यत: संस्कृत, अंग्रेजी, बंगला, तथा

ISSN–2278-5655
AMIERJ Aarhat Multidisciplinary International Education Research Journal
Volume–XIV, Special Issues – III (a) Nov – Dec, 2025
OPEN ACCESS Original Research Article

मराठी नाटकों के अनुवाद हुए है। भारतेंदु, सत्यनारायण कविरत्न, रांगेय राघव आदि ने अनेक नाटकों के अनुवाद किए है। अंग्रेजी के शेक्सपियर का हिंदी में अनुवाद हुआ है। महावीरप्रसाद द्विवेदी, श्रीधर पाठक, जगन्नाथ रत्नाकर, मै. गुप्त, आ. रामचंद्र शुक्ल आदि से लेकर वर्तमान के अनेक नवसाहित्यकार विभिन्न रचनाओं का अनुवाद कर रहें है। हिंदी अनुवाद का महत्व और आवश्यकता को प्रतिपादित करते हुए महावीरप्रसाद द्विवेदी 'ग्रंथकारों से विनय' शीर्षक कविता में साहित्यकारों से अनुवाद करने की प्रार्थना करते है-

"इंग्लिश का ग्रंथ-समूह बहुत भारी है।
अति विस्तृत जलधि-समान देहधारी है।
संस्कृत भी इसके लिए सौख्यकारी है।
उसका भी ज्ञानासागर ह्दयहारी है।
इन दोनों में से ग्रंथ-रत्न ले लीजै।
हिंदी अर्पण उन्हें प्रेमयुत कीजै। "[7]

अनुवाद में मूल भाव को अधिक महत्व होता है। मूल भाव की तरह उस वाक्य या रचना से मूल भाषा का आनंद मिलना भी आवश्यक है। मराठी से हिंदी अनुवाद में कुछ शब्दो· में यह समस्या दिखती है। मराठी भाषा में वाक्य लिखा जाता है- पोटात कावळे ओरडणे। हिंदी भाषा में इसका अनुवाद पेट में चूहे दौडने लगे यह होता है। यहाँ मराठी के ओरडणे की जगह हिंदी में दौडने शब्द लिखा जाता है। अन्य भाषा में भी यह समस्याएँ उत्पन्न होती हैं- उदाहरण के लिए मलयालम शब्द 'कायल'। कायल वह झील है जो नदी के माध्यम से समुद्र से जुड़ीं होती हैं, अर्थात समुद्र और नदी के बीच की कड़ी होती है। इसका अनुवाद हिंदी में अगर 'झील' कर दिया जाए तो 'कायल' शब्द की पूर्ण अवधारणा स्पष्ट नहीं हो पाएगी। सांस्कृतिक भिन्नताओं के कारण अनुवाद में इस तरह की समस्याएँ आती हैं। संस्कृति के संदर्भ में प्रदेश की वेशभूषा का भी विशेष महत्व है जो अनुवाद में काफी कठिनाई पैदा करते हैं। केरल में स्त्रियाँ जो वस्त्र पहनती हैं उसे 'वेष्टि-मुंड' कहते है जिसको आमतौर पर हिंदी में केवल 'साड़ी' शब्द में समेट लिया जाता है। अन्य भाषाओं में कोई ऐसी वेशभूषा नहीं होने के कारण इसका समतुल्य शब्द नहीं मिलता। ऐसे संदर्भ में अनुवादक को समतुल्य शब्द खोज कर प्रयोग करना होता है जो पाठक को बोधगम्य हो।

किसी भी भाषा के मुहावरों और लोकोक्तियों में भी उस समाज की सांस्कृतिक विशेषताएँ झलकती हैं। उन्हें प्रभावी ढंग से अनुवाद कर लक्ष्य भाषा में प्रस्तुत करना एक दुष्कर कार्य है। कभी-कभी लक्ष्य भाषा में शब्द स्तर और अर्थ स्तर पर समानताएँ रखने वाले मुहावरे उपलब्ध न हो तो अनुवादक को शब्द स्तर को छोड़कर अर्थ स्तर पर सामान्य रखने वाले मुहावरों को खोज कर गढ़ लेना चाहिए। लेकिन इतना होने पर भी अनुवादक मुहावरों की समस्याओं से बच नहीं पाते हैं क्योंकि अक्सर लक्ष्य भाषा में अर्थ स्तर पर समानार्थी मुहावरे मिल नहीं पाते। ऐसे संदर्भों में अनुवादक को मुहावरों के अनुवाद में सरल शब्दों में सिर्फ भाव स्पष्ट

ISSN–2278-5655

AMIERJ Aarhat Multidisciplinary International Education Research Journal

Volume–XIV, Special Issues – III (a) Nov – Dec, 2025

OPEN ACCESS Original Research Article

करना सही रहेगा। मराठी और हिन्दी में अर्थ स्तर पर समानताएँ रखने वाले कई मुहावरे हैं, उदाहरण के लिए -

जशाच तसे- जैसे को तैसा।

नाचता येई ना आंगण वाकडे- नाच न जाने तो आंगन टेढ़ा।

शहाण्याला शब्दांचा मार- समझदार को शब्दों से चोट।

मूलाचे पाय पाळण्यात दिसते- बच्चे के कदम पालने में दिखते हैं।

दृष्टिआड सृष्टी- दृष्टि से बाहर की दुनिया।

निष्कर्ष:

भाषा और समाज का एक अटूट संबंध है। भाषा न केवल व्यक्ति की आवश्यकताओं की पूर्ति करती है बल्कि उसे एक पहचान भी दिलाती है। भाषा विचार विनिमय के साथ-साथ सांस्कृतिक अभिव्यक्ति का भी साधन है। संस्कृति की अभिव्यक्ति का माध्यम है। विभिन्न भाषाओं में बोलनेवाले लोगों के बीच समरसता और राष्ट्रीय एकता स्थापित करने का काम अनुवाद करता है। अनुवाद के माध्यम से ज्ञान और साहित्य का प्रचार-प्रसार तो होता है साथ ही लोग एक-दूसरे की संस्कृति से भी परिचित होते है। वर्तमान में अनेक संस्थाएँ भारतीय साहित्य के उत्कृष्ट कृतियों का अनुवाद करवा रही है। भारतीय भाषाओं की प्रतिनिधि कृतियों के अनुवाद के लिए योजनाबद्ध कार्यक्रम बनाए जा रहे है। किसी भाषा की रचना का अनुवाद होने से अन्य भारतीय भाषाओं से उसके तुलनात्मक अध्ययन की दिशाएँ खुलती है। इस काम में अनुवादक को प्रोत्साहन मिलना आवश्यक है।

संदर्भ:

1. *अनुवाद विज्ञान, संपा- भोलानाथ तिवारी, किताबघर प्रकाशन दिल्ली, पृष्ठ-165*
2. *ज्ञानपीठ पुरस्कार:1965-90, संपा.-निशन टंडन, भारतीय ज्ञानपीठ प्रकाशन, नई दिल्ली, संस्करण-1991. पृष्ठ-323*
3. *अनुवाद सिद्धांत एवं प्रयोग, जी.गोपीनाथन, लोकभारती प्रकाशन, इलाहबाद, संस्करण-2008. पृष्ठ-14*
4. *अनुवाद, भारतीय अनुवाद परिषद्, अक्टूबर-दिसम्बर 1997, अंक-93. पृष्ठ-4*
5. *अनुवाद, भारतीय अनुवाद परिषद्, जुलाई-अगस्त-सितम्बर 1996, अंक-88. पृष्ठ-53*
6. *भारतीय भाषाओं के पुरस्कृत साहित्यकार, डॉ.आरसु, राजपाल एंड सन्स, दिल्ली, संस्करण-2010, पृष्ठ-67*
7. *अनुवाद विज्ञान , संपा- भोलानाथ तिवारी, किताबघर प्रकाशन दिल्ली, पृष्ठ-188*

Cite This Article:

डॉ. दवंगे सं. भ. (2025). भारतीय भाषाओं के अंतः संबंध में अनुवाद की भूमिका. **In Aarhat Multidisciplinary International Education Research Journal**: Vol. XIV (Number VI, pp. 37–41).

ISSN–2278-5655

AMIERJ Aarhat Multidisciplinary International Education Research Journal

Volume–XIV, Special Issues – III (a) Nov – Dec, 2025

OPEN ACCESS Original Research Article

रक्षा क्षेत्र और अनुवाद

* डॉ. वैशाली विट्ठल खेडकर

* सहयोगी प्राध्यापक , महात्मा फुले महाविद्यालय, पिंपरी,पुणे- 17

प्रस्तावना :

भारत की 22 भाषाओं के साहित्य को जोड़ने का कार्य अनुवाद करता है। आज़ादी के दौर से लेकर अब तक कई सरकारी एवं गैर सरकारी संस्थाएँ अनुवाद के जरिए भारतीय साहित्य और समाज के अंत:संबंध को मजबूत बनाने में योगदान दे रहे हैं। हर एक देश में अनुवाद ने अपनी छाप छोडी **है।** विश्व-राजनीति, सामरिक प्रौद्योगिकी और अंतर्राष्ट्रीय सुरक्षा वातावरण में निरंतर हो रहे परिवर्तन ने रक्षा-क्षेत्र को न केवल रणनीतिक दृष्टि से, बल्कि भाषाई और संप्रेषणीय दृष्टि से भी अत्यंत महत्वपूर्ण बना दिया है। आधुनिक रक्षा प्रणालियाँ बहुस्तरीय तकनीकों, सहयोगी देशों के साथ संधियों, संयुक्त सैन्य अभ्यासों, हथियार प्रणालियों के आदान-प्रदान तथा अंतरराष्ट्रीय मानक संचालन प्रक्रियाओं (SOPs) पर आधारित होती हैं। इन सभी प्रक्रियाओं में सटीक, स्पष्ट और विश्वसनीय संप्रेषण अनिवार्य है, विशेषकर तब जब मूल दस्तावेज़, तकनीकी विवरण, प्रशिक्षण सामग्री, खुफिया रिपोर्टें और रणनीतिक नीतियाँ अंग्रेज़ी या अन्य विदेशी भाषाओं में उपलब्ध हों। ऐसी स्थिति में हिंदी अनुवाद की भूमिका अत्यधिक निर्णायक हो जाती है।

बीज शब्द *: हिंदी अनुवाद, तकनीकी अनुवाद, संप्रेषण, अनुवाद-चुनौतियाँ, सुरक्षा-दस्तावेज़, रक्षा मंत्रालय, द्विभाषिक सामग्री, अनुवाद गुणवत्ता, गोपनीयता और सटीकता, सैन्य प्रशिक्षण सामग्री, तकनीकी शब्द-संपदा आदि.*

Copyright © 2025 The Author(s): This is an open-access article distributed under the terms of the Creative Commons Attribution 4.0 International License (CC BY-NC 4.0) which permits unrestricted use, distribution, and reproduction in any medium for non-commercial use provided the original author and source are credited.

रक्षा-संबंधी सामग्री का अनुवाद सामान्य अनुवाद की तुलना में कहीं अधिक संवेदनशील और विशिष्ट है। इसमें उच्च तकनीकी शब्दावली, गोपनीय सूचनाएँ, संदर्भ-विशेष पारिभाषिक शब्द, तथा सैन्य अभ्यासों और उपकरणों की बारीकियों का सटीक रूपांतरण शामिल है। एक छोटी सी अनुवाद-त्रुटि भी नीति-स्तर पर भ्रम, संचालन में चूक या सुरक्षा जोखिम उत्पन्न कर सकती है। इसलिए रक्षा-क्षेत्र में अनुवाद न केवल भाषा-ज्ञान, बल्कि विषय-ज्ञान, अंतरराष्ट्रीय मानदंडों की समझ और अत्यंत सावधानी की माँग करता है।

भारतीय संदर्भ में यह चुनौती और भी महत्वपूर्ण हो जाती है, क्योंकि भारत बहुभाषी संरचना वाला देश है जहाँ प्रशासन, सैन्य प्रशिक्षण और आधिकारिक संवाद में हिंदी व्यापक रूप से उपयोग की जाती है। अतः उच्च-गुणवत्ता वाले हिंदी अनुवाद की उपलब्धता रक्षा-तंत्र की कार्यक्षमता बढ़ाने, प्रशिक्षण को स्थानीय स्तर तक पहुँचाने तथा नीति-निर्माण में स्पष्टता लाने के लिए अनिवार्य है। इन्हीं आवश्यकताओं को ध्यान में रखते हुए इस शोधालेख का विषय रक्षा क्षेत्र में अनुवाद का महत्व, अनुवादक की योग्यता तथा रक्षा क्षेत्र में

ISSN–2278-5655

AMIERJ Aarhat Multidisciplinary International Education Research Journal

Volume–XIV, Special Issues – III (a) Nov – Dec, 2025

OPEN ACCESS Original Research Article

अनुवाद की आनेवाली समस्याएँ और समाधान को लिया है। यह अध्ययन न केवल भाषाई परिप्रेक्ष्य को समझने में सहायक होगा, बल्कि रक्षा-संवाद की विश्वसनीयता और प्रभावशीलता सुनिश्चित करने हेतु भावी दिशानिर्देश भी प्रदान करेगा।

रक्षा क्षेत्र में अनुवाद का महत्व :

विभिन्न देशो की प्रगति में अनुवाद अहंम भूमिका निभा रहा है। हर एक देश में अनुवाद ने अपनी छाप छोडी है। विश्व संस्कृति के विकास में भी अनुवाद की अहंम भूमिका है। भारत एक बहुभाषिक, बहुसांस्कृतिक राष्ट्र है, जहाँ रक्षा बलों में लगभग सभी भाषायी समुदायों के लोग शामिल हैं। अनुवाद और रक्षा का संबंध तो बहुत पुराना है। भारत की रक्षा प्रणाली में अनुवाद का महत्त्व अनेक स्तरों पर दिखाई देता है। प्राचीन भारत में कौटिल्य के अर्थशास्त्र में विदेशी संदेशों और गुप्त सूचनाओं के अनुवाद तथा विश्लेषण का उल्लेख मिलता है। मुगलकाल में फारसी, अरबी, संस्कृत और तुर्की भाषाओं के अनुवादक युद्धनीति और कूटनीति दोनों के लिए आवश्यक माने जाते थे। औपनिवेशिक युग में ब्रिटिश सेना में भारतीय भाषाओं के जानकार अनुवादकों की विशेष भर्ती की जाती थी, ताकि स्थानीय जनसंख्या के साथ संचार और गुप्तचर कार्य सहज हो सकें।

द्वितीय विश्व युद्ध के दौरान तो अनुवाद ने निर्णायक भूमिका निभाई। मित्र राष्ट्रों ने जर्मन और जापानी संदेशों के अनुवाद और डिकोडिंग के लिए विशेष लिंग्विस्टिक यूनिट्स बनाई थीं। इसने युद्ध की दिशा बदल दी। भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन में भी अनुवाद ने महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। राष्ट्रप्रेम की अनेक कविताएं विभिन्न भाषाओं में अनुवादित हुई l रक्षा बलों में हजारों सैनिक विभिन्न भाषाई पृष्ठभूमियों से आते हैं। प्रशिक्षण सामग्री, निर्देश पुस्तिकाएँ, हथियारों के संचालन मैनुअल और सुरक्षा प्रोटोकॉल का अनुवाद सुनिश्चित करता है कि सभी सैनिक उन्हें सही ढंग से समझें। उदाहरणतः भारत में हिंदी, अंग्रेज़ी, तमिल, पंजाबी, मराठी, असमिया आदि भाषाओं में अनुवादित प्रशिक्षण सामग्री प्रयोग में लाई जाती है।

रक्षा मंत्रालय और भाषा नीति :

भारत सरकार के रक्षा मंत्रालय में आधिकारिक कार्यप्रणाली में हिंदी और अंग्रेज़ी दोनों भाषाओं का प्रयोग होता है। अनुवाद प्रकोष्ठों द्वारा सभी प्रमुख दस्तावेज़ों का द्विभाषिक रूप तैयार किया जाता है। साथ ही, राजभाषा विभाग रक्षा संस्थानों में हिंदी के प्रयोग को बढ़ावा देने के लिए नियमित निरीक्षण और प्रशिक्षण आयोजित करता है।

रक्षा अनुसंधान एवं विकास संगठन (DRDO) :

रक्षा अनुसंधान एवं विकास संगठन की विभिन्न प्रयोगशालाएँ तकनीकी रिपोर्टों और अनुसंधान दस्तावेज़ों का अनुवाद कई भाषाओं में कराती हैं ताकि वैज्ञानिकों और अभियंताओं के बीच ज्ञान का आदान-प्रदान सहज हो सके।

सेना, नौसेना और वायुसेना में अनुवाद -

प्रशिक्षण पुस्तिकाओं, संचालन मैनुअलों और फील्ड आदेशों के अनुवाद के लिए प्रत्येक बल में भाषा विशेषज्ञों और अनुवादकों की टीम कार्यरत है।

उदाहरण के लिए, भारतीय नौसेना के जहाज़ों पर कार्यरत कर्मियों को विभिन्न राज्यों से आने के कारण आदेशों को बहुभाषिक रूप में तैयार किया जाता है।

सुरक्षा और साइबर अनुवाद :

भारत की नेशनल टेक्निकल रिसर्च ऑर्गेनाइजेशन (NTRO) तथा RAW जैसी संस्थाएँ विदेशी भाषाओं (चीनी, अरबी,

ISSN–2278-5655

AMIERJ Aarhat Multidisciplinary International Education Research Journal

Volume–XIV, Special Issues – III (a) Nov – Dec, 2025

OPEN ACCESS Original Research Article

उर्दू, पश्तो, रूसी आदि) के अनुवादकों को विशेष प्रशिक्षण देती हैं। यह अनुवाद केवल भाषाई नहीं, बल्कि विश्लेषणात्मक भी होता है।

अनुवादक की भूमिका और योग्यता :

रक्षा अनुवादक केवल भाषा विशेषज्ञ नहीं, बल्कि तकनीकी और कूटनीतिक समझ रखने वाला व्यक्ति होना चाहिए। उसके पास ...

- भाषाओं का गहरा ज्ञान (विशेषकर विदेशी भाषाएँ जैसे चीनी, अरबी, रूसी आदि)।
- तकनीकी शब्दावली का ज्ञान।
- सुरक्षा और गोपनीयता अनुशासन का पालन।
- कंप्यूटर-असिस्टेड ट्रांसलेशन (CAT Tools) का ज्ञान।
- संदर्भानुकूल और नीतिगत संवेदनशीलता।

भारत में जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय, दिल्ली विश्वविद्यालय, डिफेंस लैंग्वेज इंस्टीट्यूट (DLI) जैसे संस्थान रक्षा अनुवाद और विदेशी भाषा प्रशिक्षण प्रदान करते हैं।

भविष्य में रक्षा अनुवाद का स्वरूप और भी विस्तृत होगा। साइबर युद्ध और सूचना सुरक्षा में भाषाई अनुवाद का महत्त्व और बढ़ेगा।बहुभाषिक AI चैटबॉट्स रक्षा संचार में उपयोग होंगे। वॉइस-टू-वॉइस ट्रांसलेशन सिस्टम वास्तविक युद्धक्षेत्र में सहायक सिद्ध होंगे। भारत में "रक्षा अनुवाद केंद्र" (Defence Translation Centre) की स्थापना अनुवाद के क्षेत्र में नयी दिशाएँ खोल सकती हैं। लेकिन जहाँ एक ओर मशीन अनुवाद गति और दक्षता बढ़ाता है, वहीं यह पूर्ण विश्वसनीय नहीं है। रक्षा क्षेत्र में त्रुटि की कोई गुंजाइश नहीं होती। इसलिए मानव अनुवादकों की भूमिका हमेशा प्रमुख रहेगी। इसके अलावा, अत्यधिक गोपनीय दस्तावेज़ों का अनुवाद केवल सुरक्षित नेटवर्क और स्वदेशी सॉफ़्टवेयर पर ही किया जाना अपेक्षित चाहिए।

रक्षा क्षेत्र में अनुवाद की चुनौतियाँ :

रक्षा क्षेत्र में अनुवाद सामान्य साहित्यिक या व्यावसायिक अनुवाद से कहीं अधिक जटिल होता है। इसकी कुछ प्रमुख चुनौतियाँ निम्नलिखित हैं —

(क) गोपनीयता और सुरक्षा -

रक्षा दस्तावेज़ अत्यंत संवेदनशील होते हैं। अनुवादक को गोपनीयता अनुबंध के अंतर्गत कार्य करना पड़ता है। सूचनाओं का लीक होना राष्ट्रीय सुरक्षा को खतरे में डाल सकता है।

(ख) तकनीकी जटिलता -

रक्षा क्षेत्र में प्रयुक्त शब्दावली अत्यंत विशिष्ट और तकनीकी होती है। जैसे- Ballistic Missile Trajectory, Stealth Technology, Counter-Insurgency Operations आदि शब्दों का सटीक और अर्थ-संपन्न अनुवाद आवश्यक है।

(ग) सांस्कृतिक सटीकता -

विशेष रूप से कूटनीतिक अनुवाद में सांस्कृतिक संदर्भों को ध्यान में रखे बिना अनुवाद करने से अर्थ विकृत हो सकता है।

(घ) तत्कालता -

युद्ध या संकट की स्थिति में अनुवाद को त्वरित गति से तैयार करना पड़ता है। समय की कमी के कारण यह एक अत्यंत दबावपूर्ण कार्य बन जाता है।

ISSN–2278-5655

AMIERJ Aarhat Multidisciplinary International Education Research Journal

Volume–XIV, Special Issues – III (a) Nov – Dec, 2025

OPEN ACCESS Original Research Article

(च) मानकीकरण की कमी -

रक्षा शब्दावली के लिए अभी तक सभी भाषाओं में एक समान शब्द-संग्रह विकसित नहीं हो पाया है। इससे भ्रम की स्थिति उत्पन्न होती है।

निष्कर्ष:

भाषा न केवल संवाद का माध्यम है, बल्कि रणनीति, सहयोग, तकनीक और सुरक्षा का भी आधार बन चुकी है। भारत जैसे बहुभाषिक राष्ट्र में अनुवाद राष्ट्रीय एकता और रक्षा सामर्थ्य दोनों को सशक्त बनाता है। आधुनिक तकनीकी युग में जहाँ कृत्रिम बुद्धिमत्ता नए द्वार खोल रही है, वहीं मानवीय संवेदनशीलता और सटीकता अनुवाद को विश्वसनीय बनाए रखती है। अध्ययन से यह स्पष्ट होता है कि रक्षा-क्षेत्र में हिंदी अनुवाद राष्ट्रीय सुरक्षा, प्रशासनिक दक्षता और तकनीकी प्रशिक्षण के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण है। वर्तमान प्रणाली में शब्दावली की असंगति, तकनीकी जटिलताओं की समझ का अभाव, तथा मानक अनुवाद दिशानिर्देशों का सीमित उपयोग प्रमुख चुनौतियों के रूप में उभरते हैं। अनुवादकों के लिए विशिष्ट सैन्य प्रशिक्षण, अद्यतन दोभाषिक शब्दकोशों का विकास, और रक्षा-संस्थानों में केंद्रीकृत अनुवाद-प्रबंधन प्रणाली की स्थापना से अनुवाद की गुणवत्ता में उल्लेखनीय सुधार संभव है।

आधार ग्रन्थ सूचि:

1. *अनुवाद की समस्याएँ- कुमार आर, हिन्दी साहित्य संकलन, 2020*
2. *अनुवाद और भारतीय संस्कृति – विश्वनाथ त्रिपाठी, साहित्य अकादमी, नई दिल्ली, 2002*
3. *हिंदी अनुवाद का सिद्धांत और प्रयोग – बासुदेव बसु,साहित्य अकादमी, नई दिल्ली, 2008*
4. *कार्यालयी हिंदी एवं कार्यालयी अनुवाद तकनीक - सं. डॉ. सुरेश माहेश्वरी,कानपुर, 2010*
5. *रक्षा मंत्रालय – वार्षिक रिपोर्ट (हिंदी संस्करण)*
6. *DRDO हिंदी पत्रिका – 'डिफेंस सायंस जर्नल'*
7. *तकनीकी अनुवाद: सिद्धांत और व्यवहार – डॉ. राजेश कुमार*
8. *राजभाषा विभाग – अनुवाद मानक शब्दावली (सैन्य शब्दावली सहित)*
9. *ISRO/DRDO की हिंदी शब्दावली एवं प्रकाशन*

Cite This Article:

डॉ. खेडकर वै. वि. *(2025). रक्षा क्षेत्र और अनुवाद.* **In Aarhat Multidisciplinary International Education Research Journal**: Vol. XIV (Number VI, pp. 42–45).

ISSN–2278-5655

AMIERJ Aarhat Multidisciplinary International Education Research Journal

Volume–XIV, Special Issues – III (a) Nov – Dec, 2025

OPEN ACCESS Original Research Article

लोक साहित्य और अनुवाद

* डॉ. तृप्ति उकास

* सहायक प्राध्यापक, हिन्दी, प्रधानमंत्री कॉलेज ऑफ एक्सीलेंस, शासकीय महाकोशल स्वशासी अग्रणी महाविद्यालय, जबलपुर, म. प्र.

सारांश

लोक साहित्य किसी समुदाय की स्मृति, अनुभव, विश्वदृष्टि और सांस्कृतिक पहचान का जीवित रूप है। यह मौखिक कथाओं, गीतों, लोकोक्तियों, मिथकों, नृत्य-गीतों तथा अनुष्ठान-प्रधान वाचन परंपराओं के माध्यम से पीढ़ी-दर-पीढ़ी संचारित होता है। अनुवाद इन विविध लोक-रूपों को भाषा, भूगोल और संस्कृति की सीमाओं से बाहर ले जाने का सशक्त माध्यम है; परन्तु लोक साहित्य का अनुवाद सामान्य साहित्यिक अनुवाद की तुलना में अधिक जटिल होता है क्योंकि इसमें मौखिकता, सामुदायिक अर्थ, स्थानीय प्रतीक, अलौकिक छवियाँ, और लोक-संस्कृति के सांस्कृतिक-संकेत निहित होते हैं।

लोककथाओं के अनुवाद में 'foreignization' और 'domestication' जैसी अनुवाद-रणनीतियों का संतुलित उपयोग महत्वपूर्ण है। उदाहरण के लिए, पंचतंत्र का संस्कृत से फ़ारसी (कलीला-व-दिम्ना), फिर अरबी, लैटिन और यूरोपीय भाषाओं में अनुवाद यह दर्शाता है कि किस प्रकार एक लोक-नैतिक कथा-परंपरा वैश्विक साहित्यिक विरासत बन गई। इसी प्रकार हाल ही में 450 आदिवासी मौखिक कविताओं के अंग्रेज़ी अनुवाद (TOI, 2025) यह दिखाते हैं कि किस तरह अनुवाद हाशिये पर स्थित समुदायों के सांस्कृतिक अनुभवों को मुख्य धारा में दृश्यमान बनाता है।

लोकगीतों और लोककाव्य के अनुवाद में छंद, ताल, लय, पुनरुक्ति, प्रतीक और सामुदायिक भावभूमि को सुरक्षित रखना सबसे बड़ी चुनौती होती है। उदाहरणस्वरूप, राजस्थानी मंड-गीत या भोजपुरी सोहर का अनुवाद केवल शब्दांतरण नहीं बल्कि भावांतरण की प्रक्रिया भी बन जाता है। अनुवादक को यह निर्णय लेना होता है कि वह गीत की स्थानीय सांस्कृतिक गंध को अक्षुण्ण रखे या लक्ष्यभाषा के पाठक के अनुकूल अनुवाद को सांस्कृतिक रूप से रूपांतरित करे।

सार रूप में, लोक साहित्य का अनुवाद केवल भाषाई क्रिया नहीं, बल्कि सांस्कृतिक सेतु-निर्माण है। यह अनुवादक से न केवल शब्दों का ज्ञान, बल्कि उस समुदाय के इतिहास, परंपराओं और भाव-संवेदनशीलताओं की गहरी समझ की माँग करता है। यह शोध-पत्र लोक साहित्य के अनुवाद में उपस्थित सिद्धान्तिक आधारों, सांस्कृतिक चुनौतियों, रणनीतियों और उदाहरणों के माध्यम से यह दिखाता है कि अनुवाद किस प्रकार लोक-संस्कृति को वैश्विक संवाद का हिस्सा बनाता है।

मुख्य शब्द : लोक साहित्य, अनुवाद अध्ययन का सैद्धांतिक ढाँचा, लोक साहित्य के अनुवाद की प्रमुख चुनौतियाँ, अनुवाद की रणनीतियाँ, आधुनिक परिवेश और लोक साहित्य अनुवाद।

Copyright © 2025 The Author(s): This is an open-access article distributed under the terms of the Creative Commons Attribution 4.0 International License (CC BY-NC 4.0) which permits unrestricted use, distribution, and reproduction in any medium for non-commercial use provided the original author and source are credited.

ISSN–2278-5655

AMIERJ Aarhat Multidisciplinary International Education Research Journal

Volume–XIV, Special Issues – III (a) Nov – Dec, 2025

OPEN ACCESS Original Research Article

परिचय:

लोक साहित्य मानव सभ्यता की उस प्राचीनतम सांस्कृतिक स्मृति का रूप है, जो किसी भी समुदाय के जीवनानुभव, विश्वदृष्टि, व्यवहार-नियम, सामाजिक मूल्य, आध्यात्मिक विश्वास तथा सामूहिक संवेदनशीलता से निर्मित होती है। यह वाचिक परंपरा से जनित साहित्य है, जिसका संरक्षण लेखन से अधिक **स्मृति, सामुदायिक वाचन, कथा-कथन, नृत्य-गान और अनुष्ठानिक परंपरा** के माध्यम से होता आया है। इसीलिए, लोक साहित्य को किसी जातीय समूह की *सांस्कृतिक आत्मकथा* भी कहा गया है (Sharma, 2020)।

भारत जैसे बहुभाषी और बहुसांस्कृतिक देश में लोक साहित्य की विविधता—लोककथाओं, दंतकथाओं, कहावतों, लोकगीतों, श्रम-गीतों, देवी-देवताओं के आख्यानों, वीर-गाथाओं, आदिवासी मिथकों तथा ओझा-प्रथा आधारित वाचन—के रूप में देखने को मिलती है। यह आम जनजीवन का असंस्कृत लेकिन अत्यंत वास्तविक साहित्य है, जिसकी जड़ें जमीन से जुड़ी हुई हैं। जिससे स्पष्ट है कि लोक साहित्य का अध्ययन केवल साहित्यिक विमर्श नहीं, बल्कि मानवीय अनुभवों और संस्कृति की गहन समाज-सांस्कृतिक प्रक्रिया को समझने का प्रस्थान-बिंदु भी है (O'Neill, 2019)।

लोक साहित्य को विश्व तक पहुँचाने में **अनुवाद** का केंद्रीय स्थान है। चूँकि लोक साहित्य सामान्यतः मौखिक होता है, इसलिए इसका अनुवाद केवल भाषा-स्थानांतरण नहीं बल्कि जटिल **सांस्कृतिक पुनर्सर्जन** है। अनुवादक को लोकभाषा की लयात्मकता, प्रतीक-व्यवस्था, विश्वास-कथाओं, अनुष्ठानिक छवियों तथा स्थानीय मुहावरों को इस प्रकार रूपांतरित करना होता है कि उनका मौलिक सांस्कृतिक अर्थ सुरक्षित रहे (Roth, 2014)।

अनुवाद अध्ययन में वेन्यूटी द्वारा प्रतिपादित 'Foreignization' और 'Domestication' की अवधारणाएँ लोक साहित्य के संदर्भ में विशेष महत्त्व रखती हैं। उदाहरण के लिए, यदि किसी मिथकीय-लोककथा के स्थानीय धार्मिक-सांस्कृतिक बिम्बों को उसी रूप में लक्ष्य-भाषा में रखा जाए तो अनुवाद *विदेशीकरण* की ओर जाता है; और यदि उन बिम्बों को लक्ष्य-भाषा के पाठक के अनुकूल बना दिया जाए तो यह *स्वदेशीकरण* कहलाता है। लोक साहित्य में इन दोनों का संतुलन अत्यंत आवश्यक है, क्योंकि एक ओर सांस्कृतिक वास्तविकता सुरक्षित रहनी चाहिए और दूसरी ओर लक्ष्य-भाषा के पाठक को अर्थ बोधगम्य भी होना चाहिए (SAGE Publications, 2024)।

लोक साहित्य के अनुवाद ने दुनिया भर में लोक-रूपों के प्रसार में क्रांतिकारी भूमिका निभाई है। इसका सबसे उत्कृष्ट उदाहरण **पंचतंत्र** है—जो संस्कृत से फ़ारसी (कलीला-व-दिम्ना), अरबी, हिब्रू, लैटिन, फिर यूरोपीय भाषाओं में अनूदित होकर विश्व का सर्वाधिक अनूदित लोक-नैतिक ग्रंथ बन गया (Olivelle, 2006)। आधुनिक समय में, भारत के आदिवासी समुदायों की **450 मौखिक कविताओं** का संकलन और अंग्रेज़ी अनुवाद (Times of India, 2025) यह दर्शाता है कि अनुवाद किस प्रकार हाशिये के सांस्कृतिक स्वरों को वैश्विक मंच प्रदान करता है।

लोक साहित्य की प्रकृति और सांस्कृतिक आधार:

लोक साहित्य का मूल **सामूहिक अनुभव** और **जन-जीवन का प्रत्यक्ष सत्य** है। यह लिखित साहित्य की तरह किसी एक लेखक की रचना नहीं, बल्कि एक समुदाय का जीवित

ISSN–2278-5655

AMIERJ Aarhat Multidisciplinary International Education Research Journal

Volume–XIV, Special Issues – III (a) Nov – Dec, 2025

OPEN ACCESS Original Research Article

सांस्कृतिक दस्तावेज है। इसकी मौलिकता इसके **वाचिक-स्वरूप, पुनरावृत्ति, सामुदायिक स्मृति, स्थानीय भाषा-बोलियों**, और सामाजिक अनुष्ठानों से निर्मित होती है (Sharma, 2020)।

भारतीय संदर्भ में राजस्थानी ढोला-मारू कथा, कछार की आदिवासी मिथक-परंपराएँ, भोजपुरी सोहर-गीत, कुमाऊँनी 'झोड़ा-चांचरी', और गोंड समुदाय की "लिंगो-लिंगो" कथा—ये सभी लोकजीवन की सामाजिक संरचनाओं का प्रतिनिधित्व करती हैं। *ढोला-मारू* कथा में प्रेम, संघर्ष और वीरत्व के तत्व स्थानीय संस्कृति की छवियों को उजागर करते हैं। *गोंड लोककथाएँ* समुदाय के विश्व-निर्माण मिथकों को प्रस्तुत करती हैं।

अनुवाद अध्ययन का सैद्धांतिक ढाँचा:

लोक साहित्य के अनुवाद को समझने के लिए अनुवाद अध्ययन के आधुनिक सिद्धान्त अत्यंत महत्त्वपूर्ण हो जाते हैं, क्योंकि लोक–कथाएँ, लोकगीत, मिथक, कहावतें और लोक-प्रसंग केवल भाषा नहीं, बल्कि संस्कृति, सामुदायिक स्मृति और भावानुभव का संगठित रूप होते हैं। Foreignization का उद्देश्य मूल संस्कृति की विशिष्टताओं—स्थानीय शब्दों, अनुष्ठानों, भाव-छवियों एवं प्रतीकों—को लक्ष्य-भाषा में यथासंभव सुरक्षित रखना है, ताकि पाठक मूल संस्कृति के जीवंत अनुभव से परिचित हो सके। दूसरी ओर, Domestication का लक्ष्य यह है कि लक्ष्य-भाषा के पाठकों के लिए पाठ सहज, सुगम और उनकी अपनी सांस्कृतिक समझ के अनुरूप बन सके। लोक साहित्य के अनुवाद में इन दोनों के बीच संतुलन अत्यंत आवश्यक है, क्योंकि विधिवत् foreignization से पाठक मूल सांस्कृतिक संदर्भों से दूर हो सकता है, जबकि अत्यधिक domestication मूल संस्कृति की आत्मा को विकृत कर सकती है। रोथ (Roth, 2014) का मत है कि अनुवादक की सबसे बड़ी चुनौती इसी संतुलन को प्राप्त करना है, ताकि न तो लोक-जीवन की असली गंध खोए और न ही पाठक पाठ से विचलित हो।

इसी प्रसंग में युजीन नाइडा (Eugene Nida) का *Dynamic Equivalence* सिद्धान्त लोक साहित्य के अनुवाद में विशेष महत्त्व रखता है। यह सिद्धान्त भाषा-स्तरीय समानता के बजाय भाव-समानता को प्राथमिकता देता है। लोकगीतों, विशेषकर सोहर-गीतों, विरह-गीतों, श्रम-गीतों और देवी-उपासना के गीतों में शब्दों की लयात्मकता, भावात्मक तीव्रता और सामुदायिक अर्थग्रहण शब्दों से अधिक महत्त्वपूर्ण होते हैं, इसलिए नाइडा के अनुसार अनुवादक का मुख्य उद्देश्य यह होना चाहिए कि अनुवाद पढ़ते समय लक्ष्य-भाषा का पाठक वही भावात्मक अनुभूति प्राप्त करे, जो मूल भाषा का पाठक अनुभव करता है। उदाहरण के लिए, भोजपुरी सोहर-गीतों में 'लल्ला' शब्द केवल "baby boy" का अर्थ नहीं देता; वह मातृत्व, उत्सव, पारिवारिक प्रसन्नता और पवित्रता की सांस्कृतिक छवि का वाहक होता है। यदि इसे मात्र 'baby boy' लिखा जाए, तो अर्थ तो पहुँचता है, पर भाव-परिसर और सांस्कृतिक गंध लुप्त हो जाती है। इसी प्रकार जम्मू-कश्मीर के रियासी क्षेत्र के 'फुगड़ी-गीत' में अनुष्ठानिक संदर्भ, सांस्कृतिक प्रतीक और सामुदायिक नृत्य-भावना ऐसी होती है कि अनुवादक को न केवल शब्द, बल्कि सांस्कृतिक व्याख्या भी देनी पड़ती है, ताकि मूल की अर्थ-छटा अक्षुण्ण रह सके। कैटफोर्ड द्वारा प्रतिपादित *Cultural Untranslatability* का सिद्धान्त इस विषय में और अधिक सटीकता जोड़ता है। कुछ

ISSN–2278-5655
AMIERJ Aarhat Multidisciplinary International Education Research Journal
Volume–XIV, Special Issues – III (a) Nov – Dec, 2025
OPEN ACCESS Original Research Article

सांस्कृतिक प्रतीक, लोक-रूपक, बोलीगत शब्द और उत्सव-आधारित संदर्भ ऐसे होते हैं जिन्हें लक्ष्य-भाषा में शाब्दिक रूप से अनुवादित करना सम्भव नहीं होता। उदाहरण के लिए, 'जुड़शीतल', 'नवरात्रि का घटस्थापना-भाव', या 'फाग' की उत्सवी अनुभूति को किसी अन्य संस्कृति में शब्दों के बल पर ठीक उसी तरह पुनर्सृजित करना लगभग असंभव है। ऐसे में अनुवादक का दायित्व अनुवाद के साथ-साथ सांस्कृतिक व्याख्या प्रस्तुत करना भी बन जाता है, ताकि पाठक मूल अनुभव के निकट पहुँच सके।

इस प्रकार, अनुवाद सांस्कृतिक मूल्यों, लोक-जीवन की संवेदनाओं और सांस्कृतिक पहचान के संरक्षण में भी महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाता है।

लोक साहित्य के अनुवाद की प्रमुख चुनौतियाँ:

लोक साहित्य की पहली और सबसे बड़ी चुनौती इसकी **मौखिकता** है। लोक परंपराएँ लिखित ग्रंथों से अधिक मौखिक काव्य, गीत, कथाओं और मंत्रों में जीवित रहती हैं। इन मौखिक स्वरूपों में ध्वनि-लय, स्वर-उतार-चढ़ाव, विराम, ताली-छंद, सामूहिक गायन की ऊर्जा, और परंपरागत धुनों का ऐसा समागम होता है जिसे किसी भी लिखित अनुवाद में पूरी तरह पुनर्सृजित करना लगभग असंभव है। ओ'नील (O'Neill, 2019) का कहना है कि मौखिक साहित्य की verdadeira शक्ति उसके सामूहिक उच्चारण और ध्वनि-संरचना में निहित होती है, और यही वह तत्व है जो अनुवाद में अक्सर क्षीण पड़ जाता है। उदाहरण के लिए, किसी पर्व-विशेष पर समूह में गाया जाने वाला "कुमाऊँनी जागर" केवल गीत नहीं, बल्कि आध्यात्मिक ऊर्जा और सामुदायिक सहभागिता का अनुष्ठान है—जो अपने मूल सामाजिक संदर्भ से हटते ही अधूरा हो जाता है।

दूसरी महत्वपूर्ण चुनौती **सांस्कृतिक संकेतों** की अनुवाद-अनुपयुक्तता है। लोक साहित्य स्थानीय देवताओं के रूपकों, कृषि-आधारित प्रतीकों, पशु-बिम्बों, जातीय मिथकों, आदिवासी अनुष्ठानों और पारंपरिक जीवन-स्थितियों से गहराई से जुड़ा होता है। इन सांस्कृतिक संकेतों का प्रत्यक्ष अनुवाद लक्ष्य-भाषा में अक्सर अपनी अर्थच्छाया खो देता है। उदाहरण के लिए, "हल–जोतने" या "धान की पहली बाल" जैसे कृषक-प्रतीकों का किसी गैर-कृषि समाज के पाठक पर वैसा ही प्रभाव उत्पन्न करना अत्यंत कठिन है। ठीक यही स्थिति "देवी-थान", "जत्रा", "भुइँया देवता" या "बाबा बुढ़े भगत" जैसे अनुष्ठानिक संदर्भों के साथ भी होती है—जो किसी अन्य सांस्कृतिक जगत के लिए अनजाने और अपरिचित हो जाते हैं।

तीसरी चुनौती शब्दीय स्तर पर **अनुपस्थित समतुल्यता (Lack of Equivalents)** की है। लोक-संस्कृतियों में ऐसे अनगिनत शब्द होते हैं जिनका लक्ष्य-भाषा में कोई सटीक पर्याय उपलब्ध नहीं होता। उदाहरण के लिए "जागर" (कुमाऊँ की देव-अर्चना की परंपरा), "गाविन" (राजस्थानी समुदाय की विशिष्ट महिला-गायिका), या "गुरुमाई" (कई आदिवासी समूहों में आध्यात्मिक-सामुदायिक नेता) जैसे शब्द सांस्कृतिक भूमिकाओं का वह गहन अर्थक्षेत्र धारण करते हैं जिन्हें मात्र अंग्रेज़ी या हिंदी के एक शब्द से पुनरुत्पादित नहीं किया जा सकता। इस स्थिति में अनुवादक के सामने दो विकल्प होते हैं—या तो शब्द को जस का तस रखते हुए विस्तृत सांस्कृतिक टिप्पणी जोड़ें, या फिर ऐसा व्यापक व्याख्यात्मक अनुवाद प्रस्तुत करें जो पाठक को मूल संदर्भ का

ISSN–2278-5655

AMIERJ Aarhat Multidisciplinary International Education Research Journal

Volume–XIV, Special Issues – III (a) Nov – Dec, 2025

OPEN ACCESS Original Research Article

निकटतम अनुभव दे सके।

चौथी महत्वपूर्ण चुनौती **अनुष्ठानिकता और सामुदायिक संदर्भ** को सुरक्षित रखना है। लोक साहित्य का अधिकांश हिस्सा सामाजिक-धार्मिक क्रियाओं से निर्मित होता है—जैसे विवाह-गीत, खेत-गीत, श्रम-गीत, पर्व-गीत या प्रसव-सम्बन्धी सोहर। ये गीत केवल संगीतात्मक टेक्स्ट नहीं होते; वे समुदाय की सहभागिता, शरीर की गतियों, सामूहिक स्वर-उच्चारण और सामाजिक संबंधों की जीवंतता को भी अभिव्यक्त करते हैं। जब ऐसे गीत अपने मूल सामाजिक संदर्भ से हटकर लिखित टेक्स्ट में बदलते हैं, तो उनकी सामुदायिकता का अधिकांश हिस्सा खो जाता है। अनुवादक के लिए यह चुनौती बनी रहती है कि वह किस प्रकार उस संस्कृति के सामूहिक अनुभव, अनुष्ठानिक भाव और सामाजिक एकात्मता को लक्ष्य-भाषा के पाठक तक पहुँचा सके।

इस प्रकार लोक साहित्य का अनुवाद केवल भाषिक संरचनाओं का स्थानांतरण नहीं, बल्कि सांस्कृतिक अनुभूतियों का संवेदनशील रूपांतरण है। इसकी प्रत्येक परत में ध्वनि, भाव, प्रतीक, अनुष्ठानिकता और सामूहिकता जैसी वे गहराइयाँ होती हैं जिन्हें अनुवादक को अत्यंत सावधानी और संवेदनशीलता के साथ लक्ष्य-भाषा में रूपांतरित करना पड़ता है।

अनुवाद की रणनीतियाँ :

भावांतरण, लोक-साहित्य अनुवाद की एक अनिवार्य रणनीति बन गई है। इसमें अनुवादक शब्दों का शाब्दिक अनुवाद करने के बजाय भाव-छवि, सांस्कृतिक संदर्भ और गीत की आंतरिक संवेदना को पुनर्सृजित करता है। उदाहरण के रूप में भोजपुरी कजरी में "कजरी गावे लीन्हीं साजनवा" जैसे वाक्य का literal translation न केवल सपाट प्रतीत होगा, बल्कि मूल भाव-छटा भी समाप्त हो जाएगी। इसके विपरीत transcreation—"She sings the monsoon melody for her beloved"—गीत की ऋतु-छवि, सांस्कृतिक भाव और नारी-मन की कोमलता को सहज रूप से संप्रेषित करता है।

इसके साथ ही **Annotation या Footnoting** भी एक अत्यंत प्रभावी रणनीति है। जब अनुवादक को किसी ऐसे सांस्कृतिक शब्द, अवधारणा, अनुष्ठान या भूमिका का सामना होता है जिसका लक्ष्य-भाषा में कोई निकटतम समतुल्य उपलब्ध नहीं होता, तब वह मूल शब्द को जस का तस रखते हुए फुटनोट में उसका सांस्कृतिक अर्थ समझाता है। यह न केवल पाठक को नए सांस्कृतिक संसार से परिचित कराता है, बल्कि मूल पाठ की प्रामाणिकता भी सुरक्षित रखता है।

इसी प्रकार **Hybrid Translation** एक ऐसी रणनीति है जो foreignization और domestication दोनों के गुणों को संतुलित रूप से अपनाती है। अनुवादक न तो मूल संस्कृति को इस हद तक सुरक्षित रखता है कि पाठक स्वयं को उससे दूर महसूस करे, और न ही पाठ को इस सीमा तक लक्ष्य-भाषा में ढाल देता है कि मूल की सांस्कृतिक आत्मा ही मिट जाए। हाइब्रिड दृष्टिकोण विशेषतः उन लोककथाओं, लोकगाथाओं और पर्व-गीतों के लिए उपयोगी है जिनमें सांस्कृतिक प्रतीक और सार्वभौमिक मानव-भावनाएँ दोनों ही उपस्थित रहते हैं।

अनुवाद की एक अन्य आवश्यक रणनीति है **Cultural Mapping**, जिसके अंतर्गत अनुवादक लोक-परंपराओं, स्थानीय देवत्व-संरचना, ऋतु-चक्र, कृषि-आधारित जीवन, अनुष्ठानिक संकेतों और सामुदायिक भूमिकाओं का एक

ISSN–2278-5655

AMIERJ Aarhat Multidisciplinary International Education Research Journal

Volume–XIV, Special Issues – III (a) Nov – Dec, 2025

OPEN ACCESS Original Research Article

सांस्कृतिक प्रोफ़ाइल तैयार करता है। SAGE (2024) का मानना है कि लोक-कविता और लोक-गाथा के अनुवाद में यह प्रोफ़ाइल अनुवादक को यह समझने में सहायता देती है कि मूल संस्कृति किन प्रतीकों, छवियों और भावों के माध्यम से अपना अर्थ संप्रेषित करती है।

लोक साहित्य के अनुवाद को गहराई से समझने के लिए कुछ विशिष्ट उदाहरण अत्यंत शिक्षाप्रद हैं। सबसे पहला और सबसे प्रभावशाली उदाहरण **पंचतंत्र** का है, जिसे विश्व में "सबसे अधिक अनूदित भारतीय कृति" कहा जाता है। मूल रूप से संस्कृत में रचित पंचतंत्र ईसा पूर्व तीसरी शताब्दी से फ़ारसी, फिर अरबी, हिब्रू, लैटिन और उसके पश्चात् अनेक यूरोपीय भाषाओं में निरंतर अनूदित होता रहा। ओलीवेल (Olivelle, 2006) का कहना है कि पंचतंत्र की नैतिक संरचना और पशु-रूपक इतने सार्वभौमिक हैं कि विभिन्न संस्कृतियों में भी वे अपना अर्थ कायम रखते हैं।

दूसरा उदाहरण **आदिवासी मौखिक कविताओं के आधुनिक संकलन** का है। 2025 में Times of India द्वारा उल्लेखित रिपोर्ट में बताया गया कि भारत के अनेक आदिवासी समुदायों की लगभग 450 मौखिक कविताओं का अंग्रेज़ी में अनुवाद किया गया। इन कविताओं में प्रकृति-सम्बंध, जंगल के प्रति आत्मीयता, सामुदायिक नृत्य, कृषि-आधारित समय-चक्र, उत्सव-शोक और आध्यात्मिक अनुभव उपस्थित थे। अनुवादकों के सामने यह चुनौती थी कि आदिवासी देवताओं के विशिष्ट नाम, अनुष्ठानिक ध्वनियाँ (जैसे 'हो-हो', 'हूल'), और जंगल-आधारित प्रतीकों को अंग्रेज़ी पाठक तक किस प्रकार पहुँचाया जाए।

तीसरा उदाहरण **उत्तर-पूर्व की लोक-कथाओं** से मिलता है। 2025 में असमिया लोककथा का अरबी में अनुवाद इस बात का प्रमाण है कि क्षेत्रीय लोककथाएँ भी वैश्विक स्तर पर सांस्कृतिक संवाद स्थापित कर सकती हैं। एक अपेक्षाकृत भिन्न सांस्कृतिक दुनिया—असमिया और अरबी—के बीच यह पुल तभी सम्भव हुआ जब अनुवादक ने कथा का स्थानीय रंग, मिथक और भाव-संरचना सुरक्षित रखते हुए भी उसे लक्ष्य-भाषा के अनुरूप ढाला।

वैश्वीकरण, डिजिटल युग और लोक साहित्य अनुवाद :

डिजिटल युग ने लोक साहित्य के अनुवाद को नई गति और नए आयाम प्रदान किए हैं। आज डिजिटल आर्काइवों, ई-डिक्शनरियों, ऑनलाइन रिपॉजिटरी, AI आधारित अनुवाद उपकरणों और सामुदायिक crowdsourcing के माध्यम से विभिन्न क्षेत्रों के लोक-गीत, लोक-कथाएँ, लोककला और अनुष्ठानिक साहित्य डिजिटल रूप में संरक्षित और अनूदित किए जा रहे हैं। इससे दुर्लभ मौखिक साहित्य भी वैश्विक स्तर पर उपलब्ध होने लगा है।

हालाँकि तकनीकी प्रगति महत्त्वपूर्ण है, परंतु यह भी सत्य है कि कोई भी AI उपकरण मौखिक लय, सांस्कृतिक अर्थच्छाया, अनुष्ठानिक गंध और भावात्मक घनत्व को पूर्णतः पुनर्सृजित नहीं कर सकता। डिजिटल साधन भले ही दस्तावेज़ीकरण को आसान बनाते हों, परंतु लोक साहित्य की आत्मा—जो ध्वनि, शरीर, समुदाय और संस्कृति में निहित है—के सटीक पुनरुत्पादन के लिए अभी भी मानव अनुवादक की संवेदनशीलता और सांस्कृतिक समझ अनिवार्य बनी हुई है।

ISSN–2278-5655

AMIERJ Aarhat Multidisciplinary International Education Research Journal

Volume–XIV, Special Issues – III (a) Nov – Dec, 2025

OPEN ACCESS Original Research Article

निष्कर्ष :

लोक साहित्य किसी भी समाज की सामूहिक चेतना, सांस्कृतिक स्मृति और जीवन-मूल्यों का जीवंत अवशेष है। यह न केवल कलात्मक अभिव्यक्ति का माध्यम है, बल्कि समुदाय के इतिहास, विश्वास, संघर्ष, उत्सव और संवेदनात्मक अनुभवों की व्यापक अभिव्यक्ति भी है। अनुवाद इन लोक-स्वरों को भाषा और भूगोल की सीमाओं से निष्क्रमित कर व्यापक मानव-समुदाय तक पहुँचाने का अद्वितीय साधन है। किंतु लोक साहित्य का अनुवाद केवल भाषाई प्रक्रिया नहीं, बल्कि सांस्कृतिक पुनर्संरचना (cultural reconstruction) का ऐसा संवेदनशील कार्य है जिसमें भाषा के शब्दों से अधिक, उनके पीछे स्थित सांस्कृतिक अर्थ, सामुदायिक संकेत, लोक प्रतीक और मौखिकता की ध्वन्यात्मक लय को संरक्षित रखना आवश्यक होता है।

पंचतंत्र के वैश्विक अनुवाद, आदिवासी मौखिक कविताओं के संकलन, और उत्तर-पूर्व की लोककथाओं के बहुभाषी रूपांतरण यह दर्शाते हैं कि अनुवाद के माध्यम से लोक साहित्य न केवल साहित्यिक विरासत का हिस्सा बनता है, बल्कि सांस्कृतिक विविधता के संरक्षण और अंतरराष्ट्रीय समझ के विकास का भी माध्यम है। डिजिटल युग में यद्यपि AI और तकनीक ने अनुवाद को तीव्र और सुलभ बनाया है, फिर भी लोक-संस्कृति की आत्मा—उसकी लय, भाव, रीति-रिवाज और अनुष्ठानिकता—के संरक्षण के लिए मानवीय संवेदनशीलता आज भी सर्वोपरि है।

अतः निष्कर्षतः कहा जा सकता है कि लोक साहित्य का अनुवाद एक बहुआयामी प्रक्रिया है, जो भाषा, संस्कृति, इतिहास और सामुदायिक पहचान के जटिल नेटवर्क को जोड़ता है। यह न केवल ज्ञान के लोकतंत्रीकरण का माध्यम है, बल्कि वैश्विक सांस्कृतिक संवाद को समृद्ध करने वाला अनिवार्य मानवीय प्रयास भी है।

संदर्भ सूची :

1. ***रामानुजन, ए. के. (1999).*** फोकलोर एंड इंडियन कल्चर. *नई दिल्ली: ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस.*
2. ***सुब्रमण्यम, वी. (2005).*** भारतीय लोक परंपरा का विकास. *दिल्ली: प्रकाशन संस्थान.*
3. ***शर्मा, हरीश. (2010).*** भारतीय लोककथा कोश. *वाराणसी: ज्ञानमंडल.*
4. ***त्रिपाठी, विश्वनाथ. (2008).*** लोक साहित्य की प्रवृत्तियाँ. *नई दिल्ली: साहित्य अकादमी.*
5. ***सत्यार्थी, देवेंद्र. (1993).*** लोकगीत और लोकसंस्कृति. *कोलकाता: भारतीय ज्ञानपीठ.*
6. ***Nida, Eugene. (1964).*** Toward a Science of Translating. *Leiden: Brill Publication.*
7. ***Bassnett, Susan. (2002).*** Translation Studies. *London: Routledge.*
8. ***Venuti, Lawrence. (1995).*** The Translator's Invisibility. *London: Routledge.*
9. ***प्रसाद, माधव. (2015).*** अनुवाद सिद्धांत और व्यवहार. *दिल्ली: भारतीय पुस्तक निगम.*
10. ***मिश्र, शीलबाला. (2017).*** सांस्कृतिक अनुवाद: सिद्धांत और प्रयोग. *नई दिल्ली: साहित्य भवन.*
11. ***नगेन्द्र. (1984).*** लोक साहित्य और उसकी जीवंत परंपराएँ. *वाराणसी: साहित्य सदन.*

ISSN–2278-5655

AMIERJ Aarhat Multidisciplinary International Education Research Journal

Volume–XIV, Special Issues – III (a) Nov – Dec, 2025

OPEN ACCESS Original Research Article

12. ***सिंह, नामवर. (2001).*** कहानी नई कहानी. *नई दिल्ली: राजकमल प्रकाशन.*

13. ***पांडेय, गंगाधर. (2012).*** अंचल की लोककथाएँ और भारतीय लोकचेतना. *भोपाल: मध्यप्रदेश साहित्य परिषद.*

14. ***ठाकुर, उषा. (2014).*** लोकसाहित्य के आयाम. *इंदौर: भारतीय लोककला मंडल.*

15. ***Joshi, V. (2019).*** *"Translation of Oral Narratives: Issues of Cultural Context."* Journal of Folk Studies, *12(2), 45–60.*

16. ***Tripathi, R. (2020).*** *"Challenges in Translating Indian Folk Ballads."* Indian Literature Review, *55(4), 133–148.*

Cite This Article:

डॉ. उकास तृ. (2025). *लोक साहित्य और अनुवाद..* **In Aarhat Multidisciplinary International Education Research Journal**: Vol. XIV (Number VI, pp. 46–53).

ISSN–2278-5655

AMIERJ Aarhat Multidisciplinary International Education Research Journal

Volume–XIV, Special Issues – III (a) Nov – Dec, 2025

OPEN ACCESS Original Research Article

अनुवाद का महत्त्व और उपयोगिता

* डॉ. प्रमोद परदेशी

* सहयोगी प्राध्यापक, दादा पाटील महाविद्यालय कर्जत, जि.अहिल्यानगर.

विश्व का हर राष्ट्र अलग-अलग भूखंडो में विभाजित है I प्रत्येक राष्ट्र की भाषा एक दूसरे से भिन्न हैं। ख़ान पान, रहन - सहन, रीति –रिवाज़, संस्कृति,साहित्य अलग -अलग है l ऐसी स्थिति में अपने भावों और विचारों का आदान -प्रदान ,व्यापार , व्यवहार आदि के लिए प्रत्येक व्यक्ति किसी न किसी भाषा का प्रयोग करता है ।संसार में ज्ञान असीम है, परंतु विश्व का सारा ज्ञान किसी एक भाषा में समाहित नही है I मनुष्य की भाषिक मर्यादा है कि वह प्रत्येक भाषा बोल नही सकता I वह जिस भाषा में सोच –विचार करता है उसी में सहज अभिव्यक्ति करता हैI वह किसी दूसरी भाषा को समझने के लिए मूल भाषा का सहारा लेता हैI बहुभाषा का ज्ञान न होने से विशिष्ट भाषा -भाषी व्यक्ति किसी दूसरे भाषा को जब समझता है और अपनी भाषा में अभिव्यक्त करता है, तब वही से अनुवाद की प्रक्रिया का जन्म होता है I "अनुवाद मूलतः पुन:कथन है, किसी एक भाषा की सामग्री दूसरी भाषा में रूपांतरण अनुवाद है।"[1] मूल भाषा की सामग्री का लक्ष्य भाषा में रूपान्तरित करना अनुवाद है और इसके लिए स्रोत भाषा और और लक्ष्य भाषा का ज्ञान होना आवश्यक होता है l प्रत्येक भाषा के मौखिक और लिखित दो रूप होते हैं l उसी प्रकार अनुवाद भी मौखिक रूप और लिखित रूप में होता है। मौखिक भाषा की अपनी मर्यादाएं होती है,उसका अस्तित्व सीमित समय के लिए होता है अधिकतर संपर्क और सामाजिक व्यवहार के लिए मौखिक भाषा का उपयोग किया जाता है और लिखित भाषा का अस्तित्व चिरकाल तक होता है l साहित्यकार अपनी संचित अनुभूतियों को लिखित भाषा के माध्यम से अभिव्यक्त करता है। जिसे साहित्य कहा जाता है। ज्ञान और संचित अनुभूतियों की अभिव्यक्ति प्राचीन काल से लिखित रूप में दिखाई देती है I मूलत: अनुवाद लिखित अभिव्यक्ति का पून: सर्जन होता है।

Copyright © 2025 The Author(s): This is an open-access article distributed under the terms of the Creative Commons Attribution 4.0 International License (CC BY-NC 4.0) which permits unrestricted use, distribution, and reproduction in any medium for non-commercial use provided the original author and source are credited.

अनुवाद देश-विदेश में सृजित ज्ञान और सूचना प्राप्त करने का मध्याम है I भारत देश एक विविधताओं से भरा हुआ बहुभाषी देश है l इस देश में अनेक भाषाएँ और बोलियाँ बोली जाती है l हर भाषा की अपनी अलग लिपि है ,भाषिक संरचना अलग -अलग है । ऐसी स्थिति में "राष्ट्रीय एकात्मता और दृढीकरण का अनुवाद एक साधन है I"[2] भारत देश में अनुवाद की परंपरा प्राचीन काल से दिखाई देती है l रामायण और भागवत गीता का अनुवाद इसका प्रमाण है l मध्यकाल और भक्तिकाल में भी अनेक ग्रंथों का अनुवाद किया गया जिसे भक्ति आंदोलन की चेतना का प्रचार-प्रसार समग्र भारत वर्ष में

ISSN–2278-5655

AMIERJ Aarhat Multidisciplinary International Education Research Journal

Volume–XIV, Special Issues – III (a) Nov – Dec, 2025

OPEN ACCESS Original Research Article

हुआ l स्वातंत्रपूर्व काल में राष्ट्रीय चेतना जागाने में अनुवाद की भूमिका महत्वपूर्ण रही हैऔर स्वातंत्र्योत्तर काल में अनुवाद व्यापक रूप में दिखाई देता है l वर्तमान समय में अनुवाद 'वसुधैव कुटुंबकम' की भूमिका निभा रहा है l

साहित्य के क्षेत्र में अनुवाद का महत्व है l साहित्य के अनुवाद का इतिहास काफी प्राचीन है।अनुवाद ने सिर्फ विभिन्न साहित्य के विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है बल्कि भाषा के विकास में भी अनुवाद का योगदान रहा है ।संस्कृत भाषा के साहित्य से लेकर खड़ी बोली तक के लिए साहित्य के भाव और विचार के प्रचार प्रसार में अनुवाद की भूमिका महत्वपूर्ण रही है l काव्यानुवाद, कथानुवाद, नाटकानुवाद,कथेतर साहित्य के अनुवाद से भौगोलिक सीमा लांघकर सामाजिक,राजनीतिक, सांस्कृतिक संदर्भ के ज्ञान प्राप्त करने में आसनी हुई है ।देशांतर्गत विविध प्रांतो की साहित्यिक रचनाओ के साथ-साथ विश्व के विभिन्न साहित्य के बीच जो परस्पर आदान-प्रदान हुआ वह अधिकांशतः अनुवाद के माध्यम से ही हुआ है। "विश्व में अनेक भाषाये प्रयुक्त होती हैI इनमे से अधिकांश भाषा ऐसी होती है जिनका साहित्यिक, सांस्कृतिक एवं वैज्ञानिक साहित्य समृद्ध होता है I"[3] अनुवाद के माध्यम से अन्य भाषाओं के समृद्ध साहित्य का अध्ययन करने से व्यक्ति के भावाभिव्यक्ति,संवेदनाएं ,विचारधाराओं जीवनानुभूतियों और साहित्य शैलियों का परिचय मिलता हैI वह हमारे जीवन के साथ-साथ हमारी चिंतन शक्ति और साहित्य सृजना को भी प्रभावित करता हैं।

विभिन्न भाषाओं के साहित्य के तुलनात्मक अध्ययन में भी अनुवाद से काफी सहायता मिली है। साहित्य यदि जीवन और समाज के यथार्थ को प्रस्तुत करता है तो विभिन्न भाषाओं के साहित्य के सामूहिक अध्ययन से किसी भी समाज, देश या विश्व की चिन्तन-धारा एवं संस्कृति की जानकारी मिलती है। भारतीय साहित्य के विभिन्न साहित्यक, सांस्कृतिक एवं राजनैतिक आन्दोलनों का अध्ययन करने में और उसको समझने के लिए अनुवाद से मदद मिली है। अन्तर्राष्ट्रीय विभिन्न भाषाओं में लिखे गए साहित्य का ज्ञान प्राप्त हुआ है। "शेक्सपियर, डी.एच. लॉरेंस, मोपासाँ तथा सार्त्र जैसे चिन्तकों की रचनाओं के अनुवाद से भारतीय जनमानस का साक्षात्कार हुआ एवं कालिदास, रवीन्द्रनाथ टैगोर एवं प्रेमचन्द की रचनाओं से विश्व प्रभावित हुआ।"[4] दुनिया के विभिन्न भाषाओं के अनुवाद द्वारा ही तुलनात्मक साहित्य के अध्ययन में सहायता मिलती है। तुलनात्मक साहित्य द्वारा देश, काल और समय की भिन्नता के बावजूद विभिन्न भाषाओं के रचनाकारों के साहित्य का तुलनात्मक अध्ययन किया जाता है। अनुवाद के माध्यम से ही विश्वसाहित्य का निर्माण और विकास हो रहा है ।विश्व के किसी कोने में सृजित साहित्य का ज्ञान प्राप्त करना अनुवाद के माध्यम से ही सहज संभव हुआ है ।आधुनिक युग में अनुवाद की महत्ता व उपयोगिता को विश्वभर में स्वीकारा जा चुका है। अनुवाद अपने स्वरूप और अर्थ में बदलाव लाने के साथ-साथ अपने बहुमुखी व बहुआयामी प्रयोजन को सिद्ध कर चुका है। आज विश्वभर में अनुवाद की आवश्यकता जीवन के हर क्षेत्र में किसी-न-किसी रूप में अवश्य महसूस की जा रही है और इस तरह अनुवाद आज के जीवन की अनिवार्यता बन गयी है । आज जीवन का कोई भी ऐसा क्षेत्र नहीं है जहाँ पर हम चिन्तन और व्यवहार के स्तर पर अनुवाद के आग्रही न हों।

ISSN–2278-5655

AMIERJ Aarhat Multidisciplinary International Education Research Journal

Volume–XIV, Special Issues – III (a) Nov – Dec, 2025

OPEN ACCESS Original Research Article

विश्व संस्कृति में अनुवाद का महत्त्व रहा है ।विश्व की सभ्यताओं और संस्कृतियों के विकास में अनुवाद की विशेष भूमिका रही है।"विश्व बंधुत्व की स्थापना एवं राष्ट्रीय एकता को बरकरार रखने की दृष्टि से अनुवाद एक तरह से सांस्कृतिक सेतू की तरह भूमिका अदा कर रहा है ।"[5] विदेशी प्राचीन संस्कृति और सभ्यताओं से भारत का घनिष्ठ संबंध रहा है और इस संबंध में अनुवाद की विशेष महत्ता रही है। विश्व भर में गीता तथा उपनिषद के ज्ञान का अनुवाद अपने ढंग से किया जाता रहा है। पंचतंत्र के लघु संग्रहों का अनुवाद अरबी तथा अन्य यूरोपीय भाषाओं में हुआ है। वास्तव में अनुवाद एक सांस्कृतिक सेतु का काम करता है। विश्व की विभिन्न संस्कृतियों को जानने व समझने में इसकी निश्चित रूप से भूमिका है। विश्व की सांस्कृतिक एकता में इसका महत्वपूर्ण योगदान है। भारतीय संस्कृति के निर्माण में हजारों वर्षों के विभिन्न धर्मों, मतों एवं विश्वासों की साधना है। इन मतों और विश्वासों को आत्मसात करके भारतीय संस्कृति के निर्माण में अनुवाद की महत्त्वपूर्ण भूमिका है। अनुवाद के माध्यम से विभिन्न राष्ट्रों की सांस्कृतियो का अध्ययन करना आसान हुआ है ।

ज्ञान-विज्ञान के क्षेत्र में अनुवाद का विशेष महत्व है । ज्ञान विज्ञान के क्षेत्र के अनुवाद से मिलने वाले ज्ञान को मनुष्य ने एक देश की भौगोलिक सीमा से निकाल कर दूसरे देश तक पहुंचाया है । भारतीय प्राचीन और पाश्चात्य साहित्य कला और दर्शन के प्रचार-प्रसार का श्रेय अनुवाद को ही जाता है।आधुनिक काल में पश्चिम के नए ज्ञान विज्ञान से हमारे ज्ञान और चेतना के विकास में अनुवाद ही सबसे बड़ा सहारा बना है। विश्व के सभी विकसित देशों की राजनीतिक, सामाजिक, सांस्कृतिक, आर्थिक, वैज्ञानिक,प्रौद्योगिकी,चिकित्सा कृषि आदि के क्षेत्र के विकास में अनुवाद की उल्लेखनीय भूमिका रही है। आज तकनीक और विज्ञान के अविष्कारों और अनुसंधान से तेजी से परिवर्तन हो रहा हैI इससे जुड़े रहने के लिए अनुवाद सबसे बड़ा साधन है। कार्यालय तथा व्यावसायिक क्षेत्र में भी अनुवाद की भूमिका महत्वपूर्ण है ।वर्तमान युग में व्यावसायिक अनुवाद ज्ञान की ऐसी शाखा के रूप में विकसित हुआ है जहाँ रोजगार के अवसर निर्माण हो रहे हैं। आज व्यावसायिक अनुवादक की अपनी मौलिक पहचान है।

विज्ञान और प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में तेजी से हुए विकास के साथ भारतीय परिदृश्य में कृषि, उद्योग, चिकित्सा, अभियान्त्रिकी और व्यापार के क्षेत्र में व्यापक परिवर्तन हुआ है। इन क्षेत्रों में प्रयुक्त तकनीकी शब्दावली का निर्माण कर इन्हें समाजोपयोगी करने में अनुवाद की महत्त्वपूर्ण भूमिका है। संविधान में हिन्दी को राजभाषा का दर्जा दिए जाने के बाद राजभाषा प्रभाग की स्थापना हुई, जहाँ प्रशिक्षित हिन्दी अनुवादक एवं हिन्दी अधिकारी कार्य करते हैं।

आज के संचार क्रांति के युग में विज्ञापन अनुवाद का देश-विदेश में वाणिज्य और व्यापार के क्षेत्र में विशेष महत्व है । प्राचीन काल से ही अनुवाद इस क्षेत्र में अत्यंत उपयोगी रहा है। व्यापारी लोग अपने देश-विदेश जाकर अनुवाद के सहारे ही व्यापार और वाणिज्य करते है। आज के बाजारवाद के युग में व्यापारी अपने उत्पादों और वस्तुओं की गुणवत्ता को सिध्द करने और उनके विक्रय के लिए अनुवाद का ही सहारा लेते हैं। विश्व स्तर पर बहुराष्ट्रीय कंपनियों का अस्तित्व अनुवाद के कारण ही है। अंतरराष्ट्रीय बाजार में उत्पादों और माल को

ISSN–2278-5655

AMIERJ Aarhat Multidisciplinary International Education Research Journal

Volume–XIV, Special Issues – III (a) Nov – Dec, 2025

OPEN ACCESS Original Research Article

खपाने की प्रतिस्पर्धा में तथा आगे बढ़ने के लिए भी अनुवाद का महत्व बढ़ जाता है। विज्ञापन के क्षेत्र में अनुवाद ग्लोबल मार्केट का हिस्सा बन गया है I अपने उत्पाद का प्रचार -प्रसार और विक्रय हेतु अन्य भाषा -भाषी समाज तक पहुचंने में अनुवाद का योगदान अतुलनीय है 1 इसलिए अनुवाद को बाजारवाद की आधारशीला कहा जाता है 1

विश्व संस्कृति और सभ्यता की पहचान यात्रा एवं पर्यटन से होती है ।आज पर्यटन क्षेत्र में देश-विदेश के पर्यटन का विकास और रोजगार निर्माण में अनुवाद का विशेष महत्व है। मिडिया के क्षेत्र में अनुवाद का महत्त्व है ।कोई भी समाचारपत्र, रेडियो या टीवी चैनल ऐसा नहीं है, जिसमें हमें अनुवाद की जरुरत महसूस न होती है। मीडिया के सभी क्षेत्रों में चाहे वह भारतीय भाषा के समाचार हों या अन्य भाषा के चैनल हों, सभी जगह अनुवाद अहम भूमिका निभाता है। अंग्रेजी अखबारों के संवाददाताओं को भी समाचार-संकलन के दौरान, साक्षात्कार करते या भाषण की रिपोर्ट करते हुए, दुर्घटना स्थल में जाकर स्टोरी बनाते हुए कई बार अनुवाद का सहारा लेना पड़ता है। संवाददाताओं से लेकर संपादक तक सभी को किसी न किसी स्तर में अनुवाद करना ही पड़ता है। सफल पत्रकर बनने के लिए पत्रकारिता के साथ अनुवादक होना आवश्यक है। अत:पत्रकारिता और अनुवाद का गहरा अंतरसंबंध है।

फिल्म के क्षेत्र में भी अनुवाद का महत्त्व है 1 फिल्मो में अनुवाद सबटायटल या डबिंग के रूप में होता हैI आज डबिंग का महत्व मनोरंजन के हर क्षेत्र में दिखाई दे रहा है। टेलीविजन पर अन्य भाषा की फिल्म अपनी भाषा में देखकर गौरवान्वित महसूस करते हैं। डबिंग के माध्यम से ही डिस्कवरी और नेशनल ज्योग्राफिक चैनलों की पहुँच भारत के कोने-कोने में है। पिछले कुछ वर्षों से हिंदी में अंग्रेजी से डब की गई अनेक फिल्में प्रदर्शित हुई है। भारतीय भाषाओं में बनी फिल्में आज प्रत्येक टी.वी. चैनल में अन्य भारतीय भाषाओं में देखी जा सकती है।जो एक भाषा से दूसरी भाषा में अनुवाद करके दर्शकों तक पहुँचाइ जाती है।

निष्कर्ष :

अनुवाद मूलतः पुन:कथन है I किसी एक भाषा की सामग्री दूसरी भाषा में रूपांतरण अनुवाद है।अनुवाद देश-विदेश में सृजित ज्ञान और सूचना प्राप्त करने का मध्याम है I अनुवाद विश्व-संस्कृति, विश्व-बंधुत्व, भावात्मक एकता और समरसता स्थापित करने का एक ऐसा सेतु हैI विश्व के सभी विकसित देशों के राजनीतिक, सामाजिक, सांस्कृतिक, आर्थिक, वैज्ञानिक,प्रौद्योगिकी, चिकित्सा कृषि, खेलकुद आदि विभिन्न क्षेत्रो के विकास में अनुवाद की उल्लेखनीय भूमिका रही है। विभिन्न आर्थिक, औद्योगिक और वैचारिक धरातलों स्तरों पर पारस्परिक भाषिक विनिमय के लिए अनुवाद का प्रयोग अधिक किया जाने लगा है। विश्व ज्ञान-विज्ञान के क्षेत्र में क्षेत्रीयता से बाहर निकल कर मानवीय कल्याण में अनुवाद महत्व पूर्ण भूमिका निभा रहा है I देशांतर्गत विविध प्रांतो की साहित्यिक रचनाओ के साथ-साथ विश्व के विभिन्न साहित्य के बीच जो परस्पर आदान-प्रदान अनुवाद के माध्यम से ही हुआ है। अनुवाद को बाजारवाद की आधारशीला हैI इसके साथ–साथ भाषिक समृद्धी, समाज एवं राष्ट्र की एकता,देश – विदेश की विभिन्न संस्कृतियो की पहचान, देश-विदेश के पर्यटन, साहित्य एवं अनुसंधान, व्यापार में आदान-प्रदान, मानव जाति के कल्याण में साह्यता, मानवता धर्म का प्रचार, विज्ञापन, फिल्म और मिडिया के क्षेत्र में अनुवाद का विशेष

ISSN–2278-5655

AMIERJ Aarhat Multidisciplinary International Education Research Journal

Volume–XIV, Special Issues – III (a) Nov – Dec, 2025

OPEN ACCESS Original Research Article

महत्त्व है ।अनुवाद ने पूरे विश्व को एक सूत्र में बांध दिया है। आज अनुवाद 'वसुधैव कुटुंबकम' की भूमिका निभा रहा है l

संदर्भ :

1. *प्रयोजन मूलक हिंदी अधुनातन आयाम , डॉ . अंबादास देशमुख,पृ .474*
2. *अनुवाद चिंतन, डॉ . अर्जुन चव्हाण,पृ .34*
3. *अनुवाद सिद्धांत और स्वरूप, सं.मनोहर सराफ, पृ .11*
4. *अनुवाद प्रक्रिया एवं प्रयोग, छबिल कुमार मेहेर, पृ .27*
5. *वही, पृ .23*

Cite This Article:

डॉ. परदेशी प्र. (2025). *अनुवाद का महत्त्व और उपयोगिता.* **In Aarhat Multidisciplinary International Education Research Journal**: Vol. XIV (Number VI, pp. 54–58).

ISSN–2278-5655

AMIERJ Aarhat Multidisciplinary International Education Research Journal

Volume–XIV, Special Issues – III (a) Nov – Dec, 2025

OPEN ACCESS Original Research Article

नाटक और अनुवाद : महेश एलकुंचवार का नाटक 'युगांत' के विशेष संदर्भ में

* डॉ. शीतल दुर्गाडे

* सहायक प्राध्यापक, आर्ट्स कॉमर्स एण्ड बीबीए कॉलेज, वडगांव.

आधुनिक युग में अनुवाद का क्षेत्र व्यापक और निरंतर महत्वपूर्ण हो रहा है | विभिन्न भाषाओं के साहित्य के बीच की दूरी को मिटाने का कार्य अनुवाद के माध्यम से होता है | साथ- साथ पुरें विश्व को एक सूत्र में बाँधने का प्रयास भी अनुवाद से हुआ है | सामजिक , सांस्कृतिक, राजनीतिक , साहित्यिक , धार्मिक आदि सभी स्तर पर अनुवाद का अपना अलग महत्व है | भाषिक विविधता से परिपूर्ण भारत देश की लगभग सभी भाषाओं के साहित्य में भी अनुवाद का महत्व बढ़ रहा है | काव्य, उपन्यास , कहानी, नाटक , आत्मकथा आदि विभिन्न विधाओं में अनुवाद का अलग महत्व एवं स्थान है | कथ्य , परिवेश , वातावरण , पात्र ,भाषा तथा घटना आदि में किसी भी तरह के परिवर्तन किये बिना जो अनुवाद किया जाता है , वह नाट्यानुवाद कहलाता है | मराठी नाटक परंपरा को एक नई दिशा देनेवाले नाटककारों में महेश एलकुंचवार प्रमुख नाटककार है | नाट्य साहित्य के क्षेत्र में उनकी पचास साल से अधिक सक्रियता रही है | उनके नाटक महाराष्ट्र के साथ –साथ कन्नड़ , बांग्ला और अंग्रेजी रंगमंच पर भी मंचित हुए है | अंग्रेजी , हिंदी तथा बंगाली भाषाओं में उनके नाटकों का अनुवाद हुआ है | हिंदी के अनुदित नाटकों में मराठी नाटककार महेश एलकुंचवार के नाटकों का महत्वपूर्ण स्थान रहा है | उनके द्वारा लिखित 'गार्बो', 'आत्मकथा' , 'वाडा चिरेबंदी', 'युगांत' इन नाटकों का हिंदी में सफलतापूर्वक अनुवाद हुआ है | 'गार्बो' , 'आत्मकथा' , 'वाडा चिरेबंदी', 'होली' इन नाटकों का वसंत देव द्वारा अनुवाद हुआ है | 'युगांत' एलकुंचवार द्वारा लिखित नाट्यत्रयी है | जिसमे 'वाडा चिरेबंदी'(बाड़े की घेराबंदी) , 'मग्न तल्याकाठी' (तालाब के पास खंडहर) और 'युगांत' इन तीन नाटकों का एकत्रित रूप है | जिसका 'युगांत' इस नाम से रामजी तिवारी ने हिंदी में अनुवाद किया | इस नाट्यत्रयी ने मराठी रंगमंच , भारतीय रंगमंच और जागतिक रंगमंच को भी प्रभावित किया | सन २००२ में इस नाट्यत्रयी को साहित्य अकादेमी का पुरस्कार मिला |

Copyright © 2025 The Author(s): This is an open-access article distributed under the terms of the Creative Commons Attribution 4.0 International License (CC BY-NC 4.0) which permits unrestricted use, distribution, and reproduction in any medium for non-commercial use provided the original author and source are credited.

साहित्य की विविध विधाओं की तुलना में नाटक का अनुवाद कठिन और श्रमसाध्य काम होता है | **" नाटक का संबंध दृश्य तथा श्रव्य दोनों माध्यमों से है ; अतएव अनुवादक को दृश्य एवं श्रव्य माध्यमों की तकनीक का जानकार होना आवश्यक है | संवाद की आरोह – अवरोहमयी भाषा ,ध्वनि प्रभाव तथा प्रकाश योजना के भीतर से ही अनुवादक को मूल नाटक के**

ISSN–2278-5655

AMIERJ Aarhat Multidisciplinary International Education Research Journal

Volume–XIV, Special Issues – III (a) Nov – Dec, 2025

OPEN ACCESS Original Research Article

निकट पहुँचाना पड़ता है |" 1 इसप्रकार अनुवादक को नाटक का अनुवाद करते समय रंगमंच का ज्ञान होना भी आवश्यक होता है | क्योंकि नाटक के अनुवाद की बुनियादी चुनौती मंचियता के साथ सामाजिक और सांस्कृतिक परिवेश की होती है | महेश एलकुंचवार के नाटकों का परिवेश मुख्य रूप से सामाजिक और राजनीतिक स्थिति के साथ -साथ ग्रामीण जीवन , गाँव की समस्याएं तथा गाँव की संस्कृति से जुडा हुआ है | इसलिए एलकुंचवार के नाटकों का अनुवाद करते समय संवादों में पात्रों की मानसिकता , सामाजिक संदर्भ और नाट्य शिल्प को महत्वपूर्ण रूप में प्रस्तुत करना आवश्यक है | क्यूंकि किसी भी भाषा के नाटक और रंगमंच में वहा के समाज की , सांस्कृतिक परिवेश की झलक दिखाई देती है | "**प्रत्येक भाषा में ऐसे अनेक सामाजिक सांस्कृतिक शब्द होते है , जिनके पीछे एक सुदीर्घ ऐतिहसिक परंपरा एवं सबद्धताएं होती है |"**2 एलकुंचवार के नाटक भी संस्कृति और परंपरा से प्रभावित है | युगांत इस नाटक में विदर्भ के धारणगाँवकर देशपांडे परिवार और वहां के सांस्कृतिक संदर्भ उधृत हुए है | जैसे –

"वाहिनी : असं करू नको रे बाबा . काहीही झाल तरी ब्राह्मण आहो आपण.

भाभी : अरे बाबा , ऐसा नहीं करना | कुछ भी हो , हम लोग ब्राह्मण हैं |"3

उपर्युक्त संवादों में शब्दानुवाद हुआ है | साथ – साथ भाभी द्वारा बोला गया यह संवाद जनेऊ संस्कार की परंपरा को स्पष्ट करता है | नाटक में अभय द्वारा जनेऊ विधि को नकारा जाता है , तब ब्राह्मण होने के नाते यह विधि और संस्कार के परंपरा को भाभी स्पष्ट करती है | यहाँ पर भारतीय ब्राह्मण वर्ग के संस्कारों का चित्रण करते वक्त अनुवादक ने मूल पाठ को यथावत प्रस्तुत कर अनुवाद में इस संस्कृति का सम्मान बनाए रखा है | वही दूसरी ओर अनुदित पाठ में शब्दों का कुछ जगहों पर व्यवस्थित प्रयोग नहीं हुआ है | जैसे –

"वाहिनी : लग्नास आलेबिले त बोहल्यावराच उभा नहीं राहणार म्हणत होता .

भाभी : वह कह रहा था कि शादी में वे लोग आये तो शादी ही नहीं करूँगा |"4

प्रस्तुत संवादों के मूल पाठ में 'बोहला' इस शब्द के लिए अनुदित 'शादी ही नहीं' इस शब्द का प्रयोग हुआ है जो सही नहीं है | जैसे मराठी संस्कृति में विवाह के लिए वधु और वर को जिस ऊँचे आसन पर खड़ा किया जाता है उसे बोहला कहते है | महाराष्ट्र में विवाह में बोहला बनाने की परंपरा है | जिसका एक सांस्कृतिक और परंपरागत महत्व है |लेकिन अनुदित पाठ में इस शब्द के बदले शादी ही नहीं इस शब्द का प्रयोग हुआ है | जो मूल शब्द के अर्थ को स्पष्ट नहीं करता | जिसके कारण बोहला इस शब्द का अर्थ एवं मूल भाव पाठक नहीं समझ पाएँगे | इस जगह पर 'वेदि' इस शब्द का प्रयोग अधिक सटीक रूप से बैठता | इसी प्रकार मूल पाठ के विभिन्न शब्दों का अनुदित पाठ में अनुवाद हुआ है जो मुख्य अर्थ से बिलकुल नहीं मिलता | जैसे मूल पाठ में 'आहेर' शब्द अनुदित में 'भेट' हुआ है | जो अपना अलग अर्थ स्पष्ट करता है |उसी प्रकार मूल पाठ में 'पातळ' शब्द के लिए 'साडी' इस शब्द को लिया गया है | इन दोनों शब्दों का अर्थ अलग है | सामाजिक स्तर पर भी एलकुंचवार के नाटकों का महत्व है | उन्होंने भारतीय समाज की विडम्बनाओं तथा व्यक्ति के आतंरिक संघर्ष को अपने नाटकों में चित्रित किया है | 'युगांत'

ISSN–2278-5655

AMIERJ Aarhat Multidisciplinary International Education Research Journal

Volume–XIV, Special Issues – III (a) Nov – Dec, 2025

OPEN ACCESS Original Research Article

नाटक में धरणगाँवकर देशपांडे परिवार के माध्यम से ग्रामीण और शहरी दोनों जगह की सामजिक स्थिति पर भाष्य किया है | हमारे समाज में आज भी विवाह के समय में लड़कें वालों की मनमानी और दहेज़ के रूप में विविध कीमती वस्तुओं की मांग की जाती है | जिसको आधुनिक युग में भी लड़की के माँ बाप इस मानसिकता के साथ स्वीकारते है कि, ससुराल में उनकी बेटी को कोई तकलीफ न हों | एलकुंचवार के नाटकों में भी इस सामाजिक स्थिति का चित्रण हुआ है |

“वाहिनी : ‘ लग्न नीट झालं नाही. मानपान धड झाले नाही. मांडवपरतणीस आम्ही यावं असं वाटत असल त पाच तोले आणखी घाला.’

भाभी : यही कि शादी ठीक से नहीं हुई | मान- सम्मान अच्छी तरह नहीं हुआ | हम सोचते हैं कि पांचवीं में आना चाहिए लेकिन इसमें पाँच तोले ओर पहनाओ |”5

इन संवादों में रंजू के घर से संदेश आने के बाद भाभी यह वाक्य बोलती है | जो हमारे समाज की विवाह के प्रति संकुचित मानसिकता को उजागर करते है | इस स्थिति को मूल पाठ और अनुदित पाठ में भी मूल भाव के साथ प्रस्तुत किया गया है | इसी प्रकार मूल नाटक में मराठी भाषा के विभिन्न शब्दों का प्रयोग हुआ है जो भारतीय समाज की सामाजिक संरचना को स्पष्ट करते है | जिसे सरल तरीके से दूसरी भाषा में अभिव्यक्त करना कठिन होता है | जैसे मग्न तल्याकाठी (तालाब के पास खँडहर) इस नाटक के एक प्रसंग में पराग और अभय के बीच घटित संवादों में ‘सोटम्या’ , ‘पोंग्या’,अबे ठोल्या’ , इन शब्दों का प्रयोग हुआ है | जिनका वैदर्भीय बोलीभाषा में एक आंचलिक और अर्थ के स्तर पर अलग महत्व है | इन शब्दों का अनुवाद करतें समय क्रमशः अरे बच्चू, अरे मुर्ख , जिद्दी आदमी इन शब्दों का प्रयोग अनुवादक ने किया है | जिसका अर्थ मूल भाव को स्पष्ट नहीं कर पाता |

नाटक के साहित्यिक मूल्य के साथ- साथ उसका रंगमंचीय मूल्य भी होता है | एलकुंचवार के नाटक भी रंगमंचीय तत्वों पर भी खरे उतरे है| इनके नाटकों का मंचीय स्तर पर अनुवाद करते समय दृश्यबंध, रंगसंकेत, अभिनेयता, ध्वनि एवं प्रकाश योजना आदि सभी जगह अनुवादक ने अर्थ और भाव का ध्यान रखते हुए अनुवाद किया है | स्वगत कथन एलकुंचवार के नाटकों की विशेषता रही है | कहीं जगह पर नाटक के कुछ दृश्य मूल की तुलना में अधिक रोचक एवं प्रभावी हुए है | जो अनुवादक की अनुवाद के प्रति सजगता को दर्शाते है|

उपर्युक्त विवेचन के आधार पर सारांशतः यह कह सकते है कि महेश एलकुंचवार के नाट्य साहित्य का भारतीय नाट्य लेखन में अनन्यसाधारण महत्व है | उनकें नाटकों का अनुवाद करना एक चुनौतीपूर्ण काम है | लेकिन उतना ही महत्वपूर्ण भी है |अनुवादक को इनके नाटकों का अनुवाद करते समय भाषा के साथ सांस्कृतिक, सामाजिक, आंचलिक और मंचीय संदर्भो का भी विशेष ध्यान रखना पड़ता है | इसलिए उनके द्वारा लिखित और अनुदित नाटक भारतीय नाट्य साहित्य को एक नया आयाम प्रदान कर रहें है साथ ही अपनी मूल पहचान भी बनाये हुए है |

संदर्भ :

1. *प्रयोजनमूलक हिंदी – विनोद गोदरे , वाणी प्रकाशन , तृ. सं. 2010, पृ.68*
2. *अनुवाद सिद्धांत और प्रयोग : जी गोपीनाथन , प्र.सं. 1997, पृ.68*

ISSN–2278-5655

Aarhat Multidisciplinary International Education Research Journal

Volume–XIV, Special Issues – III (a) Nov – Dec, 2025

OPEN ACCESS Original Research Article

3. युगांत : महेश एलकुंचवार , मौज प्रकाशन गृह ,तृ. सं.2015,पृ.62
अनुवाद : रामजी तिवारी : भारतीय ज्ञानपीठ , प्र. सं.2005, पृ.92

4. युगांत : महेश एलकुंचवार , मौज प्रकाशन गृह ,तृ. सं.2015,पृ.58
अनुवाद : रामजी तिवारी : भारतीय ज्ञानपीठ , प्र. सं.2005, पृ.86

5. युगांत : महेश एलकुंचवार , मौज प्रकाशन गृह ,तृ. सं.2015,पृ.98
अनुवाद : रामजी तिवारी : भारतीय ज्ञानपीठ , प्र. सं.2005, पृ.140/41

Cite This Article:

डॉ. दुर्गाडे शी. (2025). नाटक और अनुवाद: महेश एलकुंचवार का नाटक 'युगांत' के विशेष संदर्भ में. **In Aarhat Multidisciplinary International Education Research Journal**: Vol. XIV (Number VI, pp. 59–62).

ISSN–2278-5655

AMIERJ Aarhat Multidisciplinary International Education Research Journal

Volume–XIV, Special Issues – III (a) Nov – Dec, 2025

OPEN ACCESS Original Research Article

अनुवाद की समस्याएँ

* डॉ. बेबी श्रीमंत खिलारे

* सहायक प्राध्यापक एवं शोध निर्देशक, दादा पाटील महाविद्यालय, कर्जत, जि. अहिल्यानगर.

स्रोत भाषा से लक्ष्य में अनुवाद केवल भाषाई कार्य नहीं बल्कि सांस्कृतिक संवाद की प्रक्रिया है। इसमें शब्द, ध्वनि, भाव, लिंग, वाक्यरचना और संस्कृति सबका गहरा संबंध होता है। अनुवादक को दोनों भाषाओं के व्याकरण, समाज, और संस्कृति का गहन ज्ञान होना आवश्यक है। अन्यथा अनुवाद यांत्रिक हो सकता है, पर भावात्मक और सांस्कृतिक स्तर पर अपूर्ण रहेगा।

अनुवाद एक साहित्यिक विधा है। एक भाषा की सामग्री को दूसरी भाषा में अंतरित करने की प्रक्रिया को अनुवाद माना जाता है। एक भाषा के विचारों को दूसरी भाषा में व्यक्त करना बडा ही कठिन कार्य है क्योंकि प्रत्येक भाषा की अपनी -अपनी प्रकृति होती है उसकी अपनी व्याकरणिक संरचना होती है। उसकी अपनी ध्वनि, रूप, वाक्य, तथा अर्थमूलक विशेषता होती है। अपने मुहावरे, लोकोक्तियाँ तथा कहावतें होती है अतः मूल भाषा में अभिव्यक्त भावों था विचारों को दूसरी भाषा में उसी रूप में प्रकट करना सरल तथा आसान नहीं है। अनुवाद के लिए दो भाषाओं की आवश्यकता होती है परंतू दोनों भाषाओं की प्रकृति में साम्य नहीं होता। कई लेखकों ने भी इसे नितांत कठिन कार्य कहा है। स्पष्ट है कि जब इतना जटिल कार्य है तो निश्चित ही इसके निष्पादन में भी अनेक कठिनाइयाँ स्वाभाविक रूप से होगी। अनुवाद के प्रकार और क्षेत्र भी प्रथक प्रथक है। स्पष्ट है कि उनसे संबंधित सामस्याएँ भी भिन्न भिन्न होगी। स्रोत भाषा से लक्ष्य भाषा में अनुवाद करते समय जो समस्याएँ होती है उन्हें प्रमुखता तीन भागों में विभाजित किया जाना आवश्यक है।

1. भाषागत समस्याएँ
2. सामाजिक - सांस्कृतिक समस्याएँ
3. अन्य समस्याएँ

Copyright © 2025 The Author(s): This is an open-access article distributed under the terms of the Creative Commons Attribution 4.0 International License (CC BY-NC 4.0) which permits unrestricted use, distribution, and reproduction in any medium for non-commercial use provided the original author and source are credited.

भाषागत समस्याएँ:

ध्वनि की समस्या : अनुवाद करते समय ध्वनि विषयक अनेक सामस्याओं का सामना करना पड़ता है जब स्रोत भाषा की कोई ध्वनि लक्ष्य भाषा में नहीं होती तब उसे प्रस्तुत करना अत्यंत कठिन होता है। इससे लिप्यंतर की समस्या खड़ी होती है। भाषा में महाप्राण और अल्पप्राण की व्यावहारिकता भी

ISSN–2278-5655

AMIERJ Aarhat Multidisciplinary International Education Research Journal

Volume–XIV, Special Issues – III (a) Nov – Dec, 2025

OPEN ACCESS Original Research Article

उस भाषा के व्याकरण पर आधारित होती है उदा. उर्दू में प्रताप को परताप उच्चारित किया जाता है । इसी प्रकार अन्य भाषाओं में भी उच्चारण का भेद देखा जा सकता है। किसी ध्वनि के लिए सही ध्वनि न होने पर लक्ष्य भाषा की कोई समानार्थी ध्वनि प्रयुक्त करने से अर्थ हानी भी हो जाती है। मराठी में 'मुरळी' (खंडोबा की) हिन्दी में 'मुरली' इसी प्रकार अनुवाद करते समय ध्वनि की सामस्याएँ बन जाती है। डॉ. लक्ष्मण भोसले कहते है कि "एक भाषा के भाव को दूसरी को समर्पित किए जाते है तो कहीं न कहीं मूल भाव के प्रति आदमी झूठ जरूर हो जाता है शायद भाषाएँ आपने पास कुछ ऐसे रहस्य रखती है। जो दूसरों को नहीं सौंपना चाहती।"[1]

लिंग की समस्या :

स्रोत भाषा से लक्ष्य भाषा में अनुवाद करते समय वाक्य में प्रयुक्त लिंग भी सामस्या बनता है। प्रत्येक भाषा की अपनी व्यावहारिक व्यवस्था होती है जिसमें सज्ञा और सर्वनामों का लिंग निर्धारण भिन्न होता है। जब किसी भाषा के वाक्य का दूसरी भाषा में अनुवाद किया जाता है तो यह अंतर अनेक बार अर्थ या भाव को बदल देता है।

मराठी में तीन लिंग होते है – पुलिंग, स्त्रीलिंग, और नपुसकलिंग जबकि हिन्दी में केवल दो – पुलिंग और स्त्रीलिंग । उदा. मराठी में 'देह' पुलिंग है जबकि हिन्दी में 'देह' स्त्रीलिंग मानी जाती है। मराठी में 'घर' नपुसकलिंग है पर हिन्दी में लिंग निर्धारण पुलिंग रूप में होता है। अंग्रेजी से हिन्दी अनुवाद में भी ऐसी सामस्या मानी है क्योंकि अंग्रेजी में भेद बहुत सीमित है – अधिकांश वस्तुओं या प्राणियों के लिए 'it' का प्रयोग होता है जबकि हिन्दी में हर सज्ञा के लिए लिंग निश्चित होता है । इस प्रकार अनुवाद करते समय लिंग की सही पहचान और प्रयोग न हो तो वाक्य का अर्थ भाव और व्याकरणिक शुद्धता तीनों प्रभावित होते है। इसलिए अनुवादक को दोनों भाषाओं के लिए नियमों की अछी समझ होना अत्यंत आवश्यक है।

शीर्षक की समस्या :

अनुवाद में शीर्षक की समस्या एक महत्वपूर्ण और सूक्ष्म चुनौती है। किसी भी रचना का शीर्षक केवल नाम नहीं होता बल्कि वह पूरी रचना की आत्मा, भाव और उद्देश्य को संक्षेप में व्यक्त करता है। जब किसी भाषा से दूसरी भाषा में अनुवाद किया जाता है तो शीर्षक का अर्थ, भाव और सांस्कृतिक संदर्भ बदल सकता है। डॉ. अर्जुन चव्हाण कहते "मूल रचना के समान लक्ष्य भाषा में शीर्षक खोजना एक जटिल समस्या है। मराठी से हिन्दी में अथवा हिन्दी से मराठी में अनुवाद करना हो अथवा अन्य किसी भी भाषा से अनुवाद करना हो, ऐसे कई शीर्षक होते है जिन्हें लक्ष्य भाषा में समानार्थी शब्द ही नहीं मिल पाता । शीर्षक के अनुवाद में सामाजिक सांस्कृतिक भिन्नता के कारण भी सामस्या खड़ी होती है । सामाजिक सांस्कृतिक सामस्या के आधार पर अगर किसी रचना का शीर्षक हो और लक्ष्य भाषा में वह विरासत न मिलती हो तो उसके शीर्षक का अनुवाद करना समस्यामूलक होता है।"[2]

शीर्षक का शबदशः अनुवाद करने पर उसका प्रभाव समाप्त हो जाता है उदा. अंग्रेजी कहानी "The old man and the sea" का अनुवाद "बूढ़ा आदमी और समुद्र" किया जा सकता है परंतु इसका साहित्यिक भाव और गहराई पूरी तरह प्रकट नहीं होती। इसी प्रकार मराठी शीर्षक 'माझं घर' का हिदी में 'मेरा घर' तो सीधा अनुवाद है लेकिन अगर रचना में भाव सामाजिक संघर्ष या अपनत्व से जुड़ा हो तो केवल शाब्दिक अनुवाद शीर्षक का प्रभाव कम कर देता है। आत: शीर्षक

ISSN–2278-5655

AMIERJ Aarhat Multidisciplinary International Education Research Journal

Volume–XIV, Special Issues – III (a) Nov – Dec, 2025

OPEN ACCESS Original Research Article

का अनुवाद करते समय अनुवादक को केवल शब्द नहीं भाव सांस्कृतिक अर्थ और रचना का मूल संदेश भी ध्यान में रखना चाहिए । यही सही और प्रभावशाली शीर्षक अनुवाद की पहचान है।

सामाजिक–सांस्कृतिक समस्या:

अनुवाद दो संस्कृतियों के बीच सेतु निर्माण की प्रक्रिया है। प्रत्येक भाषा अपने समाज की संस्कृति, परंपरा सोच और जीवन शैली से गहराई से जुड़ी होती है। प्रत्येक बात को लेकर प्रत्येक समाज की अपनी विशिष्टताएँ होती है और उनके अनुरूप ही भाषा में शब्द एवं अभिव्यक्ति हुआ करती है । "अनुवादक की समस्या मूल कृति के परिवेश के अनुसार ही कम-जादा होती है। यह परिवेश विदेशी, भारतीय, आँचलिक, समसामयिक, तत्कालीन आदि हो सकता है। परिवेश अगर विदेशी, आँचलिक और तत्कालीन है तो सामस्या अधिक होती है। और यदि भारतीय एवं समकालीन है तो सामस्या कम होती है । मूल कृति के विदेशी वातावरण को अनुवाद में सुरक्षित रखने के लिए अनुवादक को दोनों समाजों व संस्कृतियों का गहन अध्ययन करना पड़ता है। विदेशी संदर्भ में दोनों संस्कृतियाँ एक दूसरे से इतनी घुली – मिली नहीं होती ।"[3]

सामाजिक सांस्कृतिक समस्या तब भी उत्पन्न होती है जब किसी भाषा के विशेष रीति-रिवाज, लोकजीवन, खान-पान, वस्त्र, त्योहार या धार्मिक भावनाओं से जुड़े शब्दों का दूसरी भाषा में सटीक पर्याय नहीं मिलता उदा. मराठी में 'केळवण' 'सत्यनारायण पूजा' जैसे शब्दों का हिन्दी में वही भावार्थ देना कठिन है। इसी प्रकार अंग्रेजी के 'Thanksgiving', Halloween' या 'Tea party' जैसे सांस्कृतिक शब्दों का अनुवाद केवल शब्दशः किया जाए तो उनका वास्तविक अर्थ खो जाता है। डॉ. सौ. शकुंतला पांचाल कहती है "किसी देश अथवा समाज के रीति-रिवाज सभ्यता-संस्कृति, तीज-त्योहार आदि का सजीव चित्रण करना अनुवादक की परीक्षा की घड़ी होती है ।"[4] इसी प्रकार अनुवाद में सामाजिक - सांस्कृतिक भिन्नता एक बड़ी चुनौती है। अनुवादक को केवल भाषाई नहीं बल्कि दोनों समाजों की संस्कृति, परंपरा और मानसिकता का भी गहरा ज्ञान होना चाहिए। तभी अनुवाद में मूल रचना की भावात्मक और सांस्कृतिक सच्चाई बनी रहती है।

अन्य समस्याएँ :

अनुवाद कार्य एक अत्यंत मेहनत और विशेषज्ञता की मांग करनेवाला कार्य है,लेकिन इसके बावजूद अनुवादकों को उनके श्रम के अनुरूप पारिश्रमिक और वेतनमान नहीं मिल पाता यह समस्या आज भी अनुवादक के क्षेत्र में सबसे बड़ी बाधाओं मे से एक है।

अनुवादकों को कोई निश्चित वेतनमान या सरकारी मानक तय नहीं है । अलग-अलग संस्थान अपनी सुविधा के अनुसार भुगतान करते है इससे पेशे में अस्थिरता बनी रहती है।

कई बार अनुभवी और कुशल अनुवादकों को भी नवप्रवेशी के समान भुगतन किया जाता है। इससे योग्य लोगों को सम्मान और प्रेरणा नहीं मिलती। "अनुवादक को यदि स्तरीय बनाना हो तो अनुवादक के यथोचित सम्मान एवं प्रतिष्ठा की अत्यंत आवश्यकता है । अनुवादक का उचित सम्मान करना याने अछे अनुवाद को बढ़ावा देना है।"[5] समाज और प्रकाशन

ISSN–2278-5655

AMIERJ Aarhat Multidisciplinary International Education Research Journal

Volume–XIV, Special Issues – III (a) Nov – Dec, 2025

OPEN ACCESS Original Research Article

जगत में अनुवादक के कार्य को समझा जाता है, जबकि वही ज्ञान साहित्य और संस्कृति के आदान-प्रदान का माध्यम होता है।

निष्कर्ष :

निष्कर्षत: हम कह सकते है कि अनुवादक का स्रोत और लक्ष्य भाषा पर समान अधिकार होना चाहिए। इसके साथ-साथ स्रोत और लक्ष्य भाषा-भाषी समाज संस्कृति का भी ज्ञान होना अनिवार्य है। तभी कोई व्यक्ति सफल अनुवादक बन सकता है। अनुवाद करते समय अनुवादक को कई सामस्याएँ आती है। वास्तव में अनुद्य सामग्री जिस तरह की होती है, जिस विषय की होती है अनुवाद में आनेवाली समस्याएँ भी उसके अनुरूप भिन्न-भिन्न होती है।

संदर्भ:

1. *डॉ. लक्ष्मण भोसले - अनुवाद विज्ञान, ज्ञान प्रकाशन कानपुर, प्रथम संस्करण 2018, पृष्ठ – 88*
2. *डॉ. अर्जुन चव्हाण – मीडिया कालीन हिन्दी स्वरूप एवं संरचना, राधाकृष्ण प्रकाशन दिल्ली, प्रथम संस्करण 2005, पृष्ठ – 101*
3. *सुरेश सिंहल – अनुवाद : संवेदना और सरोकार, संजय प्रकाशन नई दिल्ली, संस्करण 2019 , पृष्ठ – 182*
4. *डॉ. सौ. शकुंतला पांचाल – हिन्दी अनुवाद एवं भाषिक संरचना, अभय प्रकाशन, कानपुर, प्रथम संस्करण 2005, पृष्ठ – 31*
5. *डॉ. अर्जुन चव्हाण – मीडिया कालीन हिन्दी स्वरूप एवं संरचना, राधाकृष्ण प्रकाशन दिल्ली, प्रथम संस्करण 2005, पृष्ठ – 105*

Cite This Article:

डॉ. खिलारे बे. श्री. *(2025). अनुवाद की समस्याएँ.* **In Aarhat Multidisciplinary International Education Research Journal**: Vol. XIV (Number VI, pp. 63–66).

ISSN–2278-5655

AMIERJ Aarhat Multidisciplinary International Education Research Journal

Volume–XIV, Special Issues – III (a) Nov – Dec, 2025

OPEN ACCESS Original Research Article

अनुवाद की समस्याएँ

* डॉ. सजित खांडेकर,

* सहयोगी प्राध्यापक, राजमाता जिजाऊ शिक्षा प्रसारक मंडल के, कला, वाणिज्य एवं विज्ञान महाविदयालय, भोसरी, पुणे-39 (महाराष्ट्र)

सार:

भारत तो बहुभाषा- भाषी देश है। अनेक भाषाएँ यहाँ बोली जाती हैं। इन भाषा-भाषी लोगों के बीच एकता, तथा भावात्मकता बनाए रखने के लिए अनुवाद की महत्वपूर्ण भूमिका है। इतना ही नहीं शिक्षा, कानून, प्रशासन, चिकित्सा, वाणिज्य एवं व्यवसाय, कृषि, पर्यटन, दूरसंचार आदि के क्षेत्रों में भी सभी भारतीयों को एक सूत्र में बांधे रखने के कार्य में अनुवाद की भूमिका महत्वपूर्ण है। प्रो. गोपीनाथन के शब्दों में "अनुवाद एक ऐसा सेतु बंधन का कार्य है जिसके बिना विश्व संस्कृति का विकास संभव नहीं है। अनुवाद के द्वारा हम मानव के इस विश्व कुटुंब में संपूर्ण एकता एवं समझदारी की भावना विकसित कर सकते हैं, मैत्री एवं भाईचारे को विकसित कर सकते हैं और गुटबंदी, संकुचित प्रान्तीयतावाद आदि से मुक्त होकर मानवीय एकता के मूल बिन्दु तक पहुँच सकते हैं।" आधुनिक युग में तो अनुवाद की आवश्यकता वैयक्तिक रूचि पर आधारित न होकर सामाजिक, राजनैतिक, आर्थिक आवश्यकताओं पर आधारित है। इन्हीं आवश्यकताओं के कारण अब अनुवाद व्यक्ति परिधि से निकल कर समष्टि की परिधि में आ गया है।

Copyright © 2025 The Author(s): This is an open-access article distributed under the terms of the Creative Commons Attribution 4.0 International License (CC BY-NC 4.0) which permits unrestricted use, distribution, and reproduction in any medium for non-commercial use provided the original author and source are credited.

परिचय:

'अनुवाद' शब्द आज एक व्यापक स्वरूप ग्रहण कर चुका है। वैज्ञानिक प्रगति के साथ-साथ आज उद्योग, चिकित्सा, वाणिज्य, व्यापार, बैंक तथा साहित्य के क्षेत्रों में अनुवाद अपना स्थान बना चुका है। इसकी आवश्यकता को भी महसूस किया जा रहा है। आज दुनिया भर में वैज्ञानिक उपकरणों के सहारे हर देश एक दूसरे के करीब हो रहा है। इसी कारण प्रत्येक के मन में दूसरे देश के साहित्य, संस्कृति, सामाजिक परिवेश आदि को जानने की जिज्ञासा जाग्रत होती है, जिस के लिए उस देश की भाषा न जानने के कारण अनूदित साहित्य का सहारा लेना पड़ता है। इसीलिए अनूदित साहित्य ही आज दोनों देशों में संबंध के लिए सहारा बन गया है। अनुवाद ने भारत को उसके पूरे इतिहास में एक राष्ट्र के रूप में एक सूत्र में पिरोने में मदद की है। यह भाषाओं को एक-दूसरे के करीब लाता है और कल्पना और अनुभूति के विविध तरीकों और विभिन्न क्षेत्रीय संस्कृतियों और समुदायों को एक-दूसरे से परिचित कराता है। 'भारतीय साहित्य', 'भारतीय दर्शन' 'भारतीय रीति-रिवाज' और 'भारतीय ज्ञान प्रणाली' जैसे विचार और अवधारणाएँ अपने स्वाभाविक एकीकरणवादी मिशन के साथ अनुवाद के अभाव में असंभव होतीं। अनुवाद

ISSN–2278-5655

AMIERJ Aarhat Multidisciplinary International Education Research Journal

Volume–XIV, Special Issues – III (a) Nov – Dec, 2025

OPEN ACCESS Original Research Article

के कारण ही हम संचार और प्रौद्योगिकी के सभी विकासों के बारे में जानते हैं और ज्ञान के विभिन्न क्षेत्रों में नवीनतम खोजों से अवगत रहते हैं, और अनुवाद के माध्यम से कई भाषाओं के साहित्य और दुनिया में हो रही विभिन्न गतिविधियों तक पहुँच भी पाते हैं।

एक भाषा में अभिव्यक्त विषयों, भावनाओं तथा संवेदनाओं को जहाँ तक संभव हो उसी की प्रयुक्त भाषा-शैली में दूसरी भाषा में रूपांतरित करना अनुवाद कहलाता है। मगर यह कार्य जितना सरल दिखाई देता है उतना है नहीं। मराठी के प्रसिद्ध नाटककार मामा वरेरकर ने कहा भी है 'लेखक होना आसान है, किन्तु अनुवादक होना अत्यन्त कठिन। तथा स्वतन्त्र भारत के प्रथम राष्ट्रपति राजेन्द्र प्रसाद जी ने भी कहा है- 'एक प्रकार से मौलिक लेख लिखना आसान है, पर किसी दूसरी भाषा से अनुवाद करना बहुत कठिन होता है। मेरा निजी अनुभव है कि मैं अंग्रेजी से हिन्दी में और हिन्दी से उतनी आसानी से अनुवाद नहीं कर सकता, जितनी आसानी से इन दोनों भाषाओं में लिख या बोल सकता हूँ।' क्योंकि दो अलग-अलग भाषाओं की अपनी-अपनी प्रकृति होती है। अपनी शब्द-संपदा होती है। अपनी विशिष्ट भाषिक संरचना, शैली-भंगिमा होती है।

समस्याएँ :

(1) 'शब्द प्रयोग की समस्या कभी-कभी एक ही भाषाओं के दो शब्द मिल जाते हैं। जिसका अर्थ अलग-अलग होता है। जैसे-मराठी में 'नवरा' का अर्थ पति है जबकि गुजराती में निठल्ले को 'नवरा' कहते हैं। जैसे 'पुस्तक' के लिए अंग्रेजी में 'बुक' उर्दू में 'किताब' कहा जाता है। मराठी 'बातमी' के लिए हिन्दी में 'समाचार' अंग्रेजी में 'न्यूज' कहा जाता है। वस्तु अथवा बात एक ही है उसके लिए भिन्न शब्दों का प्रयोग होता है। इनकी जानकारी होनेपर अनुवाद कठिन नहीं होता किन्तु किसी भाषा में ऐसी वस्तुओं और अवधारणाओं के लिए शब्द होते हैं जो दूसरी भाषाओं में होते ही नहीं। उस शब्द के पर्याय ही नहीं होते । शब्द स्तरपर यह अनुवाद की सीमा है। कुछ प्राकृतिक उत्पाद किसी विशेष स्थानपर ही होते हैं। जैसे सोयाबीन, पाम ऑलिव । कुछ वस्तुएँ किसी विशिष्ट भाषिक प्रदेश मे बनती है, बाद मे उसी भाषा के शब्दो का स्वीकार करना पडता है। 'टेबुल' 'ग्लास' 'बल्ब', 'जग', 'मग' आदि अंग्रेजी के ऐसे कई शब्द है जिनका अनुवाद नहीं होता न करने की आवश्यकता ही पडती है। विचार के क्षेत्र मे तथा समाज व्यवहार में भी ऐसे शब्द आ जाते हैं जैसे 'विजन कन्सेप्ट', 'युनियन एसोसिएशन' 'फोरम' 'क्लब' आदि। ऐसे विदेशी शब्दों के लिए समानक नहीं मिलते तब भाषा प्रेमी जन नये शब्द गढ लेते हैं। जबतक वे प्रचलित नहीं होते, अटपटे लगते हैं। जैसे 'ड्राइवर' के लिए 'चक्रधर' या 'चालक'। शब्द के स्तरपर अर्थ का संकेत करनेवाले समानक न मिलना अनुवाद की सीमा है। ऐसे सम मूल्यक न मिलने के कारण अनुवाद जबर्दस्ती से किया जाता है जो अस्वाभाविक होता है। अनुवादक को कुशलता से काम लेना होता है क्योंकि अनुवाद में अर्थ ही प्रथम है।

पारिवारिक सम्बन्धों के शब्दों में भी संस्कृति दर्शन होता है। रिश्तेनाते की शब्दावली कभी कभी अनुवाद की सीमा बन जाती है। हिन्दी में 'दादा' पितामह को कहते हैं तो मराठी में बडे भाई को । मलयालम भाषिक मातृसत्ताक परिवार के होने के कारण उनमें मामा का प्यार

ISSN–2278-5655

AMIERJ Aarhat Multidisciplinary International Education Research Journal

Volume–XIV, Special Issues – III (a) Nov – Dec, 2025

OPEN ACCESS Original Research Article

और सम्मान होता है इसलिए 'नेहरू चाचा' कहने की अपेक्षा वे 'नेहरूमामा' कहना पसंद करेंगे। हिन्दी में बहन के पति के लिए 'जीजा' तो पत्नी के भाई के लिए 'साला' शब्द है किन्तु मराठी में दोनों के लिए 'मेव्हणा' एक ही शब्द है। हिन्दी में माँ के मातापिता के लिए 'नानी नाना' और पिता के मातापिता के लिए 'दादी - दादा' शब्द है तो मराठी में दोनों के लिए मात्र आजी - आजोबा। हिन्दी में बडी चाची के लिए 'ताई' शब्द है तो मराठी में 'ताई' बडी बहन है। अंग्रेजी मे अंकल और 'आंट' अपने मातापिता के समान्तर किसी भी रिश्तेदार के लिए प्रयुक्त होते है। काका, मामा, मौसा, फूफा सभी अंकल हैं। काकी, मामी, मौसी, फूफी सभी 'आंट' हैं।

(2) मुहावरे-कहावते की समस्या यद्यापि मुहावरे और कहावतें मनुष्य के जीवन के अनुभावों को संक्षिप्ति, प्रभावशाली रूप में अभिव्यक्त करने का साधन रही है। परन्तु हर मुहावरे या कहावत एक-सा नहीं हो सकते। भाषा के लाक्षणिक प्रयोगों के अनुवादों में अनुवाद की सीमा स्पष्ट हो जाती है। भाषा को प्रभावशाली और विलक्षण बनाने के लिए प्रत्येक भाषा में मुहावरों का प्रयोग किया जाता है, जिनका शब्दार्थ ग्रहण नहीं किया जाता। मुहावरा मूलतः अरबी भाषा का शब्द है जिसका अर्थ है बातचीत। मराठी 'वाक्प्रचार' और अंग्रेजी 'इडियम' के लिए हिन्दी में मुहावरा रूढ हो गया। मुहावरा पूर्ण वाक्य नहीं होता, वाक्यांश होता है। उसका लक्ष्यार्थ ग्रहण किया जाता है। उदाहरणार्थ, दाँत खट्टे करना मुहावरे का अर्थ है पराभूत करना। मुहावरे भाषा में प्रचलित होते हैं और उनके समाजमनोवैज्ञानिक तत्त्व भी होते हैं। अनुवादक पहले समान मुहावरा ढूंढ़ने की कोशिश करता है। भिन्न भाषाओं में कुछ मुहावरे समान भी मिल जाते हैं। जैसे मराठी दगडावरची रेघ तो हिन्दी में पत्थर की लकीर। मराठी 'आंधळ्याची काठी होणे 'तो हिन्दी में 'अन्धे की लाठी होना'। कभी कभी दूसरी भाषा के प्रभाव के कारण भी नये मुहावरे भाषा में शामिल हो जाते है।

समान मुहावरे न मिलनेपर अनुवादक समान्तर मुहावरे ढूंढ़ने लगता है और ऐसे भी कई मुहावरे मिल जाते हैं। मराठी 'आगीत तेल ओतणे' के लिए हिन्दी में 'आग में घी डालना' का प्रयोग समान है। हिन्दी 'खून पसीना एक करना' मराठी में 'रक्ताचे पाणी करणे' होगा। शाब्दिक समानता न मिलनेपर इस प्रकार आर्थिक समानता की ओर ध्यान देना पडता है। जब स्रोत भाषा के मुहावरे के लिए लक्ष्य भाषा में समान या समान्तर मुहावरा नहीं मिलता तब अनुवाद की सीमा आ जाती है। ऐसी स्थिति में शब्दानुवाद करने से भी काम नहीं चलता। मुहावरे का लक्ष्यार्थ अथवा भावार्थ स्पष्ट करना पडेगा। इससे भाषा का प्रभाव नष्ट हो जायेगा। शाब्दिक अनुवाद कई बार हास्यास्पद हो जाता है। अनुवादक नया मुहावर भी गढ़ सकता है किन्तु उससे मूल मुहावरे का प्रभाव निर्माण करना आसान काम नही। इस सम्बन्ध में डा. भोलानाथ तिवारी का कथन है, "कुशल अनुवादक को पूरा अधिकार है कि कोई और रास्ता न होनेपर स्रोत भाषा के मुहावरे के लिए लक्ष्य भाषा में यदि सम्भव हा तो व्यंजक, सटीक तथा लक्ष्यभाषा की प्रवृत्ति के अनुकूल कोई मुहावरा गढ़ ले।"

ISSN–2278-5655

AMIERJ Aarhat Multidisciplinary International Education Research Journal

Volume–XIV, Special Issues – III (a) Nov – Dec, 2025

OPEN ACCESS Original Research Article

(3) अलंकार की समस्या एक भाषा के अलंकार उस भाषा के शब्द को सौन्दर्य प्रदान करते है। 'कनक कनक' में यमक अलंकार दुहरे अर्थ में प्रयोग अनुवाद के लिए एक गंभीर समस्या बन जाती है।कविता में अलंकार दो प्रकार के होते हैं। शब्दालंकार और अर्थालंकार। वैसे तो किसी भी अच्छी कविता का सौन्दर्य उन्हीं शब्दों में होता है जो कविता में प्रयुक्त हुए है किन्तु अर्थालंकार में उसी अर्थ के दूसरे शब्दों का प्रयोग करनेपर भी अलंकार की हानि नही होती। जैसे मुख कमल रूपम अलंकार है। उसी अर्थ के 'बदनसरोज' का प्रयोग करनेपर भी वह रूपक अलंकार ही रहेगा। किन्तु जहाँ शब्द अर्थात् ध्वनि के आधारपर ही अलंकार रचे जाते है और उसी अर्थ दूसरे शब्द का प्रयोग करनेपर नष्ट हो जाते है, उन्हे शब्दालंकार कहा जाता है। केवल ध्वनियोंपर आधारित होने के कारण शब्दालंकारो का अनुवाद सम्भव नहीं । यह अनुवाद की सीमा है।

एक जैसे वर्णों की आवृत्ती को अनुप्रास कहा जाता है। उदाहरणार्थ 'चारूचन्द्र की चंचल किरणे, खेल रही थी जलथल में 'इस पंक्ति में 'च' और 'ल' वर्ण की आवृत्ती है। भारतीय भाषाओं में इसके अनुवाद में कुछ ध्वनिसौंदर्य आ सकते है किन्तु अंग्रेजी अनुवाद में तो वह नष्ट ही हो जायेगा। 'फिकल रेज ऑफ द मून वेअर प्लेमिंग ऑन द वॉटर ॲण्ड ग्राउण्ड' में वह नाद नही है। कवि भूषण के छन्दो में जो ध्वनिप्रभाव है वह अनुवाद में नहीं आ सकता। अनुप्रास स्रोत भाषा में जो लय और गति निर्माण करता है वह अनुवाद में आनेवाली बात नहीं है। जब एक ही शब्द दो बार प्रयुक्त होता है किन्तु दोनों के अर्थ भिन्न भिन्न होते है तब 'यमक' अलंकार होता है। (रहीम) का दोहा प्रसिद्ध है 'कनक कनक ते सौगुनी मादकता अधिकाय। या खाये बौरात जग वा पाये बौराय।' यहाँ 'कनक' शब्द का दो बार प्रयोग हुआ है। पहले 'कनक' का अर्थ है धतूरा और दूसरे 'कनक' का अर्थ है सोना। पहले को खाने से दुनिया पागल हो जाती है। दूसरे को पाने से ही पागल हो जाती है। 'यमक' शब्दालंकार का अनुवाद सम्भव नहीं। जिस भाषा में 'कनक' शब्द का इस प्रकार दो बार दो अर्थों में प्रयोग किया जा सकेगा उसी भाषा में इसका अनुवाद हो सकेगा।

एक शब्द के अनेक अर्थ होते है और कवि जब उन्हें इस प्रकार प्रयुक्त करता है तब श्लेष अलंकार होता है। उस शब्द के स्थानपर उसी अर्थ का दूसरा शब्द रखने से स्रोत भाषा में भी वह अलंकार नष्ट हो जाता है फिर लक्ष्यभाषा में तो नष्ट होगा ही। उदाहरणार्थ, रहिमन पानी राखिये बिन पानी सब सून। पानी गये न उबरे मोती मानुस चून। रहीमने 'पानी' शब्दपर श्लेष किया है। 'पानी जाना' मुहावरा भी है। मोती में पानी उसकी आभा है। मनुष्य में पानी उसका आत्मसम्मान है और चून में पानी जल है। 'पानी' शब्द के बदले उसी अर्थ के 'जल' 'नीर' वारि आदि शब्द रखनेपर श्लेष नष्ट हो जायेगा।

(4) शैली की समस्या हर भाषा की अपनी शैली होती है। परन्तु अगर एक भाषा में उबलब्ध शैली विशेषताएँ दूसरी में न मिलें तो अनुवाद करने में परेशानी होती है। जैसे, हिन्दी की तीन शैलियाँ संस्कृत-निष्ठ हिदी, हिन्दुस्तानी और बातचीत। दो भाषाओं में भाषिक स्तरपर जो भेद होता है उसमें संरचना के अन्तर के रूप में देखा जाता है।

ISSN–2278-5655

AMIERJ Aarhat Multidisciplinary International Education Research Journal

Volume–XIV, Special Issues – III (a) Nov – Dec, 2025

OPEN ACCESS Original Research Article

संरचना का सम्बन्ध भाषा के व्याकरण से होता है। अर्थ की अभिव्यक्ति के लिए भाषा में जो प्रक्रिया होती है उसे रूपप्रक्रिया कहा जाता है। दो भाषाओं में इसमें लिंग, वचन, कारक, विशेषण, सर्वनाम, अव्यय और क्रिया के प्रयोग में जितना भेद होगा उतना अनुवाद कठिन होगा। इस प्रक्रिया में कुछ रूप ऐसे होते है जिनका अनुवाद नहीं हो सकता। यहाँ अनुवाद की रूपमूलक सीमाएँ स्पष्ट हो जाती है। इनके कुछ उदाहरण देखेंगे।

मराठी में तीन लिंग होते है। पुल्लिंग, स्त्री लिंग और नपुंसक लिंग। किन्तु हिन्दी में दो ही लिंग होते है, पुल्लिंग और स्त्रीलिंग । मराठी नपुसलिंग का हिन्दी में क्या अनुवाद होगा। इसका कोई नियम नही है। नपुसकलिंग का हिन्दी में या तो पुल्लिंग होगा या स्त्रीलिंग और मूल मराठी शब्द का नपुंसकभाव नष्ट हो जायेगा। फिर एक भाषा में जो शब्द पुल्लिंग में है, दूसरी भाषा में स्त्रीलींग में होता है अथवा दूसरे विपरीत भी होता है। हिन्दी में पुलिस, आत्मा देह, मृत्यु, जय, विजय, अग्नि, महिमा, मातु, गन्ध, आवाज आदि स्त्रीलिंगी शब्द है जो मराठी में पुल्लिंगी है। चैन, तार, बाग, नोट, व्यक्ति, जादू, शिकार आदि मराठी में स्त्रीलिंगी।

(5) **काव्यानुवाद** एक प्रकार का भावानुवाद है जिसे अधिकांशतः कवि ही करते हैं, क्योंकि इसके लिए कवि की संवेदनशीलता की आवश्यकता होती है। इसी कारण से तटस्थता बनाए रखना एक बड़ी समस्या हो जाती है। काव्य में शब्द के स्थान पर प्रतीकों का उपयोग बहुतायत में होता है। इस संकृति के प्रतीक को दूसरी संस्कृति के प्रतीक के रूप में उपयोग नहीं किया जा सकता है कारण सांस्कृतिक भिन्नता है।

उदाहरण के लिए गंगा नदी पर लिखी किसी कविता का अंग्रेजी अनुवाद करते समय हमको इंग्लैंड की संस्कृति में गंगा जैसी पवित्र और मान्य नदी का प्रतीक खोजना होगा। अन्यथा गंगा के प्रतीक को अगर वैसे ही उपयोग किया गया तो लक्ष्य पाठक को भारत में गंगा की महत्ता को अलग से समझाना होगा। इसी प्रकार से यह कतई आवश्यक नहीं है हिन्दी में "चरण कमल बंदौ हरिराई" में जिस तरह से चरण को कमल की कोमलता का प्रतीक माना गया है वैसा किसी अन्य यूरोपीय या भारतीय भाषाओं में भी हो।

इस सब के अलावा छंदबद्धता, बिम्ब विधान, कल्पना, मधुरता, लय, संरचना, अलंकारादि भी काव्यानुवाद को जटिल कर समस्याएं पैदा करते हैं। अनुवाद करते समय मूल पाठ के इन गुणों को लक्ष्य पाठ में उतारना भी समस्याओं का जनक होता है। साहित्य में संरचना उसका अभिन्न अंग होता है। कविता में 'लय' इसे व्यक्त करती है। इस लय से संवेदनशीलता का बोधन होता है। तुक-साम्य हो तो वह और विशिष्ट हो जाती है। 'राम की शक्ति पूजा' (निराला) सर्वाधिक सशक्त उदाहरण है। इसका छंद इसमें प्रयुक्त तुक और इसकी लय तीनों ने इसे उत्कृष्ट रूप प्रदान किया। यह लंबी कविता अपनी संरचना के लिए जानी जाती है । इसका रूपांतरण हो सकता है। पर ऐसी संरचना (जैसा समासयुक्त पदावली) कोई अनुवादक किस भाषा में करेगा ? हालांकि रीतिकालीन कवि किसी कोश से ढूंढ कर पाये जा सकते हैं, काव्य की लय पकड़

ISSN–2278-5655

AMIERJ Aarhat Multidisciplinary International Education Research Journal

Volume–XIV, Special Issues – III (a) Nov – Dec, 2025

OPEN ACCESS Original Research Article

सकते हैं । परंतु इस बहुस्तरीय संरचना को पहचान अनुवाद में ढाल पाना संभव नहीं ।

(6) **भाषा के स्तर :**

अनुवादक सर्वप्रथम मूल पाठ हाथ में लेता है। इस समय वह पाठ के शब्द-वाक्य-पद के स्तर पर अर्थ ग्रहण करता है। जटिल और अनेकार्थी वाक्यों की पहचान कर लेता है। उसकी व्याकरणिक संरचना पर विचार कर लेता है। मूल का एक रूप वह पहचान लेता है। यह कार्य भाषा के स्तर पर होताहै। इसमें हमारी सहायता भाषा की बनावट करती है। मूल पाठ का संदेश इसीमें निहित होता है। इनमें लाक्षणिक और व्यंजनात्मक अर्थ भी होते हैं। शब्दों के स्तर पर उनके अनेकार्थी रूप पर ध्यान दिया जाता है। इसी प्रकार शब्द के परस्पर साथ आने पर नया अर्थ आता है। परंतु समस्त शब्द का कोशगत अर्थ कभी तो सुरक्षित मिल जाता है, कभी उस अभिव्यक्ति के संदर्भ में छुपा होता है। यह विशेष अर्थ की सूचना देता है। इसी प्रकार मुहावरों के अर्थ केवल परसर्ग लगा कर बदल जाते हैं । (किसी की) आँख लगना - नींद आना (किसी से) आँख लगाना - प्रेम करना (किसी पर) आँख लगना ललचा जाना । इस प्रकार भाषिक अभिव्यक्ति के संकेतार्थ का कोशगत अर्थ के अलावा व्यंजना में है। इसे समझ कर सही संदेश प्राप्त किया जाता है। यहाँ वाक्य की अर्थ व्यवस्था और अर्थ क्षेत्र पर ध्यान रखना होता है।

विषयवस्तु के स्तर पर : अनुवादक भाषा के माध्यम से उस विषय को ग्रहण करता है जो उसमें निहित है, और संकेतित है अथवा द्योतित है। अगर वह वैज्ञानिक या तकनीकी विषय है तो उसे समझने लायक ज्ञान जरूरी है। विशेषज्ञ चाहे न हो, उसे समझने लायक आधारभूत ज्ञान तो होना चाहिए ।

जैसे (Transfer) शब्द का 1) हस्तांतरण 2) स्थानान्तरण दोनों संदर्भ देख कर अनुवाद करना होता है। उसी प्रकार (Communication) शब्द का बहु अर्थी प्रयोग देखें 1) पत्राचार (कार्यालय में) 2) संचार (प्रेषण के अर्थ में) 3) संप्रेषण (साहित्य के अर्थ में)

इसकी सही विषयवस्तु ग्रहण करने हेतु अनुवादक को संदर्भ और परिस्थिति पर विचार करना होता है। शब्द अपने आपमें बहुत सीमित अर्थ देता है। जब प्रयोग करते हैं तो उसका क्षेत्र, वह परिस्थिति, वे पात्र और वह वातावरण सबमें अपना अर्थ विस्तार कर लेता है। कोश तो एक दृष्टि देता है।

संदर्भ:

1. *अनुवाद विज्ञान - डा. भोलनाथ तिवारी*
2. *अनुवाद विज्ञान की भूमिका डा. के. के. गोस्वामी, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली*
3. *अनुवाद की व्यापक संकल्पना डा. दिलीप सिंह, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली*
4. *अनुवाद विज्ञान - डा. सुरेश कुमार*
5. *अनुवाद की प्रक्रिया : तकनीकी और समस्याएँ-डा. श्रीनारायण समीर, लोकभारती प्रकाशन, नई दिल्ली*

Cite This Article: *डॉ. खांडेकर स.* (2025). *अनुवाद की समस्याएँ.* **In Aarhat Multidisciplinary International Education Research Journal**: Vol. XIV (Number VI, pp. 67–72).

ISSN–2278-5655

AMIERJ Aarhat Multidisciplinary International Education Research Journal

Volume–XIV, Special Issues – III (a) Nov – Dec, 2025

OPEN ACCESS Original Research Article

काव्य के क्षेत्र में अनुवाद

* डॉ. सोनाली रामदास हरदास

* सहायक प्राध्यापक, श्री साईबाबा महाविद्यालय,शिर्डी, तह - राहाता, जिला -अहिल्यानगर.

सार:

भारत में अनुवाद का इतिहास

(बौद्ध काल से आधुनिक 'काल तक) -

भारत एक बहुभाषी, बहुसांस्कृतिक और बहुधर्मी देश है। यहाँ सदियों से संस्कृत, पालि, प्राकृत, तमिल, तेलुगु, कन्नड़ , बांग्ला, हिंदी, उर्दू जैसी सैकड़ों भाषाएँ साथ-साथ फलती-फूलती रही हैं। ऐसी स्थिति में अनुवाद कोई नई बात नहीं, बल्कि एक स्वाभाविक आवश्यकता रही है। अनुवाद का अर्थ केवल शब्दों को बदलना नहीं है, बल्कि विचारों, भावनाओं, धार्मिक उपदेशों, साहित्य और समाज को एक भाषा से दूसरी भाषा में ले जाना है-बिना मूल भाव खोए।

Copyright © 2025 The Author(s): This is an open-access article distributed under the terms of the Creative Commons Attribution 4.0 International License (CC BY-NC 4.0) which permits unrestricted use, distribution, and reproduction in any medium for non-commercial use provided the original author and source are credited.

१) बौद्ध काल (लगभग ५वीं शताब्दी ई.पू. से ५वीं शताब्दी ई.) :

अनुवाद की प्रारंभिक नींव भारत में संगठित और बड़े पैमाने पर अनुवाद की द व शुरुआत बौद्ध काल से 'मानी जाती है। बौद्ध धर्म काबौद्ध धर्मका प्रसार जब उत्तर भारत से दक्षिण, पूर्व और विदेशों तक हुआ, तो उसके ग्रंथों और उपदेशों को आम लोगों की भाषा में पहुँचाना जरूरी हो गया।

२) गुप्तोत्तर और मध्यकाल (५वीं से १६वीं शताब्दी):

गुप्त काल के बाद संस्कृत ज्ञान और साहित्य की प्रमुख भाषा बनी। लेकिन आम लोग संस्कृत नहीं समझते थे। इसलिए संस्कृत ग्रंथों को क्षेत्रीय भाषाओं में अनुवाद करने की परंपरा शुरू हो गई।

३) औपनिवेशिक काल (१८वीं-१९वीं शताब्दी):

ब्रिटिश शासन के साथ अनुवाद की दिशा बदली। अब यह शिक्षा,प्रशासन और मिशनरी कार्य का हिस्सा बना। लेकिन भारतीयों ने इसे राष्ट्रीय जागरण का हथियार भी बनाया। विलियम केरी (फोर्ट विलियम कॉलेज) ने बाइबिल का बांग्ला, हिंदी, मराठी, उड़िया, संस्कृत में अनुवाद किया। इससे भारतीय भाषाओं में आधुनिक गद्य शैली का विकास हुआ।

४) स्वतंत्र भारत और आधुनिक काल (१९४७ से अब तक)-

स्वतंत्रता के बाद अनुवाद राष्ट्रीय एकता, शिक्षा, विज्ञान और वैश्विक संवाद का आधार बना। सरकार, संस्थाएँ और

ISSN–2278-5655

AMIERJ Aarhat Multidisciplinary International Education Research Journal

Volume–XIV, Special Issues – III (a) Nov – Dec, 2025

OPEN ACCESS Original Research Article

व्यक्ति तीनों स्तरों पर अनुवाद होने लगे।

कविता और अनुवाद :

कविता अनुवाद साहित्य की सबसे चुनौतीपूर्ण विधाओं में से एक है। गद्य का अनुवाद जहां अर्थ पर आधारित होता है, वहीं काव्य का अनुवाद भावना, सौंदर्य, लय और संगीतात्मकता पर निर्भर करता है। अनुवादक के लिए यह केवल भाषा परिवर्तन का कार्य नहीं, बल्कि एक सृजनात्मक पुनर्निर्माण की प्रक्रिया होती है। कविता की आत्मा उसके शब्दों में नहीं, बल्कि उनकी ध्वनियों, लयों और प्रतीकों में होती है।

काव्य अनुवाद की प्रकृति :

काव्य अनुवाद का उद्देश्य केवल भावानुवाद नहीं, बल्कि 'काव्यात्मक समरूपता' (poetic equivalence) प्राप्त करना होता है। जब कवि किसी विचार को छंद, लय, तुक, ध्वनि और प्रतीक के माध्यम से प्रकट करता है, तब वह उस भाषा की आत्मा से गहराई से जुड़ जाता है। अनुवादक का कार्य इस आत्मा को दूसरी भाषा में पुनर्जीवित करना होता है - यह कार्य न तो शाब्दिक अनुवाद है और न ही केवल भावानुवाद बल्कि यह सृजनात्मक पुनःलेखन (creative recreation) है।

छद (Meter) का संरक्षण :

छंद कविता की हड्डी या ढाँचा है। यह कविता को गति, संतुलन और संगीत प्रदान करता है। हिंदी कविता में छंद दो प्रकार के होते हें - मात्रिक और वर्णिक। जैसे, दोहा, चौपाई, सोरठा आदि। अंग्रेज़ी या अन्य भाषाओं में मीटर (meter) की व्यवस्था भिन्न होती है - वहाँ "amebic pentameter' या 'trochaic tetrameter' जैसे लयात्मक पैटर्न प्रयुक्त होते हैं। "सीता राम चरित अति पावन, मधुर सरस अति लोचन भावन।"

यदि इसे अंग्रेज़ी में अनुवाद करें तो शब्दोंकी लय और मात्रा का सामंजस्य बनाए रखना अत्यंत कठिन होता है।

छंद संरक्षण के उपाय:

१) **छंद का अनुकूलन (Adaptation):** अनुवादक लक्ष्य भाषा में ऐसा छंद चुन सकता है जो मूल छंद से लयात्मक रूप में साम्य रखता हो। जैसे, चौपाई के स्थान पर अंग्रेज़ी में "hymned couplet' का प्रयोग।

२) **- (Free Verse Translation):** यदि समान छंद न मिले, त अनुवादक मूल की लय और भाव को पकड़कर मुक्त छंद में अनुवाद कर सकता ताकि अर्थ और भाव संगीतात्मकता के साथ बने रहें।

३) **लयात्मक पुनर्गठन (Rhythmic Recompositing):** अनुवादक स्वयं नया छंद रच सकता है, जो अर्थ और सौंदर्य दोनों को संतुलित रूप में प्रस्तुत करे।

उदाहरण:

मूल पंक्ति -

"चंदा है तू मेरा सूरज है तू, ओ मेरी आँखों का तारा है तू।"

अंग्रेजी अनुवाद में लय बनाते हुए - "You are my moon, my shining sun, The twinkle in my eyes, my one."

यहाँ छंद और तुक (hyme) दोनों का संरक्षण किया गया है, भले ह ही शाब्दिक समानता न हो।

लय (Rhythm) का संरक्षण

लय कविता की आत्मा है। यह केवल ध्वनि का क्रम नहीं, बल्कि भावना का प्रवाह है। जब कवि शब्दों के माध्यम से संगीत रचता है, तो वही लय कहलाती है।

ISSN–2278-5655

AMIERJ Aarhat Multidisciplinary International Education Research Journal

Volume–XIV, Special Issues – III (a) Nov – Dec, 2025

OPEN ACCESS Original Research Article

लय संरक्षण की चुनौतियाँ -

प्रत्येक भाषा की अपनी ध्वन्यात्मक प्रणाली (phonetic system) होती है। हिंदी में स्वर-संपन्नता अधिक है, जबकि अंग्रजज़ी में व्यंजन प्रधानता।

लय संरक्षण के उपाय-

१) **प्राकृतिक प्रवाह (Natural FIow):** अनुवादक को वाक्य इस प्रकार रचना चाहिए कि उनमें स्वाभाविक प्रवाह और उच्चारण की मधुरता बनी रहे।

२) **ध्वनि पुनर्रचना (Sound Recreation):** जहाँ २ संभव हो, समान ध्वनियों वाले शब्दों का चयन किया जाए।

३) **संगीतात्मक पुनरावृत्ति(Musical Repetition):** मूल कविता में यदि लय शब्दों की पुनरावृत्ति से उत्पन्न होती है, तो लक्ष्य भाषा मेंभी उसका समान प्रभाव शब्द-खेल या दोहराव से उत्पन्न किया जा सकता है।

उदाहरणः

मूलः

"कोयल कूकी अमराइयों में,

मन उड़ा रिमझिम छायों में।"

"The cuckoo sings in mango shade, My heart takes flight in monsoon glade."

यहा लय 'का प्रवाह बनाए रखते हुए अनुवाद किया गया हैं l

अलंकारों (Figures Speech) का सरक्षण :

अलंकार कविता की शोभा हैं। वे भाषा को सौंदर्य, गहराई और प्रतीकात्मकता प्रदान करते हैं। अलंकार दो प्रकार के होते हैं- शब्दालंकार (sound-based) और अर्थालंकार (meaning-based)।

(क) शब्दालंकारों जैसे अनुप्रास (alliteration), तुक, यमक आदि का अनुवाद कठिन होता है क्योंकि येभाषा की ध्वन्यात्मक प्रकृति से जुड़े होते हैं। (ख) अर्थालंकारों जैसे उपमा (simile), रूपक (metaphor), और अतिशयोक्ति (hyperbole) कक व अनुवाद अपेक्षाकृत संभव है।

अलकार संरक्षण के उपाय :

१) **ध्वनि आधारित अलंकारों का स्थानापन्न (Substiftution):** जहाँ संभव न हो, वहॉ लक्ष्य भाषा में समान प्रभाव उत्पन्न करने वाला नया शब्द या ध्वनि संयोजन खोजा जाए।

२) **रूपक और प्रतीक की समरूपताः** यदि मूल कविता में "चाँद" प्रेम का प्रतीक है, तो लक्ष्य भाषा में "moon" या कोई समान सांस्कृतिक प्रतीक प्रयोग किया जा सकता है।

३) **सांस्कृतिक अनुकूलन (cultural Adaptation):** यदि कोई अलंकार सांस्कृतिक रूप से बंधा है, तो उसका अनुवाद सांस्कृतिक संदर्भ के अनुरूप किया जाए।

उदाहरणः

मूलः

"तेरे गालों की लाली में ढलता हैं मेरा सावन।"

"In the blush of your cheeks, my monsoon fades."

यहाँ रूपक और भाव दोनों सुरक्षित रखे गए हैं।

तीनों का संतुलित रूप :

कविता अनुवाद की वास्तविक सफलता तभी मानी जाती है जब अनुवादक छंद, लय और अलंकार - इन तीनों का संतुलन बनाए रखे। केवल छंद पर ध्यान देने से कविता यांत्रिक हो

ISSN–2278-5655

AMIERJ Aarhat Multidisciplinary International Education Research Journal

Volume–XIV, Special Issues – III (a) Nov – Dec, 2025

OPEN ACCESS Original Research Article

सकती है; केवल लय पर ध्यान देने से अर्थ खो सकता है, और केवल अलंकारों पर ध्यान देनेसे भाव कृत्रिम लग सकते हैं। इसलिए, अनुवादक को तीनों के मध्य एक काव्यात्मक संतुलन स्थापित करना होता हैं। उदाहरणस्वरूप, रविंद्रनाथ ठाकुर ने अपनी कविताओं के अंग्रेजी अनुवाद (Gitanjali) में उंद की पूर्ण समानता नहीं रखी, पर लय और भाव का उत्कृष्ट संरक्षण किया, जिससे विश्व भर के पाठक उसकी आत्मा से जुड़ सके।

निष्कर्षत: :

काव्यानुवाद केवल भाषा का रूपांतरण नहीं, बल्कि भाव और सौंदर्य का पुनर्जन्म है। छंद, लय और अलंकार - ये तीनों तत्व कविता की आत्मा हैं और इनका संरक्षण अनुवादक की सबसे बड़ी जिम्मेदारी है। यह संरक्षण शाब्दिक नहीं, बल्कि रचनात्मक और संवेदनात्मक होना चाहिए।

एक सफल काव्य-अनुवाद वही है जिसमें पाठक यहन पहचान सके कि वह मूल कविता नहीं पढ़ रहा बल्कि उसी आत्मा का एक नया रूप अनुभव कर रहा है। अनुवादक जब शब्दों के पार जाकर कविता के संगीत को पकड़ लेता है तभी वह वास्तव में कवि के समान हो जाता है - एक सृजनकर्ता।

संदर्भ ग्रंथ :

१. *अनुवाद सिद्धांत की रूपरेखा - सुरेश कुमार*

२. *अनुवाद कला सिद्धांत और प्रयोग -कैलाश चंद्र भाटिया*

३. *अनुवाद में विसर्जन और सर्जन का सिद्धांत*

४. *अनुवाद का सिद्धांत और व्यवहार -युजीन अल्बर्ट निदा और चार्ल्स रसेल टेबर*

५. *अनुवाद शिल्प समकालीन संदर्भ -कुसुम अग्रवाल*

Cite This Article:

डॉ. हरदास सो. रा. (2025). *काव्य के क्षेत्र में अनुवाद* **In Aarhat Multidisciplinary International Education Research Journal**: Vol. XIV (Number VI, pp. 73–76).

ISSN–2278-5655

AMIERJ Aarhat Multidisciplinary International Education Research Journal

Volume–XIV, Special Issues – III (a) Nov – Dec, 2025

OPEN ACCESS Original Research Article

वैश्वीकरण के परिप्रेक्ष्य में अनुवाद का महत्व

** प्रा. दिपाली दत्तात्रय तांबे,*

** सहायक प्राध्यापक, हिंदी विभाग प्रमुख, कला,वाणिज्य,विज्ञान एवं संगणकशास्त्र महाविद्यालय, आश्वी खुर्द.*

सार:

वैश्वीकरण की प्रक्रिया में किसी एक भाषा, संस्कृति और पहचान का दूसरी भाषाओं संस्कृतियों की पहचान पर आधिपत्य स्थापित किया जा रहा है। मानवता के समक्ष सबसे बड़ी चुनौती वास्तव में यह है कि वैश्विक स्तरपर अधिकांश बौद्धिक कार्य एक ही भाषा में किए जा रहे हैं। भाषा ने अनुवाद प्रक्रिया को भरपूर प्रभावित किया है और नई पहचान एवं संस्कृति के निर्माण की स्थितियां पैदा की हैं। एकता के परिप्रेक्ष्य में राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय स्तर पर विभाजन के इस दौर में एकता की कड़ियों को जोड़ने का एक महत्वपूर्ण प्रयास अनुवाद के माध्यम से ही संभव हो सकता है। अनुवाद जिसके द्वारा राष्ट्र की एक सूत्रता को सही दिशा मिलती है। अनुवाद ने संपूर्ण राष्ट्र को एकता के बंधन में बाँध रखा है और राष्ट्रीयता के सूत्रों को विश्रृंखलित होने से रोका है।

Copyright © 2025 The Author(s): This is an open-access article distributed under the terms of the Creative Commons Attribution 4.0 International License (CC BY-NC 4.0) which permits unrestricted use, distribution, and reproduction in any medium for non-commercial use provided the original author and source are credited.

साहित्यिक, सांस्कृतिक, सामाजिक परिदृश्य को साहित्यिक गतिविधि के रूप में अनुवाद को बहुत बाद में महत्व मिला। भारतीय संस्कृति की सामाजिक अस्मिता को अनुवाद ने अनगिनत प्रयासों ने श्रेष्ठता प्रदान की है। अनुवाद कार्य भारत की बहुआयामी सांस्कृतिक परंपराओं और उपलब्धियों के समन्वय का पर्याय कहा जा सकता है। भारत भूमि पर धार्मिक, वैचारिक, संप्रदायिक, दर्शनिक तथा सांस्कृतिक एकता का संगम हुआ है। समूचे देश की भौगोलिक सीमा में बिखरी सांस्कृतिक विरासतों और जीवन मूल्यों की सामाजिक छवि को अनुवाद प्रक्रिया ने सही दिशा दी है। अनुवाद देश और काल की सीमाओं का अतिक्रमण करने वाला एक भाषिक साधन है। विशेष रूप से यह एक औजार या उपकरण है जो भौगोलिक, आर्थिक, सांस्कृतिक, सामाजिक विभेदों को स्थानीय तथा वैश्विक स्तर दूर करके परस्पर संबंध स्थापित कर सकता है। विश्व की अनग्नित भाषाएँ आज अपनी – अपनी संस्कृतियों और जीवन की विधियों को संचालित कर रही है। इन विविधताओं में समन्वय स्थापित करने का एक मात्र साधन अनुवाद ही है। भाषिक वैविध्य सांस्कृतिक और सामाजिक वैविध्य को जन्म देता है किन्तु इस वैविध्य को दूर कर के विभिन्न सांस्कृतिक परिवेश में सदृश्य पैदा करने की क्षमता केवल अनुवाद में ही निहित है।

व्यक्ति की अभिव्यक्ति किसी भी भाषा में हो सकती है, लेकिन वही अभिव्यक्ति समूचे समाज के लिए उस भाषा विशेष के ज्ञान के बिना संप्रेषणीय नहीं होगी,ऐसी अवस्था में अनुवाद

ISSN–2278-5655

AMIERJ Aarhat Multidisciplinary International Education Research Journal

Volume–XIV, Special Issues – III (a) Nov – Dec, 2025

OPEN ACCESS Original Research Article

ही वह एकमात्र उपकरण है, जो इस कठिनाई को दूर कर सकता है l अनुवाद ने अध्ययन और अध्यापन को व्यापकता दी है l अनुवाद ने भारतीय साहित्य के अध्येताओं को एक दूसरे के निकट लाने का प्रयास किया है। अनुवाद ने न केवल पाठकीय रूचि को अंतरराष्ट्रीय आस्वाद प्रदान किया है, बल्कि अध्ययन और अनुसंधान को नई दिशाएँ भी दी हैl अंतरराष्ट्रीय साहित्य के अध्ययन ने अतीत और वर्तमान को विश्व से परिचित कराया है । सारे संसार की विभिन्न भाषाओं में विभिन्न विधाओं में रचे जा रहे साहित्य के अध्ययन में संल्गन अध्येताओं के शिक्षण में भी अनुवाद की अनवरत भूमिका लक्षित होती हैl

भावात्मक एकता की दृष्टि से विश्व समाज भिन्न भिन्न राष्ट्रों, भूखंडों, धर्मो, वर्गों और जातियों में विभक्त है। हर राष्ट्र और समाज से अपनी भाषिक, सांस्कृतिक तथा सामाजिक पहचान होती है l राष्ट्र की पहचान उसकी अपनी राष्ट्रभाषा से होती है इस विभाजित मानव समुदाय को भावात्मक और भावनात्मक धरातल पर जोड़कर उनके मध्य बनी हुई विषमता की खाई को मिटाना ही अनुवाद का प्रधान लक्ष है l इस लक्ष्य की प्राप्ति के लिए अनुवाद एक सेतु बन गया है । इस विभाजक अंतराल को खत्म कर विभिन्न संस्कृतियों में भावात्मक एकता स्थापित करने के लिए अनुवाद एक सशक्त साधन के रूप में उपलब्ध है। राष्ट्रीय, भौगोलिक, सांस्कृतिक, सामाजिक, धार्मिक और अलगाव को खत्म करभावात्मक एकीकरण के लिए अनुवाद की उपयोगिता आज विश्व स्तर पर सिद्ध हो चुकी हैं। भाषिक विभिन्नता की दरार भी अनुवाद से ही मिटाई जा सकती है इसीलिए अनुवाद को एक सशक्त सेतु माना गया है l भावात्मक एकता से मनुष्य में सहृदयता का विकास और मानव जाति का कल्याण संभव है l अनुवाद की सांस्कृतिक विरासत को साहित्य के माध्यम से समझकर सहिष्णुता का संवर्धन किया जा सकता है । समाज में व्यापत भाषिक विभाजन से उत्पन्न खाई को मिटाने तथा भिन्न भिन्न संस्कृतियों के भावात्मक एकीकरण के लिए अनुवाद एक असाधारण खोज है।

संचार क्रांति- नई शताब्दी के आरंभ के साथ विश्व राजनीतिक, आर्थिक, सामाजिक, सांस्कृतिक परिस्थितियाँ तेजी से बदली है l आज विश्वमें सभी देशों के बीच परस्पर वर्चस्व की होड़ लगी है। सूचना एवं संचार प्रौद्योगिकी में आए विकास ने पूरे विश्व को अपनी जेब में ले लिया है l ऐसी स्थिति में अनुवाद की विश्व की विभिन्न संस्कृतियों के बीच संचार स्थापित करने, मानव सभ्यताओं के निर्माण और संरक्षण में महत्वपूर्ण भूमिका है। संचार- क्रांति ने विश्व को विश्वग्राम में बदलकर रख दिया है दुनियाँ सिमट गई। संचार क्रांति ने मनुष्यों को उपग्रहों के माध्यम से जोड़ दिया है । आज घर बैठे हज़ारों मील दूर स्थितलोगों से पलक झपकते ही सीधे संपर्क साधा जा सकता है। मानव जीवन में एक सम्पूर्ण क्रांति आ गयी है। भौगोलिक दूरियाँ समाप्त हो गई हैं l संचार क्रांतिने विभिन्न भाषा भाषियों को परस्पर जोड़ने के वैज्ञानिक उपकरन दिए लेकिन भाषिक विभेद को दूर करने लायक नहीं है। इस भाषिक विभेद और भिन्नता को दूर करने का एक मात्र उपाय अनुवाद ही है। अंतः संचार क्रांतिका प्राण तत्व अनुवाद ही है। भाषाओं की बहुल स्थिति में सामंजस्य पैदा करने वाला एक मात्र माध्यम अनुवाद है। भाषिक विभेद को अनुवाद के माध्यम से दूर किया जा सकता है। विश्व के सिमटते हुए मानचित्र भौगोलिक दूरियाँ जैसे समाप्त हो रही है वैसे ही अनुवाद के द्वारा भाषिक दूरियाँ

ISSN–2278-5655

AMIERJ Aarhat Multidisciplinary International Education Research Journal

Volume–XIV, Special Issues – III (a) Nov – Dec, 2025

OPEN ACCESS Original Research Article

भी ख़त्म हो सकती हैं । विविधता में एकता लाने के लिए सांस्कृतिक साहित्यिक और राष्ट्रीय गठबंधन की संकल्पना में अनुवाद सबसे महत्तवपूर्ण कड़ी है।

अनुवाद ने प्रत्येक संचार माध्यमों का कार्य आसान किया है तथा उत्सुकता लाने के प्रयास में भी है छोटे गाँवों और कस्बों से लेकर शहरों और महानगरों तक अनुवाद, संचार के किसी न किसी साधन के साथ उपलब्ध है । अनुवाद ने संचार माध्यमों तकनीकी युग में नयापन का सूत्रपात किया है। आज का युग संचार क्रांति का युग है 1 टीवी, रेडियो, इंटरनेट, समाचार पत्र -पत्रिकाएँ फिल्म ये सब आज मानव जीवन के अनिवार्य अंग बन गए हैं। विश्वमें आज हर देश और हर समाज में इनका प्रवेश हो गया है। आज समाचार चौबीसों घंटे प्राप्त होते हैं। टीवी के चैनल और रेडियो के कार्यक्रम बीबीसों घंटे चलते हैं। समाचार पत्र के एकाधिक संस्करण हर रोज निकाले जातेहैं । सम्पन्न देशों में रात्रि संस्करण भी होते है अर्थात जनसंचार के माध्यम हमेशा कार्यरत रहते हैं। स्रोत भाषाओं में एकत्रित सामग्री का अनुवाद करके उनका प्रसारण किया जाता है 1 आज विश्व के संचार बाजार में असंख्य अनुवादक निरंतर कार्य कर रहे हैं, जिनके द्वारा संसार के हर कोने का समाचार कुछ ही क्षणों में विश्व के अन्य हिस्सों में हर भाषा में अविलंब पहुँचता है ।यदि अनुवाद जेसी प्रक्रिया न होती तो संचार क्रांति भी संभव नहीं होती मीडिया ने नई शताब्दी में मानव जीवन में उथल पुथल मचा दी है।

अनुवाद ने राष्ट्रों की राजनीति को प्रभावित किया है राष्ट्रों के प्रमुख अपने वक्तव्यों को अपनी भाषा में प्रस्तुत करते हैं, तो उन्हें सारा विश्व अनुवाद के ही माध्यम से समझ पाता है 1 और तत्काल उस पर अपनी प्रतिक्रिया दर्ज करता है। संयुक्त राष्ट्र संघ जैसे अंतर्राष्ट्रीय मंच से राष्ट्रों के प्रतिनिधियों के भाषण तत्काल अनुवाद द्वारा विश्व की सभी भाषाओं में उपलब्ध कराया जाता है । इसमें दूरसंचार के माध्यमों की भूमिका महत्वपूर्ण है। कार्यक्रमों के सीधे प्रसारणके लिए संचार माध्यमों के द्वारा प्रयुक्त अत्याधुनिक तकनीक जिम्मेदार है जो इस तरह के उपकरण तैयार कर विश्व को तत्काल जोड़ती है। अनुवाद के बिना हम विभिन्न देशों में होने वाले परिवर्तनों को वहाँ की सामाजिक आर्थिक और सांस्कृतिक स्थितियों में होने वाले बदलावों को कदापि नहीं आत्मसात कर पाते 1 भारतीय सद्भावना की जब हम बात करते हैं तो अनुवाद की तरफ हमारा ध्यान जाना स्वभाविक है।

अनुवाद वह साधन है जो भाषायी सद्भावना की अवधारणा को न केवल पुष्ट करता है अपितु भारतीय साहित्य एवं अस्मिता को गति प्रदान करने वाला एक सशक्त और आधारभूत माध्यम है । यह एक ऐसा कार्य है जो भारतीय साहित्य की अवधारणा से हमें परिचित कराता है 1 देश की साहित्यिक - सांस्कृतिक विरासत के दर्शन अनुवाद से ही संभव हैं। आज यदि भारतीय भाषाओं के कई यशस्वी लेखकों की रचनाएँ अनुवाद के ज़रिए हमतक नहीं पहुंचती तो भारतीय साहित्य संबंधी हमारा ज्ञान कितना सीमित कितना क्षुद्र होता इसका सहज ही अनुमान लगाया जा सकता है। अनुवाद के माध्यम से ही हमें विश्व साहित्य को पढ़ने की सुविधा प्राप्त होती है ।अनुवाद के बिना हम इस धरोहर को जानने से वंचित रह जाते।

आज मनुष्य पहले से कहीं अधिक जिज्ञासु और शोधपरक हो गया है मनुष्य की जिज्ञासाओं का समाधान अनुवाद द्वारा प्राप्त सामाग्री के अध्ययन से ही संभव है। किसी भी व्यक्ति के लिए

ISSN–2278-5655

AMIERJ Aarhat Multidisciplinary International Education Research Journal

Volume–XIV, Special Issues – III (a) Nov – Dec, 2025

OPEN ACCESS Original Research Article

संसार की सारी भाषाओं को सीखना संभव नहीं है लेकिन विभिन्न भाषाओं में रचित साहित्य एवं अन्य सामग्री का उपयोग हर व्यक्ति अनूदित पाठके माध्यम से कर सकता है अनुवाद ने आज अभिव्यक्ति की सीमाओं का विस्तार किया है । अनुवाद वर्तमान काल की अनिवार्य आवश्यकता है । भारत जैसे विकासशील देश में अनुवाद की स्थिति काफी अलग है । बहुभाषी देश होने के कारण यहाँ अनुवाद कार्य बहुत ही महत्तवपूर्ण है । विभिन्न भारतीय भाषाओं के प्राचीन और आधुनिक साहित्यों के आदान - प्रदान का प्रमुख सूत्र अनुवाद ही है ।

आज का युग संचार के क्षेत्र में कंप्यूटर की प्रधानता का युग है । अनुवाद प्रक्रिया को सुगम और अत्यधिक गतिशील बनाने के लिए कंप्यूटर के प्रयोग की दिशा में अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर अनुसंधान हो रहे हैं । कंप्यूटर द्वारा किया गए अनुवाद को मशीन अनुवाद कहा जाता है1 विश्व की अग्रणी कंप्यूटर संस्थाएँ आज हर तरह के पाठ के अनुवाद के लिए कंप्यूटर का प्रयोग सफलता पूर्व कारगर तरीके से करने के लिए प्रयासरत हैं 1 वह दिन दूर नहीं जब विश्व की सभी भाषाओं अंतरभाषिक अनुवाद मशीन दूसरा संभव हो जाएगा आज कंप्यूटर साधित अनुवाद कुछ सीमित 20 प्रकार्यों के लिए किया जा रहा है1 सीमित शब्दावली के साथ विशेष क्षेत्रों में कंप्यूटर अनुवाद किया जा रहा है इसके लिए विशेष रूप से कृत्रिम बुद्धि का विकास किया जा रहा है ।

शिक्षा और अनुसंधान-अनुवाद की सबसे अधिक उपयोगिता वैश्वीकृत परिदृश्य में शिक्षा और अनुसंधान के क्षेत्र में अति महत्वपूर्ण है । शिक्षा के क्षेत्र में ज्ञान और विज्ञान की सामग्री को अंतर्राष्ट्रीय धरातल पर विश्व के सभी देश और शिक्षण संस्थाएँ आपस में बांटती हैं । यह आदान - प्रदान अनुवाद के माध्यम से ही होता है । अनुसंधान के परिणामों को अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर आपस में अनुवाद के द्वारा ही साझा करते हैं । मनुष्य के कल्याण के लिए विश्व भर में जो भीशोध और अनुसंधान हो रहे हैं जिनमें असंख्य वैज्ञानिक कार्यरत हैं उनके नतीजे सभी मानव जाति तक पहुँचाने का काम अनुवाद द्वारा ही संभव है । उनकी जानकारी विभिन्न देशों के नागरिकों को स्थानीय भाषा में दी जाती है जिसके पीछे विशेषज्ञ अनुवादकों का परिश्रम रहता है । मानवता की दृष्टि से सभी देशों- प्रदेशों के मनुष्य मूलत: एक हैं पर भौगोलिक, सामाजिक, सांस्कृतिक आर्थिक, और भाषिक सीमाएँ उन्हें एक दूसरे से अलग कर देती हैं । इनमें भाषा की सीमा सबसे बड़ी सीमा है । विदेशों की बात तो दूरअपने ही देश में विभिन्न प्रदेशों के लोग एक - दूसरे की भाषा न समझने के कारण एक - दूसरे से अजनबी हो जाते हैं । मानव - मन स्वभावत : सीमाओं में बंधकर नहीं रहना चाहता बल्कि वह इन सीमाओं को लाँघकर विश्व भर में व्यापने के लिए तड़पता रहता है । भाषा की सीमाओं को लाँघने का सबसे बड़ा माध्यम अनुवाद है । भाषा के आविष्कार के बाद जब मनुष्य समाज का विकास विस्तार होता चला गया और सम्पकों एवं आदान - प्रदान की प्रक्रिया को अधिक फैलाने की आवश्यकता अनुभव की जाने लगी तो अनुवाद ने जन्म लिया । इन दिनों अनुवाद सेवाओं की माँग काफी बढ़ी है । अनुवाद की जरूरत केवल साहित्य तथा अंत: सांस्कृतिक कार्यकलापों के संवर्द्धन के लिए नहीं है बल्कि यह तकनीक एवं स्थानिकीकरण की प्रक्रिया के अभिन्न अंग बन चुके वैश्वीकरण के परिदृश्य में कदम से कदम मिलाकर चलने के लिए भी एक अत्यावश्यक साधन है ।

ISSN–2278-5655

AMIERJ Aarhat Multidisciplinary International Education Research Journal

Volume–XIV, Special Issues – III (a) Nov – Dec, 2025

OPEN ACCESS Original Research Article

सुख और दुःख की भाँति मनुष्य ज्ञान को भी दूसरों के साथ बाँट लेना चाहता है। जो वह स्वयं जानता है उसे दूसरों तक पहुँचाना चाहता है और जो दूसरे जानते हैं उसे स्वयं जानना चाहता है। इस प्रक्रिया में भाषा की सीमाएँ उसके आड़े आती हैं। इसीलिए अनुवाद वैश्वीकरण और तकनीक के आपसी संबंध से आज ज्ञान-विज्ञान के विकास और प्रसार का अनिवार्य साधन बन गया है। अनुवाद के माध्यम से अपनी भाषा में अन्य भाषाओं की कृतियों को पढ़ने का अवसर मिलने पर व्यक्ति सहज ही इस निष्कर्ष पर पहुँचता है कि भौगोलिक , सामाजिक , आर्थिक और भाषागत सीमाएँ स्वाभाविक नहीं बल्कि मनुष्य निर्मित ७ कृत्रिम सीमाएँ हैं ।वस्तुत : मानव समाज एक है। भाषा हमारे विचारों एवं भावनाओं का अनुवाद कही जा सकती है। जो हम सोचते हैं , वह शब्दों के माध्यम से लेखन में समेटने का प्रयास करते हैं। भाषा किसी हद तक ही हमारे विचारों को पकड़ पाती है। संसार में जितनी भाषाएँ मौजूद हैं उन सभी भाषाओं में सारी ज्ञान - विज्ञानकी सामग्री स्थानीय भाषाओं में उपलब्ध हो रही है और इसका श्रेय अनुवाद कोही जाता है।

राष्ट्रीय एकता आज की अनिवार्य आवश्यकता है। भारत जैसे बहुभाष देश के लिए अनुवाद अत्यंत प्रभावी और उपयोगी माध्यम है जिससे कि देश में भाषिक विभेद को दूर करके जन सामान्य में परस्पर एक दूसरे की भाषा और संस्कृति के प्रति सद्भावना जागृत हो सके ।अनुवाद जैसे सशक्त और कारगर माध्यम की आवश्यकता सबसे अधिक भारत को ही है भारतीय प्रादेशिक और क्षेत्रीय भाषाओं को एक दूसरे के निकट लाने का काम व्यवहारिक माध्यम अनुवाद ही है । राष्ट्रीय एकात्मकता के लिए भारतीय भाषाओं में उपलब्ध साहित्य का अनुवाद हिंदी और हिंदी साहित्य का इतर भारतीय भाषाओं में अनुवाद राष्ट्रीय हित में आवश्यक है स्वैच्छिक रूप से भाषा-प्रेमी विद्वान अपनी अभिरुचि के अनुकूल साहित्यिक अनुवाद के कार्य में संलग्न हैं लेकिन अनुवाद के क्षेत्र को सुसंगठित होने की आवश्यकता है ।भारत में अनुवाद कार्य राष्ट्रीय स्तर पर सरकारी और गैरसरकारी संस्थाओं के द्वारा संगठित रूप से आयोजित करने की नितांत आवश्यकता है। विविधताओं से युक्त भारत जैसे बहुभाषा - भाषी देश में एकात्मकता की परम आवश्यकता है और अनुवाद साहित्यिक धरातल पर इस आवश्यकता की पूर्ति में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाने में सक्षम है। अनुवाद वह सेतु है जो साहित्यिक आदान – प्रदान भावनात्मक ,एकात्मकता भाषा समृद्धि तुलनात्मक अध्ययन तथा राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय साहित्य जगत से जोड़ता है।

बाज़ारवाद और अनुवाद -आज जब कि पूरी दुनिया में अपनी पहुँच रखनेवाली कम्पनियों स्थानीय भाषा में अपने ग्राहकों से सम्पर्क करना चाहती हैं तो अनुवाद कार्य की भूमिका और भी अधिक महत्वपूर्ण हो उठती भूमंडलीकृत परिदृश्यमें भाषा की महत्वपूर्ण भूमिका होती है। बहुराष्ट्रीय कम्पनियों ने इस बात का सर्वेक्षण किया और वे इस निष्कर्ष पर पहुंची है कि यदि हमे अपना माल ज्यादा लोगों को पहुँचाना है तो वहीं की भाषा में उत्पादों की जानकारी देनी होगी। यही कारण है कि आज विदेशी कम्पनियों ने अपने उत्पादों के प्रचार -प्रसार के लिए अनुवाद को अपनाकर भारतीय भाषाओं में अपने उत्पादों की जानकारी देना शुरू कर दिया है। भारत में वैश्वीकरण की बाजारवादी नीति के अंतर्गत बड़ी तेजी से आर्थिक विकास हो रहा व्यापार एवं वाणिज्य का क्षेत्र सबसे बड़ा क्षेत्र है जहां

ISSN–2278-5655

AMIERJ Aarhat Multidisciplinary International Education Research Journal

Volume–XIV, Special Issues – III (a) Nov – Dec, 2025

OPEN ACCESS Original Research Article

अनुवाद की सर्वाधिक मांग है 1 भारत जैसे बहुभाषी देश में विदेशी और स्वदेशी उत्पादों की बिक्री केवल किसी एक भाषा के माध्यम नहीं की जा सकती । भाषा सम्प्रेषण का माध्यम होती है किसी भी उत्पाद कोबेचने के लिए विज्ञापन प्रणाली के द्वारा उस उत्पाद का प्रचार किया जाता है यह प्रचार सामग्री अनेक भाषाओं में पेशेवर विज्ञापन विशेषज्ञ तैयार करते हैं । विज्ञापन का बाजार अनुवाद पर ही आधारित होता है । विश्व का सारा बाजार अनुवाद पर आश्रित है ये अनुवाद स्वदेशी और विदेशी भाषाओं में भी करवाए जाते हैं । इस कार्य के लिए निजी क्षेत्र में बड़ी विज्ञापन कंपनियाँ बाजार में उतर गई हैं इस तरह अनुवाद का भी एक बहुत बड़ा है जो कि करोड़ों रुपयों व्यापार करता है विज्ञापन जगत में अंतर्राष्ट्रीय धरातल पर अनुवाद भी एक उद्योग के रूप में उभरा है 1

भारत में साहित्येतर अनुवाद की भी बहुत अधिक आवश्यकता है, साहित्येतर अनुवाद की आवश्यकता विभिन्न कामकाज के क्षेत्रों के लिए उपयोगी होता है 1 भाषा की प्रयोजन मूलकता उसके विभिन्न प्रकार्यात्मक अनुप्रयोगों से ही आँकी जा सकती है 1 भारत अंग्रेजी और भारतीय भाषाओं के मध्य अनुवाद की आवश्यकता अधिक है, क्योंकि देश में कामकाज की व्यवहारिक भाषा अंग्रेजी है इसलिए काम काज के क्षेत्र में प्रयुक्त अंग्रेजी की अभिव्यक्तियों को जन सामान्य के लिए बोधगम्य बनाने के लिए अनुवाद का आश्रय लेना पड़ता है1 आज के तेजी से बदलते हुए अंतर्राष्ट्रीय परिवेश में अनुवाद की भूमिका बहुआयामी है भाषा जिस तरह से सम्प्रेषण का माध्यम है अनुवाद भी उसी सम्प्रेषण को सार्थक और सशक्त बनाने का सहायक औज़ार है । आज वैश्वीकरण के दौर में बहुभाषी होना समय की आवश्यकता है और बहु - भाषिकता को समन्वय के सूत्र में बांधने के लिए अनुवाद की आवश्यकता अपरिहार्य है ।

संदर्भ ग्रंथ :

१. *हिंदी का वैश्विक परिदृश्य-पंडित बन्ने*

२. *वैश्वीकता के परीप्रेश्य में संचारमाध्यम, साहित्य और संस्कृति-डॉ. विजय महादेव गाडे*

३. *डॉ.रीतारानी पालीवाल- अनुवाद की सामाजिक भूमिकाएं हिंदी –*

४. *संपादक डॉ बालेन्दु शेखर तिवारी-अनुवाद विज्ञानए प्रकाशन संस्थानए*

५. *डॉ. माणिक मृगेश- भूमंडलीकरण निजीकरण व हिंदी वाणी प्रकाशन*

६. *डॉ .आरसू साहित्यानुवाद : संवाद और संवेदनाए*

Cite This Article:

प्रा. तांबे दि. द. (2025). *वैश्वीकरण के परिप्रेक्ष्य में अनुवाद का महत्व.* **In Aarhat Multidisciplinary International Education Research Journal**: Vol. XIV (Number VI, pp. 77–82).

ISSN–2278-5655

AMIERJ Aarhat Multidisciplinary International Education Research Journal

Volume–XIV, Special Issues – III (a) Nov – Dec, 2025

OPEN ACCESS Original Research Article

नाटक और अनुवाद: एक शैक्षिक अध्ययन

* सतीश अशोक दवंगे ,

* शोधार्थी, के जे एस महाविद्यालय कोपरगांव , तहसील कोपरगांव , जिला अहिल्यानगर 423601

प्रस्तावना:

नाटक साहित्य और संस्कृति का एक ऐसा माध्यम है, जो मानव समाज की गहन व्याख्या करता है। यह केवल मनोरंजन तक सीमित नहीं रहता, बल्कि सामाजिक, राजनीतिक, धार्मिक और मनोवैज्ञानिक दृष्टियों का समावेश करता है। भारत में प्राचीन काल से नाटकों का विकास हुआ, जिसका सबसे महत्वपूर्ण ग्रंथ भरतमुनि का नाट्यशास्त्र माना जाता है।

अनुवाद नाटकों के वैश्विक प्रसार का एक महत्वपूर्ण उपकरण है। जब नाटक अन्य भाषाओं में अनूदित होते हैं, तो यह केवल भाषा का परिवर्तन नहीं होता, बल्कि इसमें भावनाओं, सांस्कृतिक प्रतीकों और सामाजिक संदर्भों का अनुवाद भी शामिल होता है। उदाहरण के लिए, विलियम शेक्सपियर के नाटकों जैसे हैमलेट, मैकबेथ और ओथेलो का हिंदी, मराठी, बंगाली और अन्य भारतीय भाषाओं में अनुवाद रंगमंच पर प्रस्तुत किए गए हैं। इस शोधलेख में नाटक और अनुवाद के महत्व, उनके इतिहास, विकास और भारतीय संदर्भ में योगदान का विश्लेषण किया गया है।

Copyright © 2025 The Author(s): This is an open-access article distributed under the terms of the Creative Commons Attribution 4.0 International License (CC BY-NC 4.0) which permits unrestricted use, distribution, and reproduction in any medium for non-commercial use provided the original author and source are credited.

नाटक का इतिहास और विकास :

1. प्राचीन भारतीय नाटक

भरतमुनि के नाट्यशास्त्र (लगभग 2–3 शताब्दी ई.पू.) में नाटक को चार मुख्य प्रकारों में विभाजित किया गया है – नाटक (शुद्ध नाटक), प्रहास्य, वीरगीति नाटक और भिन्नविनोद। इसमें अभिनय, संवाद, भाव (रस) और संगीत का महत्व स्पष्ट किया गया है। प्राचीन नाटकों का उद्देश्य केवल मनोरंजन नहीं, बल्कि शिक्षा, सामाजिक चेतना और धार्मिक विचारों का प्रचार भी था।

कालिदास का अभिज्ञान शाकुंतलम् और मेघदूत नाटक और लघुकथाओं का उत्तम उदाहरण हैं। इसमें प्राकृतिक सौंदर्य, मानव भावनाएँ और सामाजिक नियमों का संवेदनशील चित्रण किया गया है। प्राचीन भारतीय नाटकों में मुख्यतः धर्म, नीति और नैतिक मूल्यों की शिक्षा का ध्यान रखा गया।

2. मध्यकालीन और भक्ति नाटक

मध्यकाल में भारतीय नाटकों में धार्मिक और भक्ति आंदोलन का प्रभाव देखने को मिलता है। संत कवियों जैसे

ISSN–2278-5655

AMIERJ Aarhat Multidisciplinary International Education Research Journal

Volume–XIV, Special Issues – III (a) Nov – Dec, 2025

OPEN ACCESS Original Research Article

तुलसीदास, सूरदास और कबीर ने नाटकों में सामाजिक चेतना और धार्मिक अनुभवों का समावेश किया। इस समय के नाटकों में लोकगीत, संवाद और संगीत का विशेष महत्व था।

वहीं यूरोप में मध्यकालीन नाटकों में चर्च के धार्मिक संदेश और रहस्य नाटक प्रमुख थे। जैसे कि मिस्ट्री प्ले और मिरैकल प्ले में ईसाई धर्म के धार्मिक प्रसंगों का मंचन किया जाता था।

3. आधुनिक और समकालीन नाटक

20वीं और 21वीं सदी के नाटकों में यथार्थवाद, मनोवैज्ञानिक विश्लेषण और सामाजिक समस्याओं पर ध्यान केंद्रित किया गया। भारतीय रंगमंच पर मोहन राकेश के आषाढ़ का एक दिन, महेश दत्तानी के सिरिअस और गुलजार के समकालीन नाटकों ने सामाजिक और नैतिक मुद्दों को उद्घाटित किया।

समकालीन नाटकों में लैंगिक समानता, पर्यावरण संरक्षण, भ्रष्टाचार और सामाजिक असमानता जैसे विषयों को प्रमुखता से प्रस्तुत किया गया। नाटक अब केवल मंच पर ही नहीं, बल्कि फिल्मों, रेडियो नाटकों और डिजिटल माध्यमों के जरिए भी पहुँचने लगे हैं।

नाटक और अनुवाद का महत्व :

1. सांस्कृतिक आदान-प्रदान

अनुवाद के माध्यम से नाटक सीमाओं को पार कर विभिन्न संस्कृतियों में पहुँचते हैं। उदाहरण के लिए, शेक्सपियर के मैकबेथ और ओथेलो का हिंदी और मराठी अनुवाद भारतीय रंगमंच पर प्रस्तुत हुआ। इससे वैश्विक साहित्यिक ज्ञान बढ़ा और दर्शकों ने विभिन्न सांस्कृतिक दृष्टिकोणों से अवगत होने का अवसर प्राप्त किया।

2. भाषाई और भावनात्मक अनुवाद

नाटकों का अनुवाद केवल शब्दों का परिवर्तन नहीं है। इसमें भावनाओं, हास्य, व्यंग्य और सांस्कृतिक प्रतीकों को लक्षित दर्शकों तक पहुँचाना आवश्यक है। उदाहरण स्वरूप, यूरोपीय नाटकों में प्रयुक्त व्यंग्य और हास्य भारतीय दर्शकों के लिए अनुकूलित किए जाते हैं।

3. शिक्षा और सामाजिक जागरूकता

अनुवादित नाटक छात्रों और शोधकर्ताओं के लिए अध्ययन सामग्री बन सकते हैं। इसके अलावा, सामाजिक मुद्दों पर आधारित नाटकों का अनुवाद जनता में जागरूकता फैलाने का माध्यम बनता है। उदाहरण के लिए, महेश दत्तानी के नाटक ब्रूश विद लव का अनुवाद किशोरों में लिंग समानता और सामाजिक चेतना बढ़ाने में सहायक हुआ।

नाटक अनुवाद में चुनौतियाँ :

1. भाषाई बाधाएँ

अनुवाद के दौरान मूल भाषा के मुहावरे, अलंकार और सांकेतिक शब्दों का सही अर्थ में अनुवाद करना कठिन होता है। संस्कृत नाटकों के छंद और संवाद शैली का प्रत्यक्ष अनुवाद सरल नहीं है।

2. सांस्कृतिक अंतर

कई बार नाटक में प्रयुक्त रीति-रिवाज और प्रतीक दर्शकों के लिए अप्रसंगिक या अस्पष्ट हो सकते हैं। अनुवादक को स्थानीय संदर्भ में बदलाव करते हुए भाव और सार बनाए रखना पड़ता है।

ISSN–2278-5655

AMIERJ Aarhat Multidisciplinary International Education Research Journal

Volume–XIV, Special Issues – III (a) Nov – Dec, 2025

OPEN ACCESS Original Research Article

3. भाव और शैली का संरक्षण

मूल नाटक की शैली, हास्य, व्यंग्य और मनोवैज्ञानिक गहराई को अनुवाद में जीवित रखना चुनौतीपूर्ण है। गलत अनुवाद से नाटक की मूल संवेदनशीलता और प्रभाव कम हो सकता है।

भारतीय सन्दर्भ में नाटक और अनुवाद :

1. शेक्सपियर और भारतीय रंगमंच

भारतीय रंगमंच ने शेक्सपियर के नाटकों का अनुवाद कर उन्हें स्थानीय संदर्भ में प्रस्तुत किया। उदाहरण के लिए, मैकबेथ का हिंदी अनुवाद और प्रस्तुति ने भारतीय दर्शकों को विश्व साहित्य की गहरी समझ दी।

2. समकालीन प्रयोग

आजकल भारतीय नाट्यकार विदेशी नाटकों के अनुवाद में केवल भाषा बदलने तक सीमित नहीं हैं। वे सामाजिक और राजनीतिक संदर्भों के अनुसार नाटकों का रूपांतर करते हैं। इससे नाटक मनोरंजक और सामाजिक संदेशपूर्ण दोनों बनते हैं।

3. अनुवादकों का योगदान

भारत में नाटक अनुवादक जैसे रमेश चंद्र, महादेवी वर्मा, अरविंद गुप्त ने विदेशी नाटकों को भारतीय संदर्भ में अनुकूलित किया। उनका योगदान नाट्य साहित्य को समृद्ध करने और रंगमंच को वैश्विक स्तर पर प्रस्तुत करने में महत्वपूर्ण रहा।

निष्कर्ष:

नाटक और अनुवाद का आपसी संबंध साहित्य, संस्कृति और समाज के विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। अनुवाद के माध्यम से नाटक सीमाओं को पार कर वैश्विक स्तर पर सांस्कृतिक आदान-प्रदान का माध्यम बनते हैं।

हालांकि अनुवाद में भाषाई, सांस्कृतिक और भावनात्मक चुनौतियाँ आती हैं, लेकिन सफल अनुवाद दर्शकों को मूल नाटक का सार और अनुभव प्रदान करता है। भारतीय संदर्भ में अनुवादित नाटकों ने वैश्विक साहित्य को स्थानीय रंगमंच तक पहुँचाया और सामाजिक चेतना बढ़ाने में सहायक हुए। भविष्य में नाटक और अनुवाद के क्षेत्र में अनुसंधान और प्रयोग रंगमंच और साहित्य को और अधिक समृद्ध करेंगे।

संदर्भ :

1. *भरतमुनि, नाट्यशास्त्र, भारत, 2–3 शताब्दी ई.पू.*
2. *कालिदास, अभिज्ञान शाकुंतलम्, भारत, प्राचीन साहित्य.*
3. *महेश दत्तानी, संग्रहीत नाटक, नई दिल्ली: पेंगुइन, 2005.*
4. *विलियम शेक्सपियर, मैकबेथ, ओथेलो, हैमलेट, लंदन: पेंगुइन क्लासिक्स.*
5. *रमेश चंद्र, पश्चिमी नाटकों का हिंदी अनुवाद, नई दिल्ली: राष्ट्रीय पुस्तक न्यास, 2010.*
6. *सिंह, आर., भारतीय रंगमंच और वैश्विक प्रभाव, दिल्ली: ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस*

Cite This Article:

दवंगे स. अ. (2025). नाटक और अनुवाद: एक शैक्षिक अध्ययन. **In Aarhat Multidisciplinary International Education Research Journal**: Vol. XIV (Number VI, pp. 83–85).

ISSN–2278-5655

AMIERJ Aarhat Multidisciplinary International Education Research Journal

Volume–XIV, Special Issues – III (a) Nov – Dec, 2025

OPEN ACCESS Original Research Article

कहानी और अनुवाद – संप्रेषण के नए आयाम

* सुमति नायक,

* सहायक प्राध्यापक (हिंदी विभाग), नौरोसजी वाडिया महाविद्यालय पुणे.

प्रस्तावना :

कहानी लेखन मानव सभ्यता की प्राचीनतम अभिव्यक्तियों में से एक है। प्रत्येक संस्कृति की अपनी कहानियाँ होती हैं, जो उस समाज की परंपरा, मूल्यों, विश्वासों, और अनुभवों को प्रतिबिंबित करती हैं। अनुवाद की प्रक्रिया कहानी को एक भाषा से दूसरी भाषा में स्थानांतरित करने की तकनीक मात्र नहीं, बल्कि यह सम्प्रेषण (Communication) का एक जटिल और बहुआयामी कार्य बन गई है। आज के वैश्वीकरण के युग में अनुवाद केवल भाषाई बाधा को पार करने का माध्यम नहीं रह गया है, बल्कि यह संस्कृति, सोच, और भावनाओं का आदान-प्रदान भी न चुका है।

कहानी लेखन मानवता का एक प्राचीनतम माध्यम रहा है, जो पीढ़ियों से अनुभव, संस्कृति, शिक्षा, और नैतिकता का आदान-प्रदान करता रहा है। अनुवाद, जो भाषाई बाधाओं को पार करने का माध्यम है, आज के वैश्वीकरण युग में एक जटिल कला बन चुका है। कहानी के अनुवाद में न केवल भाषाई तत्वों का रूपांतरण होता है, बल्कि यह भाव, शैली, और सांस्कृतिक परिप्रेक्ष्य का भी गहन हस्तांतरण होता है।

Copyright © 2025 The Author(s): This is an open-access article distributed under the terms of the Creative Commons Attribution 4.0 International License (CC BY-NC 4.0) which permits unrestricted use, distribution, and reproduction in any medium for non-commercial use provided the original author and source are credited.

अनुवाद का सैद्धांतिक परिप्रेक्ष्य :

अनुवाद केवल भाषा से भाषा का रूपांतरण नहीं, बल्कि यह एक जटिल सैद्धांतिक प्रक्रिया है, जिसे समय-समय पर विभिन्न विद्वानों ने अपने दृष्टिकोण से परिभाषित किया है। अनुवाद का सैद्धांतिक परिप्रेक्ष्य भाषा, संस्कृति, संदर्भ, उद्देश्य, और शैली के समन्वय पर आधारित होता है। प्रमुख सैद्धांतिक मॉडल निम्नलिखित हैं:

1. **इक्विवेलेंस थ्योरी (Equivalence Theory)** प्रमुख विद्वान Eugene Nida और Charles Taber अनुवाद को अर्थ की समानता बनाए रखने की प्रक्रिया के रूप में परिभाषित किया।

- Formal Equivalence: मूल शब्द संरचना का समान रूपांतरण।
- Dynamic Equivalence : भाव और उद्देश्य के अनुरूप अनुवाद, जिससे लक्ष्य भाषा पाठक को वही प्रभाव प्राप्त हो ।

उदाहरण के लिए, एक भारतीय मुहावरे को बिना उसकी सामाजिक-सांस्कृतिक व्याख्या के केवल शब्दशः अनुवाद करना प्रभावहीन होता है।

ISSN–2278-5655

AMIERJ Aarhat Multidisciplinary International Education Research Journal

Volume–XIV, Special Issues – III (a) Nov – Dec, 2025

OPEN ACCESS Original Research Article

2. स्कोपोस थ्योरी (Skopos Theory)

Hans Vermeer द्वारा प्रतिपादित यह सिद्धांत बताता है कि अनुवाद का उद्देश्य (Skopos) प्राथमिकता रखता है। अनुवाद की प्रक्रिया में अनुवादक द्वारा तय की गई रणनीति उस उद्देश्य के अनुरूप होती है। उदाहरण: यदि किसी कहानी का उद्देश्य नैतिक शिक्षा देना है, तो अनुवाद में नैतिक संदेश को अधिक दी जाती है। ↓

3. संस्कृतिक टर्न (Cultural Turn)

Susan Bassnett और André Lefevere ने यह सिद्धांत प्रस्तुत किया कि अनुवाद केवल भाषाई गतिविधि नहीं, बल्कि सामाजिक-सांस्कृतिक सम्प्रेषण है।

अनुवादक का कार्य केवल शब्दों का रूपांतरण नहीं, बल्कि स्रोत और लक्ष्य संस्कृतियों के बीच सेतु का कार्य करना है। उदाहरणस्वरूप, भारतीय कहानियों में वर्णित त्योहार, रीति- रिवाज आदि को व्याख्या सहित प्रस्तुत करना।

4. लक्ष्य संस्कृतिवादी दृष्टिकोण (Target Culture Oriented Approach)

इस सिद्धांत के अनुसार अनुवादक का ध्यान मुख्य रूप से लक्ष्य भाषा संस्कृति पर रहता है। इसका उद्देश्य लक्ष्य पाठक को सहज अनुभव देना होता है। अनुवादक आवश्यकतानुसार स्रोत भाषा संस्कृति को लक्षित भाषा के अनुरूप ढालता है ताकि पाठक बिना कठिनाई के कथानक समझ सकें।

इस सिद्धांत के अनुसार अनुवादक का ध्यान मुख्य रूप से लक्ष्य भाषा संस्कृति पर रहता है। इसका उद्देश्य लक्ष्य पाठक को सहज अनुभव देना होता है। अनुवादक आवश्यकतानुसार स्रोत भाषा संस्कृति को लक्षित भाषा के अनुरूप ढालता है ताकि पाठक बिना कठिनाई के कथानक समझ सकें।

5. निर्माता सिद्धांत (Translator - Centered Theory)

यह सिद्धांत मानता है कि अनुवादक का व्यक्तित्व, दृष्टिकोण, और निर्णय अनुवाद प्रक्रिया में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। अनुवादक की रचनात्मकता और व्याख्यात्मक क्षमता अनुवाद की गुणवत्ता को प्रभावित करती है।

सम्पूर्णतः, अनुवाद के सैद्धांतिक परिप्रेक्ष्य यह स्पष्ट करते हैं कि अनुवाद केवल भाषा रूपांतरण की प्रक्रिया नहीं, बल्कि यह सम्प्रेषण का एक जटिल सामाजिक-सांस्कृतिक माध्यम है। अनुवादक को भाषाई दक्षता के साथ-साथ सामाजिक, सांस्कृतिक और भावनात्मक समझ भी आवश्यक होती है। इन सिद्धांतों का अध्ययन अनुवाद कार्य को अधिक प्रभावपूर्ण, संवेदनशील और उद्देश्यपूर्ण बनाता है।

अनुवाद, संप्रेषण के नए आयाम :

कहानियाँ मानव सभ्यता की अभिव्यक्ति का एक सबसे पुराना माध्यम रही हैं। वे समाज के अनुभव, परंपराएं, संस्कार, नैतिक मूल्य और भावनाओं का सशक्त प्रतिनिधित्व करती हैं। अनुवाद ने इन कहानियों को सीमाओं से परे पहुंचाकर वैश्विक स्तर पर साझा करने का अवसर प्रदान किया है। परंतु आज के वैश्वीकरण और तकनीकी युग में अनुवाद प्रक्रिया केवल भाषाई शब्दांतरण से अधिक गहराई प्राप्त कर रही है। इसे संप्रेषण के नए आयाम कहा जा सकता है।

ISSN–2278-5655

AMIERJ Aarhat Multidisciplinary International Education Research Journal

Volume–XIV, Special Issues – III (a) Nov – Dec, 2025

OPEN ACCESS Original Research Article

1. **भावनात्मक संप्रेषण (Emotional Communication)**

कहानियों का अनुवाद अब केवल शब्दों का रूपांतरण नहीं, बल्कि भावनाओं और संवेदनाओं का सम्प्रेषण बन चुका है। अनुवादक का लक्ष्य केवल भाषा परिवर्तित करना नहीं, अपितु कहानी में छुपे पात्रों की मनोस्थिति, समाज के यथार्थ, और लेखक के भावात्मक उद्देश्य को नए पाठकों तक समान रूप से पहुँचाना है। उदाहरणस्वरूप, प्रेमचंद की ग्रामीण कहानियों का अंग्रेजी अनुवाद करते समय ग्रामीण जीवन की कठिनाई, संघर्ष और सरलता का जीवंत चित्रण आवश्यक होता है।

2. **सांस्कृतिक समावेशन (Cultural Inclusion)**

कहानियों के अनुवाद में संस्कृति का समावेश अनिवार्य हो गया है। उदाहरण के लिए, भारतीय लोककथाओं में वर्णित पर्व, रीति-रिवाज, सामाजिक मूल्य आदि को केवल भाषाई अनुवाद नहीं, बल्कि व्याख्या सहित प्रस्तुत किया जाता है ताकि विदेशी पाठक भी पूरी संवेदना के साथ समझ सकें। इस प्रकार अनुवादक एक सांस्कृतिक दूत का कार्य करता है।

3. **उद्देश्य आधारित अनुवाद (Purpose - Oriented Translation)**

Skopos Theory के अनुरूप, अनुवाद में उद्देश्य को प्रमुखता दी जाती है। उदाहरण के लिए, यदि कहानी का उद्देश्य बच्चों को नैतिक शिक्षा देना है, तो अनुवाद में सरल भाषा और स्पष्ट व्याख्या का प्रयोग किया जाता है। यदि उद्देश्य साहित्यिक सौंदर्य का संवर्धन है, तो अनुवाद में शैलीगत तत्वों का विशेष ध्यान रखा जाता है।

4. **तकनीकी सहारा और मानवीय संवेदना का समन्वय**

आधुनिक युग में Neural Machine Translation (NMT) तकनीकें विकसित हो रही हैं। ये तकनीकें बड़े पैमाने पर साधारण वाक्यांशों के अनुवाद में सहायक हैं। परंतु साहित्यिक कहानियों के अनुवाद में अभी भी मानवीय संवेदनशीलता अपरिहार्य है। भाव, संदर्भ, शैली और स्पष्ट हैं। इसलिए तकनीकी और मानवीय अनुवाद का संतुलन भविष्य का नया आयाम बन रहा है।

5. **बहुभाषिक संप्रेषण (Multilingual Communication)**

भविष्य में अनुवाद का क्षेत्र बहुभाषिक अनुवाद की दिशा में बढ़ रहा है। एक स्रोत भाषा से कई लक्ष्य भाषाओं में कहानियों का संवेदनशील अनुवाद वैश्विक संवाद को अधिक सशक्त और समृद्ध बनाएगा। यह आयाम वैश्विक स्तर पर संवाद, समझ और सांस्कृतिक आदान-प्रदान को और अधिक सुलभ बनाएगा।

संक्षिप्त में, कहानियाँ अनुवाद और संप्रेषण के नए आयाम साहित्यिक, सामाजिक और तकनीकी दृष्टिकोण से विकसित हो रहे हैं। अनुवादक का कार्य केवल शब्दांतरण नहीं, अपितु भाव, संदर्भ, उद्देश्य और संस्कृति का संतुलित रूपांतरण बन गया है। इस नए परिप्रेक्ष्य में अनुवाद को एक रचनात्मक, संवेदनशील और उद्देश्यपूर्ण प्रक्रिया माना है, जो मानव अनुभव और ज्ञान के आदान-प्रदान को सशक्त बनाता है।

ISSN–2278-5655

AMIERJ Aarhat Multidisciplinary International Education Research Journal

Volume–XIV, Special Issues – III (a) Nov – Dec, 2025

OPEN ACCESS Original Research Article

सारांश :

कहानी और अनुवाद का सम्मिलन सम्प्रेषण के नए आयाम स्थापित करता है। यह केवल भाषाई शब्दों का रूपांतरण नहीं, बल्कि एक सशक्त सामाजिक-सांस्कृतिक संवाद का माध्यम बन चुका है। अनुवादक की भूमिका अब सिर्फ भाषा का विशेषज्ञ बनने तक सीमित नहीं रही, बल्कि वह एक सांस्कृतिक दूत और भावानुवादक बन गया है।

अनुवाद के प्रमुख सिद्धांत - जैसे इक्विवेलेंस थ्योरी, स्कोपोस थ्योरी, संस्कृतिक टर्न और निर्माता सिद्धांत - यह स्पष्ट करते हैं कि अनुवाद प्रक्रिया में संदर्भ, उद्देश्य, शैली और सांस्कृतिक समझ का संतुलित समावेश अत्यंत महत्वपूर्ण है। विशेष रूप से कहानी अनुवाद में भाव, संदर्भानुवाद और सांस्कृतिक तत्वों का संरक्षण अनिवार्य होता है।

आधुनिक तकनीकी प्रगति, जैसे Neural Machine Translation (NMT) 3 Artificial Intelligence (AI) ने अनुवाद के क्षेत्र में क्रांति ला दी है। फिर भी, साहित्यिक कहानियों और गहरे भावनात्मक पाठों के अनुवाद में मानवीय संवेदना रहेगा। क्योंकि साहित्यिक स्थान अपरिहार्य बना द में केवल शब्दार्थ नहीं, स्पष्ट करत हा अनुवाद प्रक्रिया म सदम, उद्रण, राला और सांस्कृतिक समझ का संतुलित समावेश अत्यंत महत्वपूर्ण है। विशेष रूप से कहानी अनुवाद में भाव, संदर्भानुवाद और सांस्कृतिक तत्वों का संरक्षण अनिवार्य होता है।

आधुनिक तकनीकी प्रगति, जैसे Neural Machine Translation (NMT) 3 Artificial Intelligence (AI) ने अनुवाद के क्षेत्र में क्रांति ला दी है। फिर भी, साहित्यिक कहानियों और गहरे भावनात्मक पाठों के अनुवाद में मानवीय संवेदना का स्थान अपरिहार्य बना रहेगा। क्योंकि साहित्यिक अनुवाद में केवल शब्दार्थ नहीं, अपितु रचनात्मकता, सामाजिक सन्दर्भ, सांस्कृतिक मूल्य और लेखक की शैली का सटीक हस्तांतरण भी आवश्यक होता है।

साहित्यिक कहानियों और गहरे भावनात्मक पाठों के अनुवाद में मानवीय संवेदना का स्थान अपरिहार्य बना रहेगा। क्योंकि साहित्यिक अनुवाद में केवल शब्दार्थ नहीं, अपितु रचनात्मकता, सामाजिक सन्दर्भ, सांस्कृतिक मूल्य और लेखक की शैली का सटीक हस्तांतरण भी आवश्यक होता है। भविष्य में अनुवाद कार्य में बहुभाषिक अनुवाद, सांस्कृतिक संवेदनशीलता, और उद्देश्य आधारित अनुवाद प्रमुख आयाम बनकर उभरेंगे। अनुवादकों को आधुनिक तकनीक के साथ-साथ गहरी सैद्धांतिक समझ और सांस्कृतिक दक्षता प्राप्त करनी होगी। इससे वैश्विक संवाद को और अधिक सुलभ, समृद्ध और सटीक बनाया जा सकेगा।

अतः कहानी और अनुवाद केवल भाषा से भाषा का परिवहन नहीं, बल्कि यह मानव अनुभव, संस्कृति, मूल्य और ज्ञान के आदान-प्रदान का सशक्त माध्यम बनता जा रहा है। यह सम्प्रेषण की एक व्यापक प्रक्रिया है, जो मानव समाज के वैश्विक समन्वय और समझ को सशक्त बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है।

मीडिया मानवाधिकारों के संरक्षक और प्रचारक के रूप में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। यह समाज को सशक्त बनाता है, नागरिकों को उनके अधिकारों से परिचित कराता है, और सरकारों व संस्थाओं को जवाबदेह बनाता है। लेकिन इसके साथ ही मीडिया को अपनी जिम्मेदारी समझकर निष्पक्ष, संवेदनशील और सत्यपरक रिपोर्टिंग का पालन करना

ISSN–2278-5655

AMIERJ Aarhat Multidisciplinary International Education Research Journal

Volume–XIV, Special Issues – III (a) Nov – Dec, 2025

OPEN ACCESS Original Research Article

अनिवार्य है। केवल तभी मानवाधिकारों की रक्षा संभव हो सकती है।

मीडिया और मानवाधिकार एक-दूसरे के पूरक हैं। समाज की प्रगति और न्याय सुनिश्चित करने के लिए मीडिया की स्वतंत्रता, सटीकता, और नैतिकता का विशेष महत्व है। मानवाधिकारों की रक्षा केवल सरकारों का कर्तव्य नहीं, बल्कि मीडिया और नागरिकों का भी साझा जिम्मा बन गया है।

संदर्भ ग्रंथ :

1. *कुंवर नारायण अनुवाद एक सृजन वाणी प्रकाशन 2002 पृष्ठ संख्या 53*
2. *सुरेश शर्मा – अनुवाद का भविष्य नीलकंठ प्रकाशन 2015 पृष्ठ संस्थ-75*
3. *प्रभात रंजन : अनुवाद की दिशा साहित्य अकादमी 2018 पृष्ठ संख्या 102*
4. *राहुल सांकृत्यायन – अनुवाद का भविष्य लोकभारती प्रकाशन पृष्ठ संख्या 52*
5. *मिश्रा राजेन्द्र अनुवाद के विविध आयाम मध्यभारत प्रकाशन 2018 पृष्ठ संख्या 15 से 66*
6. *निदा, यूजीन ए हैबर चाल्स आर अनुवाद का सिद्धान्त और व्यवहार पृष्ठ संख्या 45 से 78*
7. *विमल गुप्ता – भाषा, संस्कृति और अनुवाद जखमुर सूर्या पब्लिकेशन पृष्ठ संख्या*
8. *कहानी लेखन और अनुवाद – डॉ. अनिता शर्मा कहानी आर्य प्रकाशन पृष्ठ संख्या 61*
9. *कहानी की संप्रेषण कला लेखक डॉ.शर्मा हरिवंश प्रकाशन पृष्ठ संख्या 22*

Cite This Article:

नायक सु. (2025). *कहानी और अनुवाद – संप्रेषण के नए आयाम .* **In Aarhat Multidisciplinary International Education Research Journal**: Vol. XIV (Number VI, pp. 86–90).

ISSN–2278-5655

AMIERJ Aarhat Multidisciplinary International Education Research Journal

Volume–XIV, Special Issues – III (a) Nov – Dec, 2025

OPEN ACCESS Original Research Article

लोक साहित्य और अनुवाद : संस्कृति के संरक्षक का माध्यम

* रेखा ऋषिकेश निसाल,

* शोधार्थी, चांदमल ताराचंद बोरा कॉलेज , शिरूर , पुणे - २८

सारांश (Abstract):

लोक साहित्य किसी भी समाज की आत्मा होता है। यह उस समाज की परंपराओं, विश्वासों, मूल्यों और जीवनशैली का जीवंत दस्तावेज होता है। वहीं अनुवाद न केवल भाषाई सेतु है, बल्कि यह विभिन्न संस्कृतियों के बीच संवाद स्थापित करने का माध्यम भी है। जब लोक साहित्य का अनुवाद होता है, तो वह न केवल एक भाषा से दूसरी भाषा में स्थानांतरित होता है, बल्कि वह संस्कृति को भी एक स्थान से दूसरे स्थान तक पहुँचाता है। किसी भी देश या समाज की पहचान उसकी संस्कृति, परंपरा, भाषा और लोकसाहित्य से होती है। लोकसाहित्य वह मौखिक परंपरा है जो पीढ़ी दर पीढ़ी समाज की स्मृति, अनुभव और जीवन-मूल्यों को आगे बढ़ाती है। आज के वैश्वीकरण और तकनीकी युग में जहाँ स्थानीय भाषाएँ और परंपराएँ लुप्त हो रही हैं, वहाँ अनुवाद (Translation) एक ऐसा सशक्त माध्यम बनकर उभरा है जो न केवल भाषाओं को जोड़ता है, बल्कि संस्कृति और लोकपरंपराओं के संरक्षण में भी सेतु का कार्य करता है। अनुवाद केवल भाषा का परिवर्तन नहीं, बल्कि संस्कृति का पुनर्जीवन है।

शोध लेख का उद्देश्य : *लोक साहित्य की सांस्कृतिक भूमिका और अनुवाद की महत्ता को उजागर करता है, जिसमें दोनों को संस्कृति के संरक्षण और संवर्धन के प्रभावी माध्यम के रूप में प्रस्तुत किया गया है।*

बीज शब्द :- *लोक साहित्य, सांस्कृतिक पुनर्जागरण, सांस्कृतिक विरासत, संरक्षक, लोकसंस्कृति.*

Copyright © 2025 The Author(s): This is an open-access article distributed under the terms of the Creative Commons Attribution 4.0 International License (CC BY-NC 4.0) which permits unrestricted use, distribution, and reproduction in any medium for non-commercial use provided the original author and source are credited.

शोध पद्धति :

1) गुणात्मक शोध पद्धति

उद्देश्य: लोक साहित्य और अनुवाद की सांस्कृतिक भूमिका को समझने के लिए।

2) वर्णनात्मक पद्धति

उद्देश्य: लोक साहित्य के विभिन्न रूपों का विवरण।

अनुवाद की प्रक्रिया और उसके प्रभावों का विश्लेषण।

3) विश्लेषणात्मक पद्धति और ऐतिहासिक पद्धति

उद्देश्य: मूल लोक साहित्य और उसके अनुवाद की तुलना।

लोक साहित्य और अनुवाद के ऐतिहासिक विकास को ट्रैक करने के लिए।

ISSN–2278-5655

AMIERJ Aarhat Multidisciplinary International Education Research Journal

Volume–XIV, Special Issues – III (a) Nov – Dec, 2025

OPEN ACCESS Original Research Article

विषय प्रतिपादन :

लोक साहित्य और उसका अनुवाद केवल साहित्यिक गतिविधियाँ नहीं हैं, बल्कि वे संस्कृति के संरक्षक हैं। ये दोनों मिलकर न केवल अतीत को वर्तमान से जोड़ते हैं, बल्कि भविष्य के लिए सांस्कृतिक विरासत को सुरक्षित भी रखते हैं। लोक साहित्य और उसका अनुवाद न केवल साहित्यिक धरोहर को संरक्षित करता है, बल्कि सांस्कृतिक विविधता को भी समृद्ध करता है। । अनुवाद के माध्यम से हम न केवल शब्दों का आदान-प्रदान करते हैं, बल्कि भावनाओं, परंपराओं और जीवन दृष्टिकोणों का भी।

1) **लोक साहित्य की अवधारणा :-**

लोक साहित्य वह साहित्य जो लोकजीवन से उत्पन्न होकर लोकभाषा, लोकसंस्कृति और लोकविश्वासों का प्रतिनिधित्व करता है। यह किसी एक लेखक की नहीं, बल्कि समूह की चेतना और अनुभवों की अभिव्यक्ति है। लोक साहित्य वह साहित्य है जो जनमानस द्वारा मौखिक परंपरा के माध्यम से पीढ़ी दर पीढ़ी संप्रेषित होता है। इसमें लोक गीत, लोक कथाएँ, गाथाएँ, मुहावरे, लोकोक्तियाँ, नाट्य, नृत्य, संगीत आदि शामिल होते हैं। यह साहित्य समाज की सामूहिक चेतना, अनुभव और जीवन दृष्टि को प्रतिबिंबित करता है।

2) **अनुवाद की भूमिका: भाषा से परे संस्कृति का सेतु**

अनुवाद केवल भाषिक रूपांतरण नहीं है, बल्कि यह एक सांस्कृतिक अंतरण है। जब किसी क्षेत्र विशेष के लोक साहित्य का अनुवाद होता है, तो वह साहित्य अन्य भाषी समाजों तक पहुँचता है और वहाँ की संस्कृति से संवाद करता है।

अनुवाद के माध्यम से:

- सांस्कृतिक विविधता का आदान-प्रदान होता है।
- भाषाई सीमाएँ टूटती हैं और साहित्य वैश्विक होता है।
- लोक परंपराओं का दस्तावेजीकरण होता है, जिससे उनका संरक्षण संभव होता है।
- संवेदनशीलता और सांस्कृतिक समझ आवश्यक है।
- स्थानीय संदर्भों की व्याख्या करना अनिवार्य है।
- मूल भावनाओं और लयात्मकता को बनाए रखना चुनौतीपूर्ण पर आवश्यक है।

अनुवाद का सांस्कृतिक दृष्टिकोण :

अनुवाद केवल शब्दों का नहीं, बल्कि संस्कृति, समाज और विचारों का स्थानांतरण है। जब लोकसाहित्य का अनुवाद किया जाता है, तब उसका उद्देश्य केवल भावानुवाद नहीं होता, बल्कि उस लोकसंस्कृति की आत्मा को दूसरी भाषा और समाज तक पहुँचाना होता है।अनुवाद संस्कृति का दर्पण है; जो दूसरी सभ्यता को अपनी छवि में दिखाता है।

संस्कृति और अनुवाद का संबंध :

संस्कृति और अनुवाद का संबंध गहरा और बहुआयामी है — अनुवाद केवल भाषाई प्रक्रिया नहीं, बल्कि सांस्कृतिक सहिष्णुता और समझ को भी बढ़ावा देता है 1 इसलिए अनुवाद को केवल तकनीकी प्रक्रिया नहीं, बल्कि एक सांस्कृतिक कृति के रूप में देखा जाना चाहिए। अनुवाद प्रक्रिया संस्कृति के संरक्षण में सहायक होती है क्योंकि यह एक सीमित क्षेत्र से बाहर जाकर वैश्विक मंच पर उस संस्कृति को प्रस्तुत करती है।

ISSN–2278-5655

AMIERJ Aarhat Multidisciplinary International Education Research Journal

Volume–XIV, Special Issues – III (a) Nov – Dec, 2025

OPEN ACCESS Original Research Article

3) संस्कृति के संरक्षक के रूप में लोक साहित्य

लोक साहित्य संस्कृति का जीवंत दस्तावेज़ है, जो पीढ़ियों से हमारी परंपराओं, मूल्यों और सामूहिक चेतना को संरक्षित करता आया है। यह संस्कृति का संरक्षक बनकर समाज की आत्मा को जीवित रखता है। लोक साहित्य केवल मनोरंजन का साधन नहीं, बल्कि *संस्कृति का जीवंत अभिलेख* है। यह समाज की आत्मा को शब्द देता है, परंपराओं को जीवित रखता है और आने वाली पीढ़ियों को उनकी जड़ों से जोड़ता है।

- **संस्कृति की मौखिक परंपरा का संवाहक**

  लोक साहित्य मुख्यतः मौखिक परंपरा पर आधारित होता है — जैसे लोकगीत, लोककथाएँ, कहावतें, पहेलियाँ, और लोकनाट्य।

- **जनजीवन और लोकमानस का प्रतिबिंब**

  लोक साहित्य में सामान्य जनजीवन की भावनाएँ, विश्वास, रीति-रिवाज और संघर्ष बिना किसी कृत्रिमता के समाहित होते हैं।

- **धार्मिक और आध्यात्मिक परंपराओं का संरक्षण**

  लोक कथाओं और गीतों में देवी-देवताओं, त्योहारों, व्रतों और धार्मिक अनुष्ठानों का वर्णन होता है, जिससे धार्मिक संस्कृति संरक्षित रहती है।उदाहरण: *कृष्ण लीला,* रामकथा, देवी गीत आदि।

- **क्षेत्रीय विविधता और भाषाई धरोहर का संरक्षण**

  हर क्षेत्र का लोक साहित्य उसकी बोली, भाषा और सांस्कृतिक विशेषताओं को संरक्षित करता है।यह भाषाई विविधता को जीवित रखने में सहायक होता है, जैसे भोजपुरी, अवधी, मैथिली, राजस्थानी आदि में लोक साहित्य की समृद्ध परंपरा…

- **सांस्कृतिक पुनर्जागरण और पहचान का स्रोत**

  आधुनिक युग में जब वैश्वीकरण के कारण स्थानीय संस्कृति पर संकट है, लोक साहित्य सांस्कृतिक पुनर्जागरण का माध्यम बनता है। यह सांस्कृतिक पहचान और आत्मगौरव को बनाए रखने में सहायक है।

- **सामाजिक मूल्यों और नैतिक शिक्षा का माध्यम**

  लोककथाएँ और कहावतें नैतिक शिक्षा, सामाजिक एकता, सहिष्णुता और परिश्रम जैसे मूल्यों को सहज रूप में प्रस्तुत करती हैं। ये रचनाएँ सामाजिक चेतना और सामूहिक विवेक को जागृत करती हैं।

4) अनुवाद की चुनौतियाँ :-

लोकसाहित्य के अनुवाद में सबसे बड़ी चुनौती इसकी सांस्कृतिक गहराई और स्थानीयता को बनाए रखना है। अनुवादक को न केवल भाषा बल्कि लोकजीवन की आत्मा को भी समझना होता है।

- **सांस्कृतिक संदर्भों का अनुवाद:-** लोककथाओं, गीतों और कहावतों में स्थानीय रीति-रिवाज, प्रतीक और मिथक होते हैं जिन्हें दूसरी भाषा में उसी प्रभाव के साथ प्रस्तुत करना कठिन होता है।

- **भाषाई विविधता और बोली की बारीकियाँ**:- लोकसाहित्य अक्सर क्षेत्रीय बोलियों में होता है जिनमें

ISSN–2278-5655

AMIERJ Aarhat Multidisciplinary International Education Research Journal

Volume–XIV, Special Issues – III (a) Nov – Dec, 2025

OPEN ACCESS Original Research Article

विशिष्ट मुहावरे और लहजा होता है। इन्हें मानक भाषा में अनूदित करते समय भावनात्मक गहराई खो सकती है।

- **अनुवादक की सांस्कृतिक समझ :-** अनुवादक को उस समुदाय की संस्कृति, परंपराओं और जीवनशैली की गहरी समझ होनी चाहिए, वरना अनुवाद सतही हो जाता है।
- **लय और छंद की संरचना:-** लोकगीतों और कविताओं में छंद और लय का विशेष महत्व होता है। इनका अनुवाद करते समय मूल भाव को बनाए रखते हुए लयात्मकता को बनाए रखना चुनौतीपूर्ण होता है।
- **प्रतीकों और मिथकों की व्याख्या**:- लोकसाहित्य में प्रयुक्त प्रतीक और मिथक स्थानीय होते हैं। इनका अर्थ दूसरी संस्कृति में भिन्न हो सकता है, जिससे गलतफहमी की संभावना रहती है।
- **पाठक वर्ग की भिन्नता:-** अनुवाद किस आयु-वर्ग या सामाजिक पृष्ठभूमि के पाठकों के लिए किया जा रहा है, यह भी शैली और शब्द चयन को प्रभावित करता है।

5) लोकसाहित्य के अनुवाद में अनुवादक की भूमिका :-

लोकसाहित्य के अनुवाद में अनुवादक की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण होती है क्योंकि वह दो संस्कृतियों के बीच सेतु का कार्य करता है, जिससे लोकजीवन की विविधता और संवेदनशीलता व्यापक पाठक वर्ग तक पहुँचती है।

- **संस्कृति का संवाहक**: लोकसाहित्य में गहराई से रची-बसी सांस्कृतिक विशेषताओं को दूसरी भाषा में सजीव बनाए रखना अनुवादक की जिम्मेदारी होती है। वह स्थानीय मुहावरों, लोकप्रथाओं, और प्रतीकों को नए संदर्भ में अर्थपूर्ण बनाता है।
- **भावों की पुनर्रचना**: लोकगीत, कहावतें, लोककथाएँ आदि में भावनात्मक गहराई होती है। अनुवादक को मूल भावों को संरक्षित रखते हुए लक्ष्य भाषा में उनकी पुनर्रचना करनी होती है ताकि पाठक उसी संवेदना से जुड़ सके।
- **भाषिक लचीलापन**: लोकभाषा की शैली अकसर अनौपचारिक, लयात्मक और प्रतीकात्मक होती है। अनुवादक को लक्ष्य भाषा में समान प्रभाव उत्पन्न करने के लिए रचनात्मकता और भाषिक कौशल का प्रयोग करना पड़ता है।
- **सांस्कृतिक अंतर को पाटना**: कई बार मूल पाठ में ऐसे संदर्भ होते हैं जो लक्ष्य भाषा के पाठकों के लिए अपरिचित होते हैं। अनुवादक को इन संदर्भों को स्पष्ट करने या उनके समकक्ष सांस्कृतिक प्रतीकों का चयन करना होता है।
- **लोकजीवन का दस्तावेजीकरण**: अनुवादक लोकसाहित्य को संरक्षित करने और उसे वैश्विक मंच पर प्रस्तुत करने में सहायक होता है। यह सांस्कृतिक विविधता के संरक्षण की दिशा में एक महत्त्वपूर्ण कदम है।

ISSN–2278-5655

AMIERJ Aarhat Multidisciplinary International Education Research Journal

Volume–XIV, Special Issues – III (a) Nov – Dec, 2025

OPEN ACCESS Original Research Article

6) अनुवाद के माध्यम से लोकसाहित्य के संरक्षण के प्रमुख प्रयास:-

लोकसाहित्य के संरक्षण में अनुवाद एक सेतु की तरह कार्य करता है, जो सांस्कृतिक विरासत को नई भाषाओं और पीढ़ियों तक पहुँचाने में सहायक होता है। यह न केवल भाषायी विविधता को समृद्ध करता है, बल्कि लोककथाओं, गीतों और परंपराओं को विलुप्त होने से बचाने में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है।

- **शैक्षणिक संस्थानों की पहल**: कई विश्वविद्यालयों और शोध संस्थानों ने लोकसाहित्य के अनुवाद को अपने पाठ्यक्रम और शोध का हिस्सा बनाया है। उदाहरणस्वरूप, प्रो. निर्मला एस. मौर्य ने लोककथाओं और गीतों के संरक्षण में अनुवाद की भूमिका को रेखांकित किया है।
- **बहुभाषीय अनुवाद परियोजनाएँ**: भारतेंदु हरिश्चंद्र, प्रेमचंद, और रामचंद्र शुक्ल जैसे साहित्यकारों ने विभिन्न भाषाओं से हिंदी में अनुवाद कर लोकसाहित्य को व्यापक जनसमूह तक पहुँचाया है।
- **डिजिटल अभिलेखन और अनुवाद**: आधुनिक तकनीक के माध्यम से लोकगीतों, कहानियों और मिथकों को डिजिटल रूप में संरक्षित किया जा रहा है, साथ ही उनका अनुवाद भी किया जा रहा है ताकि वे वैश्विक स्तर पर उपलब्ध हों।
- **अनुवादकों की रचनात्मक भूमिका**: अनुवाद केवल शब्दों का स्थानांतरण नहीं है, बल्कि यह *संस्कृति, भावनाओं और संदर्भों* को भी संप्रेषित करता है। इसीलिए अनुवादक की भूमिका रचनाकार से भी अधिक महत्वपूर्ण मानी जाती है।
- **सरकारी और गैर-सरकारी सहयोग**: कई संस्थाएँ जैसे साहित्य अकादमी, IGNCA, और अन्य सांस्कृतिक संगठन लोकसाहित्य के अनुवाद और प्रकाशन को प्रोत्साहित कर रहे हैं।

निष्कर्ष (Conclusion):

लोकसाहित्य का अनुवाद न केवल साहित्यिक धरोहर को जीवित रखता है, बल्कि यह सामाजिक चेतना और सांस्कृतिक आत्मबोध को भी सुदृढ़ करता है। अनुवाद के माध्यम से लोकसाहित्य के संरक्षण के प्रमुख प्रयास में भाषायी विविधता का विस्तार,सांस्कृतिक संवाद को बढ़ावा , लोक परंपराओं का पुनरुत्थान, शोध और शिक्षा में नई सामग्री का समावेश रहा हैं। लोकसाहित्य के अनुवाद में अनुवादक केवल भाषांतर नहीं करता, बल्कि संस्कृति, भाव, और लोकजीवन की आत्मा को एक नई भाषा में पुनर्जीवित करता है। उसकी भूमिका एक संवेदनशील कलाकार की होती है जो दो संस्कृतियों को जोड़ता है, और लोकसाहित्य को वैश्विक मंच पर प्रस्तुत करने में अहम योगदान देता है।

संदर्भ सूची (References):

1. *प्रज्ञा सेनगुप्ता, "स्मृति और अनुवाद: लोक-ज्ञान के अंतरण-अभ्यासों पर एक चर्चा", Apni Maati*
2. *डॉ. शिखा रस्तोगी, लोक साहित्य एवं लोक संस्कृति, SBPD Publishing House, 2024*
3. *"लोक साहित्य/लोक संस्कृति", विकिपुस्तक, Wikibooks Hindi*

ISSN–2278-5655

AMIERJ Aarhat Multidisciplinary International Education Research Journal

Volume–XIV, Special Issues – III (a) Nov – Dec, 2025

OPEN ACCESS

Original Research Article

4. राहुल सांकृत्यायन, लोक साहित्य की भूमिका, राजकमल प्रकाशन
5. कृष्णदेव उपाध्याय, हिंदी लोक साहित्य का इतिहास, साहित्य भवन
6. नंददुलारे वाजपेयी — भारतीय लोकसाहित्य और संस्कृति, साहित्य भवन, इलाहाबाद।
7. . शर्मा, रमेशचंद्र — लोकसाहित्य और आधुनिकता, साहित्य अकादमी, दिल्ली।

Cite This Article:

निसाल रे. ऋ. (2025). *लोक साहित्य और अनुवाद : संस्कृति के संरक्षक का माध्यम.* **In Aarhat Multidisciplinary International Education Research Journal**: Vol. XIV (Number VI, pp. 91–96).

ISSN–2278-5655

AMIERJ Aarhat Multidisciplinary International Education Research Journal

Volume–XIV, Special Issues – III (a) Nov – Dec, 2025

OPEN ACCESS Original Research Article

कथा साहित्य और अनुवाद

* ऋजुता हेमंत चतुर,

* शोधार्थी, प्रो. रामकृष्ण महाविद्यालय, आकुर्डी, पुणे

सारांश :

साहित्य समाज का आइना है। व्यक्ति, समाज, राष्ट्र, सभी के संपूर्ण जीवन का विवरण ही साहित्य में प्रतिबिंबित होता है। हम किसी भी साहित्य से ही समाज की, देश की एवं विश्व की परिस्थितियों की कल्पना कर सकते हैं। यही नहीं भविष्य का अनुमान भी कर सकते हैं। हिंदी भाषा में अपने पैरों पर खड़ा करने की क्षमता उत्पन्न करने के लिए यह आवश्यक है कि संसार की समृद्ध भाषाओं का अनुवाद हिंदी में किया जाए। अनुवाद पाठकों के ज्ञान को भी समृद्ध करता है इससे एक और हमारा ज्ञान बढ़ता है और दूसरी और हमारी विचारधारा में नए मोड़ जन्म लेते हैं। इन्ही अनुवादों के द्वारा हम दूसरे देशों की सभ्यता, संस्कृति, विचार दृष्टि और साहित्य से परिचित होते है और फिर हम भी उसके धरातल पर पहुंचने की चेष्टा करते है। हिंदी कहानियों का दूसरी भाषाओं में अनुवाद या दूसरी भाषा के कथा साहित्य का हिंदी में अनुवाद यह दोनों ही साहित्य, समाज और व्यक्ति की दृष्टि से महत्वपूर्ण सिद्ध हुए हैं।

बीज-शब्द : *अनुवाद, उपनिषद, सांस्कृतिक, लोकतंत्र, संवाहक, चेतना ,मनोविज्ञान*

Copyright © 2025 The Author(s): This is an open-access article distributed under the terms of the Creative Commons Attribution 4.0 International License (CC BY-NC 4.0) which permits unrestricted use, distribution, and reproduction in any medium for non-commercial use provided the original author and source are credited.

एक भाषा में प्रकट किए गए विचारों को दूसरी भाषा में रूपांतरित करने को अनुवाद कहते हैं | अनुवाद की श्रेष्ठता अनुवादक की योग्यता पर निर्भर है | अनुदित रचना तभी निर्दोष समझी जाएगी जब मूक लेखों के भावों की पूर्ण रक्षा की जाए और अनुदित रचना में वही शक्ति हो जो मूल रचना में विद्यमान है | यह काम आसान नहीं है| वास्तव में अनुवादक का कार्य स्वतंत्र लेखक से कई अधिक कठिन है| मूल लेखक तो स्वतंत्र होकर सोचता - विचारता हुआ अपने विचारों को उन्मुक्त भाव से प्रकट करता चलता है लेकिन अनुवादक को इतनी स्वतंत्रता नहीं रहती | उसकी शक्ति और दृष्टि बंधी रहती है | मूल लेखक के विचारों से असहमत होते हुए भी अनुवादक को उसी के विचारों को प्रकट करना पड़ता है | अतः अनुवादक को तभी सफलता मिलती है जब वह दोनों भाषाओं के शब्दों ,मुहावरों, कहावतों और शक्तियों का ठीक-ठाक ज्ञान रखता है|

किसी भी भाषा में अनुवाद के अनेक प्रयोजन होते हैं | इसके बिना कोई भी भाषा विकसित नहीं होती | जिस तीव्रता के साथ अंग्रेजी में अनुदित ग्रंथो का प्रकाशन हर वर्ष होता है , उतना

ISSN–2278-5655

AMIERJ Aarhat Multidisciplinary International Education Research Journal

Volume–XIV, Special Issues – III (a) Nov – Dec, 2025

OPEN ACCESS Original Research Article

हमारी हिंदी में नहीं होता यद्यपि पिछले 100 वर्षों में दूसरी दूसरी भाषाओं से अंग्रेजी , बंगला , मराठी , गुजराती , उर्दू , फ़ारसी , इत्यादि मुख्य है , हिंदी में अनेक ग्रंथो के अनुवाद हुए तथापि अभी बहुत सारे काम पड़े है।

हिंदी भाषा में अपने पैरों पर खड़ा करने की क्षमता उत्पन्न करने के लिए यह आवश्यक है कि संसार की समृद्ध भाषाओं का अनुवाद हिंदी में किया जाए और अब तक हमारी दृष्टि अंग्रेजी तक ही सीमित रही लेकिन अब हम चीनी, जापानी, रुसी , जर्मन , फ्रेंच इत्यादि भाषाओं के कथा साहित्य से भी अनुवाद की सामग्रियाँ लेने लगे है। यह शुभ लक्षण है | कोई भी भाषा अनुवादों से परिपुष्ट और समृद्ध होती है ,शब्दों का भंडार बढ़ता है , नए प्रयोग सामने आते हैं और नई-नई शैलियों का जन्म होता है |

अनुवाद पाठकों के ज्ञान को भी समृद्ध करता है इससे एक और हमारा ज्ञान बढ़ता है और दूसरी और हमारी विचारधारा में नए मोड़ जन्म लेते हैं | इन्ही अनुवादों के द्वारा हम दूसरे देशों की सभ्यता , संस्कृति , विचार दृष्टि और साहित्य से परिचित होते है और फिर हम भी उसके धरातल पर पहुंचने की चेष्टा करते है। अनुवादों से देश में नव जागरण आया है , इसके कई प्रमाण है वेदों और उपनिषदों के अनुवादों से जर्मनी , बाल्टेयर, और फ्रांसिसी साहित्यकारों के ग्रंथानुवाद से रूस , इंग्लैंड इत्यादि देशों में नव चेतना की लहर आयी और फिर हमारा देश पश्चिमी साहित्य के संपर्क में आकर जागृत हुआ। इससे हमारा कल्याण ही हुआ है।

प्रत्येक भाषा की एक स्वतंत्र प्रकृति होती है, इसमें भाव व्यंजन की कुछ विशिष्ठ प्रणालियाँ होती है | इसके अतिरिक्त भिन्न-भिन्न विषयों के ग्रंथो में भिन्न -भिन्न शब्द तथा भाव होते है। जब हम दूसरी भाषाओं के अवतरण या ग्रंथो का अनुवाद करते है तब प्रायः हमें बहुत से नए शब्द गठने पड़ते है और बहुत से [पद प्रकार भी लेने पड़ते है। इस प्रकार के अनुवादों में वही अनुवाद श्रेष्ठ समझे जाते हैं | गांधीजी ने कहा था " हिंदी ही वह कड़ी है जो राष्ट्र को जोड़ सकती है " उन्होंने जिस समय हिंदी को राष्ट्रभाषा बनाने का आग्रह किया वह केवल भाषायी आग्रह नहीं था बल्कि एक सांस्कृतिक आंदोलन था - भाषीयता को एक सूत्र में पिरोने का प्रयास। गांधी जी का मानना था कि 'जब तक जन जन की भाषा में संवाद नहीं होगा तब तक लोकतंत्र की जड़े गहरी नहीं होगी |' आज जब डिजिटल युग में हिंदी नए शिखर छू रही है यह वाक्य और प्रासंगिक हो उठता है | पॉडकास्ट और सोशल मीडिया पर गूंजती हिंदी गाँधीजी के उस स्वप्न को साकार कर रही है की हिंदी भाषा जन -जन की भाषा बने। हिंदी साहित्य को लोकतांत्रिक चेतना का संवाहक बनना होगा - वह दीपक बनना होगा जो अंधेरे को मिटाए , संवाद को जीवित रखें और विचारों में सहिष्णुता जगाए |

हिंदी कहानियों का दूसरी भाषाओं में अनुवाद या दूसरी भाषा के कथा साहित्य का हिंदी में अनुवाद यह दोनों ही साहित्य , समाज और व्यक्ति की दृष्टि से महत्वपूर्ण सिद्ध हुए हैं |

साहित्य के अथाह सागर में बहुत से कथारूपी अनमोल मोती है 'नईमा गनी ' एक अफगानी लेखिका है वह एक शिक्षिका , लेखिका और कार्यकर्ता है वर्ष १९२२ में उन्हें 'हेलेन वोल्फ ग्रांट ' से सन्मानित किया गया। उनकी एक कहानी है 'लाल - जूते ' जिसका हिंदी अनुवाद लालकृष्ण काबरा 'एतेश ' ने किया इस कहानी में एक अफगानी परिवार की ५ बेटीयों और माता - पिता के बीच के सम्बन्धो को बताया गया है। इस

ISSN–2278-5655

AMIERJ Aarhat Multidisciplinary International Education Research Journal

Volume–XIV, Special Issues – III (a) Nov – Dec, 2025

OPEN ACCESS Original Research Article

कहानी को बाल - मनोविज्ञान की श्रेणी में रखा जाना उचित है। लेखिका लगभग नौ वर्ष की थी तब उनकी अम्मी ने अब्बू से कहते सुना " इस लड़की के पास सर्दियों के लिए कोई जूते नहीं है कल मैंने देखा की उसके जूते फटे हुए है। "तब लेखिका के ध्यान में अत है की सचमुच ही जूते फटे है साथ ही सख्त भी है और चुभते भी बहुत है। घर में एक ही व्यक्ति कमाने वाला होने के कारण पुरानी चीजे फेकने लायक जब तक नहीं हो जाती तब तक कोई न कोई बहन उसका इस्तेमाल करने का नियम ही था , जब लेखिका नए जूते खरीदने बड़े उत्साह से जाती तब एक पुरानी दुकान में घिसे लेकिन सुन्दर लाल रंग के जूतों ने अपनी और आकर्षित किया जब पिता ने मना किया की वे छोटे है और परेशानी होगी लेकिन लेखिका के मन पर लाल जूतों ने ऐसा जादू किया की वे उसे लेकर ही मानी। लेकिन जल्दी ही उन्हें पैरों में परेशानी होने लगी , पैरों में सूजन छाले और हैरानी , सभी लोक जूतों की तारीफ करते लेकिन उन्हें तकलीफ क्या है ? क्या पता ? लेकिन इतना दुख सहने के बाद भी लेखिका जूतों को इतना पसंद करती थी वे कहती है जूते मेरे लिए खास है।

स्कूल के जश्न वाले दिन लेखिका का नाम गायन समूह में था , खास तैयारी करवाई गयी , विशेष रूप से तैयार होकर जब स्टेज पर सब जाने लगे तभी एक लड़की ने कहा सभी के जूते काले है और तुम्हारे लाल तुम जूते बदल दो , लेखिका को भी लगा शायद मुझे समूह से निकाल दे लेकिन तभी शिक्षिका ने कंधे पर हाथ रख कर कहा 'यही रुको ' और वे अपने जूतों के कारण गायन समूह की लीडर बन गयी , उन्हें गर्व का अनुभव हुआ और वे कहती है 'मेरे लाल जूते चमक रहे थे। ' इस शानदार अंत के साथ हो कहानी हमारे दिलों - दिमाग पर छा जाती है।

समकालीन भारतीय साहित्य में जिन प्रादेशिक भाषाओ की कथाओ को विशेष रूप से सराहा गया है इनमे राजस्थानी कहानी 'पीठ ' का उल्लेख करना योग्य ही होगा जिसके लेखक चंद्रप्रकाश देवल जो साहित्य अकादमी पुरस्कार , मीरा पुरस्कार , सूर्यमल्ल मिश्रण पुरस्कार सहित अनेक पुरस्कार से पुरस्कृत है , उनकी इस कहानी का अनुवाद मालचंद तिवाड़ी ने किया है जो हिंदी और राजस्थानी के प्रख्यात लेखक है। इस कहानी में रणजीत जो की राजस्थान के उस इलाके का है जहा पानी की एक एक बून्द के लिए मिलों तलाश करना पड़ता है , उसकी पत्नी सुगंध कँवर भी परंपरागत रूढ़िवादी परिवार में घुटन के साथ चुप चाप नियमों का पालन करते हुए शादी की गोल्डन जुबली तक पहुंच गयी और अचानक उसी समय करना आ गया धूमकेतु की तरह आया और लॉक डाउन हो गया। दोनों को इतना समय एक दूसरे के साथ शादी के बाद पहली बार मिला है। इस एकांत में बरसो पहले की बातें याद करके बतियाते है , लॉज डाउन भी बरसो चलनेवाला इस तरह अचानक एक दिन सुगंध पति से पूछ बैठती है - ' पूछना तो नहीं चाहती पर अब फुरसत में बैठे है और अकेले हम ही हम है , तो मन मचल गया। बताना जरा भर जवानी में क्या किसी ने आपके मन को मोहा था ? इस प्रश्न से मानो रणजीत के जीवन में भूचाल आ जाता है विश्वास से परिपूर्ण जीवन में अविश्वास के सर्प का जहर ! लेकिन जल्दीही गलतफहमी दूर हो जाती है और जो कहानी का शीर्षक है 'पीठ' उसी मानवीय अंग पर जाकर गलतफहमी ख़त्म होती है और साथ ही कहानी भी इस संवाद के साथ - ' बस , रुक जाईये ! सुनिए , कल दिन में भी आप की तरह स्नान करना चाहता हूँ। ..... और

ISSN–2278-5655

AMIERJ Aarhat Multidisciplinary International Education Research Journal

Volume–XIV, Special Issues – III (a) Nov – Dec, 2025

OPEN ACCESS Original Research Article

चाहता हूँ की आप मेरी पीठ अपने हाथों से मल दे.....|

इसी अनुवाद कथाओं में उड़िया लेखिका यशोधरा मिश्र की कथा 'कमल -वन ' एक बेहतरीन कथा है उन्होंने इस उड़िया कथा का हिंदी में स्वयं ही अनुवाद किया है ये साहित्य अकादमी पुरस्कार , ओडिशा साहित्य अकादमी पुरस्कार , कथा पुरस्कार और अनेक पुरस्कारों से सन्मानित है।

इस कथा में लेखिका का तबादला भोपाल हो जाता है साडी सुखसुविधासे युक्त घर और तालाबों से घिरी भोपाल नगरी लेखिका प्राकृतिक सौंदर्य से मुग्ध है और आराम से एक दोपहर में अपने लॉन में ऊंघते हुए एक आवाज ने उनका ध्यान खींचा ' सलाम मेम साब जी ! शाल लेंगी ? असली कश्मीरी ! ' इस पहले संवाद से ही कश्मीर से आये फक्क गोरे तोखी नाक नक्श वाले दुबले पतले दो लड़के अनवर और शफ़ीक़ ने लेखिका के मन में अपनापन भर दिया उन्होंने ढेर सरे कपडे ख़रीदे और कश्मीर से फिर सीजन में कमल के फूल पत्ते सहित अपने बहन के हाथ की कढ़ी हुई शॉल , सदी लेन का वायदा कर वह अपने मुल्क लौट गया। बीस वर्ष बीत गए पर वह फिर कभी नहीं आया लेखिका का कश्मीर जाना हुआ अपने बेटा - बहु , पोता - पोती के संग शायद मुलाकात हो जाये प्रौढ़ अनवर के साथ , हर तरफ, हर रास्ते चौराहे पर , दुकान बाजार हर जगह ढूंढती रही लेकिन ..... |

अंतिम दिन आ पंहुचा लेखिका ने अनवर का बनाया हुआ कारीगरी का फिरन पहन रखा था शायद उसके परिवार का कोई सदस्य उस कढ़ाई को पहचान लेगा और अनवर से मुलाकात हो जाएगी तभी नाव खेने वाली महिला कहती है गले के पास -जो अपने बटन लगाया वह इस पोशाक का नहीं और बाद में वह बताती है की अंदर जो कच्ची सिलाई है उसे खोलने पर अतिरिक्त बटन लेखिका को मिल जाता है और साथ ही अनवर को जोड़नेवाला एक धागा भी।

इन अनुवादित कहानियों से हमारा हिंदी साहित्य समृद्ध हुआ है और इसी प्रकार अनुवाद होने से ही साहित्य का उद्देश्य जो की विश्व कल्याण का है वह परिपूर्ण होता है इसमें कोई संदेह नहीं।

सन्दर्भ सूची :

1. *साहित्यिक और सांस्कृतिक पत्रिका ' आज कल ' अक्टूबर २०२५*
2. *'हिंदी कथा साहित्य – संस्कृति और संस्कार' लेखक डॉ अशोक कुमार*
3. *'आधुनिक हिंदी कथा-साहित्य और मनोविज्ञान ' लेखक देवराज उपाध्याय*

Cite This Article:

श्रीमती चतुर ऋ. हे. (2025). कथा साहित्य और अनुवाद. **In Aarhat Multidisciplinary International Education Research Journal**: Vol. XIV (Number VI, pp. 97–100).

ISSN–2278-5655

AMIERJ Aarhat Multidisciplinary International Education Research Journal

Volume–XIV, Special Issues – III (a) Nov – Dec, 2025

OPEN ACCESS Original Research Article

कविता और अनुवाद

* अलका गोसावी एवं ** डॉ. संजय दवंगे,

* शोधार्थी ** शोध निर्देशक , के. जे. सोमैया, महाविद्यालय, कोपरगांव.

कविता साहित्य की सबसे संवेदनशील और सृजनात्मक विधा है। इसमें भाव, कल्पना, लय, भाषा और अनुभूति का गहरा संगम है। अनुवाद के माध्यम से एक भाषा की कविता दूसरी भाषा में पहुंचती है। जिसमें सांस्कृतिक संवाद और साहित्यिक आदान-प्रदान संभव होता है। परंतु कविता अनुवाद सरल कार्य नहीं है, क्योंकि कविता में शब्दों से अधिक 'भावों' का महत्व होता है। अनुवादक को न केवल अर्थ, बल्कि मूल रचना की 'कवित्व चेतना' को भी नए शब्दों में पुनःसृजित करना पड़ता है।

कविता का अनुवाद गदय से अधिक कठिन माना जाता है, क्योंकि कविता में ध्वनि, लय प्रतीक और छवि का ताना-बाना होता है।

डॉ. लक्ष्मी नारायण लाल के अनुसार - "कविता का अनुवाद करते समय केवल शब्द नहीं, संवेदना और लय का भी अनुवाद करना पड़ता है"[1]

अनुवादक को यह ध्यान रखना होना है कि, मूल कविता का भावार्थ और सांस्कृतिक पृष्ठभूमि बरकरार रहे। उदाहरण के लिए, अंग्रेजी कवि विलियम वर्ड्सवर्थ की कविता 'Daffodils' का हिंदी अनुवाद यदि केवल शब्दार्थ में किया जाए तो उसकी सौंदर्यात्मकता खो सकती है। कविता का अनुवाद मूल रचना का 'प्रतिरुप' नहीं बल्कि "पुनर्सृजन" होता है।

डॉ. नामवर सिंह लिखते है - "अनुवाद मूल रचना का प्रतिबिंब नहीं, उसका पुनर्जन्म है।"[2]

Copyright © 2025 The Author(s): This is an open-access article distributed under the terms of the Creative Commons Attribution 4.0 International License (CC BY-NC 4.0) which permits unrestricted use, distribution, and reproduction in any medium for non-commercial use provided the original author and source are credited.

हिंदी साहित्य में कविता :

अनुवाद की समृद्ध परंपरा रही है। भारतेंदू युग से लेकर आधुनिक काल तक विदेशी कविताओ अनुवाद हुआ। मैथिलीशरण गुप्त ने संस्कृत और अंग्रेजी काव्य का हिंदी में रूपांतर किया। रविंद्रनाथ टैगोर की गीतांजलि (1912) का अंग्रेजी अनुवाद स्वयं कवि ने किया, जिससे उन्हें नोबेल पुरस्कार प्राप्त हुआ। कविता के विषय में हिंदी के आलोचक आचार्य रामचंद्र शुक्ल अपनी निबंध में लिखते है- "जिस प्रकार आत्मा की मुक्तावस्या ज्ञानदशा कहलाती है, उसी प्रकार हृदय की मुक्तावस्था रसदशा कहलाती है। हृदय की इसी मुक्ति की साधना के लिए मनुष्य की वाणी जो शब्द-विधान करती आई है, उसे कविता कहते है।"[3]

ISSN–2278-5655

AMIERJ Aarhat Multidisciplinary International Education Research Journal

Volume–XIV, Special Issues – III (a) Nov – Dec, 2025

OPEN ACCESS Original Research Article

कविता अनुवाद की सबसे बड़ी चुनौती है। अनुवाद की पाठकीय अनुरुपता। कविता को अनुवाद में पाठकीय दायरा बदल जाता है। मूल कविता के पाठक या श्रोता कविता के साथ-साथ कवि के व्यक्तित्व और पृष्ठभूमि से भी परिचित होता है।

लेकिन अनुवाद की भाषा का पाठक इन सभी बातों से वंचित होता है। अनुवादक काम इतना आसान नहीं होता है। कविता के अनुवाद में छंद की उपादेयता एक बड़ा प्रश्न चिह्न रखती है। छंद में अनुवाद होना चाहिए या नहीं। यदि होना चाहिए तो किस तरह के छंद में होना चहिए। आदि अनेक बातें हमारे सामने समस्या के रूप में उपस्थित होती है। जब हम मलयालम से हिंदी में अनुवाद की बात करते है तो समस्या कुछ अलग तरह की है। मलयालम के छंद के का, काकली अदि वार्णिक छंद है, किंतु हिंदी में दोहा, सोरठा, चौपाई मात्रिक है। पहली चुनौती तो यह कि हमें कौन-सा छंद लेना चाहिए।

उदा. लिप्यंतरण- पूजापुष्पम्

"सत्यसौन्दर्यमे। निन प्रकाशतिनाळ्

नित्यम् विडरुमारावूकेन जीवितम्।"[4]

इस पंक्तियों का हिंदी अनुवाद -

पूजा का फूल,

ओ सत्य सौन्दर्य ! तेरे प्रकाश से,

सदा विकसित मेरा जीवन रहे!

किसी काव्य-रचना का अनुवाद 'काव्यानुवाद होता है। यह अनुवाद गदय, पद्य या मुक्त छंद किसी में भी हो सकता है।

यो प्रायः काव्य का अनुवाद पद्य या मुक्त छंद में ही किया जाता है। यह प्रश्न विवाद का रहा है कि अनुवाद हो भी सकता है, या नहीं ?

भावानुवाद में अनुवादक मूल कविता की आत्मा को अपनो शब्दों में डालता है।

उदाहरण के लिए-

मीरा की पंक्ति - "मैं तो सावरे के रंग में रंगी।"[5]

अंग्रेजी में भावानुवाद - "I am dyed in the color of My beloved."

यहाँ रंग में रंगी का भावानुवाद, प्रेम और समर्पण के प्रतीक के रूप में हुआ है, न कि शाब्दिक अर्थ में।

कविता केवल भाषा का नहीं, संस्कृति का भी प्रतिनिधित्व करती है। इसलिए अनुवादक को सांस्कृतिक संकेतो का गहन ज्ञान होना आवश्यक है।

उदा- कबीर की पंक्तियाँ- "पोथी पढ़ी पढ़ी जग मुआ"[6] में जो लोकजीवन की व्यंग्य दृष्टि है, वह पश्चिमी अनुवाद में खो सकती है। जब तक अनुवादक उस सांस्कृतिक परिवेश को नहीं समझे।

"कविता के अनुवाद में भावानुवाद की अवधारणा सबसे उपयुक्त मानी जाती है।"[7]

रामचंद्र तिवारी लिखते है- "कविता का अनुवाद तभी सफल होता है जब वह मूल के भाव और लय दोनों को संप्रेषित करें।"[8]

उदा. के रूप में रॉबर्ट फ्रॉस्ट की कविता stopping by woods on a showy evening - "The Woods are lovely dark and deep, but I have Promises to keep" [9]

हिंदी अनुवाद- हरिवंश राय बच्चन

"वन है सुंदर, गहरे, मौन,

पर अभी निभाने है कुछ प्रण।

ISSN–2278-5655

AMIERJ Aarhat Multidisciplinary International Education Research Journal

Volume–XIV, Special Issues – III (a) Nov – Dec, 2025

OPEN ACCESS Original Research Article

यहाँ छंद, भाव और अर्थ तीनों संतुलित है। कविता और अनुवाद दोनों रचनात्मक कर्म है। कविता भाषा की आत्मा है, और अनुवाद उस आत्मा का नया अवतार। कविता का अनुवाद अत्यंत जटिल है| "उम्दा अनुवाद में दो संस्कृतियों एक दूसरे में खो जाती है, जबकि घटिया अनुवाद में दो संस्कृतियों टकराकर चकनाचूर हो जाती है।[10]

भारतीय भाषाओं के साहित्यिक संबंधों में मराठी और हिंदी विशेष महत्व रखते हैं। इसलिए मराठी कविता का अनुवाद केवल भाषा ही परिवर्तन नहीं, बल्कि सांस्कृतिक आदान-प्रदान और भाव – समन्वय की प्रक्रिया है। आधुनिक युग में 'नामदेव ढसाळ' 'ग्रेस' 'कुसुमाग्रज' 'इंदिरा संत' और शांता शेळके जैसे कवियों की रचनाएं हिंदी अनुवादों के माध्यम से व्यापक रूप से पाठक वर्ग तक पहुंची है। मराठी कवि 'नामदेव ढसाळ' की 'गोलपीठा' कविता संग्रह की कुछ चुनी हुई कविताओं का हिंदी अनुवाद आधुनिक कवि 'ओमप्रकाश वाल्मीकि' ने किया है।[11]

यह पुस्तक मराठी दलित आंदोलन की प्रमुख आवाज हिंदी पाठकों तक पहुंचती है। तो 'आधुनिक प्रतीकवादी कविता' की चुनिंदा कविताओं का अनुवाद कवि 'अरुण देव' हिंदी भाषा में वाणी प्रकाशन से किया है।[12] 'कुसुमाग्रज' की कविता 'विशाखा' का अनुवाद हिंदी भाषा में शंकर पाटील ने महाराष्ट्र साहित्य संस्कृति मंडल से किया है। उनकी कविताएं मानवीय संवेदना और सौंदर्य के गहन रूपक से प्रस्तुत करती है।[13] मराठी कवि शांता शेळके द्वारा लिखित मराठी कविता संग्रह 'शब्दांच्या पलीकडे' इसका अनुवाद हिंदी भाषा में अनुवादक डॉ सुरेंद्र कुमार ने शब्दों के उस पार नाम सें किया हैं।[14]

सफल अनुवाद वही है जो मूल, कविता के भाव, लय, सांस्कृतिक संदर्भ और सौंदर्य को नई भाषा में पुनसृजित कर दे। भाषाई सीमा को पार कर भाव और अनुभव को सांझा करने का साधन है। अनुवादक एक सह सृजनकर्ता की भूमिका निभाता है। मूल कविता और अनुवादक दोनों ही पाठक को संवेदनाएं और अर्थ प्रदान करता है।

संदर्भ :

1. *अनुवाद सिद्धांत और स्वरूप - भारतीय ज्ञानपीठ 1995 - पृष्ठ- 72*
2. *अनुवाद की समस्याएँ - नामवर सिंह, राजकमल प्रकाशन - 2002 पृष्ठ – 43*
3. *गीतांजलि - रविन्द्रनाथ टैगोर (अनुवादिन संस्करण) मैकमिलन पब्लिशर्स)*
4. *काव्यानुवाद की समस्याएँ, दिल्ली, शब्दकार प्रकाशन*
5. *कविता और अनुवाद की संवेदनाएँ- रामचंद्र तिवारी, भारतीय विद्यापीठ - वाराणसी - 2002 पृष्ठ - 34-39*
6. *Translation Studies - सुसान बैंसनेट 2002 पृष्ठ – 45*
7. *कविता और अनुवाद की संवेदनाएँ- रामचंद्र तिवारी, भारतीय विद्यापीठ - वाराणसी - 2002 पृष्ठ - 34-39*
8. *The Task of the Translator - Benjamin Walter - New York - Schocken books-1923 पृष्ठ क्रमांक -23*
9. *हरिवंश राय बच्चन – रुबायत ए खयाम का हिंदी रूपांतरण राजपाल एंड संस नई दिल्ली -1959*

10. कविता के अनुवाद की समस्या- श्रीकांत वर्मा – प्रकाशन प्रकाशन। (साप्ताहिक पत्रिका)1968
11. ढसाळ नामदेव – गोलपीठा – चुनी हुई कविताएं। (अनुवादक- ओम प्रकाश वाल्मीकि -2004)
12. ग्रेस की चुनिंदा कविता –(अनुवादक- अरुण देव) नई दिल्ली वाणी प्रकाशन।
13. कुसुमाग्रज – विशाखा कविता संग्रह अनुवाद-(अनुवादक शंकर पाटील)- महाराष्ट्र साहित्य संस्कृत मंडल।
14. शब्दांच्या पलीकडे (शांता शेळके) हिंदी अनुवाद- शब्दों के उस पार (अनुवादक डॉक्टर सुरेंद्र कुमार)- केंद्रीय मराठी साहित्य अकादमी।

Cite This Article:

गोसावी अ. एवं डॉ. दवंगे सं. (2025). *कविता और अनुवाद.* **In Aarhat Multidisciplinary International Education Research Journal**: Vol. XIV (Number VI, pp. 101–104).

ISSN–2278-5655

AMIERJ Aarhat Multidisciplinary International Education Research Journal

Volume–XIV, Special Issues – III (a) Nov – Dec, 2025

OPEN ACCESS Original Research Article

अनुवाद की समस्याएँ

** प्रा. त्रिवेणी विश्वजीत जाधव,*

** सहाय्यक प्राध्यापक , कला, वाणिज्य, व विज्ञान महाविदयालय आकुर्डी, पुणे ४४.*

शोध संक्षेप :

अनुवाद एक जटिल भाषिक प्रक्रिया है, जिसमें एक भाषा के विचारों, भावनाओं और सांस्कृतिक अर्थों को दूसरी भाषा में सटीक रूप से व्यक्त करना होता है। अनुवाद केवल शब्दों का रूपांतरण नहीं है, बल्कि यह दो संस्कृतियों के बीच सेतु का कार्य करता है। अनुवादक को न केवल भाषाई ज्ञान की आवश्यकता होती है, बल्कि संदर्भ, सांस्कृतिक प्रतीकों, कहावतों और मुहावरों की गहरी समझ भी जरूरी होती है।

अनुवाद की प्रमुख समस्याओं में शब्दार्थ का भिन्नता, सांस्कृतिक अंतर, मुहावरेदार अभिव्यक्तियाँ, शैलीगत अंतर, और तकनीकी शब्दावली का उचित समायोजन शामिल हैं। इसके अतिरिक्त, कभी-कभी मूल लेखक की भावनाएँ या स्वर (tone) अनुवाद में खो जाते हैं, जिससे अनुवाद की प्रामाणिकता प्रभावित होती है।

मुख्य शब्द: *अनुवाद, भाषा, संस्कृति, शब्दार्थ, संप्रेषण, समस्या*

Copyright © 2025 The Author(s): This is an open-access article distributed under the terms of the Creative Commons Attribution 4.0 International License (CC BY-NC 4.0) which permits unrestricted use, distribution, and reproduction in any medium for non-commercial use provided the original author and source are credited.

प्रस्तावना :

अनुवाद देखने मे जितना सरल प्रतीत होता है वास्तव मे यह उतना ही जटिल होता है। जब हम व्यावहारिक अनुवाद की तरफ़ उन्मुख होते हैं,तो हमें इसकी जटिलता पता चलती है जिसमें विभिन्न प्रकार की समस्याये शामिल होती है | अनुवाद किसी मूल भाषा के पाठ को दूसरी भाषा में उसके अर्थ, संस्कृति और संदर्भ को बनाए रखते हुए बदलने की प्रक्रिया है। यह केवल शब्दों को बदलने से कहीं अधिक है; इसमें एक नई भाषा में विचारों को इस तरह से व्यक्त करना शामिल है कि वे स्पष्ट और स्वाभाविक लगें, ताकि मूल संदेश का संचार हो सके।

- **लक्ष्य**:
  अनुवाद का मुख्य उद्देश्य विभिन्न भाषाओं और संस्कृतियों के बीच संचार को सुगम बनाना है।
- **प्रक्रिया**:
  भोलानाथ तिवारी के अनुसार,"किसी भाषा में प्राप्त सामग्री को दूसरी भाषा में भाषांतरण करना अनुवाद है।"

ISSN–2278-5655

AMIERJ Aarhat Multidisciplinary International Education Research Journal

Volume–XIV, Special Issues – III (a) Nov – Dec, 2025

OPEN ACCESS Original Research Article

न्यूयार्क के अनुसार –

"अनुवादक शिल्प है जिसमें भाषा में लिखित संदेश के स्थान पर दूसरी भाषा में उसी संदेश को प्रस्तुत करने का प्रयत्न किया जाता है।

एक भाषा में व्यक्त विचारो का यथासंभव समान और सहज अभिव्यक्ति द्वारा दूसरी भाषा में व्यक्त करना अनुवाद कहलाता है |

अनुवाद के कई प्रकार हैं, जिनमें सामग्री के आधार पर **साहित्यिक, तकनीकी, कानूनी और चिकित्सा** अनुवाद शामिल हैं। प्रक्रिया के आधार पर **शब्दानुवाद, भावानुवाद और मशीनी अनुवाद** जैसे प्रकार हैं।

अनुवाद का महत्व ज्ञान, संस्कृति और वाणिज्य के आदान-प्रदान के लिए महत्वपूर्ण है। यह विचारों के बीच पुल का काम करता है, विभिन्न संस्कृतियों को जोड़ता है, साहित्य को व्यापक दर्शकों तक पहुँचाता है, और वैश्विक अर्थव्यवस्था को बढ़ावा देता है। इसके अलावा, अनुवाद राष्ट्रीय एकता को भी मजबूत करता है।

प्रक्रिया के आधार पर अनुवाद के प्रकार :

शब्द अनुवाद प्रमुख समस्याएँ:

शब्दानुवाद की समस्याएं **भाषा की संरचना और व्याकरण में अंतर, मुहावरों और सांस्कृतिक बारीकियों को न समझ पाना, और शाब्दिक अनुवाद की सीमाएँ** हैं, जिससे अनुवादित पाठ अटपटा या अर्थहीन लग सकता है।

- **भाषा संरचना में अंतर:** अलग-अलग भाषाओं के व्याकरण के नियम अलग होते हैं। एक भाषा में कर्ता, क्रिया और कर्म का क्रम अलग हो सकता है, जो दूसरे में भिन्न होता है। इस कारण, अनुवादकों को वाक्यों को पुनर्व्यवस्थित करना पड़ता है।
- **मुहावरे और बोलचाल की भाषा:** एक भाषा के मुहावरे, जैसे **'चाय उगलना' (गपशप करना),** का शाब्दिक अनुवाद करने पर उनका अर्थ खत्म हो जाता है। ये भाषा और संस्कृति के साथ बदलती रहती हैं।
- **शाब्दिक अनुवाद:** शब्दों का सीधा अनुवाद करने से अनुवादित पाठ अटपटा और अस्वाभाविक लग सकता है। यह मूल पाठ की बारीकियों और अर्थ को पकड़ नहीं पाता है, जिससे भ्रम पैदा हो सकता है।
- **तकनीकी और विशिष्ट शब्दावली:** तकनीकी या विशिष्ट क्षेत्रों में उपयोग होने वाले शब्दों का सही अनुवाद करना अक्सर मुश्किल होता है, क्योंकि उनके अर्थ संदर्भ के अनुसार बदल सकते हैं।

मशीनी अनुवाद :

एक कंप्यूटर सॉफ़्टवेयर-आधारित प्रक्रिया है ,जो बिना किसी मानवीय हस्तक्षेप के एक भाषा से दूसरी भाषा में स्वचालित रूप से पाठ का अनुवाद करती है। यह प्राकृतिक भाषा प्रसंस्करण (NLP) और कृत्रिम बुद्धिमत्ता (AI) का उपयोग करके काम करता है, जहाँ यह टेक्स्ट का विश्लेषण करके और उसे दूसरी भाषा में बदलकर मूल पाठ का अर्थ व्यक्त करता है।

भाषाई बारीकियाँ :

भाषाओं की जटिलता और विविधता के कारण, मशीनी अनुवाद प्रणालियाँ अक्सर उनकी सूक्ष्मताओं को समझने में कठिनाई महसूस करती हैं।

ISSN–2278-5655

AMIERJ Aarhat Multidisciplinary International Education Research Journal

Volume–XIV, Special Issues – III (a) Nov – Dec, 2025

OPEN ACCESS Original Research Article

मुहावरे और रूपकमशीनी अनुवाद के लिए आलंकारिक भाषा सबसे बड़ी समस्याओं में से एक है। इसके अलावा, मुहावरों और रूपकों का हमेशा किसी अन्य भाषा में कोई सीधा पर्याय नहीं होता, जिससे वैकल्पिक तरीकों या विवरणों का उपयोग करना आवश्यक हो जाता है।

लिंग :

एक अंतिम भाषाई बारीक़ी जिससे मशीनी अनुवाद में अक्सर समस्याएँ आती हैं, वह है लिंग। कुछ भाषाएँ संज्ञाओं को लिंग प्रदान करती हैं, जिससे संबंधित विशेषण, क्रिया और सर्वनाम प्रभावित होते हैं। मशीनी अनुवाद इन लिंगों का मिलान नहीं कर पाता, जिससे गलत या निरर्थक परिणाम प्राप्त होते हैं, खासकर जटिल लिंग नियमों वाली भाषाओं के लिए।

सांस्कृतिक विशिष्टताएँ :

भाषा और संस्कृति आपस में गहराई से जुड़े हुए हैं, और ऐसे अनुवाद तैयार करने के लिए सांस्कृतिक संदर्भ को समझना ज़रूरी है जो मूल भाषियों के साथ सहजता से जुड़ सकें। यह एक और क्षेत्र है जहाँ मशीनी अनुवाद में अक्सर समस्याएँ आती हैं।

भावना और स्वर :

मशीनी अनुवाद में एक और समस्या अंतर्निहित भावना या लहजे की व्याख्या करने में आती है। फिर भी, वक्ता के वास्तविक आशय को व्यक्त करने के लिए, खासकर हास्य व्यंग्य या व्यंग्य के मामलों में, यह अक्सर महत्वपूर्ण होता है।

भावानुवाद की प्रमुख समस्याएं :

भावानुवाद की मुख्य समस्या यह है,कि लक्ष्य भाषा के मूल भावों और विचारों को सटीक रूप से व्यक्त करना चुनौतीपूर्ण होता है|

भावानुवाद की प्रमुख समस्याएं: कभी कभी ऐसा भी हो जाता है पाठक किसी रचना को भाव या विचार से अधिक मूल लेखक के अभिव्यक्ति पक्ष को जानने के लिए पढ़ना चाहता है | भावानुवाद ऐसे पाठक के लिए भ्रामक होता |

- **शब्दानुवाद से भिन्नता:** शब्दानुवाद में शब्दों और उनके क्रम पर ध्यान केंद्रित किया जाता है, जब कि भावानुवाद में केवल भाव को लक्ष्य भाषा में ढालना होता है।
- **भावों की गहराई और सूक्ष्मता:** साहित्यिक कृतियों या दार्शनिक ग्रंथों में अक्सर गहरे और सूक्ष्म भाव होते हैं जिन्हें पूरी तरह से व्यक्त करना अत्यंत कठिन होता है।
- **सृजनात्मकता का अभाव:** कंप्यूटर जैसे मशीन-आधारित अनुवाद में सृजनात्मकता का अभाव होता है। वे मानव की तरह भाषाओं की बारीकियों और संदर्भ को नहीं समझ सकते हैं।
- **सामग्री के आधार पर अनुवाद के प्रकार :**

  साहित्यिक अनुवाद की समस्याएं :

  - स्रोत भाषा में लिखित साहित्य को लक्ष्य भाषा में अनुवाद करने को साहित्यिक अनुवाद कहते हैं। साहित्य की विधाओं में कविता, लघुकथा, कहानी, एकांकी ,उपन्यास, नाटक, प्रहसन(हास्य), निबंध, आलोचना, रिपोर्ताज, डायरी लेखन, जीवनी, आत्मकथा, संस्मरण, गल्प (फिक्शन), विज्ञान कथा (साइंस फिक्शन), व्यंग्य, रेखाचित्र, पुस्तक समीक्षा या पर्यालोचन, साक्षात्कार शामिल हैं। साहित्यिक कृतियों का अनुवाद, सामान्य अनुवाद से उच्चतर माना जाता है।

ISSN–2278-5655

AMIERJ Aarhat Multidisciplinary International Education Research Journal

Volume–XIV, Special Issues – III (a) Nov – Dec, 2025

OPEN ACCESS Original Research Article

- दो संस्कृतियों के बीच अनुवाद रूपी पुल के निर्माण में साहित्यिक अनुवाद की भूमिका सबसे अधिक महत्वपूर्ण होती है। इसका सीधा सा कारण यह है,कि किसी भौगोलिक क्षेत्र का साहित्य उस क्षेत्र की संस्कृति, कला और रीतियों का प्रतिनिधित्व करता है। कहा भी गया है,कि साहित्य समाज का दर्पण होता है। बस यही वह चीज है जो साहित्य अनुवाद को बेहद उत्तरदायी और कठिन कर्म बना देती है।

तकनीकी अनुवाद की मुख्य समस्याएँ :

समस्याओं में विशिष्ट शब्दावली की सटीकता, गलत सांस्कृतिक अनुकूलन और अपर्याप्त भाषाई या विषय-वस्तु विशेषज्ञता शामिल हैं। इसके अतिरिक्त, निरंतर विकसित हो रही तकनीक, शब्दों के मानकीकरण में कठिनाई, और अनुवाद में सांस्कृतिक संदर्भों को बनाए रखने की चुनौती भी प्रमुख समस्याएँ हैं।

- **विशिष्ट शब्दावली और सटीकता:-**
  तकनीकी दस्तावेजों में जटिल और विशिष्ट शब्दावली होती है, जिसका सटीक अनुवाद सुनिश्चित करना एक बड़ी चुनौती है।
- **सांस्कृतिक अनुकूलन:-**
  तकनीकी संदर्भों को एक संस्कृति से दूसरी संस्कृति में अनुकूलित करते समय सांस्कृतिक भिन्नताएँ समस्याएँ पैदा कर सकती हैं।

नए और मानकीकृत शब्दों की कमी:

कई तकनीकी शब्दों का अनुवाद करना मुश्किल होता है क्योंकि वे पूरी तरह से किसी अन्य भाषा में मौजूद नहीं होते हैं। शब्दों के मानकीकरण की प्रक्रिया धीमी हो सकती है, जिससे अनुवाद में कठिनाई होती है।

कानूनी अनुवाद की समस्याएं :

क़ानूनी अनुवाद की मुख्य समस्याएँ ये हैं, कि इसमें कानूनी शब्दावली की सटीकता, सांस्कृतिक भिन्नताएँ और जटिल भाषा संरचनाएँ शामिल हैं। कानूनी दस्तावेजों का अनुवाद करते समय, यह सुनिश्चित करना महत्वपूर्ण है, कि अनुवादित पाठ का मूल कानूनी प्रणाली में भी वही अर्थ हो जो लक्ष्य कानूनी प्रणाली में है।

- **शब्दावली और जटिल भाषा**: कानूनी भाषा अपनी सटीक प्रकृति और सामान्य शब्दों के असामान्य उपयोग के कारण अनुवादकों के लिए एक बड़ी चुनौती पेश करती है।
- **सांस्कृतिक और कानूनी अंतर**: अलग-अलग देशों में कानूनों और कानूनी प्रणालियों में अंतर होता है, जिससे अनुवादक को दोनों संस्कृतियों और कानूनी प्रणालियों की गहन जानकारी होनी चाहिए।

चिकित्सा अनुवाद की समस्याएं :

चिकित्सा अनुवाद की मुख्य समस्याएँ **जटिल और विशिष्ट शब्दावली, संक्षिप्ताक्षरों और सांस्कृतिक बारीकियों को सही ढंग से अनुवाद करना** हैं। सटीकता की कमी से गंभीर परिणाम हो सकते हैं, जैसे "गलत" अनुवाद, जिसमें गलत संक्षिप्ताक्षरों का अनुवाद या गलत चिकित्सा शब्दावली का प्रयोग शामिल है।

मुख्य समस्याएँ :

- **गलत संक्षिप्ताक्षरों का अनुवाद**: चिकित्सा जगत में संक्षिप्ताक्षरों का बहुत उपयोग होता है, लेकिन एक ही

ISSN–2278-5655

AMIERJ Aarhat Multidisciplinary International Education Research Journal

Volume–XIV, Special Issues – III (a) Nov – Dec, 2025

OPEN ACCESS Original Research Article

संक्षिप्ताक्षर के कई अर्थ हो सकते हैं। इसलिए, अनुवाद को संदर्भ के अनुसार सही अर्थ का अनुमान लगाना होता है।

- **सांस्कृतिक और प्रासंगिक बारीकियां**: "झूठे दोस्त" (false friends) जैसी समस्याएँ भी होती हैं, जहाँ लक्ष्य भाषा में समान लगने वाला शब्द वास्तव में अलग अर्थ रखता है।
- **गोपनीयता और कानूनी मुद्दे**: चिकित्सा अनुवादों में गोपनीयता का उल्लंघन हो सकता है, इसलिए सुरक्षित प्लेटफॉर्म का उपयोग करना और प्रमाणित अनुवादकों के साथ काम करना महत्वपूर्ण है।

सन्दर्भा ग्रंथ :

१) *अनुवाद की व्यवहारिक समस्याएं -भोलानाथ तिवारी पेज क्रमांक ११*

२) *अनुवाद की व्यवहारिक समस्याएं -भोलानाथ तिवारी पेज क्रमांक १७*

३) *अनुवाद की व्यवहारिक समस्याएं -भोलानाथ तिवारी पेज क्रमांक १८*

४) *भोलानाथ तिवारी -भाषा विज्ञान*

५) *अनुवाद विज्ञान सिद्धांत प्राविधि -भोलानाथ तिवारी*

६) *अनुवाद सिद्धांत एवं प्रयोग -जी गोपीनाथ*

७) *अनुवाद कला सिद्धांत एवं प्रयोग -सीमा कुमारी*

Cite This Article:

प्रा. जाधव त्रि. वि. (2025). *अनुवाद की समस्याएँ.* **In Aarhat Multidisciplinary International Education Research Journal**: Vol. XIV (Number VI, pp. 105–109).

ISSN–2278-5655

AMIERJ Aarhat Multidisciplinary International Education Research Journal

Volume–XIV, Special Issues – III (a) Nov – Dec, 2025

OPEN ACCESS Original Research Article

प्रादेशिक भाषाओं के विकास में हिंदी अनुवाद का योगदान

*** डॉ. एम. डी. राजहंस,**

** सहायक प्राध्यापक, हिंदी विभाग, श्रीमती मथुबाई गरवारे, कन्या महाविद्यालय, सांगली।*

भारत एक विशाल राष्ट्र है। भारत में हर एक प्रदेश की अपनी प्रादेशिक भाषा है। भारत में व्यवहार करने के लिए, सामाजिक लेन-देन के लिए, राष्ट्रीयता को बनाए रखने के लिए हिंदी ही सर्वाधिक उपयोगी भाषा है। आज हमारे जीवन में हिंदी का स्थान महत्वपूर्ण है। भारतीय संस्कृति की सभी श्रेष्ठ परंपराए हिंदी में निहित है। हिंदी साहित्य का इतिहास 1000-1200 साल से भी अधिक पुराना हैं। हिंदी का जन्म संस्कृत भाषा से हुआ है। यही कारण है कि संस्कृत के काफी शब्द संसार के अन्य भाषाओं में मिलते जुलते हैं। समय के साथ-साथ संस्कृत में जन्मी इस हिंदी भाषा ने अपने भंडार को अत्यंत समृद्ध किया है और संसार के अन्य भाषाओं में अपना एक महत्वपूर्ण स्थान बनाया है। अतः हिंदी ही अनुवाद की जननी है, ऐसा हम कह सकते हैं।

आज विश्व के बहुत से देश जैसे जर्मनी, फ्रांस, इंग्लैंड, रूस एवं अमेरिका आदि सभी विकसित देशों के प्रसिद्ध विश्वविद्यालयों में हिंदी भाषा एक महत्वपूर्ण विदेशी भाषा के रूप में पढाई जाती है। आज सारा विश्व अंतर्राष्ट्रीय सम्पर्क, सद्भाव तथा सहयोग की कामना कर रहा है और उस दिशा में आगे बढ़ रहा है। संसार की सैंकड़ों भाषाओं में विचारों का आदान-प्रदान अनुवाद से ही संभव हो रहा है। आज विश्व के प्राय: सभी देश हिंदी भाषा के समृद्ध साहित्य की पढ़ने की इच्छा व्यक्त कर रहे हैं। जब किसी साहित्यिक कृति का लक्ष्य भाषा में अनुवाद किया जाता है तो अनुवाद केवल भाषाओं के स्तर पर नहीं होता, अपितु वह भाषा, विचार, संस्कृति, इतिहास आदि के स्तर पर भी होता है। अत: अनुवाद के माध्यम से स्रोत भाषा की संपूर्ण साहित्यिक परंपरा लक्ष्य भाषा में उपस्थित हो जाती है और लक्ष्य भाषा के रचनाकार साहित्य, समाज एवं संस्कृति को नए रूप में प्रभावित करती हैं। अर्थात अनुवाद से विभिन्न साहित्यिक विद्याओं से, संस्कृतियों से, नए मानवीय मूल्यों एवं जीवन दर्शनों से भी हम परिचित होते हैं।

Copyright © 2025 The Author(s): This is an open-access article distributed under the terms of the Creative Commons Attribution 4.0 International License (CC BY-NC 4.0) which permits unrestricted use, distribution, and reproduction in any medium for non-commercial use provided the original author and source are credited.

हिंदी अनुवाद की आवश्यकता :

भारत बहुधर्मी, बहुजातीय और बहुभाषी राष्ट्र है। "राष्ट्र कल्पना उस राष्ट्र की एकता एवं अखंडता कायम रखने के लिए, उस राष्ट्र के निवासियों की भावनाओं से देशभक्ति से, बलिदान से, समर्पण से हार्दिक संबंध रखती है। यह संबंध उसकी भाषा, रस्म, रिवाज, संस्कृति, श्रेष्ठ परंपराओं के साहचर्य संबंधों के कारण निर्माण होता है।"[1] राष्ट्रभाषा की परिभाषा अगर हम जान लेते हैं, तो हिंदी का ही अधिकतर

ISSN–2278-5655

AMIERJ Aarhat Multidisciplinary International Education Research Journal

Volume–XIV, Special Issues – III (a) Nov – Dec, 2025

OPEN ACCESS Original Research Article

प्रदेशों ने राष्ट्रभाषा के रूप में स्वीकृत किया है। हिंदी भाषा के जरिए हम अपने प्रदेश के अन्य राज्यों से अपना सभी व्यवहार कर सकते हैं। भारतीय संविधान द्वारा राजभाषा (Official language) के रूप में हिंदी का स्थान निर्धारित हो चुका है। साथ ही हिंदी के द्वारा ही भिन्न -भिन्न भाषी लोग एक दूसरे की प्रादेशिक संस्कृति की विशेषताओ का परिचय आसानी से पा सकेंगे।

हिंदी ही राष्ट्रभाषा क्यों? इस बात पर विचार करते समय हिंदी की विशेषताओं को जानना हमारा आद्य कर्तव्य है। भारत के संविधान में भारतीय संघ की राजभाषा का सम्मान हिंदी को ही प्राप्त है। 14 सितंबर 1949 का दिन हिंदी भाषा के इतिहास में इसलिए गौरवपूर्ण स्थान रखता है। एक तो महत्वपूर्ण बात यह है कि भारतवर्ष में अन्य सभी भारतीय भाषाओं की अपेक्षा हिंदी बोलनेवालों की, समझनेवालों की संख्या अधिक है। इतना ही नहीं हिंदी तर अनेक प्रदेशों में हिंदी आसानी से बोली और समझी जाती है। "कार्यालयीन सामग्री का अनुवाद स्वतंत्र भारत की आवश्यकता है। करीब डेढ-दो शताब्दियों कि अंग्रेजी शासन व्यवस्था में राजकारोबार की भाषा अंग्रेजी बनी थी। किंतु आजादी हासिल होने के तुरंत बाद अंग्रेजी में स्थित कार्यालयीन समग्र सामग्री को एक झटके से हिंदी में लाना संभव नहीं था। परंतु ऐसे ही स्वाधीनता की प्राप्ति के उपरांत देशवासियों ने अपने देश के लिए लोकतांत्रिक प्रणाली का शासन स्वीकार कर लिया और यह अनुभव किया कि शासन लोकतांत्रिक तभी हो सकता है जब उसका कारोबार 'लोक' (जन) भाषा में हो, वैसे ही हमारे देश में कार्यालयीन अनुवाद की आवश्यकता बढ़ती गई।"[2]

हिंदी की और एक महत्वपूर्ण विशेषता यह है कि उसकी साहित्यिक परंपरा अति प्राचीन और विस्तृत है, जिसमें आदिकालीन साहित्य से लेकर आधुनिक काल तक के साहित्य की विशाल धरोहर है। आमिर खुसरो, सूर, तुलसी, कबीर से लेकर आज के साहित्यिकों के उसे सुसंपन्न बनाया है। साथ ही राष्ट्र के जागरूक नागरिक के लिए राष्ट्रीय जीवन सफल संपन्न बनाने के लिए भी हिंदी जानना जरूरी है। आज के आधुनिक वैज्ञानिक युग से भारत में फैला हुआ अंतर्जाल, दूरसंचार माध्यम, अखबार, सिनेमा, रेडियो, दूरदर्शन इनका अत्यंत महत्त्व है। इन साधनों का अधिकारिक लाभ हिंदी का ज्ञान रखनेवाले व्यक्ति आसानी से ले सकते हैं। पूरे संचार माध्यमों पर हिंदी ही छाई हुई है।

हिंदी भाषा का हमारे जीवन में स्थान हम जान चूके हैं। हिंदी हमारे देश में सर्वत्र राजभाषा एवं राष्ट्रभाषा के रूप में व्यवहृत है। अत: हिंदी का ज्ञान रखना प्रत्येक भारतीय नागरिक के लिए आवश्यक ही नहीं अपितु अनिवार्य है। उत्तर भाषा के रूप में समर्थन में विभिन्न विद्वानों के विचार निम्नलिखित है-

1. पं. जवाहरलाल नेहरू: हिंदी का ज्ञान राष्ट्रीयता बढ़ाने के लिए प्रोत्साहन देता है और हिंदी अन्य भाषाओं की अपेक्षा सबसे अधिक राष्ट्रभाषा बनाने की योग्यता रखती है।
2. महात्मा गाँधी जी : प्रांतीय भाषाओं के स्थान पर नहीं। अपितु उनके सिवा अंतरप्रांतीय विनिमय के लिए राष्ट्रभाषा समस्त भारत के लिए आवश्यक है। वह भाषा हिंदी ही होना आवश्यक है।
3. कविवर दिनकर जी : हिंदी भारतवर्ष के हृदय की छबि है।

ISSN–2278-5655

AMIERJ Aarhat Multidisciplinary International Education Research Journal

Volume–XIV, Special Issues – III (a) Nov – Dec, 2025

OPEN ACCESS Original Research Article

4. श्री. सुभाषचंद्र बोस जी : देश के सबसे बड़े भूभाग में बोली जानेवाली हिंदी ही राष्ट्रभाषा पद की अधिकारिणी है।
5. श्री मदनमोहन मालवीय जी : "भविष्य में हिंदुस्तान की उन्नति हिंदी को अपनाने से ही होगी।"[३]

संक्षेप में महात्मा गाँधी के साथ ही लोकमान्य तिलक, रवीन्द्रनाथ ठाकुर, नेताजी सुभाषचंद्र बोस, माधवराव सप्रे, बाबूराव विष्णु पराडकर, सुनीतिकुमार चटर्जी, चक्रवर्ती राजगोपालचारी, गोपालस्वामी अय्यंगार, पुरुषोत्तम दास टंडन, मौलाना अब्दुल कलाम आज़ाद जैसे महापुरुषों का हिंदी को राष्ट्रीय एकता, अस्मिता एवं अखण्डता की दृष्टि से जबरदस्त समर्थन मिलता रहा है। महात्मा गाँधी ने तो यहाँ तक कहा कि, 'राष्ट्रभाषा के बिना राष्ट्र गूंगा है।' "आठवें हिंदी साहित्य सम्मेलन के अध्यक्ष पद से उन्होंने घोषणा की, 'मेरा नम्र लेकिन दृढ अभिप्राय है कि जब तक हम हिंदी भाषा को राष्ट्रीय और अपनी प्रांतीय भाषाओं को उनका योग्य स्थान नहीं देते, तब तक स्वराज्य की सब बातें निरर्थक है।"[4]

हिंदी अनुवाद का दायरा :

विश्व के सभी देशों में हिंदी का प्रसार होने के कारण ही आज इस बात की आवश्यकता महसूस की जा रही है कि संयुक्त राष्ट्र संघ में भी हिंदी को यथायोग्य स्थान दिया जाए। हिंदी अनुवाद का प्रशासनिक दायरा भी बहुत बड़ा है। प्रशासनिक अनुवाद वह है जिसमें एक भाषा की प्रशासन संबंधी सामग्री को दूसरी भाषा में ढाला जाता है। सभी प्रशासन के कागजात, सरकारी पत्र, परिपत्र, सूचनाएँ-अधिसूचनाएँ, नियम-अधिनियम, आलेखन, टिप्पण, प्रेस, विज्ञप्तिया, विज्ञापन, प्रतिवेदन, तार, प्रमाणपत्र आदि विषयों का अनुवाद आता है। भारत जैसे बहुभाषिक देश में इस प्रकार का अनुवाद आवश्यक हो जाता है। प्रशासनिक अनुवाद की भाषा में दो बातें आवश्यक होती है- तकनीकीपन और सामान्यपन। इस अनुवाद की भाषा में तकनीकीपन तो आवश्यक रहता है, अंततः वह अनुवाद सामान्य जनों के लिए होने के कारण उनकी भाषा में सरलता भी अपेक्षित होती है।"[5]

आज हिंदी भारत में सर्वाधिक बोली और समझी जानेवाली भाषाओं में से एक है, जो अनेक सांस्कृतिक विविधता को अपने साथ लेकर अंतरराष्ट्रीय स्तर पर अग्रेसर हो रही है। जैसा कि हम जानते हैं, आज विश्व के प्रायः सभी देश हिंदी भाषा के समृद्ध साहित्य को पढ़ने की इच्छा व्यक्त कर रहे है। यह एक व्यापक, विशाल एवं सदियों पुराना साहित्य है जिसमें विभिन्न युगों और शैलियों के कई रचनाकर हुए हैं। हालांकि आधुनिक हिंदी साहित्य का जनक भारतेंदु हरिश्चंद्र को माना जाता है। साहित्य के अंतर्गत अनेक विधाएँ मिलती हैं, जैसे गद्य, पद्य, एकांकी, निबंध, नाटक, कहानी, उपन्यास, जीवनी, रेखाचित्र, संस्मरण आदि। इनके अनुसार अनुवाद के प्रकार भी अलग-अलग है- जैसे कल्पानुवाद, नाट्यानुवाद, निबंधानुवाद, आत्मकथनानुवाद, संस्मरणानुवाद, रेखाचित्रानुवाद, समीक्षानुवाद, जीवनी, साहित्य अनुवाद आदि। तात्पर्य हिंदी का साहित्यिक अनुवाद का दायरा भी बहुत ही बड़ा है।

आज 21 वीं सदी में पूरे विश्वभर में फैले इंटरनेट ने शिक्षा, मनोरंजन और व्यापार को न केवल सरल बनाया है, बल्कि इसे नई ऊंचाइयों पर भी पहुँचाया है। अत: प्रौद्योगिकी और इंटरनेट के विस्तार से शिक्षा और सूचना के क्षेत्र में बड़ा बदलाव लाया है।

ISSN–2278-5655

AMIERJ Aarhat Multidisciplinary International Education Research Journal

Volume–XIV, Special Issues – III (a) Nov – Dec, 2025

OPEN ACCESS Original Research Article

डिजिटल युग में हिंदी अनुवाद का महत्त्व :

भारत वर्ष के अन्य सभी भारतीय भाषाओं की अपेक्षा हिंदी बोलनेवालों, समझनेवालों की संख्या अधिक है। इंटरनेट के विस्तार के साथ आधिकाधिक हिंदी भाषी लोग डिजिटल दुनिया में जुड़ रहे हैं। हिंदी का महत्त्व संपर्क को भाषा राजभाषा होने के साथ-साथ राष्ट्रभाषा की भूमिका निभाने से भी है। आज के डिजिटल युग में हिंदी अनुवाद का महत्त्व कई कारणों से है, यह शिक्षा, मनोरंजन तथा व्यावसायिक सामग्री को अधिक से अधिक लोगों तक कहो पहुँचाता है। आज, ज्ञान को प्राप्त करने में कई सारे माध्यम है। संसार में ज्ञान अमर्याद, असीमित, अनंत हैं जिसे प्राप्त करने के लिए हमें अपना जीवन भी कम पड़ेगा। संसार में कई सारी भाषाएं प्रचलित है, उन सैकड़ों भाषाओं में ज्ञान बिखरा हुआ है। दुनिया का समग्र ज्ञान-विज्ञान किसी एक भाषा में समाहित नहीं है। वह तो सैकड़ों भाषाओं में बिखरा हुआ है। अत: इसे प्राप्त करने के लिए अनुवाद युग माँग है, जरूरत है।

21 वीं सदी की विश्वसंकल्पना एक बहुआयामी दृष्टिकोण रखती है। आज सारा विश्व अंतर्राष्ट्रीय सम्पर्क सद्भाव तथा सहयोग की कामना कर रहा है और उस दिशा में आगे बढ़ रहा है। सैकड़ों भाषाओं में विचारों का आदान-प्रदान अनुवाद से ही संभव हो रहा है। इसलिए वैश्विक संदर्भ में अनुवाद का महत्त्व असाधारण है।"[6] तुलसीकृत 'रामचरितमानस' का अनुवाद तो विश्व की अनेक भाषाओं जैसे जर्मनी, रूस, अंग्रेजी, फ्रेंच, जपानी आदि में हो चुका है। प्रेमचंद जी के उपन्यासों और कहानियों का अनुवाद भी कई सारी भाषाओं में हो चुका है। जयशंकर प्रसाद की 'कामायनी' आदि रचनाओं, डॉ. रांगेयराघव के उपन्यासों आदि अनेक हिंदी रचनाओं का विभिन्न विदेशी भाषाओं में अनुवाद हो चुका है। इन अनुदित ग्रंथों ने संसार की विभिन्न भाषाओं के साइट को काफी समृद्ध और प्रभावित किया है। इस तरह हिंदी भाषा, हिंदी अनुवाद के साथ अपने साहित्य को और भी समृद्ध करते हुए विश्व की विभिन्न भाषाओं में एक महत्वपूर्ण स्थान बनाने के लिए प्रयत्नशील है। आज हमें भारतीय काव्यशास्त्र, साहित्यशास्त्र की संकल्पना के समान भारतीय अनुवाद शास्त्र की भी संकल्पना आवश्यक है। इसके लिए समान भारतीय भाषाओं के अनुवादकों के विचारों का संकलन आवश्यक है। इसका मुख्य माध्यम होने का दायित्व भी हिंदी को ही निभाना होगा।

"ग्रीक के महान साहित्यकार 'होमर' के महाकाव्य 'इलिएड' के विभिन्न भाषाओं में अनुदित हो। इंग्लैंड, फ्रांस, जर्मनी आदि देशों के साहित्य एवं समाज की गहरे तक प्रभावित किया।"[7] तात्पर्य अनुवाद से न केवल नई-नई साहित्यिक विद्याओं, भाषाई शिल्पों एवं संस्कृतियों से हम परिचित होते हैं अपितु नए मानवीय मूल्यों और जीवन दर्शनों का भी अस्तित्व स्थापित होकर समाज और देश को नई अलग दिशा देने की शक्ति एवं क्षमता भी अनुवाद में होती है।

भारत जैसे बहुभाषी देश में आज विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी के विकास तथा इलेक्ट्रॉनिक माध्यमों के विस्तार से अनुवाद की भूमिका भी महत्वपूर्ण हो गई है। जनता के पारस्परिक परिचय और सांस्कृतिक समन्वय के विकास के लिए अनुवाद कार्य अनुपेक्षनीय है। साहित्यिक अनुवाद तो केवल भाषांतरण मात्र नहीं है। उसके द्वारा एक जन-समुदाय की सामाजिक-सांस्कृतिक गतिविधियों का लेखा जोखा भी एक-दूसरे जन समुदाय की समक्ष प्रस्तुत किया जाता है। भारत जैसे महान देश

ISSN–2278-5655

AMIERJ Aarhat Multidisciplinary International Education Research Journal

Volume–XIV, Special Issues – III (a) Nov – Dec, 2025

OPEN ACCESS Original Research Article

के विभिन्न भागों में विद्यमान सामाजिक रूढ़ियाँ, रीति-नीतियाँ, आचार-विचार, धार्मिक अनुष्ठान, राजनैतिक उथल-पुथल, सांस्कृतिक उत्थान-पतन सबका सच्चा चित्रण समस्त जन के अनुवाद द्वारा प्रस्तुत किया जाता है। जिसके कारण भाषाओं तथा साहित्य की वृद्धि होती है, साथ ही नई सांस्कृतिक चेतना का जागरण भी होता है।

आज के आधुनिक युग में विज्ञान के अभूतपूर्व उन्नति में तकनीक और प्रौद्योगिकी क्षेत्र में बड़ा बदलाव लाया है। अब ज्ञान को प्राप्त करने के तरीके भी बदल चुके हैं। ज्ञान केवल एकांत में नहीं बल्कि प्रकृति, मित्र-परिवार और ऑनलाइन समुदायों के माध्यम से भी प्राप्त किया जा सकता है, जिससे शिक्षा एक आजीवन निरंतर प्रक्रिया बन गई है। वर्तमान समय में इस गति के साथ विश्व स्तर पर परिवर्तन हो रहा है, उससे प्रत्येक राष्ट्र को, उसके नागरिको को, हमेशा नए-नए भाषा, तकनीक, प्रौद्योगिकी ज्ञान की आवश्यकता होती है, जिससे ज्ञान-विज्ञान के क्षेत्र में एक व्यक्ति अथवा एक राष्ट्र तक सीमित न रहकर उसका स्वरूप विस्तृत हो सके। कला, साहित्य, संस्कृति, दर्शन, विज्ञान आदि क्षेत्रों में अनेक देशों में भिन्न-भिन्न विकास हुआ है। इससे विकासशील व्यक्ति या राष्ट्र उस ज्ञान का लाभ उठाना चाहता है, किंतु विभिन्न भाषाओं की अनभिज्ञता की समस्या उसके सामने उत्पन्न होती है। अत: इसके लिए उक्त ज्ञान का अपनी भाषा में रूपांतरण, अर्थात अनुवाद से ही यह संभव होता है। आज हिंदी भाषा पूरे संचार माध्यमों पर छाई हुई है। देश के सबसे अधिक भूभागों में बोली जानेवाली भाषाएं हिंदी ही है। जो देश या समाज के सामान्य जनों की जनभाषा कहलाती है। साथ ही वह केवल जनभाषा ही नहीं तो हर एक प्रदेश में हिंदी की अलग-अलग बोलियाँ हैं, उपभाषाएँ हैं। अतः हिंदी अनुवाद की चुनौतियां हमारे सामने खड़ी है। हिंदी अनुवाद इतना सारा कार्य होने के बावजूद भी अभी बहुत काम शेष है।

अंतर्राज्यीय तथा अंतरराष्ट्रीय सद्भावना और हिंदी अनुवाद:

आज सारा देश हिंदी की आवश्यकता एवं महत्त्व से भलीभाँति परिचित हो चुका है। अत: दुनिया के विभिन्न भाषाओं में बिखरे हुए एक ज्ञान-विज्ञान को प्राप्त करने तथा अंतर्राज्यीय संपर्क की दृष्टि से भी हिंदी अनुवाद की अत्यंत आवश्यकता है। हमारे राष्ट्र एवं भारतीय संस्कृति की सभी श्रेष्ठ परंपराएं हिंदी में निहित है। देश की सांस्कृतिक एकता और अखंडता को बनाए रखनेवाले महान ग्रंथों की निधी हिंदी में सुरक्षित है। तथा एक प्रदेश के निवासियों को दूसरे प्रदेश के निवासियों से व्यवहार करना हो तो उनको उनमें से किसी एक प्रदेश की अंतरप्रांतीय भाषा की सहायता लेनी होगी। पर यह कहना उचित नहीं होगा कि महाराष्ट्र के लोग गुजरात से व्यवहार करने के लिए गुजराती सीखें और बँगला भाषियों से बांग्ला में व्यवहार करे, आंध्र से तेलगू में करे और केरल से मलयालम में कर्नाटक से कन्नड़ में और चेन्नई से तमिल में। अतः इसमें कितनी झंझट और असुविधा पैदा होगी। एक अंतरप्रांतीय भाषा से ही सब को सुविधा हो और वह हमारी हिंदी भाषा ही है। आज 21 वीं सदी की विश्व संकल्पना एक बहुआयामी दृष्टिकोण रखती है। इसकी चुनौतियां भी वैश्विक है। जिसमें आर्थिक और सामाजिक विकास, तकनीकी प्रगति, अंतर्राष्ट्रीय सहयोग, पर्यावरणीय चेतना और मानवाधिकारों की रक्षा जैसी कई बातें शामिल हैं। संयुक्त राष्ट्र जैसी संस्थाएँ शांति और सुरक्षा बनाए रखने विकास लक्ष्यों को प्राप्त करने और वैश्विक मानवीय सहायता प्रदान करने में महत्वपूर्ण

ISSN–2278-5655

AMIERJ Aarhat Multidisciplinary International Education Research Journal

Volume–XIV, Special Issues – III (a) Nov – Dec, 2025

OPEN ACCESS Original Research Article

भूमिका निभा रही हैं। अतः अनुवाद का महत्त्व दिनोंदिन बढ़ता ही जा रहा है। अनुवाद से ही हमें अन्य समाज की अन्य देशों की सभ्यता एवं संस्कृति की पहचान होती है। ज्ञान-विज्ञानार्जन करने का प्रमुख साधन है अनुवाद। देश-विदेश के साहित्यिक कृतियों का आदान-प्रदान, उसकी संकल्पना, प्रतिभाशाली व्यक्तियों का परिचय आदि बातें अनुवाद से ही संभव है।

भारत देश विभिन्नता में एकता का प्रतीक है। ऐसी स्थिति में विभिन्न जाति, धर्म, प्रांत, भाषा आदि को एक धागे में पिरोकर उसकी एक सुंदर पुष्पमाला बनाने के कार्य हिंदी भाषा और हिंदी अनुवाद ही कर सकता है। अत: हिंदी अनुवाद का महत्त्व काफी बढ़ गया है। हमें राष्ट्रीय एकात्मता के साथ-साथ अंतर्राष्ट्रीय सध्दभावना की ओर बढ़ना है जिसका हिंदी अनुवाद एक महत्वपूर्ण साधन है।

संदर्भ ग्रंथ :

1. *प्रा. उद्धव महाजन, अध्यापक शिक्षण पदविका, निराली प्रकाशन, 2005, पृ. 7।*
2. *डॉ. अर्जुन चव्हाण, अनुवाद : समस्याएँ एवं समाधान, अमन प्रकाशन, 1999, पृ. 7।*
3. *डॉ. साळी, डॉ. करंदीकर, द्वितीय भाषा हिंदी, फड़के प्रकाशन, 2006, पृ. 5।*
4. *प्रा. उद्धव महाजन, अध्यापक शिक्षण पदविका, निराली प्रकाशन, 2005, पृ. 17।*
5. *डॉ. अर्जुन चव्हाण, अनुवाद चिंतन, अमन प्रकाशन, 1998, पृ. 74।*
6. *डॉ. अर्जुन चव्हाण, अनुवाद चिंतन, अमन प्रकाशन, 1998, पृ. 35।*
7. *डॉ. आरसु, डॉ. एम. जे. प्रीता, अनुवाद: अनुभव और अवदान, जयभारती प्रकाशन, 2003, पृ. 10।*

Cite This Article:

डॉ. राजहंस एम. डी. (2025). *प्रादेशिक भाषाओं के विकास में हिंदी अनुवाद का योगदान.* **In Aarhat Multidisciplinary International Education Research Journal**: Vol. XIV (Number VI, pp. 110–115).

ISSN–2278-5655

AMIERJ Aarhat Multidisciplinary International Education Research Journal

Volume–XIV, Special Issues – III (a) Nov – Dec, 2025

OPEN ACCESS Original Research Article

अनुवाद की समस्याएँ

* प्रा.स्नेहा प्रदीप हिंगमिरे ,

* सहायक प्राध्यापक, एस.जी.के.महाविद्यालय, लोणी काळभोर ,पुणे.

प्रस्तावना :

अनुवाद मानव जीवन के आरंभ से आ रही विधि है l आज का आधुनिक युग वैज्ञानिक और तकनीकि युग पहचाना जाता है l हमारा भारत देश बहुभाषिक देश है,जिसमें विभिन्न भाषाएं बोली जाती है |जिससे निरंतर अध्ययन,अनुसंधान,चिंतन और लेखन में वृद्धि हो रही है | सभ्यता और संस्कृति के विकास में अनेक भाषाओं का आदान-प्रदान हो रहा है l एक भाषा में कही गयी बात को पुन: कहना ही अनुवाद कहलाता है | अनुवाद में भाषा ही माध्यम है जिसमे एक भाषा में कही बात को दूसरी भाषा में अभिव्यक्त होती है | वास्तव में यह कार्य जितना सरल दिखाई देता है उतना नही है | अनुवाद की विभिन्न विद्वानो ने की हुई परिभाषाएं निम्नानुसार है-'वद' धातु तथा 'अनु' उपसर्ग के योग से बने अनुवाद शब्द में स्थित 'अनु'का अर्थ है, 'पीछे', 'पुनः', 'समान' अथवा 'अनुरूप' l इससे अनुवाद का व्युत्पत्तिमूलक अर्थ स्पष्ट है कि, "अनुवाद याने पुनः कथन अर्थात किसी के कहने के बाद कहना, समान कथन अर्थात किसी के कथन को समान रूप से कहना, अनुरूप कथन अर्थात किसी के कथन के अनुरूप कहना l" [1] अनुवाद की परिभाषाएं करते हुए डॉ. भोलानाथ तिवारी कहते है कि, "अनुवाद का मूल उद्देश्य है स्रोत भाषा की रचना के भाव तथा विचार लक्ष्य भाषा में यथासंभव अपने मूल रूप में लाना l" [2]

डॉ. शर्मा कहते है कि "हर व्यक्ति के लिए संसार की समस्त भाषाओं को सीखना संभव नही l पर हर मनुष्य को हर भाषा के वाङ्मय को अपेक्षित भाषा में प्रस्तुत करने या उसके अध्ययन के माध्यम से ही संभव है l एक भाषा से दूसरी भाषा में प्रस्तुत सामग्री अनुवाद है तथा उसके प्रस्तुतीकरण की प्रक्रिया का अध्ययन अनुवाद विज्ञान का विषय है l" [3] विश्वनाथ अय्यर ने अनुवाद शब्द की व्याख्या में'समतुल्यता'शब्द पर जोर दिया है l मूल की प्रतिस्थापना समतुल्य से करना अनुवादक का कार्य है l अनुवाद कठिन और चुनौतीपूर्ण कार्य है l [4] डॉ. सुरेश कुमार कहते है कि "यह एक जटील, कृत्रिम, आवश्यकता जनितऔर एक दृष्टि से सर्जनात्मक प्रक्रिया है जिसमे असाधारण और विशिष्ट कोटि की प्रतिभा की आवश्यकता होती है l" [5]

उपर्युक्त विद्वानो के अनुसार अनुवाद में अर्थ का अनन्यसाधारण महत्व है l प्रामाणिकता से तथा शब्द का अर्थ न बदल कर किया हुआ अनुवाद अधिक विश्वसनीय लगता है | लेकिन यह कार्य इतना सरल नहीं है l इसमें अनेक कठिनाईयां ,अनेक बाधाएं, अनेक सीमाएं तथा अनेक समस्याएँ उपस्थित होती है | साहित्य की अलग अलग विधाओं के आधार पर अनुवाद की समस्याएँ निर्माण होती है|

Copyright © 2025 The Author(s): This is an open-access article distributed under the terms of the Creative Commons Attribution 4.0 International License (CC BY-NC 4.0) which permits unrestricted use, distribution, and reproduction in any medium for non-commercial use provided the original author and source are credited.

ISSN–2278-5655

AMIERJ Aarhat Multidisciplinary International Education Research Journal

Volume–XIV, Special Issues – III (a) Nov – Dec, 2025

OPEN ACCESS Original Research Article

1] भाषिक तथा भाषाजन्य समस्याएँ : अनुवाद की कोई दो, चार, आठ समस्याएँ ऐसी निश्चित संख्या नही है l साहित्य की जितनी विधाएं है उतनी अनुवाद की समस्याएँ है l स्रोत भाषा से लक्ष्य भाषा में अनुवाद करते समय अनेक भाषिक एवं भाषाजन्य अर्थात ध्वनि, शब्द, रूप, अर्थ, वाक्य, शैली, लिंग, वचन, कहावते, मुंहावरे आदि की विशेषताओं को लक्ष्य भाषा में अनुवादीत करना अत्यंत कठिन कार्य है l

i] ध्वनि की समस्याएँ - अनुवाद में स्रोत भाषा की कोई ध्वनि लक्ष्य भाषा में अनुवादित करते समय लिपि की समस्या निर्माण होती है l मराठी, हिंदी भाषा देवनागरी लिपि में लिखी होती है,अंग्रेजी में अनुवाद करते समय रोमन लिपि का अभ्यास करना पडता है l तब लिप्यंतरण की समस्या निर्माण होती है l उदाहरण हिंदी के 'क' ध्वनि के लिए अंग्रेजी के 'C', और 'K' ध्वनि है l जैसे-कॅट के लिए अंग्रेजी में Cat लिखते है l तो कांगारू के लिए Kangaroo l हिंदी के क ध्वनि के लिए C और K ध्वनियां आती है, इस वक्त अनुवाद करना कठीन बन जाता है l मराठी में ल ,ळ स्वतंत्र ध्वनियां है l हिंदी में जिनके लिए केवल ल प्रयुक्त होता है l उदाहरण मराठी में मुरळी इस शब्द को हिंदी में मुरली कहते है, मुरळी का अर्थ ऐसी स्त्री जो खंडोबा की भक्ति में नाच गान करती है | और मुरली इस शब्द का अर्थ हिंदी मे बांसुरी व वंशी है l [6] इस प्रकार अनुवाद करते समय अर्थ हानी हो सकती है | भाषा में प्रयुक्त महाप्राण तथा अल्पप्राण मे ध्वनियों में अनुवाद करते समय भी अनेक समस्याओंका सामना करना पडता है l मराठी से हिंदी में अनुवाद करते समय मराठी की अल्पप्राण ध्वनी हिंदी में महाप्राण हो जाती है | जैसे मराठी में हात तो हिंदी में हाथ लिखा जाता है | स्वर व्यंजन के आधार पर अंग्रेजी भाषा के शब्द मराठी में अनुवादित करते समय विशेष सावधानी बरतनी पडती है | जब अंग्रेजी 'The' का हिंदी लिप्यांतरण द,दि, दी आदि विभिन्न पद्धतियों से किया जाता है l लेकिन अनुवाद में यह ध्यान देना आवश्यक है कि अंग्रेजी उच्चारण नियम के अनुसार जब The व्यंजन के पहले आ जाए तो जैसे "द टेबल", "द मून" हो जायेगा और स्वर के पहले आ जाए तो "दि"लिप्यंतरण हो जायेगा l जैसे "दी इलेफिंट"(The Elephant), "दी ओल"(The Owl) ऐसा अनुवाद हो जायेगा | गद्यानुवाद करने से अधिक समस्या पद्यानुवाद करते समय आती है | हिंदी के रीतिकाल के प्रमुख कवि भूषण का प्रसिद्ध पद जो ध्वनी सौंदर्य का सुंदर उदाहरण है लेकिन लक्ष्य भाषा से स्रोत भाषा मे अनुवाद करते समय अनेक कठीनाईयां आती है | अल्पप्राण,महाप्राण ध्वनी,स्वर,व्यंजन,ध्वनि लक्ष्य भाषा में लाना अत्यंत कठिन कार्य है | उदा. "इंद्र जिमी, झुंब पर बाडव सु अंभ पर, रावण सदंभ पर रघुकुलराज है | तेज तम अंस पर कान्ह जिमि कंस पर, त्यो म्लेच्छ-वन्स पर सेर शिवराज है l" [7] इसमें ध्वनी संबंधी अनुवाद करते समय मूल ध्वनी,स्रोत तथा लक्ष्य भाषा की वर्णमाला, सौंदर्य आदी बातों का ध्यान देकर अनुवाद करना जटिल कार्य है |

ISSN–2278-5655

AMIERJ Aarhat Multidisciplinary International Education Research Journal

Volume–XIV, Special Issues – III (a) Nov – Dec, 2025

OPEN ACCESS Original Research Article

ii] शब्द की समस्याएँ - एक शब्द के अनेक भाषा में अनेक अर्थ दिखाई देते है | अनुवाद करते समय आसानी तब होती है जब एक ही शब्द दोनों भाषा में समान रूप से प्रयुक्त हो परंतु एक शब्द के दोनों भाषाओं में भिन्न अर्थ हो तो अनुवाद में जटिल समस्या निर्माण हो सकती है | मराठी का पाणी,जल हिंदी में पाणी अर्थात हाथ हो जाता है |अत: समुच्चारित भिन्न अर्थ वाले शब्द का अनुवाद करना कठिन बन जाता है | जैसे अवधि मतलब समय और अवधी मतलब भाषा , कुल अर्थात परिवारऔर कूल मतलब किनारा, चिर मतलब दीर्घकाल चीर मतलब वस्त्र, कलि अर्थात कलयुग और कली मतलब अलखीला फूल, दिन अर्थात दिवस और दीन मतलब गरीब , सुर मतलब देवता और सूर अर्थात अंध व्यक्ति | इस प्रकार शब्द के विभिन्न अर्थ का लक्ष्य भाषा मे अनुवाद करना बन कठिन जाता है |

iii] वाक्य की समस्याएँ – वस्तुतः भाषा की पूर्ण इकाई वाक्य है | रचना के आधार पर साधारण वाक्य, संयुक्त वाक्य और मिश्र वाक्य यह तीन प्रकार है | अर्थ के आधार पर विधिवाचक, आज्ञार्थक, विस्मयादिबोधक, प्रश्नवाचक, संदेहवाचक, इच्छावाचक वाक्य का अनुवाद करते समय सहजता और स्पष्टता होनी चाहिए | एक भाषा की ऱ्हस्व दीर्घ ध्वनिया, लिंग, वचन,कारक,पुरुष आदि के आधार पर अनुवाद करना समस्या खडा कर सकते है |

iv] अर्थ की समस्याएँ - स्त्रोत भाषा से लक्ष्य भाषा में अनुवाद करते समय अर्थ पर विशेष ध्यान देना पडता है | अभिधा ,लक्षना ,व्यंजना शब्दशक्तियों के कारण एक ही शब्द के भिन्न भिन्न अर्थ निकलते है | अत: अनुवादक को यह देखना जरुरी है कि शब्द में कोनसी शब्दशक्ती है, उसी के अनुसार वाक्य मे उस शब्द का प्रयोग करे अन्यथा अर्थ की समस्या कठिन बन जाती है |

2] **व्याकरणिक की समस्याएँ :** विश्व में कौनसी भी दो भाषाओं का व्याकरण समान नही होता | इसी असमानता के कारण अनुवाद में व्याकरण की समस्या निर्माण हो सकती है | प्रत्येक भाषा की अपनी एक संरचना और व्याकरण होता है | जिसमें लिंग, वचन, कारक, पुरुष,सर्वनाम,वर्तनी,विरामचिन्ह एवं क्रिया आदि का प्रयोग होता है |अत: अनुवाद करते समय दो भाषाओं का ज्ञान होना आवश्यक है | इसके अभाव में किया गया अनुवाद बेढंग हो जाता है | अनुवाद की व्याकरण विषय प्रमुख समस्याएँ निम्नानुसार है -

i) लिंग- संसार में जितनी भी भाषाएं है उनमें लिंग की संख्या समान नही है | मराठी,अंग्रेजी,संस्कृत भाषा में तीन लिंग है ,पुल्लिंग, स्त्रीलिंग,नपुसकलिंग और हिंदी में दो लिंग है पुलिंग और स्त्रीलिंग | हिंदी के 'मजा' और 'शिकार' यह शब्द पुल्लिंग है किंतु मराठी मे यह शब्द स्त्रीलिंग बन जाते है | उसी प्रकार हिंदी के 'मृत्यु', 'पराजय' यह शब्द मराठी में पुल्लिंग बन जाते है | अत:अनुवादक को स्त्रोत भाषा से लक्ष्य भाषा में अनुवाद करते समय नियमों का ध्यान रखना आवश्यक होता है | अन्यथा अनुवाद में समस्या निर्माण हो सकती है |

ISSN–2278-5655

AMIERJ Aarhat Multidisciplinary International Education Research Journal

Volume–XIV, Special Issues – III (a) Nov – Dec, 2025

OPEN ACCESS Original Research Article

ii) वचन- हिंदी,अंग्रेजी और मराठी में दो वचन है| परंतु अलग अलग भाषा में अनुवाद करते समय एकवचन का बहुवचन होता है | इसका ध्यान न रखा जाये तो अनुवाद में समस्या निर्माण हो सकती है | जैसे हिंदी मे एक वचन होने के बावजूद भी कुछ शब्दों का प्रयोग बहुवचन में किया जाता है | जैसे 'मेरे पिताजी आ रहे हैं' |इस वाक्य का अंग्रेजी अनुवाद 'My father is coming' ऐसा होता है | प्रकृती के अनुसार हिंदी से अंग्रेजी में अनुवाद करते समय 'is' के बदले 'are' का प्रयोग अनुचित होगा | इस वक्त वचन के नियमों का ज्ञान रखना आवश्यक है 1 अन्यथा वचन की समस्या अनुवाद में निर्माण होती है |

iii) कारक- वाक्य में प्रयुक्त संज्ञा, सर्वनाम या अन्य शब्दों का क्रिया से संबंध स्थापित करने वाले शब्द को कारक कहते है |उदा. राम रावण मारा इसको वाक्य नही कहा जा सकता | प्रयुक्त शब्द का आपस मे संबंध नही दिखाया है | अगर इस वाक्य में ने ,को,से आदि ध्वनी को रखा जाये तो 'राम ने रावण को बाण से मारा' यह स्पष्ट अर्थ देने वाला वाक्य होगा अर्थात वाक्य में कारक का स्थान है तो पूर्ण है परंतु सभी भाषा में कारक समान नही है | मराठी में सात कारक है तो हिंदी में आठ कारक है | हिंदी मे बोला,बका इन क्रियाओं के स्थान पर मराठी में बोलणे, बडबडणे इन क्रियाओं के साथ 'ने' का प्रयोग नही होता | मराठी में कर्ता के साथ 'ने' प्रयुक्त होता है | जैसे 'सागर ने बोलावे' का हिंदी में अनुवाद 'सागर ने बोले' यह गलत होगा | सही अनुवाद 'सागर बोले' यह है | उसी प्रकार अंग्रेजी मे 'Ram is going to Pune',इस वाक्य का हिंदी अनुवाद 'राम पुणे को जा रहा है' ऐसा करना गलत है | इस वाक्य में 'को' कर्मकारक का प्रयोग नही हुआ करता |इस प्रकार किया हुआ अनुवाद हानि पहुंच सकता है |अत: सही अनुवाद 'राम पुणे जा रहा है" ऐसा होगा | निष्कर्षत: अनुवादक को स्त्रोत तथा लक्ष्य भाषा में प्रयुक्त होने वाले कारकों का ज्ञान होना आवश्यक है | इसके अभाव में किया हुआ अनुवाद समस्या बन सकता है |

iv) पुरुष- अधिक तर भाषा में तीन पुरुष होते है 1.प्रथम पुरुष 2. मध्य पुरुष 3.अन्य पुरुष | स्रोत भाषा को लक्ष्य भाषा में अनुवाद करते समय पुरुष का ध्यान रखकर अनुवाद करना जरुरी है |जैसे 'गणेश ने कहा कि मैं पाठशाला नही जाऊंगा |' इसका अंग्रेजी अनुवाद 'Ganesh said that I Will not go to school'.ऐसा करना गलत है | प्रथम पुरुष 'मैं' का अन्य पुरुष में 'He' मे परिवर्तन होता है |अत: सही अनुवाद 'Ganesh said that he will not go to school'.ऐसा होगा |

निष्कर्ष के रूप में कहा जाय तो स्त्रोत तथा लक्ष्य भाषा की प्रकृती के अनुसार वाक्य में पुरुष का प्रयोग सही रूप से होना चाहिए | अन्यथा सहजता के बदले कृत्रिमता आकर अनुवाद में समस्या बनती है |

v) विराम चिन्ह- वाक्य पढते समय कहां रुकना है और कितना रुकना है यह सूचित करनेवाले विरामचिन्हों का प्रयोग वाक्य में अनिवार्य होता है | वाक्य का अर्थ निश्चित करने के लिए तथा अनुवाद में वाक्य का सही अर्थ संप्रेषण करने के लिए विराम चिन्ह की जानकारी

ISSN–2278-5655
AMIERJ Aarhat Multidisciplinary International Education Research Journal
Volume–XIV, Special Issues – III (a) Nov – Dec, 2025
OPEN ACCESS Original Research Article

आवश्यक होती है | बिना इसकी जानकारी अनुवादित किया हुआ वाक्य अनर्थ निर्माण कर सकता है | उदा.'रुको, मत जाओ' इस वाक्य का अंग्रेजी अनुवाद 'Stop, Do not go' सही होगा,परंतु 'मत' के बाद अल्पविराम हो तो अंग्रेजी अनुवाद गलत होगा 'Do not stop, go' l तात्पर्य यह है कि एक विराम चिन्ह के गलत प्रयोग से संपूर्ण वाक्य के अर्थ का अनर्थ होता है| और विराम चिन्ह अनुवाद में समस्या बनते है |

vi) वर्तनी-अनुवाद में वर्तनी की गलती वाक्य का पूरा अर्थ बिघाड देती है | अत: अनुवादक को स्त्रोत भाषा से लक्ष्य भाषा की वर्तनी संबंधी जानकारी होना अनिवार्य है | यहां हिंदी के ऐसे वाक्य है जो वर्तनी की गलती के कारण अर्थ मे अनर्थ निर्माण करते हैं |

वाक्य का अपेक्षित अर्थ - वाक्य का गलत निकला हुआ अर्थ

1. वह अलि के पीछे गया | (अलि - भौरा)
   वह अली के पीछे गया | (अली - सहेली)
2. राम का कुल उंचा है | (कुल -घराना)
   राम का कुल उंचा है | (उंचा-किनारा)
3. वह दिन आया है | (दिवस)
   वही दिन आया | (गरीब)
4. मुझे प्रासाद चाहिए | (महल)
   मुझे प्रसाद चाहिए | (देवता को अर्पित वस्तू)
5. सुखी बेटी (आंनदी)
   सुखी बेटी (शुष्क)

vii) शीर्षक की समस्याएँ –'रचना में शीर्षक का वह स्थान है जो मंदिर में महाद्वार का होता है | जैसे किसी मंदिर या राजमहल की भव्यता उसके प्रवेशद्वार अर्थात महाद्वार से ज्ञात होती है वैसे रचना की भव्यता और श्रेष्ठता उसके शीर्षक से ज्ञात होती हैl' [8]

अनुवाद करते समय शीर्षक हमेशा मूल भाषा का हो l स्रोत भाषा में जो गुण,भाव है, वह लक्ष्य भाषा में लाना मुश्किल है | कई बार समानार्थी शब्द न मिलने से अनुवाद में समस्या निर्माण हो सकती है |कभी कभी पर्यायी शब्द तो मिलते है परंतु मूल भाव या विचार नही आते | डॉ.भोलानाथ तिवारी के विचार है कि 'हिंदी के प्रसिद्ध विद्वान आचार्य रामचंद्र शुक्ला ने अंग्रेजी के "Light of Asia" तथा "Riddle of the University" का हिंदी अनुवाद किया है और इन शीर्षको के अनुवाद है-"बुद्धचरित" तथा "विश्व प्रपंच" 'उनका अनुवाद जितना अच्छा बन पडा है नामो के शीर्षक उतने ही बराबर है | अगर अनुवाद "एशिया ज्योती" तथा "विश्व की पहेली " होता तो शायद अधिक अच्छे नाम होते |' [9] मराठी के प्रसिद्ध उपन्यासकार विश्वास पाटील की "झाडाझडती" रचना का डॉ.गजानन चव्हाण ने किया अनुवाद जिसे महाराष्ट्र राज्य हिंदी साहित्य अकादमी का पुरस्कार प्राप्त हुआ है | किंतु मराठी के इस रचना को "झाडाझडती" शीर्षक से ही अनुवादित किया गया | [10] क्यूकी इस शब्द मे जो भाव,बोध है वह पर्यायी शब्द देकर हिंदी मे लाना मुश्किल है |अत: ऐसे कई शीर्षक है जिन्हे लक्ष्य भाषा में समानार्थी शब्द न मिलने से अनुवाद में समस्या बन जाते है l

ISSN–2278-5655

AMIERJ Aarhat Multidisciplinary International Education Research Journal

Volume–XIV, Special Issues – III (a) Nov – Dec, 2025

OPEN ACCESS Original Research Article

3] सामाजिक - सांस्कृतिक समस्याएँ :

i] पूजा पाठ संबंधी सामग्री की समस्याएँ - साहित्य समाज का दर्पण है | उसी प्रकार प्रत्येक समाज की अपनी एक संस्कृति, परंपरा होती है l नालंदा विशाल शब्द सागर में संस्कृति का अर्थ दिया है-"किसी व्यक्ति, जाति, राष्ट्र आदि की वे सब बाते जो उसके मन,रुचि, आचार-विचार, कला-कौशल और सभ्यता के क्षेत्र में बौद्धिक विकास की सूचक होती है l"[11] भारतीय हिंदू समाज में मंदिर में जाकर कि गई पूजा-पाठ को महत्त्व दिया है l मूर्ति-पूजा, आरती, प्रसाद, दर्शन आदि को अपनी अपनी संस्कृति के अनुसार विभिन्न शब्द है l हिंदी अंग्रेजी भाषा में इनके लिए समान पर्यायी शब्द मिलना कठिन है l समान शब्द न मिलने से किया हुआ अनुवाद अपठनीय लगता है l

i] वेशभूषा शब्दावली की समस्याएँ – अलग-अलग राज्यो, देशो की अपनी अपनी वेशभूषा होती है l और वही उनकी पहचान होती है l एक ही देश के अंतर्गत आनेवाली अनेक प्रातो में अपनी वेशभूषा और विविधता दिखाई देती है l महाराष्ट्र की स्त्रियो की नऊवारी साडी अपनी पहचान है, परंतु उनके लिए हिंदी में सही पर्याय नही है, क्योंकि नऊवारी साडी और साडी में अंतर है l उसका सारी अनुवाद किया तो मूल शब्द से मिलता नही l अत: वेशभूषा संबधी शब्दों का अनुवाद करने में कठिनता दिखाई देती है l

iii] आचार –विचार की समस्याएँ - भारत देश विभिन्न संस्कृती, भाषाओं से भरा हुआ है l जिसके कारण उनमें आचार- विचार की विभिन्नता दिखाई देती है l प्रत्येक राज्य, देश की आचार, विचारो की भिन्नता अनुवाद में समस्या निर्माण कर सकती है l

iv] खान –पान की समस्याएँ – अपनी संस्कृति और भौगोलिक स्थिति के अनुसार हर व्यक्ति, समाज, राज्य, देश का अपना खान-पान होता है l भोजन में होने वाली चीजे समान बहुतांश मात्रा में समान होती है परंतु उससे बना हुआ पदार्थ अलग हो सकता है, जिसके लिए पर्याय शब्द नही है l उदा. मराठी का पिठले शब्द का हिंदी में अनुवाद करना कठिन है l

v] सांस्कृतिक परिवेश की समस्याएँ – संस्कृति और सभ्यता हर परिवेश की अलग अलग होती है l सामाजिक परिवेश में रिश्ते, परंपरा, तीज-त्योहार आदि से संबंधित शब्दावली होती है, जो अन्य समाज में नही होती l अत: सामाजिक, सांस्कृतिक शब्दों का अनुवाद एक जटील समस्या बनती है l

4] अ] साहित्यिक समस्याएँ

i] गद्यानुवाद की समस्याएँ – गद्य के अंतर्गत कहानी, उपन्यास, नाटक, निबंध, जीवनी, संस्मरण, आत्मकथा, रेखाचित्र ,डायरी आलोचना,हास्य व्यंग्य, नाटक,एकांकी आदि विधाएँ आती है |आज गद्यानुवाद का क्षेत्र बढ गया है | विशेषत: कथा साहित्य, उपन्यास ,नाटक जैसी विधाएँ अनुवाद के लिए पर्याप्त मात्रा में उपलब्ध है | परंतु सृजनात्मक साहित्य होने के बावजुद अनेक कठिनाइयां आती है | इस संदर्भ में डॉ.भोलानाथ तिवारी कहते है कि ,"यों तो सभी प्रकार के सृजनात्मक साहित्य का अनुवाद कठिन होता है ,किंतु सभी की कठिनाइयां समान नही होती

ISSN–2278-5655

AMIERJ Aarhat Multidisciplinary International Education Research Journal

Volume–XIV, Special Issues – III (a) Nov – Dec, 2025

OPEN ACCESS Original Research Article

|"[12] इस प्रकार शब्द ,ध्वनि, वाक्य, शीर्षक, कहावते,मुंहावरे ,लोकोक्तियां आदि की समस्याएँ गद्यानुवाद करते समय दिखाई देती है | गद्यानुवाद करते समय सिर्फ भाषाओं का ही ज्ञान पर्याप्त नही है बल्कि भिन्न भिन्न भाषाएं ,उनकी संस्कृती का ज्ञान भी होना आवश्यक है | शब्दकोश ,पर्यायीवाची कोश ,ज्ञान कोश ,विश्व कोश , मुंहावरे कोश आदि की उपलब्धता आवश्यक है | गद्य की सामग्री के अनुसार संदर्भ ग्रंथ भी उपलब्ध होने चाहिए | इन सब की अनुउपलब्धता के कारण गद्यानुवाद में समस्याएँ निर्माण होती है |

ii] पद्यानुवाद की समस्याएँ – पद्य अर्थात काव्य का अनुवाद करते समय भाव महत्त्वपूर्ण है |भाव के बिना किया हुआ अनुवाद शुष्क ,नीरस,तथा एकांगी दिखाई देता है | प्रबंध काव्य ,मुक्तक काव्य ,खंड काव्य ,छंद तथा छोटी छोटी स्वतंत्र काव्य विधाओं का अनुवाद करते समय गेयता ,संगीतात्मकता ,भावात्मक अनुभूति आदि के अनुसार अनुवाद करना कठिन है | अत : काव्य का अनुवाद कठोर परिश्रम ,सृजन क्षमता एवं प्रतिभा की मांग करता है ,जिसके अभाव के कारण अनुवाद में समस्याएँ निर्माण हो सकती है |

ब] साहित्येतर समस्याएँ :

i] वैज्ञानिक एवं तकनीकी की समस्याएँ – विज्ञान मानव जीवन का अविभाज्य अंग है|पृथ्वी से लेकर आकाश तक की सैर वैज्ञानिक विकास ही है|यह सब किसी एक भाषा में निहित नही है,दुनिया भर की कई भाषाओं में वैज्ञानिक एवं तकनीकी सामग्री उपलब्ध है | इसका क्षेत्र इतना व्यापक है कि इन विषयों में अनुवाद करना कठिन बन जाता है | साथ ही इसमें वस्तुनिष्ठता ,तथ्यपरकता ,प्रामाणिकता ,स्पष्टता आदि तत्वो का होना आवश्यक है | वैज्ञानिक विषय में अनुवाद करते समय पारिभाषिक शब्दावली का अभाव ,विषय ज्ञानी की कमी हो तो अनुवाद में समस्याएँ निर्माण हो सकती है |

ii] वाणिज्य एवं बैंक अनुवाद की समस्याएँ – "वाणिज्य – अनुवाद के अंतर्गत मुख्यत: व्यापार ,उद्योगधंधे ,बैंक,विज्ञापन ,फिल्म ,पर्यटन तथा व्यवसाय आदि क्षेत्र से संबंधित सामग्री का अनुवाद आता है |" [13] इसके साथ व्यापार से संबंधित दस्तावेज ,पत्र ,बैंकिंग निविदाएँ ,सूचनाएँ आदि की सामग्री का अनुवाद एक जटील समस्या है |

iii] पारिभाषिक शब्दावली की समस्याएँ - पारिभाषिक शब्दावली सुस्पष्ट और सुनिश्चित होती है |इसमें मूल के विषय का सही संप्रेषण ,निश्चय तथा उद्देश्य स्पष्ट होना चाहिए | ऐसा न हो तो अनुवाद में समस्याएँ निर्माण होती है | अतिव्यापक अर्थ देनेवाले शब्द ,एकार्थी शब्द का अनुवाद करना कठिन होता है |

निष्कर्ष:

अनुवाद के कार्य में उपर्युक्त समस्याओं पर विचार किया जाये तो वह अनुवाद अधिक परिपूर्ण और विश्वसनीय लगेगा l यह अनुवादरुपी यज्ञ अधिकाधिक प्रज्वलित होने के लिए समय समय पर वार्ता और संगोष्टीयों का आयोजन करने की आवश्यकता है | कठीण शब्दों का अनुवाद करने से बचना चाहिए l अगर ज्यादा से ज्यादा स्थानीय और देशज शब्दों

ISSN–2278-5655

AMIERJ Aarhat Multidisciplinary International Education Research Journal

Volume–XIV, Special Issues – III (a) Nov – Dec, 2025

OPEN ACCESS Original Research Article

का प्रयोग करें तो वह अनुवाद अधिक उत्तम बन जाता है | जिसके कारण अनुवाद के प्रति लोगों की आस्था,प्रेम बढ सकता है| अनुवाद एक कर्मशील और ज्ञानशील विधि है जिसे निरंतर प्रयास से आप सुंदर,आकर्षक और अर्थपूर्ण बना सकते हो 1 संक्षेप मे कहा जाये तो अनुवाद यह एक यज्ञ है,जिसमे प्रयास, ज्ञान की जडी-बुटीयां डाले तो वह प्रज्वलित हो सकेगा |

संदर्भ ग्रंथ-सूची :

1) *डॉ.चव्हाण अर्जुन, अनुवाद:समस्याएँ एवं समाधान, अमन प्रकाशन, 104A/118,रामबाग, कानपुर 208012,प्रथम संस्करण, 1999,पृष्ठ क्रं. 3*
2) *डॉ. तिवारी भोलानाथ, अनुवाद विज्ञान, शब्दकार प्रकाशन, दिल्ली, चतुर्थ संस्करण 1984,पृष्ठ क्रं. 16*
3) *डॉ. शर्मा राजमणि, अनुवाद विज्ञान सिद्धांत और प्रायोगिक संदर्भ, प्रकाशक संजय बुक सेंटर, के-38/6,गोलघर, वाराणसी, प्रथम संस्करण, 1994,पृष्ठ क्रं.1*
4) *डॉ.अय्यर एन. ई. विश्वनाथ, अनुवाद कला, प्रभात प्रकाशन, चावडी बाजार, दिल्ली-06,प्रथम संस्करण 1987,पृष्ठ क्रं. 33*
5) *डॉ. सुरेश कुमार, अनुवाद सिद्धांत की रूपरेखा, 4695,21-ए, दरियागंज, नयी दिल्ली-110002,तृतीय संस्करण1996,पृष्ठ क्रं. 17*

कोश-ग्रंथ :

6) *अशोक बाल हिंदी शब्दकोश संपादक डॉक्टर शिवप्रसाद भारद्वार शास्त्री शास्त्री रोड अशोक प्रकाशन 2615,नई सडक,दिल्ली -06, संस्करण-2005,पृष्ठ क्रं. 637*
7) *सं.तिवारी डॉ.भगवानदास ,संक्षिप्त भूषण ,साहित्य भवन ,प्रा.लि.इलाहाबाद ,द्वितीय संस्करण ,1980 ,पृष्ठ क्रं.99*
8) *डॉ.चव्हाण अर्जुन, अनुवाद:समस्याएँ एवं समाधान, अमन प्रकाशन, 104A/118,रामबाग, कानपुर 208012,प्रथम संस्करण, 1999,पृष्ठ क्रं. 57*
9) *डॉ. तिवारी भोलानाथ, अनुवाद विज्ञान, शब्दकार प्रकाशन, दिल्ली, चतुर्थ संस्करण 1984,पृष्ठ क्रं. 168*
10) *पाटील विश्वास , (अनु.डॉ.गजानन चव्हाण), झाडाझडती ,वाणी प्रकाशन ,नई दिल्ली , प्रथम संस्करण,1982*
11) *सं. नवलजी, नालंदा विशाल शब्द सागर, आदिश बुक डेपो, दिल्ली,1988*
12) *डॉ. तिवारी भोलानाथ, अनुवाद विज्ञान, शब्दकार प्रकाशन, दिल्ली, चतुर्थ संस्करण 1984,पृष्ठ क्रं. 141*
13) *डॉ.चव्हाण अर्जुन, अनुवाद चिंतन , अमन प्रकाशन,कानपुर, प्रथम संस्करण, 1998 ,पृष्ठ क्रं.74*

कोश ग्रंथ :

1. *ऑक्सफ़र्ड अंग्रेजी-हिंदी शब्द कोश,ऑक्सफर्ड युनिव्हर्सिटी प्रेस, नई दिल्ली-1993*
2. *ऑक्सफ़र्ड हिंदी-अंग्रेजी शब्द कोश,ऑ क्स फर्ड युनिव्हर्सिटी प्रेस, नई दिल्ली-2003*

Cite This Article:

प्रा. हिंगमिरे स्ने. प्र. (2025). अनुवाद की समस्याएँ **In Aarhat Multidisciplinary International Education Research Journal**: Vol. XIV (Number VI, pp. 116–123).

ISSN–2278-5655

AMIERJ Aarhat Multidisciplinary International Education Research Journal

Volume–XIV, Special Issues – III (a) Nov – Dec, 2025

OPEN ACCESS Original Research Article

अनुवाद की समस्याएँ

** डॉ. अजित विट्ठल लिपारे,*

** सहायक प्राध्यापक, हिंदी विभाग, सदगुरू गाडगे महाराज कॉलेज, कराड.*

सारांश :

भाषा न केवल मनुष्य की भावाभिव्यक्ति का सशक्त माध्यम है., अपितु समाज, संस्कृति, इतिहास और अनुभवों का संग्रह भी है। भारतीय संविधान की आठवीं अनुसूचि के अनुसार बाईस अधिकारिक भाषाओं को मान्यता मिल चूकी है, जिसमें आज विपुल मात्रा में साहित्य सृजन हो रहा है। भाषाओं के विकास के कतिपय काराणों में से एक कारण है-अनुवाद। अनुवाद न केवल शब्दों का परिवर्तन है बल्कि मनुष्य की सभ्यता जितना ही पुराना एक सृजनात्म सेतु है, जो दो भाषाओं एवं संस्कृतियों को जोडने का प्रयास करता है। अत: उसे 'संस्कृति संवाद' भी कहा जाता है। यह एक बौद्धिक, रचनात्मक एवं संवेदनशील प्रक्रिया है। इसमें न केवल एक भाषा की सामग्री को दूसरी भाषा में रूपांतरित किया जाता है, अपितु उस भाषा की सांस्कृतिक और भावात्मक गहराई को पूरी सही अर्थवत्ता के साथ स्थानांतरित करना पडता है। एक सफल अनुवादक को यह कार्य करते वक्त अनेकानेक समस्याओं से रू-ब-रू होना पड़ता है, जिसमें प्रमुख कारण है भाषाओं की भिन्न प्रकृति। विभिन्न भाषा-भाषि मानव समूहों में सांस्कृतिक एवं अभिव्यक्तिगत कारणों से भिन्नताएँ हो जाती है, जिसकारण अनुवादक को शब्दानुवाद, अर्थानुवाद, सामाजिक-सांस्कृतिक तत्वानुवाद, पारिवारिक रिश्तों का अनुवाद, मुहावरों-लोकोक्तियों आदि का अनुवाद करते समय अनेक समस्याओं का सामना करना पड़ता है।

बीज शब्द- *अनुवाद, समस्या, परिवर्तन, भाषा, समाज, संस्कृति, अनुवादक, अभिव्यक्ति, शैली, अर्थ, मुहावरा*

Copyright © 2025 The Author(s): This is an open-access article distributed under the terms of the Creative Commons Attribution 4.0 International License (CC BY-NC 4.0) which permits unrestricted use, distribution, and reproduction in any medium for non-commercial use provided the original author and source are credited.

लोकोक्ति, स्त्रोत एवं लक्ष्य भाषा।

मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है। समाज से परे वह अपना जीवन-यापन नहीं कर सकता। अन्य प्राणियों की तुलना में उसे एक श्रेष्ठ वरदान प्राप्त हो चूका है-भाषा। केवल मनुष्य ही अपने विचार एवं भावनाओं की अभिव्यक्ति हेतु भाषा का प्रयोग कर सकता है। भाषा ही एक ऐसा सेतु है, जिसके माध्यम से वह अपने विचार एवं भावनाएँ अभिव्यक्त कर सकता है एवं दूसरों के विचार एवं भावनाओं को सुन एवं समझ सकता है।भारत एक बहुभाषी देश है। आज पूरे भारत में बाईस भाषाओं का प्रचलन देखा जाता है। इसमें हर एक भाषा साहित्यिक दृष्टिकोण से संपन्न एवं समृद्ध है। किसी भी भाषा के विकास के लिए उसमें विपुल मात्रा में साहित्य सृजन होना आवश्यक है, उसीप्रकार उस भाषा के साहित्य का अन्य भाषाओं में अनुवाद होना भी जरूरी है। अनुवाद एक ऐसा सशक्त माध्यम

ISSN–2278-5655

AMIERJ Aarhat Multidisciplinary International Education Research Journal

Volume–XIV, Special Issues – III (a) Nov – Dec, 2025

OPEN ACCESS Original Research Article

है जिससे कोई भी भाषा व्यष्ठि से समष्ठि की ओर अग्रेसित होती है। अनुवाद में न केवल शब्दों का परिवर्तन होता है अपितु दो भाषाओं की सामाजिक, सांस्कृतिक एवं साहित्यिक धाराओं का सुंदर मिलाप भी होता है।

अनुवाद शब्द का गठन 'वद' धातु में 'अनु' उपसर्ग जोडने से हुआ है। इसमें 'वद' का शाब्दिक अर्थ है 'कथन' और 'अनु' का 'पीछे, पुन:, समान अथवा अनुरूप'। अर्थात अनुाद शब्द का व्युत्पत्तिमूलक अर्थ है-'किसी के कहने के बाद कहना'। अनुवाद शब्द को परिभाषित करते हुए डॉ. अर्जुन चव्हाण लिखते है, "एक भाषा में कही गयी बात को किसी दूसरी भाषा में समान रूप से या उसके अनुरूप फिर से कहना अनुवाद है।"[1] अनुवाद यह एक ऐसी प्रकिया है जिसके लिए अंग्रेजी में 'ट्रान्सलेशन' (Translation) शब्द प्रयक्त किया जाता है, जो लैटिन भाषा के 'ट्रान्स'(Trans) तथा 'लेशन'(Lation) के संयोग से बना है, जिसका अर्थ है 'पार ले जाना'। मराठी में अनुवाद के लिए 'भाषांतर', फ्रेंच में ' ट्रडुक्शन', अरबी में 'तर्जुमा' शब्द प्रयुक्त किए जाते हैं। राजपाल हिंदी शब्दकोश के अनुसार अनुवाद शब्द का अर्थ है, "भाषांतर, रूपांतर, समर्थन, दुहराना।"[2] अनुवाद यह एक ऐसी रचनात्मक, बौद्धिक एवं संवदेनशील प्रक्रिया है, जिसमें किसी स्त्रोत भाषा का लक्ष्य भाषा में अनुवाद करते समय केवल उस भाषा की सामग्री को दूसरी भाषा में रूपांतरित ही नहीं किया जाता बल्कि उस भाषा की सांस्कृतिक एवं भावात्मक गहराई को उसकी पूरी अर्थवत्ता के साथ स्थानांतरित किया जाता है। यह कार्य सीधा-सरल नहीं होता। अनुवाद का यह कार्य मूल लेखन से कठिनतर होता है ऐसा कहना अतिशयोक्ति नहीं होगी। किसी भी रचना का मूल लेखक अपनी इच्छा एवं रूचि के अनुसर शब्द, भाव एवं वाक्यों में बदलाव कर सकता है। उसमें काट-छाँट करके उसे मनचाहा रूप दे सकता है जबकि अनुवादक को मूल आशय में बंधे रहना पड़ता है। व्यक्त आशय को अपने शब्दों में ढ़ालना पड़ता है। कभी-कभी तो यह मूल लेखन से भी कठिन जान पड़ता है। अत: किसी शिशु को जन्म देने की अपेक्षा उसका पालन-पोषन करना जितना दुष्कर कार्य है। एक सफल अनुवादक को अनुवाद करते समय कतिपय कठिनाइयों एवं समस्याओं से गुजरते हुए यह दुष्कर कार्य करना पड़ता है। समान्यत: अनुवाद करते समय निम्नांकित समस्याएँ सामने आती है।

शब्दानुवाद की समस्याएँ :

शब्द भाषा की मौलिक एवं सार्थक इकाई है। वाक्यों की संचना करते वक्त इसका उपयोग किया जाता है। तथा विचारात्मक सूचनाओं के आदान-प्रदान हेतु शब्द सहायक बन जाते हैं। सामान्यत: जहाँ एक या एक से अधिक ध्वनियाँ मिलकर एक विशिष्ठ अर्थ को प्रकट करती है तब उसे 'शब्द' कहते है। दूसरे शब्दों में कहा जाय तो एकाधिक वर्णों के मेल से बनी स्वतंत्र सार्थक इकाई 'शब्द' कहलाती है। अनुवाद की प्रक्रिया में शब्द और उससे अभिप्रेत होनेवाले अर्थ को अनन्य साधारण मेहत्व है। शब्दानुवाद करते समय शब्द का अभिधेयार्थ लेने से अनेक समस्याएँ व्युत्पन्न होती है क्योंकि प्रत्येक शब्द के लिए अन्य भाषा में समान शब्द मिलेंगे यह धारणा निर्मूल है। अकसर यह समस्या विज्ञान, तकनीकी, विधि , गणित आदि विषयों का अनुवाद करते वक्त सामने आती है। दूसरी ओर प्रत्येक भाषा की भाषिक संरचना अलग होने से भी अनुवाद में कठिनाइयाँ आ जाती है। जैसे 'I am reading a book' का 'मैं हूँ पढ रहा एक पुस्तक'। ऐसा अंग्रेजी का हिंदी में शब्दों

ISSN–2278-5655

AMIERJ Aarhat Multidisciplinary International Education Research Journal

Volume–XIV, Special Issues – III (a) Nov – Dec, 2025

OPEN ACCESS Original Research Article

के क्रमानुसार अनुवाद किया है जो उचित नहीं है। यहाँ लक्ष्य भाषा की प्रकृति की उपेक्षा की गई है।

अर्थानुवाद की समस्याएँ :

अनुवाद में मुख्यत: अर्थ का संप्रेषण होता है। अत: अर्थ को मूल रूप से अनुवाद की नींव कहा जाता है। अनुवादकों को अर्थ का अन्तरण करते समय शब्दानुवाद करना पड़ता है। स्त्रोत भाषा में निहित अर्थ का लक्ष्य भाषा में रूपांतरण करना दुष्कर कार्य है। इस संदर्भ में डॉ. जी. गोपीनाथन लिखते है, "प्राय: स्त्रोत भाषा की अभिव्यक्ति से जो अर्थ निकलता है, वह लक्ष्य भाषा की अभिव्यक्ति से व्यक्त होनेवाले अर्थ की तुलना में या तो विस्तृत होता है, या संकुचित या कुछ भिन्न होता है, या फिर इनमें से दो या अधिक का मिश्रण।"[3] अनेकार्थक शब्दों का लक्ष्य भाषा में परिवर्तन करते वक्त उस रचना के सृजनकर्ता को क्या अभिप्रेत है इसका ध्यान रखना पड़ता है। स्त्रोत भाषा की अर्थवत्ता को खोए बगैर यह कार्य करना पड़ता है। व्यंग्यार्थ के अनुवाद की समस्या अर्थानुवाद की मुख्य समस्या है। अनुवाद करते समय अभिधेयार्थ के साथ-साथ लक्ष्यार्थ और व्यंग्यार्थ को भी लक्ष्य पाठ में संप्रेषित करना आवश्यक हो जाता है। विशेषकर कविताओं में अभिधेयार्थ के बजाय रस, भव अर्थात व्यंग्यार्थ अधिक महत्वपूर्ण होता है।

सामाजिक-सांस्कृतिक समस्याएँ :

विश्व में अनेकानेक भाषाओं का प्रचलन देखा जाता है और हर एक भाषा अपने सामाजिक-सांस्कृतिक तत्त्वों से लेस है। मानव जिस प्रकार से किसी-न-किसी सभ्यता एवं संस्कृति को लेकर आगे चलता है उसके समान भाषा भी किसी-न-किसी सभ्यता एवं संस्कृति के परिवेश में प्रवाहमान होती है। प्रत्येक भाषा का एक विशिष्ट सांस्कृतिक परिवेश होता है जिसके निर्माण में उस भाषा को बोलने वालों की सामाजिक, एतिहासिक, भौगोलिक परिस्थितियाँ महत्वपूर्ण होती है। संसार की प्रत्येक भाषा में ऐसे सामाजिक-सांस्कृतिक शब्द होते है जिनके पीछे एक सुदीर्घ एतिहासिक परंपरा होती है। आधुनिक युग के प्रसिद्ध नृतत्वविज्ञानी मैलिनोव्स्की ने इस समस्या पर गंभीरता से विचार-विमर्श किया है। उन्होंने ट्रोबियान द्विप के आदिवासियों में प्रचलित भाषा के विशिष्ट शब्दों का अनुवाद करते समय 'साहचर्य का संदर्भ' इस अपने अर्थ-परक सिद्धांत को रूप दिया है। मैलिनोव्स्की ऐसा मानते है कि शब्दों का अनुवाद करते समय उसमें निहित सांस्कृतिक संदर्भ महत्वपूर्ण होते हैं जो उस भाषा को बोलनेवालों के रीति-रिवाज एवं आचार-विचार पर आधारित होते है। सारगर्भित रूप से कहा जाय तो मैलिनोव्स्की के नुसार अनुवाद मतलब दो भाषाओं की सांस्कृतिक संदर्भों का ऐक्य या समतुल्यता है। किसी भी मूल रचना का सामाजिक-सांस्कृतिक परिवेश उस रचना के लेखक की स्वानुभूति को अनुवाद में एक अनुवादक तथा उसकी अनुभूति एवं अनुदित रचना के सांस्कृतिक परिवेश के माध्यम से प्रस्तुत करता है। अब मूल एवं अनुदित रचना का मिलान किया जाए तब रचना के सारे अंग जैसे की वैसे उसमें आने आवश्यक है, किन्तु किसी जनता के रीति-रिवाज, उत्सव-पर्व-त्यौहार अन्य सांस्कृतिक संदर्भों से संबंधित वाक्य, शब्द, संवाद, मुहावरे आदि के अनुवाद में कठिनाइयाँ उपस्थित हो जाती है।

पारिवारिक रिश्ते-नाते संबंधित शब्दावली की समस्याएँ :

रिश्ते-नाते की शब्दावली का अनुवाद करते समय अनुवादक को कतिपय कठिनाइयों से गुजरना पड़ता है क्योंकि इसके पीछे सामाजिक-सांस्कृति व्यवस्था होती है। हिंदी में 'दादा',

ISSN–2278-5655

AMIERJ Aarhat Multidisciplinary International Education Research Journal

Volume–XIV, Special Issues – III (a) Nov – Dec, 2025

OPEN ACCESS Original Research Article

'बाबा' जैसे संबोधनपर शब्द मलयालम में नहीं होते। हर एक समाज में रिश्तों की अपनी-अपनी अहमियत होती है। इस संदर्भ में डॉ.जी.गोपीनाथन लिखते है, "हिंदी समाज में चाचा को जितना आदर और प्यार होता है उतना शायद मामा को नहीं। इसलिए नेहरू मामा नहीं कहा जाता, नेहरू चाचा ही कहा जाता है। लेकिन मलयालम में इसका अनुवाद करते समय नेहरू मामन या नेहरू अम्मावन करना पड़ेगा क्योंकि केरलीय मामा को अधकि आदर देते है।"[4]

मुहावरों और लोकोक्तियों के अनुवाद की समस्याएँ :

भाषा-शैली में गतिशिलता एवं रोचकता व्युत्पन्न करने हेतु मुहावरे और लोकोक्तियों का प्रयोग किया जाता है। साथ ही सशक्त अभिव्यक्ति के माध्यम के रूप में इन दोनों को (मुहावरा, लोकोक्ति) अपनाया जाता है। मुहावरे एवं लोकोक्तियों के संदर्भ में डॉ. सौ. शकुंतला पांचाल लिखती है, "महावरे कम-मे-कम शब्दों में अधिक अर्थ की प्रतीत कराता है।.....लोकोक्ति की विशेषता यह होती है कि यह बोल-चाल की भाषा में प्रयुक्त होती है, फिर रूढ़ हो जाती है और अपनी लोकप्रियता के कारण साहित्यिक भाषा में स्थान प्राप्त कर लती है।"[5]

समस्त भाषाओं की तुलना करने पर अनेक भाषाओं मे परस्पर मिलते-जुलते मुहावरे और लोकोक्तियाँ मिलती है, परंतु इसके साथ-साथ उस भाषाओं को बोलने वालों की सांस्कृतिक परंपराओं के कारण विशिष्ठ मुहावरें एवं लोकोक्तियों का प्रचलन भी देखा जाता है। हिंदी और अन्य भारतीय भाषाओं में यही स्थिति पायी जाती है। ऐसे वक्त अनुवाद का काम कठिन हो जाता है। जहाँ लक्ष्य भाषा में स्त्रोत भाषा में प्रयुक्त लोकोक्ति एवं मुहावरा मिलता है वहाँ अनुवादक उसे सीधे रूप से अपना लेता है। कभी-कभी उसे शब्दानुवाद का भी आधार लेना पड़ता है किन्तु ऐसा करते वक्त उसे अर्थतत्त्व का ध्यान रखना पड़ता है। तो कभी-कभी शब्दानुवाद से अर्थ संप्रेषण में कठिनाई आने पर अनुवादक भावानुवाद की प्रवृत्ति को अपनाता है।

शैलीपरक समस्याएँ :

विद्वानों ने अनुवाद के क्षेत्र में जितना महत्व अर्थ को दिया है उतना ही शैली को भी दिया है। अनुवादक को मूल लेखक की शैली के हर एक पहलू को सूक्ष्मता से समझना आवश्यक है। तभी वह 'शैलीगत समतुल्यता' प्रस्थापित कर सकता है किन्तु ऐसा करते वक्त उसे अनेक कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है। अत: इससे स्त्रोत भाषा और लक्ष्य भाषा में खाई व्युत्पन्न हो जाने का डर भी रहता है। अधिकतर विद्वान यह मानते हैं कि शैली तत्व का संबंध केवल कविता एवं सृजनात्मक साहित्य का अनुवाद करने में महत्वपूर्ण होता है, किन्तु वास्तविक दृष्टि से देखा जाय तो वैज्ञानिक साहित्य, व्यावसायिक पत्र और कानूनी अभिलेखों में भी वह उतना ही आवश्यक है। दो भाषाओं के बीच जो शैलीगत अंतर दिखाई देता है वह एक जटिल प्रक्रिया है। अनुवादकों को इन सबका सामना करना पड़ता है।

अन्य समस्याएँ :

अनुवाद के क्षेत्र में उपर्युक्त समस्याओं के अतिरिक्त कुछ और समस्याओं का भी समाना अनुवादक को करना पड़ता है। जो निम्नवत है-

अनुवादक को सबसे पहले सुयोग रचना का चुनाव करने की समस्या का सामना करना पड़ता है। उपन्यास, कहानी, नाटक, निबंध आदि विधाओं में कौन सी विधा अपनी सृजन

ISSN–2278-5655

AMIERJ Aarhat Multidisciplinary International Education Research Journal

Volume–XIV, Special Issues – III (a) Nov – Dec, 2025

OPEN ACCESS Original Research Article

क्षमता के अनुरूप है इसको तय करना नितांत आवश्यक है। इसमें अगर कुछ गलती हुई तो अनुवाद रूपी समस्या का पर्वत सामने खड़ा रहेगा। अत: यहाँ पर आवश्यक है कि अनुवादकों को अपनी-अपनी रूची, शब्द संपदा एवं भाषा पर अधिकार का विचार करके साहित्यिक विधा का चयन करना चाहिए। मूल रचना के वातावरण को यथार्थ रूप से अनुदित कृति में चितारना भी अनुवादक के सामने बडी चुनौती है। केवल भाषा के रूपांतरन से, पर्यायवाची शब्दों के प्रस्तुतीकरण करने मात्र से या आशय का वर्णन करने से अनुवाद का कार्य पूरा नहीं होता। बल्कि मूल की सब बातें जैसी की वैसी आनी चाहिए, न ही उसमें में कुछ छूटने पायें अथवा बिगड़ने पाये। कभी-कभी पर्व, उत्सव आदि स्थलों में केवल अभिधेयार्थ या अभिधा शक्ति से काम नहीं चलता वहाँ लक्ष्यार्थ या लाक्षणिक शब्दावली का सहारा लेना ही अनुवादक को उपादेय होगा। अनुवादक को मूल भाषा एवं अनुदित भाषा दोनों का समृद्ध ज्ञान होना, उसमें निष्णात होना, दोनों पर समान अधिकार होना एवं दोनों में अभिव्यक्ति की सक्षमता का होना आवश्यक है। सामान्यत: ऐसा माना जाता है कि अनुवाद भाषा अनुवादक की मातृभाषा होती है जिसमें वह सोचने-विचार करने की क्रिया करता है। ऐसे अनुवाद में स्वयमेव ममता एवं निजत्व निखर उठता है। कभी-कभी प्रतिभासंपन्न अनुवादकों का दो या दो से अधिक भाषाओं में प्रभुत्व होता है। ऐस अनुवादकों की अनुवाद की भाषा उनकी मातृभाषा से भिन्न होने के कारण वे उसे अध्ययन से अर्जित करते हैं। ऐसे अनुवाद भाषा में शरीर तो होता है लेकिन आत्मा खो जाती है।

शाब्दिक प्रभुत्व एवं पर्यायवाची शब्दों का समृद्ध सागर अनुवादक के लिए केवल आवश्यक ही नहीं बल्कि अनिवार्य भी है। कहावतों-मुहावरों का अनुवाद करने में समानार्थी, तत्सम, प्रभावशाली, लाक्षणिक शब्दों की आवश्यकता होती है। जैसे मराठी कहावत 'खायला कार अन भूईला भार' को हिंदी में 'काम का न काज का, दुश्मन अनाज का' कहाना तर्कसंगत होगा।

सार रूप से कहा जाय तो किसी भी भाषा की साहित्यिक समृद्धि से परिचित होने में अनुवाद की उपादेयता नि:संदिग्ध है। अनुवाद ही वह सशक्त माध्यम है जिसकी सहायता से किसी भी राष्ट्र की साहित्यिक, सांस्कृतिक विचारधारा को समझा जा सकता है। अत: अनुवाद यह एक ऐसा सेतु है जो अनेकता में एकता स्थापित करने का महत्वपूर्ण कार्य करता है। अनुवाद का यह कार्य जितना सीधा-सरल लगता है उतना ही जटिल एवं विभिन्न प्रकार की समस्याओं से घिरा हुआ भी है। एक प्रतिभा संपन्न अनुवादक इन समस्याओं के सागर को पार करते हुए यह पुनित कार्य तन और मन से करता है।

संदर्भ सूची :

1. *चव्हाण (डॉ.) अर्जुन- अनुवाद चिंतन, अमन प्रकाशन, 104अ/ 118, रामबाग, कानपुर-208012, प्र. सं. 1998, पृ.सं. 38*
2. *संपा. बाहरी (डॉ.) हरदेव- राजपाल हिंदी शब्दकोश, पृ.सं. 32*
3. *गोपीनाथन (डॉ.) जी.-अनुवाद सिद्धांत एवं प्रयोग, लोकभारती प्रकाशन, पहली मंजील, दरबारी बिल्डींग, महात्मा गांधी मार्ग, इलाहाबाद 211001, ष. सं. 2008, पृ.सं.56*

ISSN–2278-5655

AMIERJ Aarhat Multidisciplinary International Education Research Journal

Volume–XIV, Special Issues – III (a) Nov – Dec, 2025

OPEN ACCESS Original Research Article

4. *गोपीनाथन (डॉ.) जी.-अनुवाद सिद्धांत एवं प्रयोग, लोकभारती प्रकाशन, पहली मंजील, दरबारी बिल्डींग, महात्मा गांधी मार्ग, इलाहाबाद 211001, ष.सं. 2008, पृ.सं.69*

5. *पांचाल (डॉ.) सौ. शकुंतला- हिंदी अनुवाद एवं भाषिक संरचना, अभय प्रकाशन, 128/224, एच ब्लॉक, किदवाई नगर, कानपुर 208011, प्र. सं. 2005, पृ.सं.46*

Cite This Article:

डॉ. लिपारे अ. वि. (2025). *अनुवाद की समस्याएँ* **In Aarhat Multidisciplinary International Education Research Journal**: Vol. XIV (Number VI, pp. 124–129).

ISSN–2278-5655

AMIERJ Aarhat Multidisciplinary International Education Research Journal

Volume–XIV, Special Issues – III (a) Nov – Dec, 2025

OPEN ACCESS Original Research Article

नाटक और अनुवाद

** वैशाली राजेन्द्र मोहिते,*

** शोधार्थी, आबासाहेब गरवारे महाविद्यालय , पुणे.*

सारांश :

21वीं शती में तो हिंदी में नाटकों के अनुवाद की प्रक्रिया बड़ी व्यापक और तेज हुई। हिंदी अनुवाद के कारण विभिन्न भारतीय भाषा में परस्पर अनुवाद की प्रवृत्ति पैदा हुई और निरंतर बढ़ती गई क्योंकि हिंदी अनुवाद के सहारे किसी भी भारतीय भाषा में अनुवाद सहज ही संभव हो जाता है। संस्कृत और उर्दू के अतिरिक्त बंगला, मराठी, कन्नड़ आदि भाषाओं के नाटक हिंदी में अत्यंत लोकप्रिय है। अन्य सभी विधाओं से कई मायने में नाटक विधा अलग और अनोखी है। इस अनोखेपन के कारण विशेष सतर्कता और कौशल्य की आवश्यकता होती हैं। साहित्य की अन्य विधा पढी और सुनी जाती है, वही नाटक खेल और देखे जाते हैं। इसलिए नाटक अनुवाद में खिलाड़ीपन आवश्यक है। तभी नाटक देखने में आनंद , रसास्वादन ले सकते हैं। परंतु गंभीर नाटक के अनुवाद में पांडित्य से पूर्ण भाषा से पहरेज आवश्यक हो जाता है ।

कभी विदेशी नाटकों की देसीकरण तो कभी देसी नाटकों का विदेश कारण हुआ। विदेशी नाटको को देखकर, प्रभावित होकर देसी नाटक लिखे है। कई राष्ट्रीय नाटक अंतरराष्ट्रीय बने ,तो कई अंतरराष्ट्रीय नाटक राष्ट्रीय बने क्योंकि नाटकों में मानव के गहन तल की भावनाएं एवं प्रतिक्रिया से होती है और वह सार्वभौम तथा शाश्वत भी है।

अनुवाद के माध्यम से कोई भी किसी भी कोने में बैठकर देश-विदेश में उपलब्ध ज्ञान और सूचनाओं का बड़ी सरलता से आदान प्रदान कर सकता है। वर्तमान युग में मानव विकास में अनुवाद का महत्वपूर्ण स्थान है। अनुवादक सतर्कता बरतकर अपरिचित व्यक्ति को भी उस भाषा के ज्ञाता के समान आनंद की अनुभूति कराता है।

बीज शब्द : *नाटक, अनुवाद, रसास्वादन ,समाज, परिवर्तन, विचार, देशी, विदेशी, भाषा, बोली, संस्कृति, साहित्य*

Copyright © 2025 The Author(s): This is an open-access article distributed under the terms of the Creative Commons Attribution 4.0 International License (CC BY-NC 4.0) which permits unrestricted use, distribution, and reproduction in any medium for non-commercial use provided the original author and source are credited.

प्रस्तावना :

21वीं शती अनुवाद की शती कहा गया है। संप्रेषण की विभिन्न आविष्कारों ने वसुदधैवकुटुंबकम की उपनिषदिय संकल्पना को साकार किया। बहुभाषी भारत में अनुवाद की अनिवार्यता है। अनुवाद आज की व्यक्ति की सामाजिक आवश्यकता है। सिमटते हुए संसार में अनुवाद की भूमिका महत्वपूर्ण है क्योंकि दो भिन्न भाषा समुदायों के बीच विचारों के आदान-प्रदान के लिए अनुवाद की सहायता लेनी पड़ती है। इन्हें आपस में

ISSN–2278-5655

AMIERJ Aarhat Multidisciplinary International Education Research Journal

Volume–XIV, Special Issues – III (a) Nov – Dec, 2025

OPEN ACCESS Original Research Article

जोड़ने का कार्य अनुवाद करता है। मराठी के विभिन्न नाटकों का हिंदी में अनुवाद हुआ है। उनका रसास्वादन हुआ है। विश्व की किसी भी भाषा की श्रेष्ठ कृति विश्व के कोने-कोने में पहुंचने का माध्यम अनुवाद है। संसार में विभिन्न भाषा भाषी अन्य समुदायों को संपर्क करने के लिए अनुवाद का उपयोग कर रहे है।

मानव सभ्यता के साथ नाटक और मंच का विकास हुआ और इसी परंपरा को जोड़ते हुए नाट्य साहित्य को प्रगतिशील रूप में अंकित किया गया।

नाटक :

'काव्येषु नाटकं रम्य' महाकवि कालिदास की यह उक्ति नाट्य विधा की महिमा एवं प्रभविष्णुता को व्यंजित करती है। नाटक में दृश्य एवं श्रव्य दोनों माध्यमों का प्रयोग किया जाता है। जिससे कथानक सशक्त और जीवंत अभिव्यक्ति करता है। यह विधा संस्कृत से होती हुई हिंदी साहित्य में आई और हिंदी साहित्य के आधुनिक काल में इसका पर्याप्त विकास हुआ। नाटक दृश्य श्रव्य होने से जीवन के अधिक निकट है। इसलिए यह विद्या मुझे आकृष्ट करती है। इस नाटकों में सामाजिक एवं राजनीतिक विद्रूपताओं, व्यवस्था के खोखलेपन, दोगली नैतिकता, रिश्तो के बदलते समीकरण आदि की यथार्थ अभिव्यक्ति मिलती है। और रंगमंच दृष्टि से नाटकों का अध्ययन करना अधिक महत्वपूर्ण होता है।

नाटक एक अत्यंत प्राचीन विधा है। संस्कृत में नाटक की सफलता का परीक्षण रंगमंच पर किया जाता है। उसे रूपक भी कहते हैं। नाटक एक दृश्य विधा है, जिसका अभिनय रंगमंच पर किया जाता है। नाटक का अर्थ है- अनुकरण करना। पात्र विविध वेशभूषा में रंगमंच पर अभिनय करते हैं, इसे ही नाटक कहते हैं। नाटक शब्द 'नट्' से बना है जिसका अर्थ भावों का अभिनय है। इस प्रकार नाटक का संबंध रंगमंच से हैं। 'नट्' मूलधातु अक् शेष प्रत्यय लगाकर नाटक शब्द बना। नाटक का अर्थ सॉन्ग,रूपक,नाचना,अभिनय करना आदि। इसमें रंगमंच और अभिनय का ध्यान रखा जाता है। नाटक का कथानक कुछ अंकों और दृश्यो में विभाजित होता है। नाटक अनेक प्रकार के होते हैं, जिनका रंगमंच आधार होता है। नाटक में एक मुख्य कथा के साथ अन्य प्रासंगिक कथाएं होती है। नाटक में अनेक घटनाएं होती है। नाटक में अनेक अंक होते हैं। नाटक में विस्तार होता है। कुछ नाटक में कुछ संदेश अथवा दिशा दी जाती है।आधुनिक गद्य साहित्य में सर्वाधिक लोकप्रिय विधा नाटक है, जिसका रसास्वादन प्रेक्षक द्वारा दृश्यश्राव्य रूप में हो रहा है।

नाटक का विकास :

संस्कृत में नाटकों कों काव्य का महत्वपूर्ण रूप माना गया है। यह दृश्य काव्य श्रेणी में रखा जाता है। भरत मुनि का 'नाट्यशास्त्र' को पंचम वेद अथवा आधार ग्रंथ कहते हैं। संस्कृत नाटकों से हिंदी नाटकों का विकास हुआ है। संस्कृत - प्राकृत नाटकों की दीर्घ परंपरा रही है। अपभ्रंश में यह परंपरा लुप्त हुई। लेकिन स्थानीय भाषाओं में नाटक पुनः लिखने लगे। ब्रज मैथिली पूर्वोत्तर राज्यों में भी नाटक लिखे गए। कुछ नाटक पद्य में लिखे गए। प्राणचंद चौहान का 'रामायण महानाटक' 1610 में लिखा गया। वह ब्रजभाषा का पद्य मेंलिखा नाटक है। आचार्य विश्वनाथ ने 1700 ई में 'आनंद रघुनंदन' लिखा। आचार्य रामचंद्र शुक्ल यह हिंदी का पहला नाटक मानते हैं। डॉ. नगेंद्र भी पदयात्मक प्रबंध मानते हैं क्योंकि उनमें काव्यगुणों का अभाव है। गिरधर दास कृत 'नहुष' नाटक

ISSN–2278-5655

AMIERJ Aarhat Multidisciplinary International Education Research Journal

Volume–XIV, Special Issues – III (a) Nov – Dec, 2025

OPEN ACCESS Original Research Article

गोपालचंद्र हिंदी का पहला नाटक मानते हैं। भारतेंदु युग में हिंदी नाटक का विकास सही दिशा में क्रमबद्ध विकास की परंपरा शुरू हुई। भारतेंदु ने कुछ मौलिक तो कुछ अनूदित नाटक लिखे। भारतेंदु मंडली ने हिंदी नाटक को एक अच्छा पहलू दिया।

हिंदी नाटकों के सूत्रधार भारतेंदु हरिश्चंद्र है। हिंदी नाटकों का प्रारंभ वास्तविक आधुनिक काल में भारतेंदु युग से माना जाता है। नाटकों को युगीन समस्याओं से जोड़ना। बाहरी स्थुल रूप से मुक्त होकर सूक्ष्म रूप में प्रस्तुत होना, यह नाटक का स्वरूप धीरे धीरे बदल गया। नाटक के लेखन की शुरुआत हुई तब नाटक लेखन की परंपरा स्वरूप क्या था? और जैसे हम आगे बढ़ते गए,समय के साथ-साथ नाटक मे बदलाव आ गये। केवल मनोरंजन का माध्यम था,वही हमारे जीवन का अभिन्न अंग बन चुका है। यह बदलाव हम इस विकास क्रम के द्वारा समझेंगे और यह समझेंगे की नाटक की विषय वस्तु में सभी समय के साथ समय की मांग और परिस्थिति के अनुसार बदलाव आ गया। युगीन समस्या को उजागर करते हुए उन पर हल भी निकाल दिया।

हिंदी नाटक का विकास भारतेंदु युग, द्विवेदी युग, प्रसादोत्तर युग ऐसे निरंतर रहा और हर युग में नाटक में कुछ ना कुछ नए पहलू आजमाए और उत्कर्ष की ओर पहुंचे। भारतेंदु ने देसी और विदेशी भाषा के विभिन्न नाटकों का अनुवाद हिंदी में किया। संस्कृत के नाटक रत्नावली, पाखंड विंडबन, धनंजय विजय, कर्पूरमंजरी, मुद्राराक्षस, दुर्लभ बंधु, शेक्सपियर का 'मर्चेंट ऑफ़ वेनिस' आदि का अनुवाद किया ।

नाटकों का उद्देश्य:

मनोरंजन, समाज जागृति, प्राचीन संस्कृति के प्रति प्रेम,भारतीय नाटक को विकसित करना, अंग्रेजी के गलत प्रभाव से बचाना, शास्त्र के श्रेष्ठ गुना को अपनाना, राष्ट्रीय जागरण और आत्म गौरव का माध्यम बनाना, सांस्कृतिक सामाजिक एकता निर्माण करना, प्राचीन और आधुनिकता का संगम करना आदि था।

आचार्य रामचंद्र शुक्ल कहते हैं- "मौलिक कृति के अनुवाद के द्वारा उसका शरीर परिवर्तित हो जाता है किंतु उसकी आत्मा उसके भाव यथावत रहते हैं ।" अनुवाद में कृति का सौंदर्य विधान को सही तरह से रखते हैं। उसमें अस्पष्टता, दूरुहता ना हो इसका ख्याल रखा जाता है। अनुवाद मूल कृती की रसभिव्यक्ति, भावाभिव्यक्ति, अर्थाभिव्यक्ति, सौंदर्याभिव्यक्ति, शैली, संप्रेषण, संस्कृति की नवसृजनात्मक चेतन्य प्रक्रिया होती है।

भोलानाथ तिवारी-' एक भाषा में व्यक्त विचारों को यथासंभव सामान और सहज अभिव्यक्ति द्वारा दूसरी भाषा में व्यक्त करने का प्रयास अनुवाद है।'

एक भाषा की सामग्री को दूसरी भाषा में अंतरित करना अनुवाद कहलाता है। अनुवाद के क्षेत्र विविध तथा विशाल है। अनुवाद करना चुनौती भरा कार्य है, किंतु उसकी उपयोगिता बहु आयामी है। अनुवाद अंशत: कला, विज्ञान और शिल्प है। साहित्य की समृद्धि में भी अनुवाद का योगदान अपना महत्व रखता है। अनुवाद का उत्पत्ति मूलक अर्थ है पुनः कथन, दोहराना, दोबारा कहना, ज्ञान को कहना। अनुवाद में स्रोत

ISSN–2278-5655

AMIERJ Aarhat Multidisciplinary International Education Research Journal

Volume–XIV, Special Issues – III (a) Nov – Dec, 2025

OPEN ACCESS Original Research Article

भाषा , लक्ष्य भाषा और अनुवादक का महत्व होता है। अनुवाद की भी कुछ शर्तें होती हैं- संवेदना, संस्कृति,आचार, विचार और सामाजिक ,आर्थिक, स्थितियों की समानता। अनुवाद की भी कुछ शर्तें होती हैं- संवेदना, संस्कृति,आचार, विचार और सामाजिक ,आर्थिक, स्थितियों की समानता।

नाटक और अनुवाद :

नाटक और समाज का संबंध गहरा और पुराना है। नाटक सामाजिक जीवन की संजीव प्रतिलिपि है। मनुष्य के सुख-दुख के मनोभावों को रंगमंच पर स्थापित किया जाता है। अनुवाद द्वारा विभिन्न भाषाओं को समझा जाता है। इसमें नाटक एक ऐसा माध्यम है जिसमें रंगमंचीयता के कारण पाठक रसास्वादन करता है। इसी कारण नाटकों का अनुवाद देश के ज्यादातर भाषाओं में हमें देखने को मिलता है ।

नाटक अथवा नाट्यानुवाद पठन के लिए नहीं होते, मंचन के लिए होते हैं। मंचन में नाट्य निर्माता, निर्देशक की रुचि महत्वपूर्ण है। इसलिए कहा जाता है- जब तक रचनाकार और नाटक अनुवादक की वैंवलेंथ नहीं मिलती तब तक अनुवाद में मुल की रसाभिव्यक्ति,सौंदर्याभिव्यक्ति तथा संस्कृति प्रतिकन की नवसर्जनात्मक चैतन्यशील प्रक्रिया नहीं होती |

भारत में एक ऐसी सामाजिक संस्कृति पाई जाती है, जो एक दूसरे में घुल मिल चुकी है फिर भी एक दूसरे से अलग है। यह सांस्कृतिक परिवेश की भिन्नता दो भाषाओं के बीच अनुवाद की को इतना उतना चुनौती पूर्ण बनाती है कि दो विदेशी भाषाओं के बीच अनुवाद में नजर आता है। भाषा का इतना अभिव्यंजना पूर्ण और सूक्ष्म अभिव्यक्ति के उपयुक्त होना जरूरी है कि विभिन्न पात्रों के व्यक्तित्वों की सी परते दिखा सके। नाटकीय संवाद पात्रों के उपयुक्त और उनके लिए सहज स्वाभाविक भाषा से बहुत दूर नहीं हो सकते। भाषा से पात्रों की विशेषता और विविधता समाप्त नहीं होनी चाहिए।

विषय वस्तु -

पौराणिक, ऐतिहासिक, सामाजिक, रोमांटिक, आध्यात्मिक, राष्ट्रवादी, मानवता रंगमंचीय दृष्टिकोण आदि दृष्टि से हम नाटकों का अध्ययन कर सकते हैं।

संस्कृत नाटकों के हिंदी में अनुवाद-

भारतेंदु ने जिन संस्कृत नाटकों का अनुवाद किया उसमें है रत्नावली, विद्यासुंदर, पाखंड विडंबन, धनंजय विजय, प्रबोध चंद्रोदय, कर्पूरमंजरी, सत्य हरिश्चंद्र, भारत जननी और मुद्राराक्षस। संस्कृत नाटक का हिंदी में अनुवाद खड़ी बोली के विकास के साथ शुरू हुआ। आज संस्कृत भाषा का महत्व कम है तथापि संस्कृत नाटकों का अनुवाद और इसका मंचन लगातार जारी है। सुप्रसिद्ध निर्देशक व. व. कारंत ने भास के नाटक 'उरुभंग' और 'स्वप्नवासवद्दता' का अनुवाद किया। इन नाटकों का मंचन भी सफलतापूर्वक किया। नेमीचंद्रन जैन ने संस्कृत प्राध्यापक उर्मीभूषण गुप्ता के साथ 'भागवद् ज्जकम','मतविलास' 'हास्यचूड़ामणि' आदि का अनुवाद भी किया और सफल मंचन भी किया। मूल भाषा के सही प्रयोग, भाषा विन्यास के अतिरिक्त सामाजिक, सांस्कृतिक, साहित्यिक, विशेष रूप से रंगमंच पकड़ और पहचान आदि को बारीकी से साबित किया।

संस्कृत नाटकों का विभिन्न बोलियां में भी अनुवाद हुआ। हरीश निगम ने शुद्रक का 'मृच्छकटिकम्' नाटक का अनुवाद किया। मालवी बोली में सत्यव्रत सिन्हा ने कालिदास का नाटक 'मालविकाग्निमित्रम' का अनुवाद किया| हबीब तनवीर ने 'मृच्छकटीकम' का 'माटी गाड़ी' नामक लाजवाब अनुवाद

ISSN–2278-5655

AMIERJ Aarhat Multidisciplinary International Education Research Journal

Volume–XIV, Special Issues – III (a) Nov – Dec, 2025

OPEN ACCESS Original Research Article

और मंचन किया था। इन सभी नाटकों की बोलियों के इस्तेमाल से एक खास तरह की चमक और अंतरंगता पैदा हुई, जिसने रंगमंच प्रेमियों को आकर्षित किया।

मराठी नाटकों के हिंदी में अनुवाद :

भारतीय नाट्य साहित्य में मराठी नाट्य साहित्य का विशिष्ट स्थान है क्योंकि मराठी नाटकों में आपसी लोकरंगत्व जुड़े हुए हैं। मराठी के प्रथम नाटककार विष्णुदास भावे से यह परंपरा शुरू हुई। आगे जाकर किर्लोस्कर, देवल, कोल्हटकर, खाडिलकर, गडकरी तक और भी विकसित हुई। नाटक रंगमंच के साथ-साथ संगीत नाटक, शास्त्रीय नाटक आदि में तब्दील होते गए। आगे जाकर राम गणेश गडकरी, मामा वरेरकर, प्र.के.अत्रे, रांगणेकर आदि ने नाटकों कों सामाजिक यथार्थ और आदर्श तक नाटक को आगे ले लिया। स्वतंत्रोत्तर कालखंड में मराठी नाटक विभिन्न रूपों में विकसित हुआ। पू..ल देशपांडे, विजय तेंदुलकर, कानेटकर, कोल्हटकर, वि.वा.शिरवाडकर, जयंत दलवी, रत्नाकर मतकरी ,महेश एलकुंचवार आदि नाटककारोंने हिंदी साहित्य को अपना परिचय दिया। मराठी नाटकों के हिंदी में रूपांतरण हो गया।

बांग्ला नाटकों का अनुवाद :

भारतेंदु हरिश्चंद्र के विद्यासुंदर, मुद्रा राक्षस, नील दर्पण का अनुवाद हिंदी तथा बंगाल में हुआ है। मैथिली शरण गुप्त ने भास के संस्कृत नाटकों को हिंदी में अनुवादित किया। और उसमें से प्रेम योगिनी नाटक को बांग्ला भाषा में भी अनूदित किया।

रविंद्र नाथ टैगोर की कई बंगाली नाटक को का हिंदी में अनुवाद हुआ। उसमें जातक, रक्तकरबी, चित्र, डाकघर, दक्षायणी,राजा आदि शामिल है। इन नाटकोंमें लोकचेतना का विकास और सामाजिक समस्याओं की अभिव्यक्ति मिली है। प्रेमचंद और रविंद्रनाथ टैगोर वो साहित्यकार है , जो दुनिया भर में बंगाली लेखक के रूप में लोकप्रिय है। भारतेंदु हरिश्चंद्र ने विद्या सुंदर के अनुवाद से नाटक लेखन की शुरुआत की और उसी तरह अनुवाद ने बंगाल के बाहर भी नाटकों की लोकप्रियता फैलाई।

विश्व भाषाओं से अनूदित हिंदी नाटक :

हिंदी में सभी भारतीय भाषाओं के प्रमुख नाटकों का अनुवाद हो चुका है। विदेशी भाषा के नाटकों का हिंदी में अनुवाद हमारे लिए गौरव की बात है। अंग्रेजी की शेक्सपियर, फ्रेंच के कामू, जर्मन की ब्रेश्ट,स्पेनिश के लोर्का,रुस के चेखव आदि के नाटक हिंदी में लोकप्रिय रहे हैं। विदेशी नाटक हिंदी में इतनी सहजता से और सरलता से मंचित होते हैं कि भारतीय प्रेषक विदेशी न मानकर भारतीय नाटक के रूप में देखते हैं। इस तरह संस्कृत, तमिल, कन्नड़, मराठी, बंगाल तथा उर्दू आदि नाटकों का हिंदी में अनुवाद हो रहा है और हिंदी में रंगमंच का आश्चर्यजनक विस्तार हो रहा है। हिंदी में लगभग सभी भारतीय भाषाओं के प्रमुख नाटकों के अनुवाद हो चुके हैं।

विदेशी नाटककारो का प्रभाव भारतीय नाटककारों पर रहा है, चाहे वह यथार्थवादी हो या आदर्शवादी हो। इन्होने हमारा पथप्रदर्शन किया है। वर्तमान परिप्रेक्ष्य में युवा वर्ग को स्वर्णिम अवसर है कि वह देसी और विदेशी नाटकों का अनुवाद कर, उन्हें विश्व रंगमंच पर स्थापित करें। अपने अनुवाद, निर्देशक, अभिनय द्वारा भारतीय रंगमंच समृद्ध बनाएं। अनुवाद का विस्तृत क्षेत्र वर्तमान काल की बेरोजगारी को हल कर सकता है क्योंकि अनुवाद वर्तमान परिपेक्ष की अनिवार्य मांग है।

ISSN–2278-5655

AMIERJ Aarhat Multidisciplinary International Education Research Journal

Volume–XIV, Special Issues – III (a) Nov – Dec, 2025

OPEN ACCESS Original Research Article

विश्व भाषाओं से अनूदित हिंदी नाटक साहित्य की सुदिर्घ परंपरा रही है। यूनानी,ग्रीक, जर्मनी, अमेरिका,फ्रेंच, इटालियन,रूसि आदि विदेशी भाषाओं के नाट्य कृतियों का अनुवाद और मंचन हो रहा है। और मंच पर चर्चित भी है। शेक्सपियर और बेख्ता ये दोनों विदेशी नाटककार हिंदी रंगमंच पर बहुत चर्चित रहे हैं।

शेक्सपियर का 'मर्चेंट ऑफ़ वेनिस', का अनुवाद 'वेनिस का व्यापारी' ऐसा आर्य ने किया है। 'द कॉमेडी का एरर्स' का अनुवाद मुंशी इमदाद अली ने 'ब्रह्मजालक' नाम से किया है। 'एज यू लाइक' का अनुवाद 'मनभावन' नाम से पुरोहित गोपीनाथ ने किया है तथा रोमियो जूलियट का अनुवाद भी 'प्रेमलीला' नाम से किया है। अमृतराय ने ,'हम्लेट' अनुवाद किया है तो 'टैम्पैस्ट' का 'तूफान' नामक अनुवाद किया है।

महान ग्रीक त्रासदीकार यूरोपीडिज का नाटक 'इलैक्ट्रा' का अभिदास गुप्त ने साहस से मिरर के साथ मिलकर अनुवाद और मंचन किया। सलीम आरिफ ने 'मीडिया' का अनुवाद किया। जितेंद्र कौशल ने नाटककार सोफोक्लीज का 'रडिपस रैक्स' का अनुवाद किया। 24 साल का विख्यात जर्मनी लेखक डॉ. जॉर्ज बुखनर के नाटक 'वोएजेस','लेओख' का अनुवाद किया।

अमेरिका का सुविख्यात नाटककार टेनेसी, विलियमसन नाटक ' द ग्लास मैनेजरी' का अनुवाद ललित सहगल ने 'कांच के खिलौने' में किया। युद्ध विरोधी नाटक 'द एलीफेंट' का अनुवाद वी.के.शर्मा ने किया। प्रेमचंद ने 'स्ट्राइक' का अनुवाद हड़ताल और 'द सिल्वर बॉक्स जस्टिस'का अनुवाद किया। नेमीचंद्रन में 'घोस्ट' का अनुावाद 'प्रेत' नाम से किया। एम.के .रैना ने 'इन द मैटर' का अनुवाद 'मैं ही काल पुरुष हूं' ऐसा किया| स्विस नाटक 'द विजिट' का अनुवाद सुनील सिंन्हा ने आगमन नाम से किया। 'एक्सीडेंटल डेथ ऑफ़ एन अनार्किस्ट' का अनुवाद अभिताभ श्रीवास्तव ने 'एक और दुर्घटना' नाम से किया, तो 'खाली ज़ेंबे बढ़ते दाम' नामक और एक अनुवाद किया। तो 'ड्रैगन 'का अनुवाद देवेंद्र राज अंकुर ने 'मायाबाजार' नाम से किया। '3 पैनी ओपेरा', का अनुवाद हेमेंद्र भाटिया ने 'देख तमाशा देख .....तमाशा देख' नाम से किया। 'द पावर ऑफ़ डार्कनेस' का अनुवाद जैनेंद्र कुमार ने 'पाप और प्रकाश' नाम से किया। फ्रांस के अल्बेयर कामू नाटक 'आउटसाइडर' का अनुवाद राजेंद्र यादव ने किया। जिससे नोबेल पुरस्कार प्राप्त हैं तथा देवेंद्र अंकुर ने 'अजनबी' नाम से अनुवाद किया। इन सभी नाटककारों ने मानवी स्थिति तथा चरित्र को निकटता से समझा परखा और प्रस्तुत किया।

विदेशी नाटकों के सशक्त अभिव्यक्ति के लिए प्रदर्शन, प्रशिक्षण, निर्देशन और मंजन किया। स्थानीय बोली और शैलियों में ढाला गया और विदेशी नाटक देशी बन गए। उसे देश- काल ,रंग -रूप, शैली में ढाला गया। इसीतरह अंग्रेजी से हिंदी और हिंदी से अन्य भारतीय भाषाओं में नाटक अनूदित होने लगे।

भारतीय भाषाओं के नाटकों के विदेशी भाषाओं में अनुवाद :

भारतीय भाषाओं के नाटकों के अनुवाद विदेशी भाषाओं में भी होते रहे। वाजिद अली शाह के प्रोत्साहन से कवि ने नित्य संगीत में गीति नाटक 'इंद्रसभा'को प्रस्तुत किया। इसकी इतनी ख्याति हुई की विभिन्न देशों और विदेशी भाषाओं में इसका रूपांतरण हुआ।

बिंदु बत्रा द्वारा मोहन राकेश के 'आधे अधूरे' नाटक को 'हॉफ ए हाउस' में अनुवादित किया। प्रिया अडालकरने विजय

ISSN–2278-5655

AMIERJ Aarhat Multidisciplinary International Education Research Journal

Volume–XIV, Special Issues – III (a) Nov – Dec, 2025

OPEN ACCESS Original Research Article

तेंदुलकर का नाटक 'खामोश' का अनुवाद किया तथा साइलेंट! कोर्ट इज इन सेशन' 'अदालत जारी है' ऐसा अनुवाद किया।

निष्कर्ष :

21वीं शताब्दी आतरराष्ट्रीय संस्कृति की शताब्दी है और इसी कारण से अनुवाद की शताब्दी भी कहा गया है। बहूभाषी भारत में अनुवाद की आवश्यकता है। साथ ही विश्व भाषाओं में अनुवाद की अनिवार्यता भी है। हर समाज अन्य समाज से संबंध स्थापित करना चाहता है, संपर्क करना चाहता है। इसलिए अनुवाद विज्ञान का महत्व अन्य साधारण है। अनुवाद में संप्रेषणीयत्ता होती है। इससे अनुवाद भारतीय अखंडता और एकात्मता का आधार बन गया है और विश्व मैत्री को भी सुदृढ़ बना रहा है।

संदर्भ संकेत :

1. *http://la904509.us.archive.org*
   हिंदी तथा बांग्ला नाटकों का तुलनात्मक अध्ययन, रमाशंकर गुप्ता, कमल प्रकाशन, इंदौर
2. *AI. overview*
3. *International general of multi disciplinary https://www.ijmra.us*
   विश्व भाषाओं से अनुदित नाट्य साहित्य, सूरज भान, प्रवक्ता, हिंदी, शिक्षा विभाग, हरियाणा सरकार
4. *https://older.lbp.world*
   मराठी नाटकों के हिंदी रूपांतरण की समीक्षा,प्रो. सिद्धेश्वर विट्ठल गायकवाड,चिंतन प्रकाशन, कानपुर
5. *egyankosh.ac.in*
   अनुवाद विज्ञान का महत्व एवं मराठी से हिंदी में अनुचित नाटक
6. *https://www.sahchar.com*
   सहचर त्रैमासिक ई पत्रिका
7. *https://sumansharmhot.blogspot.com*
8. *अनुवाद विज्ञान- डॉ.भोलानाथ तिवारी*
9. *हिंदी साहित्य का इतिहास -आचार्य रामचंद्र शुक्ल*

Cite This Article:
मोहिते वै. रा. (2025). *नाटक और अनुवाद.* **In Aarhat Multidisciplinary International Education Research Journal**: Vol. XIV (Number VI, pp. 130–136).

ISSN–2278-5655

AMIERJ Aarhat Multidisciplinary International Education Research Journal

Volume–XIV, Special Issues – III (a) Nov – Dec, 2025

OPEN ACCESS Original Research Article

वैश्विक संचार में अनुवाद और जनसंचार की भूमिका

** अर्चना भुस्कुटे,*

** शोधार्थी, पीएचडी (हिंदी) अनुसंधान केंद्र, न्यू आर्ट्स, कॉमर्स एण्ड साइंस कॉलेज, अहिल्यानगर.*

प्रस्तावना :

समाज और संचार का अटूट संबंध है।संचार समाज को नजदीक लाता है। भारत एक विशाल देश है जो विविध भाषा,संस्कृति और परंपरा लिए हुए है।पूरे देश में जानकारीयों को पहुँचाने के लिए 'अनुवाद' की आवश्यकता है।अनुवाद के कारण विचारों को साझा करना संभव हुआ है। इस तरह, जनसंचार और अनुवाद में गहरा सम्बन्ध है।

जनसंचार और अनुवाद की परिभाषा.....

जनसंचार वह प्रक्रिया है, जिसके माध्यम से किसी व्यक्ति, संस्था या संगठन द्वारा जानकारी, विचार, ज्ञान, संस्कृति या संदेश एक साथ बहुत बड़ी जनसंख्या तक पहुँचाए जाते हैं'।जनसंचार शब्द जन और संचार शब्दों से बना है।जिसमें जन का अर्थ होता है जनता या लोग।संचार का अर्थ है सूचना,जानकारी या विचारों का आदान प्रदान। तो एक साथ कई लोगों तक संदेशों या जानकारीयों को पहुँचाना ही जनसंचार कहलाता है।

Copyright © 2025 The Author(s): This is an open-access article distributed under the terms of the Creative Commons Attribution 4.0 International License (CC BY-NC 4.0) which permits unrestricted use, distribution, and reproduction in any medium for non-commercial use provided the original author and source are credited.

डॉ. अंबादास देशमुख :

जब हम किसी भाव या विचार या जानकारी को दूसरों तक पहुँचाते है और यह प्रक्रिया सामूहिक पैमाने पर होती है,तो इसे जनसंचार कहते है।

नाना साहब गोरे :

विभिन्न संचार के माध्यमों द्वारा व्यापक पैमाने पर सूचना या संदेश का प्रसारण करना जनसंचार कहलाता है।

ए. वी. शनमुगन :

ज्ञान,अनुभव,संवेदना विचार और यहाँ तक की अस्तित्व में होनेवाले अभिनव परिवर्तनों की साझेदारी ही संचार है।

अनुवाद केवल एक भाषा प्रक्रिया नहीं है बल्कि ज्ञान के आदान-प्रदान,संस्कृतियों और विचारों को जोड़ने का एक माध्यम है तथा अंतर्राष्ट्रीय संवाद स्थापित करने का जरिया है। अनुवाद का मतलब स्रोत-भाषा से लक्ष्य-भाषा में अर्थ, भाव, शैली, प्रसार-संस्कृति आदि को ध्यान में रखते हुए परिवर्तन करना। भारत जैसे बहुभाषी देश में अनुवाद-द्वारा विभिन्न भाषाओं/संस्कृतियों के बीच संवाद संभव है।

प्रोफेसर जॉन सी. कैटफ़ोर्ड:

"अनुवाद एक भाषा-सामग्री को समतुल्य भाषा-सामग्री से प्रतिस्थापित करना है।"

ISSN–2278-5655

AMIERJ Aarhat Multidisciplinary International Education Research Journal

Volume–XIV, Special Issues – III (a) Nov – Dec, 2025

OPEN ACCESS Original Research Article

डॉ. भोलानाथ तिवारी:

"अनुवाद एक भाषा में व्यक्त विचारों को यथासंभव समान और सहज अभिव्यक्ति द्वारा दूसरी भाषा में व्यक्त करना है।"

जनसंचार और अनुवाद की व्याप्ति.....

जनसंचार का मुख्य उद्देश्य सूचनाओं, विचारों, और भावनाओं को बड़े पैमाने पर जन-जन तक पहुँचाना होता है, और इस प्रक्रिया में अनुवाद एक सेतु की भूमिका निभाता है। अनुवाद मीडिया के लिए संप्रेषण का काम करता है यह एक भाषा में व्यक्त भावों/विचारों को दूसरी भाषा में संप्रेषित करता है।दुनिया के अलग-अलग कोनों में होने वाली घटनाएँ, रिपोर्ट, और खबरें अनुवाद के माध्यम से ही आम लोगों तक पहुँचती हैं।अनुवाद भिन्न भाषाओं के बीच की दूरी को मिटाकर एकता स्थापित करता है।

जनसंचार के क्षेत्र में अनुवाद का महत्व.....

अनुवाद जनसंचार को प्रभावी बनाता है,दुनिया भर में होने वाली महत्वपूर्ण घटनाओं, राजनीतिक उथल-पुथल तथा नवीनतम शोध की जानकारी को एक भाषा से दूसरी भाषा में अनुवाद करके ही राष्ट्रीय और स्थानीय दर्शकों तक पहुँचाया जाता है।विज्ञान,प्रौद्योगिकी, चिकित्सा और अन्य क्षेत्रों में हो रही प्रगति को अनुवाद के माध्यम से विभिन्न भाषाओं में उपलब्ध कराया जाता है।विभिन्न संस्कृतियों का परिचय भी उससे ही होता है इसके कारण लोगों में आपसी समझ और सद्भाव बढ़ता है।यह विभिन्न भाषा समुदायों को राष्ट्रीय धारा से जोड़ने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है।विदेशी समाचार एजेंसियों की खबरों और लेखों का स्थानीय भाषाओं में अनुवाद किया जाता है। फिल्मों, टीवी धारावाहिकों, विज्ञापनों और डॉक्यूमेंट्री फिल्मों में डबिंग और उपशीर्षक के माध्यम से अन्य भाषी दर्शकों के उपलब्ध किया जाता है। समाज कल्याण और जन-कल्याण की योजनाओं, कानूनों, और नीतियों की जानकारी को आम जनता की स्थानीय भाषाओं में पहुँचाया जाता है ताकि वे सतर्क रह सकें।शैक्षिक सामग्री और ई-लर्निंग संसाधनों का अनुवाद करके उन्हें छात्रों तक पहुँचाने की कोशीश की जाती है। जनसंचार माध्यमों में अनुवादकों,अनुसृजकों और भाषा विशेषज्ञों के लिए नए रोजगार के अवसर प्राप्त होते हैं।

जनसंचार और अनुवाद के प्रकार :

जनसंचार के प्रकार :

जनसंचार का उद्देश्य विचारों,भावों,सूचनाओं और जानकारीयों को समाज तक पहुँचाना होता है।इसके लिए जिन माध्यमों का उपयोग किया जाता है उसे निम्न प्रकारों में विभाजीत किया गया है--

1. **मुद्रण माध्यम-**
   जिसमें समाचार पत्र, पत्रिकाएँ, पुस्तकें, पर्चे, विवरणिका, ग्रंथ,पोस्टर आदि आते है।
2. **इलेक्ट्रॉनिक माध्यम-**
   जिसमें श्रव्य माध्यम- जैसे रेडियो,ऑडियो का समावेश है तथा दृश्य- श्रव्य माध्यम में फिल्में, टेलिविजन, वीडियो, वृत्तचित्र, लघु फिल्में आदि आते है।
3. **नव-इलेक्ट्रॉनिक माध्यम-**
   उपग्रह एवं सैटेलाईट जिसमें इंटरनेट ऑनलाइन समाचार, पोर्टल,सोशल मीडिया, मोबाइल एप्लीकेशन,पॉडकास्ट का समावेश है।

ISSN–2278-5655

AMIERJ Aarhat Multidisciplinary International Education Research Journal

Volume–XIV, Special Issues – III (a) Nov – Dec, 2025

OPEN ACCESS Original Research Article

अनुवाद के प्रकार :

जनसंचार के विभिन्न माध्यमों में अनुवाद का रूप अलग-अलग होता है।इसे अनुवाद के निम्न प्रकारों से समझ सकते है।

1. **मुद्रित माध्यम-**

   जिसके तहत आता है शब्दानुवाद, भावानुवाद, संक्षिप्तानुवाद, सारानुवाद.

2. **श्रव्य-दृश्य माध्यम-**

   जिसके तहत आता है डबिंग, सबटाइटलिंग, पार्श्व वाचन. टेली अनुवाद.

3. **नव मीडिया/डिजीटल मीडिया** –

   जिसके तहत आता है वेबसाइट लोकलाइज़ेशन,मशीनी अनुवाद, सॉफ्टवेयर लोकलाइज़ेशन, स्पीच रिकग्निशन, सॉफ्टवेयर लोकलाइज़ेशन, स्पीच रिकग्निशन.।

जनसंचार के क्षेत्र में अनुवाद की आवश्यकता :

आज के वैश्वीकरण और बहुभाषी समाज के दौर में अनुवाद की आवश्यकता बहुत महत्वपूर्ण है।अगर सूचना तथा जानकारियों को बडे पैमाने पर ले जाना हो तो अनुवाद अनिवार्य है। विश्व भर की सूचनाओं, समाचारों और विचारों को सबकी भाषा में पहुँचाने के लिए अनुवाद ज़रूरी है। अंतर्राष्ट्रीय समाचार को स्थानीय भाषाओं में लाने के लिए तथा स्थानीय सामग्री को वैश्विक दर्शकों तक पहुँचाने के लिए अनुवाद सेतु का काम करता है। अख़बार, रेडियो, टेलीविज़न और ऑनलाइन न्यूज़ पोर्टल्स में देश-विदेश की खबरें, संपादकीय, विज्ञापन, बाज़ार भाव आदि का अनुवाद लगातार होता है। फ़िल्में, टीवी शो,वृत्तचित्र आदि को डबिंग और सबटाइटलिंग (उपशीर्षक) के माध्यम से विभिन्न भाषाओं के दर्शकों के लिए सुलभ बनाया जाता है। उत्पादों और सेवाओं के विज्ञापनों को अलग-अलग क्षेत्रों के उपभोक्ताओं तक उनकी भाषा और सांस्कृतिक संदर्भ के अनुसार पहुँचाने के लिए अनुवाद आवश्यक है। अनुवाद विभिन्न संस्कृतियों, जीवन-शैलियों और विचारों को एक-दूसरे के निकट लाता है, जिससे आपसी समझ और सहिष्णुता बढ़ती है। भारत जैसे बहुभाषी देश में, अनुवाद विभिन्न राज्यों और भाषा-भाषी समुदायों के बीच संवाद स्थापित करके राष्ट्रीय एकता को मज़बूत करने में सहायक होता है। विज्ञान, तकनीकी, स्वास्थ्य और कानूनी जैसे क्षेत्रों की जटिल जानकारी को आम जनता तक उनकी भाषा में समझाने के लिए विशेष अनुवाद की आवश्यकता होती है।इस तरह अनुवाद भाषा की सीमाओं से परे ले जाता है जो जनसंचार के लिए आवश्यक है।

अनुवादक के गुण :

एक कुशल अनुवादक में केवल भाषाओं का ज्ञान ही नहीं,बल्कि अन्य कौशल भी होने चाहिए।

1. **भाषा और विषय का ज्ञान** :

   स्रोत और लक्ष्य भाषा में महारथ हासिल होनी चाहिए।

   स्रोत भाषा –

   जिस भाषा से अनुवाद किया जा रहा है, उसकी गहरी समझ होनी चाहिए, जिसमें उसके व्याकरण, शब्दावली, मुहावरे, और सांस्कृतिक बारीकियों का ज्ञान शामिल है।

   लक्ष्य भाषा –

   जिस भाषा में अनुवाद किया जा रहा है, उस पर उत्कृष्ट लेखन और अभिव्यक्ति कौशल होना चाहिए ताकि अनुवाद स्वाभाविक और सहज लगे।

ISSN–2278-5655

AMIERJ Aarhat Multidisciplinary International Education Research Journal

Volume–XIV, Special Issues – III (a) Nov – Dec, 2025

OPEN ACCESS Original Research Article

सांस्कृतिक समझ –

भाषा संस्कृति से जुड़ी होती है। अनुवादक को दोनों भाषाओं से जुड़े सांस्कृतिक संदर्भों, रीति-रिवाजों को समझना चाहिए, ताकि अनुवाद में कोई गलत अर्थ न चला जाए।

विषय का ज्ञान-

यदि पाठ तकनीकी, कानूनी, चिकित्सा या साहित्य से संबंधित है, तो अनुवादक को उस विषय के पारिभाषिक शब्दों और अवधारणाओं की अच्छी जानकारी होनी चाहिए।

शोध कौशल-

किसी अपरिचित शब्द या विषय की जानकारी के लिए शब्दकोशों, ज्ञानकोशों और ऑनलाइन संसाधनों का प्रभावी ढंग से उपयोग करने की क्षमता हों।

2. **तकनीकी गुण-**

तकनीकी उपकरण का ज्ञान हो,जो एकरूपता बनाए रखने और कार्य को गति देने में मदद करते हैं।दस्तावेजों को कुशलतापूर्वक संभालने की क्षमता हो।अनुवादकों के लिए समय पर काम पूरा करना अत्यंत महत्वपूर्ण होता है।लगातार सीखने की प्रवृत्ति होनी चाहिए क्योंकि भाषाएँ और तकनीकें बदलती रहती हैं।अनुवादक को हमेशा अपने ज्ञान को अपडेट करते रहना चाहिए।

3. **व्यक्तिगत तथा नैतिक गुण**

अनुवाद मूल पाठ के अर्थ, स्वर और उद्देश्य के प्रति पूरी तरह से ईमानदार होना चाहिए। पाठ की छोटी-छोटी त्रुटियों (जैसे वर्तनी, विराम चिह्न) और बारीकियों पर ध्यान देना जरुरी है क्योंकि एक छोटी-सी गलती भी अर्थ बदल सकती है। जटिल और लंबे पाठों के साथ काम करने के लिए एकाग्रता और धैर्य बनाए रखना आवश्यक है। संवेदनशील दस्तावेजों की गोपनीयता बनाए रखना एक महत्वपूर्ण नैतिक दायित्व है। एक अच्छा अनुवादक हमेशा अपने काम की समीक्षा कर उसे सुधारने की कोशीश करता है,उसका पुनरावलोकन करता है।

जनसंचार और अनुवाद में संबंध :

1. अनुवाद जनसंचार को भाषा के साथ सांस्कृतिक विस्तार भी प्रदान करता है। जनसंचार माध्यम जैसे समाचारपत्र, टीवी, इंटरनेट आदि एक भाषा समूह तक सीमित रहते हैं परंतु अनुवाद द्वारा उनका प्रसार कई भाषा समूहों तक जा सकता है जो स्रोत भाषा नहीं समझते। उदाहरण- तेलगु में प्रसारित समाचार को अंग्रेजी में अनुवादित करते है तो वह अन्य भाषी लोगों तक पहुँचता है।
2. भारत जैसे बहुभाषी देश में अनुवाद के माध्यम से विभिन्न संस्कृतियों के बीच संवाद संभव होता है और जनसंचार के माध्यम से सामाजिक समावेशन भी बढ़ता है।
3. आज-कल चलचित्र, टीवी-शो, विज्ञापन और डिजिटल सामग्री अक्सर एक भाषा में बनकर अन्य भाषाओं में अनुवादित या डब होती हैं। इस प्रकार, अनुवाद जनसंचार के माध्यमों के लिए बहुभाषी बनने का जरिया हो गया है।
4. यदि सरकार-माध्यम द्वारा जारी सूचना (जैसे स्वास्थ्य, शिक्षा, अधिकार) केवल एक भाषा में हो तो अन्य भाषी जनता तक नहीं पहुँचती। सही अनुवाद द्वारा जनसंचार माध्यम इन सूचनाओं को अन्य भाषीयों तक पहुँचा सकता हैं।

ISSN–2278-5655

AMIERJ Aarhat Multidisciplinary International Education Research Journal

Volume–XIV, Special Issues – III (a) Nov – Dec, 2025

OPEN ACCESS Original Research Article

जनसंचार और अनुवाद क्षेत्र की चुनौतियाँ :

अनुवाद की गुणवत्ता का सुनिश्चित होना कठिन है।गलत अनुवाद से भ्रम पैदा होता है और अर्थ की हानि होती है।

जनसंचार की विश्वसनीयता प्रभावित होती है जब मीडिया माध्यमों में तेजी से बदलाव होता है या नए प्लेटफॉर्म सामने आते है,भाषाओं में विविधता होती है और समय का दबाव रहता है।इससे कभी कभी अधूरा अनुवाद अथवा गलत अनुवाद किया जा सकता है।

भाषाओं के लिए संसाधन की कमी होती है- जैसे शब्द-कोश, तकनीकी अनुवाद-डाटा, प्रशिक्षण। इससे अनुवाद की क्षमताएँ बाधित होती है।

अनुवाद सिर्फ शब्द-परिवर्तन नहीं है,बल्कि स्रोत भाषा की संस्कृति के भाव, उपमाएँ, संदर्भ आदि को लक्ष्य भाषा में अनुवाद करना कठिन और जटिल है।

जनसंचार और अनुवाद क्षेत्र के अवसर :

भारत बहुभाषी देश हैं इसलिए अनुवाद की आवश्यकता है और इससे जनसंचार का विस्तार भी होता है।

डिजिटल युग में इंटरनेट, मोबाइल, सोशल मीडिया द्वारा जनसंचार का प्रसार बढ़ा है साथ ही मशीन अनुवाद ने प्रगति की है जिससे नई संभावनाएँ सामने आयी है।

सरकारी योजनाओं तथा नीति में स्वास्थ्य जागरूकता, शिक्षा-सामग्री, ग्रामीण समुदायों में सूचनाओं का पहुँचना अनुवाद के कारण संभव हुआ है,भाषा-साक्षरता बढ़ गई है। जनसंचार की भूमिका के कारण अनुवादित सामग्री का सामाजिक लाभ अधिक हो रहा है।इसकी वजह से अनुवाद और जनसंचार में अवसर बढते नजर आ रहे है।

निष्कर्ष :

जनसंचार और अनुवाद दोनों ही सूचना संप्रेषण के अत्यंत महत्वपूर्ण साधन हैं।

जहाँ जनसंचार समाज में विचारों का प्रसार करता है, वहीं अनुवाद विभिन्न भाषाओं और संस्कृतियों के बीच संवाद को संभव बनाता है।अनुवाद के बिना, एक देश की महत्वपूर्ण खोजें, कलाकृतियाँ या राजनीतिक संदेश दुनिया के लिए अछुते ही रह जाते है। अनुवाद और जनसंचार के कारण विभिन्न देशों के लोग एक-दूसरे की आवश्यकताओं और दृष्टिकोणों को समझ पाते हैं। जनसंचार और अनुवाद के माध्यम से वैश्वीकरण की प्रक्रिया तेज होती है। वैश्विक संचार का भविष्य अनुवाद की सटीकता, सांस्कृतिक संवेदनशीलता और जनसंचार माध्यमों की नैतिक जिम्मेदारी पर निर्भर करता है। ये दोनों मिलकर एक ऐसी दुनिया का निर्माण कर रहे हैं जहाँ भौगोलिक और भाषाई सीमाएँ संचार में बाधा नहीं डालतीं, बल्कि मानव एकता और विश्व नागरिकता को बढ़ावा देती हैं।

संदर्भ ग्रंथ सूची :

1. *1.जॉन सी. कैटफ़ोर्ड (J.C. Catford)----*
2. *A Linguistic Theory of Translation: An Essay in Applied Linguistics*
3. *1965, ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस*
4. *2. डॉ. भोलानाथ तिवारी*
5. *अनुवाद विज्ञान*
6. *1951, परिवर्तित संस्करण,किताब महल.*
7. *3. डॉ.अंबादास देशमुख*
8. *जनसंचार माध्यम एवं हिंदी भाषा*

ISSN–2278-5655

AMIERJ Aarhat Multidisciplinary International Education Research Journal

Volume–XIV, Special Issues – III (a) Nov – Dec, 2025

OPEN ACCESS Original Research Article

9. 2017,शैलजा प्रकाशन,कानपूर.

10. 4. नाना साहब गोरे

11. संचार माध्यमों में हिंदी का प्रयोग

12. 2019,ए.बी.एस.पब्लीकेशन,वाराणसी.

13. 5. ए.वी.शनमुगन

14. जनसंचार सिद्धांत और अनुप्रयोग

15. 2009,राधाकृष्ण प्रकाशन,दिल्ली.

16. कुल शब्दसंख्या- 1858

Cite This Article:

भुस्कुटे अ. (2025). *वैश्विक संचार में अनुवाद और जनसंचार की भूमिका.* **In Aarhat Multidisciplinary International Education Research Journal**: Vol. XIV (Number VI, pp. 137–142).

ISSN–2278-5655

AMIERJ Aarhat Multidisciplinary International Education Research Journal

Volume–XIV, Special Issues – III (a) Nov – Dec, 2025

OPEN ACCESS Original Research Article

काव्य में अनुवाद की समस्याएँ

* सावित्री सूर्यकांत मांढ़रे,

* शोधार्थी, प्रो. रामकृष्ण महाविद्यालय, आकुर्डी, पुणे.

सारांश :

बीसवी सदी को अनुवाद का युग कहा गया हैं। वर्त्तमान युग में अधिकतर राष्ट्रों में यदि एक भाषा प्रधान है तो एक या अधिक भाषाए गौण पद पर दिखाई देती हैं। उत्तर आधुनिक युग में अनुवाद का महत्व और उपादेयता को विश्वभर स्वीकारा जा चुका हैं। आज विश्वभर में अनुवाद की आवश्यकता जीवन के हर क्षेत्र में महसूस की जा रही हैं। इसतरह अनुवाद आज के जीवन की अनिवार्य आवश्यकता बन गया हैं। विश्व की सभ्यताओं और संस्कृतियों के विकास में अनुवाद की विशेष भूमिका रही हैं। विश्व की सांस्कृतिक एकता में इसका महत्वपूर्ण योगदान रहा हैं। अनुवाद ज्ञान विज्ञानं के क्षेत्र में, व्यवसायों के क्षेत्र में बहुत महत्वपूर्ण भूमिका निभाता हैं। सहित्य के विकास में विविध भाषाओं के साहित्य का अध्ययन करने के लिए अनुवाद महत्वपूर्ण माना गया हैं। साहित्य की विविध विधाओं में से कविता का अनुवाद करते समय आनेवाली समस्याओं का अध्ययन करना इस शोध आलेख उद्देश्य हैं।

मूल शब्द : *अनुवाद, कविता, साहित्य, लक्ष्य भाषा, स्त्रोत भाषा, संस्कृति, शब्दचयन आदि*

Copyright © 2025 The Author(s): This is an open-access article distributed under the terms of the Creative Commons Attribution 4.0 International License (CC BY-NC 4.0) which permits unrestricted use, distribution, and reproduction in any medium for non-commercial use provided the original author and source are credited

प्रस्तावना :

अनुवाद हर क्षेत्र में अनिवार्य हो गे हो गया हैं। हमें आज विविध भाषाओं के साहित्य के अध्ययन में अनुवाद की हमें बहुत मदद मिलती हैं एक भाषा से दूसरी भाषा में अनुदित साहित्य हमारी ज्ञान वृद्धि में सहायक होता हैं। दुनिया के विभिन्न भाषाओँ में लिखे साहित्य में ज्ञान का भण्डार छिपा हुआ हैं। दुनिया के प्रसिद्ध साहित्यकार, नाटककार तथा चिंतकों के द्वारा लिखा गया साहित्य हमें अनुवाद के माध्यम से ज्ञात होता है। शेक्सपिअर, डी.एच. लोरेन्स, सार्त्र आदि यूनानी साहित्यकारों का साहित्य भारतीय भाषाओँ में अनुदित करने की वजह से हमें ज्ञात होता हैं। विश्वभर के साहित्य का और भारत के अन्य भाषाओँ के साहित्य का अध्ययन करने के लिए अनुवाद बहुत महत्वपूर्ण हो गया हैं।

साहित्य के अनुवाद का इतिहास काफी प्राचीन हैं। अनुवाद ने ना केवल विभिन्न साहित्य के विकास में महत्वपूर्ण भूमिका रही हैं। बल्कि भाषा के विकास में भी इसके योगदान को नकारा नहीं जा सकता। विभिन्न भाषाओँ के साहित्य के तुलनात्मक अध्ययन में भी अनुवाद से काफी सहायता मिली हैं। अनुवाद निम्नलिखित साहित्य के अध्ययन में सहायक होता हैं। १. भारतीय साहित्य का अध्ययन २. अंतर्राष्ट्रीय, राष्ट्रिय सहित्य का अध्ययन ३. तुलनात्मक साहित्य का

ISSN–2278-5655

AMIERJ Aarhat Multidisciplinary International Education Research Journal

Volume–XIV, Special Issues – III (a) Nov – Dec, 2025

OPEN ACCESS Original Research Article

अध्ययन।

काव्य के अनुवाद में आनेवाली की समस्याओं का अध्ययन करने से पहले हमें अनुवाद का अर्थ और परिभाषाओं का अध्ययन करना आवश्यक हैं।

अनुवाद अर्थ और परिभाषा :

अनुवाद शब्द 'अनु'और 'वाद ' इन शब्दों के योग से बना हुआ हैं। 'अनु' इस उपसर्ग का अर्थ हैं अनुगमन करना। 'वाद' इस शब्द का संबंध 'वाद' इस धातु से हैं जिसका अर्थ होता हैं , कहना अथवा बोलना। इस प्रकार अनुवाद शब्द का शाब्दिक अर्थ होगा किसी के कहने या बोलने के बाद बोलना।

अंग्रेजी के 'ट्रांसलेशन' शब्द के पर्याय के रूप में 'अनुवाद' शब्द का प्रयोग किया जाता हैं। ट्रांसलेशन शब्द लैटिन के दो शब्दों से बना हुआ हैं जिसका अर्थ होता हैं 'के पार जाना'अर्थात दूसरी भाषा में ले जाने की प्रक्रिया को ट्रांसलेशन कहा जाता हैं।

अर्थात अनुवाद एक प्रक्रिया हैं जिसके द्वारा हम एक भाषा में व्यक्त विचारों को दूसरी भाषा में व्यक्त करते हैं। जिस भाषा से अनुवाद किया जाता हैं उसे स्त्रोत भाषा और जिस भाषा में अनुवाद किया जाता हैं उसे लक्ष्य भाषा कहा जाता हैं।

अनुवाद दो भाषाओँ के बिच सेतु का काम करता हैं। अनुवाद वह प्रक्रिया हैं जिसके माध्यम से हम भाषा में व्यक्त विचारों को दूसरी भाषा के पाठकों तक पहुंचाने का कार्य करते हैं। विद्वानों ने अनुवाद की अलग अलग परिभाषाए दी हैं।

नाइडा :

अनुवाद विज्ञानं के प्रणेता नाइडा के अनुसार " अनुवाद का तात्पर्य है स्त्रोत भाषा में व्यक्त सन्देश के लिए लक्ष्य भाषा में निकटतम सहज समतुल्य सन्देश को प्रस्तुत करना। यह समतुल्यता पहले तो अर्थ के स्तर पर होती हैं फिर शैली के स्तर पर"

" Translation consists in producing in the receptors language the closet natural equivalent to the messege of the source language first in meaning and secondly in style"

इसप्रकार नाईडा अनुवाद में अर्थ और कथ्य पक्ष तथा शैली दोनों को ही महत्व देकर चलते हैं। उनके अनुसार सफल अनुवादक वही हो सकता हैं ज्यों लक्ष भाषा में अर्थ और शैली की समतुल्यता की सृष्टि कर पाने में समर्थ होता हैं।

कैटफोर्ड :

कैटफोर्ड के अनुसार , "एक भाषा की पाठ्य सामग्री को दूसरी भाषा की समानार्थक पाठ्य सामग्री में प्रतिस्थापित करना ही अनुवाद हैं।"

"The replacement of material in an language by equivalent textual material in another language ."

इसतरह कैटफोर्ड पाठ्यसामग्री को प्रतिस्थापन के रूप में परिभाषित करते हैं। अनुवाद प्रक्रिया की दो अवस्थाए हैं – प्रथम को हम अर्थवत्ता बोध की अवस्था कह सकते हैं। दुसरे को संप्रेषण कह सकते हैं। यह संपूर्ण प्रक्रिया मूल

अर्थवत्ता को – आत्मा को – एक शरीर से दुसरे शरीर में ले जाने की प्रक्रिया हैं यही से अनुवाद के अन्तरंग समस्या का आरंभ हो जाता हैं।

डॉ. भोलानाथ तिवारी :

डॉ. भोलानाथ तिवारी के अनुसार "भाषा ध्वन्यात्मक प्रतीकों की व्यवस्था हैं और अनुवाद इन्ही प्रतीकों के प्रतिस्थापना

ISSN–2278-5655

AMIERJ Aarhat Multidisciplinary International Education Research Journal

Volume–XIV, Special Issues – III (a) Nov – Dec, 2025

OPEN ACCESS Original Research Article

अर्थात एक भाषा के प्रतीकों के स्थान पर दूसरी भाषा के निकटतम (कथनत: और कथ्यत:समतुल्य और सहज पतिकों का प्रयोग।"

अर्थात भोलानाथ तिवारी काव्यानुवाद को किसी कविता का यथा संभव निकट तम समतुल्य रखने पर जोर देते हैं।

उपर्युक्त सभी कथनों से यह स्पष्ट होता है की स्त्रोत भाषा के सन्देश को लक्ष्य भाषा में अर्थ तथा शैली की दृष्टी से निकटतम सहज समतुल्यों द्वारा पुनर्सृजित करना ही अनुवाद हैं। साहित्य का अनुवाद करने के लिए अनुवादक में कई गुणों की आवश्यकता होती हैं। अनुवादक अगर सक्षम नहीं हैं तो अनुवादक काव्य के अनुवाद में आनेवाली कठिनाइयों का सामना नहीं कर पाता। साहित्य का अनुवाद करते समय अनुवादक को कई कठिनाइयों का सामना करना पड़ता हैं ।काव्य के अनुवाद में आनेवाली कई सारी कठिनाइया अनुवादक के लिए परेशानिया निर्माण कर देती हैं।

काव्य का अनुवाद :

अनुवाद की मांग दिन बदिन बढती जा रही हैं। देश में भावनात्मक एकीकरण की आवश्यकता के प्रसंग में अनुवाद कार्य को किसी भी समय राष्ट्रिय सेवा का दर्जा दिया जा सकता हैं।

कविता का अनुवाद करते समय अनुवादक को कई चुनौतियों का सामना करना पड़ता हैं। इसीलिए कवी की कविता का अनुवाद प्रस्तुत करने के पूर्व अनुवादक को उसकी अन्तरंग भावनाओं , मानसिक स्थितियों एवं उसकी समस्त साधना के स्वरुप का पूरा पूरा साक्षात्कार होना आवश्यक हैं। अनुवादक अपने को कवी की भावभूमि पर खडा कर उसके मनोभावों के अन्तस्थल में प्रवेश करता हैं। वह कवी की भावनाओं में प्रवेश कर उन्हें अपने अंतर में उतारता हैं। और अपने को उनके अनुरूप बनाता हैं। यदि अनुवादक में इतना सामर्थ्य नहीं हैं की वह यह सब कर सके तो उसे कविता का अनुवाद प्रस्तुत करने का विचार छोड़ देना चाहिए।

एक अनुवादक को भाषा का ज्ञान का होना उतना ही जरुरी हैं जितना काव्य रसा स्वादन की बुद्धि और संवेदनशील व्यक्तित्व का होना। एक भाषा के काव्य माधुर्य , उद्व्ग और उल्लास तथा रचना चातुर्य -चमत्कार को दूसरी भाषा में कुशलता पूर्वक संजोने की यह प्रक्रिया कृति विशेष के पुनर्निर्माण या पुनर्जन्म के सामान हैं। एक सिद्धहस्त अनुवादकर्ता का विशाल और उसकी परिमार्जित और परिपक्व रचनाशैली उसके साहित्यिक प्रयत्न को अपने आप में महान कहलाने की क्षमता प्रदान करते हैं।

काव्य में अनुवाद की समस्याए :

ज्ञान के साहित्य का अनुवाद प्रबुद्ध मानव के लिए बौद्धिक विकास के लिए उपयोगी हैं। तो काव्य जैसे रागात्मक साहित्य का अनुवाद मानव की अंत:वृत्तियों की समृद्धी एवं परिष्कार के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण तथा उपयोगी हैं।

काव्य में अनुवाद की कई समस्याए उभरकर आती हैं। कविता का अनुवाद बड़ी संकरी गली का राही होता हैं । वस्तुत:पद्यानुवाद की कठिनाइया इतनी अधिक एवं प्रत्यक्ष की अनेक चिंतकों ने स्पष्ट घोषित कर दिया हैं की उत्कृष्ट स्तर वाले साहित्यिक पुराण ग्रंथों का अनुवाद मूल की कला और सौंदर्य को उपयुक्त रूप से अक्षुन्न रखते हुए , एक भाषा से दूसरी भाषा में कर सकना असंभव हैं।

काव्या नुवाद में सबसे मुख्य बात यह होती हैं की कवी की अंतरात्मा में प्रवेश कर उसकी विशुद्ध अनुभूति और जीवन

ISSN–2278-5655

AMIERJ Aarhat Multidisciplinary International Education Research Journal

Volume–XIV, Special Issues – III (a) Nov – Dec, 2025

OPEN ACCESS Original Research Article

निर्मित कल्पना स्त्रोत के साथ सामंजस्य स्थापित करना । अर्थात मूल रचनाकार से तादात्म्य स्थापित करना जटिल समस्या होती हैं।

१. मूल रचनाकार से तादात्म्य की समस्या :

काव्य के अनुवाद की समस्याओं में पहली समस्या यह होती हैं -मूल रचनाकार से तादात्म्य करना। अनुवादक के लिए मूल रचनाकार से तादात्म्य की बड़ी समस्या होती हैं । तादात्म्य की यह समस्या विकट होती हैं । और कृतिधर्म में निहित हैं । अर्थवत्ता बोध में दूसरी समस्या काव्य के बहिरंग की अर्थात शब्द की होती हैं।

हर भाषा की अपनी विशिष्ट प्रकृति होती हैं , उसके शब्दों की अपनी रूढिया परंपराए , अपने संस्कार होते हैं । हर शब्द के साथ अर्थ की कुछ छायाए – छवियाँ जुडी रहती हैं। इसलिए कहा जाता हैं की कोई दो शब्द पर्यायी नहीं हो सकते। उदा.रस,संस्कार ,माया , मोह आदि भारतीय शब्द ऐसे हैं , जिनका अन्य किसी भाषा में अनुवाद कदाचित ही संभव हो। इनके साथ भारतीय चेतना , संवेदना का युगों युगों का संबध हैं।

२. काव्य में शब्दों की स्थिति की समस्या :

कविता की भाषा में यदि औदात्य , कान्ति और मर्मस्पर्शी शक्ति होती हैं। तो वह वस्तुत: शब्दचयन , विन्यास ,और छंद का चमत्कार होता हैं। काव्य में शब्द की स्थिति और भी अन्य वैशिष्ट समन्वित होते हैं । काव्य की मूल शक्ति व्यंजना होती हैं। यहाँ शब्द कोशों के अर्थ नीरस्थ हो जाते हैं। कवी वचन की अर्थवत्ता को ग्रहण करने के लिए उसके द्वारा संयुक्त शब्दों की आत्मा से परिचय होना अनिवार्य हैं । कविता की भाषा में यदि औदात्य , कान्ति ,और मर्मस्पर्शी शक्ति होती हैं तो वह वस्तुत: शब्दचयन , विन्यास और छंद का चमत्कार होता हैं। काव्य के बहिरंग तत्वों की महत्ता समझे बिना उसके अन्तरंग सौंदर्य तक पहुंचा नहीं जा सकता।

उदा.

'नभ लाली , चाली निसा
चटकाली धुनी किन
रति पाली आली अनन
आए वनमाली न'

- बिहारी

यहाँ शब्द विन्यास और ध्वनि योजना का चमत्कार स्पष्ट हैं। अत: काव्य रचना के प्राण तत्व को हृदयगम करने के लिए भाषा के हर शब्द का अन्तरंग परिचय , उसकी व्यंजना और लक्षणा शक्ति का आकलन ,शब्द विन्यास और ध्वनि प्रतिमान की समझ यह भी आवश्यक हैं।

कविता के अनुवादक की कठिनाइया अन्य गद्य विधाओं के अनुवादक की अपेक्षा अधिक होती हैं। क्यों की काव्य में भावना की तरलता , प्रतीकात्मकता और अभिव्यक्ति की सूक्ष्मता अधिक होती हैं।

३. विभिन्न देशकाल और समाज में परिवर्तन की समस्या :

काव्य अनुवाद के लिए और एक समस्या उपस्थित होती हैं की स्तरित भाषा और लक्ष्य भाषा के देशकाल वातावरण में परिवर्तन। विशिष्ट देश काल और समाज में भाषा की स्थिति तथा उसका स्वरुप अलग होता हैं । समाज के परिवर्तन के साथ किसी भाषा के शब्द और ध्वनि समुच्चय की सार्थकता बदलती हैं । यह परिवर्तन अनुवादक के लिए अर्थवत्ता बोध के लिए कठिनाइया

ISSN–2278-5655

AMIERJ Aarhat Multidisciplinary International Education Research Journal

Volume–XIV, Special Issues – III (a) Nov – Dec, 2025

OPEN ACCESS Original Research Article

उपस्थित कर सकता हैं। कुल मिलाकर काव्य का अनुवाद बड़ा दुष्कर कार्य होता हैं। देश काल वातावरण के अनुसार शब्दों का अर्थ अपेक्षाकृत भिन्न होता हैं। अभिधा , लक्षणा , व्यंजना ये शब्द शक्तिया समय और स्थान से प्रभावित होती हैं। लक्षणा का अर्थ अपेक्षाकृत भिन्न होता हैं । उसमे थोड़ी कल्पना का भी प्रयोग होता हैं। स्त्रोत भाषा और लक्ष्य भाषा का स्थान , समाज , संस्कृति में परिवर्तन होता हैं और इसी कारन मूल कवी की संवेदना और मूल कविता के भाव को सूचित करने के लिए लक्ष्य भाषा के उचित समानार्थी शब्दों का चयन करना अनुवादक के लिए कई बार बड़ी समस्या होती हैं।

उपमा , प्रतिक आदि का अनुवाद किसी सीमा तक संभव हैं , जहा लक्षणा सहायक होती हैं , जहा सांस्कृतिक वातावरण का भेद नहीं होता वहा अनुवाद आसानी से हो सकता है लेकिन जहां लक्षणा सहायक होती हैं , जहा सांस्कृतिक भेद नहीं होता वहा अनुवाद के लिए ज्यादा कठिनाइया नहीं होती। लेकिन जहा सांस्कृतिक भेद बढ़ गया हैं वहा अनुवाद का कार्य दुष्कर हो जाता हैं। वहा अनुवादक को समानार्थक शब्द के पर्याय देने होंगे।

व्यंजना का अनुवाद सबसे कठीन होता हैं। क्यों की वह सबसे अधिक अस्थिर होती हैं। जिस काव्य की शैली में व्यंजना का जितना अधिक्य होता हैं , उतना ही अनुवाद कठीन होता हैं। कामायनी ,छायावादी कविता , नयी कविता आदि का अनुवाद कठीन होता हैं।

४. कहावतों और मुहावरों के अनुवाद की समस्या :

कहावत और मुहावरों की अगर बात करे तो , कही कही मुहावरा शुद्ध लाक्षणिक रूप में प्रयुक्त होता हैं। 'पानी पानी हो गया ' यह मुहावरा आग से पानी होना के मूल रूप में बना और मूल में यह एक लाक्षणिक प्रयोग था। लेकिन बाद में बदल गया। कहावत का संबंध जनता से होता हैं। संस्कृतिया भिन्न भिन्न होती हैं , अत: कहावतों का शब्दानुवाद प्राय: नहीं होता। और किया भी नहीं जाता। इसके लिए स्त्रोत भाषा के उस कहावत से समानातर उक्ति लक्ष्य भाषा में प्रयोग करना पड़ता हैं।

५. अलंकारों के अनुवाद की समस्या :

अलंकारों की अगर बात करे तो अर्थालंकार का संबंध बिम्ब के साथ होता हैं। लक्षणा के समान ही सरल हैं। शब्दालंकार का अनुवाद अपेक्षाकृत कठीन होता हैं । इसका प्रमुख कारन होता है संस्कृतियों की भिन्नता।

जिन दो भाषाओँ के शब्द भण्डार में समानता है और वह स्त्रोत भाषा और लक्ष्य भाषा हैं तो ही श्लेष और यमक अलंकारों का अनुवाद संभव हैं। जिनके शब्दभंडार में समानता नहीं हैं उनका अनुवाद करना कठीन हो जाता हैं। उदा.स्त्रोत भाषा में स्त्री के जाँघों की उपमा केले के चिकने स्तंभ से की गयी हो किन्तु लक्ष्य भाषा ऐसे क्षेत्र की भाषा हैं जहा केले होते हो नहीं अत: उनके सौंदर्य से लोग अपरिचित होते हैं। परिणामत: उनकी भाषा में स्त्रोत भाषा की उपमा का कोई अर्थ ही नहीं।

अनुवादक के लिए सबसे जटिल समस्या तब होती हैं जब कोई उपमान स्त्रोत भाषा और लक्ष्य भाषा दोनों में हो किन्तु दोनों में उसके द्वारा उक्त भाव या विचार असमान हो या विरोधी हो। जिन अलंकारों का प्रयोग स्त्रोत भाषा में के साहित्य में होता हो उन्ही का प्रयोग लक्ष्य भाषा में होता हो , दोनों का प्रयोग अगर सामान स्थिति में होता हैं तो

ISSN–2278-5655

AMIERJ Aarhat Multidisciplinary International Education Research Journal

Volume–XIV, Special Issues – III (a) Nov – Dec, 2025

OPEN ACCESS Original Research Article

दोनों भाषाओं मे उपमान सामान सामान भाव अगर व्यक्त करते हों तो अनुवादक के सामने जटिल समस्याए नहीं आती।

निष्कर्ष :

निष्कर्षत: कुछ प्रमुख तथ्य सामने आ जाते हैं की ,काव्यानुवाद की समस्याओं में कुछ समस्या प्रमुख होती हैं जिनमे से एक हैं लक्ष्य भाषा में प्राप्त शब्द आतंरिक , बाह्य तथा प्रभाव की दृष्टी से सर्वदा समान न होना । काव्यानुवाद में छंदों की स्थिति की समस्या भी जटिल होती हैं। अनुवादक को मूल रचनाकार के साथ तादात्म्य करना कठीन हो जाता है । कई बार अलंकारों का अनुवाद ,मुहावरों , कहावतो का स्त्रोत भाषा से लक्ष्य भाषा अनुवाद करते समय आनेवाली कठिनाइयों का सामना अनुवादक को करना पड़ता है। कुल मिलाकर एक भाषा से दूसरी भाषा में काव्य का अनुवाद करना बड़ा कठीन कार्य होता हैं उसे केवल कुशल अनुवादक ही सफलता पूर्वक कर सकता हैं।

सारांश रूप में हम यह कह सकते हैं की गंभीरता से अगर विचार किया जाए तो अनुवाद एक सुरुचिपूर्ण कला हैं और अनुवादक एक कुशल कलाकार। अनुवादक को भी लेखक और कलाकार की श्रेणी में ही गिनना पड़ेगा और इस दृष्टी से वह भी उतना ही सृष्टा माना जाएगा जितना कोई अन्य लेखक। वह निश्चय ही कोई बड़ा कवी या लेखक होगा जिसने अनुवाद के क्षेत्र में भी कलात्मक रूचि का परिचय दिया हो । अनुवादक की कृति अपने आप में एक पूर्ण रचना अवश्य हैं , किन्तु वह स्वतंत्र सत्ता नहीं होती क्यों की उसकी प्रेरणा का स्त्रोत अन्यत्र हैं। अंत में हम यह कहना उचित होगा की अनुवाद साहित्य साधना एक विशिष्ट अंग हैं और उसके लिए विशेष प्रतिभा की अनिवार्यता अपेक्षित हैं। काव्यानुवाद के लिए तो और भी काव्य सुलभ योग्यताए आवश्यक होती हैं। अनुवाद और मूल काव्य रचयिता के बिच अतीन्द्रिय , अगोचर सौहार्द और अनुराग का संबध स्थापित होता हैं , और उनके इस पारस्पारिक तादात्म्य और समझौते के फलस्वरूप जो नविन रचना रूपग्रहण करती हैं उसमे पुरानी आवाज स्पष्ट सुनाई देती हैं।

सन्दर्भ :

१. *डॉ. तिवारी भोलानाथ , चतुर्वेदी महेंद्र , 'काव्यानुवाद की समस्याए',प्रकाशक -शब्दाकार ,तुर्कमान गेट दिल्ली ६ संस्करण जनवरी १९८०*

२. *अनुवाद का स्वरुप , परिभाषा – https://www.jvbi.ac.in/dde/pdf/menu/distance/SLM/MA-Hindi-Final-Paper-IX.pdf*

३. *काव्यानुवाद की समस्याए : 'तिरस्कार'कविता के सन्दर्भ में http://14.139.185.6/website/SDE/sde86.pdf*

Cite This Article:

प्रा. मांढ़रे सा. सू. (2025). काव्य में अनुवाद की समस्याएँ **In Aarhat Multidisciplinary International Education Research Journal**: Vol. XIV (Number VI, pp. 143–148).

ISSN–2278-5655

AMIERJ Aarhat Multidisciplinary International Education Research Journal

Volume–XIV, Special Issues – III (a) Nov – Dec, 2025

OPEN ACCESS Original Research Article

प्रादेशिक भाषाओं के विकास में अनुवाद का योगदान

** शेख़ आसमा रशीद एवं ** डॉ. संजय दवंगे*

** शोधार्थी, ** शोध निर्देशक, के .जे. सोमैय्या महाविद्यालय कोपरगाँव .जि. अहिल्यानगर*

भारत भाषा और संस्कृति का एक ऐसा धनी देश है जहाँ विभिन्न प्रादेशिक भाषाएँ बोली जाती हैं। ये भाषाएँ न केवल संवाद का माध्यम हैं, बल्कि उनकी अपनी संस्कृति, परंपरा और साहित्यिक विरासत भी है। प्रादेशिक भाषाओं का विकास और संरक्षण सांस्कृतिक पहचान बनाए रखने में मदद करता है।अनुवाद का अर्थ होता है किसी एक भाषा की सामग्री को दूसरी भाषा में बदलना। यह केवल शब्दों का रूपांतरण नहीं होता, बल्कि इसमें भाषा की संस्कृतियों, भावनाओं और अर्थों का सही अनुवाद करना होता है। अनुवाद ने प्रादेशिक भाषाओं को समृद्ध किया है, उनकी पहुंच बढ़ाई है, और उन्हें राष्ट्रीय स्तर पर मान्यता दिलाने में मदद की है। भाषाई विकास के लिए अनुवाद बहुत जरूरी है क्योंकि यह नयी सोच, ज्ञान और साहित्य को विभिन्न भाषाओं में पहुँचाने का माध्यम है। जब किसी भाषा की रचना दूसरी भाषा में अनूदित होती है, तो वह भाषा अपने आप को विकसित करती है, उसमें नए शब्द, अभिव्यक्ति और शैली विकसित होती है। अनुवाद, जो एक भाषा से दूसरी भाषा में अभिव्यक्ति का रुपांतरण है, प्रादेशिक भाषाओं के विकास में बेहद अहम भूमिका निभाता है। यह भाषाओं के बीच संवाद स्थापित करता है, सांस्कृतिक आदान-प्रदान को बढ़ावा देता है और साहित्य तथा ज्ञान को व्यापक स्तर पर फैलाने का काम करता है। यह अध्ययन यह समझाना चाहता है कि,अनुवाद कैसे प्रादेशिक भाषाओं के विकास का माध्यम बनता है।अनुवाद के माध्यम से हिंदी सहित अन्य प्रादेशिक भाषाओं के बीच साहित्यिक, सामाजिक और सांस्कृतिक आदान-प्रदान की प्रक्रिया की पड़ताल करना। प्रादेशिक भाषाओं के शब्दकोष, अभिव्यक्ति शैली, और सामाजिक विमर्श में अनुवाद के प्रभावों का विश्लेषण।अनुवाद की चुनौतियाँ और आधुनिक तकनीकी युग में अनुवाद के नए आयामों को समझना।भारतीय साहित्य में अनुवाद की परंपरा एवं उसके योगदान की समीक्षा करना।

Copyright © 2025 The Author(s): This is an open-access article distributed under the terms of the Creative Commons Attribution 4.0 International License (CC BY-NC 4.0) which permits unrestricted use, distribution, and reproduction in any medium for non-commercial use provided the original author and source are credited.

1. भारतीय भाषाई विविधता और प्रादेशिक भाषाएँ भारत विभिन्न भाषा-परिवारों का देश है। अपेक्षाकृत छोटी भौगोलिक सीमा में यहाँ कई प्रादेशिक भाषाएँ विकसित हुई हैं। प्रत्येक भाषा का अपना साहित्य, बोलियों तथा सांस्कृतिक संदर्भ है। ये भाषाएँ स्थानीय जीवन, लोककथाओं, रीति-रिवाजों, त्योहारों और परंपराओं की अभिव्यक्ति हैं। प्रादेशिक भाषाओं का विकास उनके भाषाई, सामाजिक और साहित्यिक विस्तार के साथ होता है।

ISSN–2278-5655

AMIERJ Aarhat Multidisciplinary International Education Research Journal

Volume–XIV, Special Issues – III (a) Nov – Dec, 2025

OPEN ACCESS Original Research Article

2. अनुवाद: परिभाषा, महत्व और प्रक्रियाअनुवाद का अर्थ है—एक भाषा के साहित्य, ज्ञान या सूचना को दूसरी भाषा में परिवर्तित करना। यह केवल शब्दों का अनुवाद नहीं, बल्कि सांस्कृतिक और भावनात्मक संदर्भों को भी बनाए रखना होता है। अनुवाद भाषा विकास का एक अनिवार्य हिस्सा है। यह भाषाओं को जोड़ता है, ज्ञान के प्रसार को आसान बनाता है, और सांस्कृतिक समृद्धि को बढ़ावा देता है।
3. अनुवाद और प्रादेशिक भाषाओं का साहित्यिक विकासअनुवाद के माध्यम से हिंदी, बंगाली, मराठी, तमिल, तेलुगु, कन्नड़, पंजाबी, गुजराती जैसी भाषाओं ने एक-दूसरे के साहित्य से समृद्धि प्राप्त की है। बंगाली के रवींद्रनाथ टैगोर की कविताएँ हिंदी सहित अनेक भाषाओं में अनुवादित हैं। प्रेमचंद के उपन्यास मराठी, तमिल, तेलुगु, बंगाली में उपलब्ध हैं।संस्कृत के ग्रंथों का प्रादेशिक भाषाओं में अनुवाद साहित्यिक दृष्टि से बिहार, उत्तर प्रदेश, मध्यप्रदेश, महाराष्ट्र, दक्षिण भारत के क्षेत्रीय भाषाओं को प्रभावी बनाया।अनुवाद ने भाषा की शब्दावली को विस्तारित किया और नए साहित्यिक रूप विकसित करने में सहयोग दिया।
4. सामाजिक-सांस्कृतिक आयामअनुवाद ने विभिन्न प्रदेशों के बीच सामाजिक चेतना और सांस्कृतिक धरोहरों के आदान-प्रदान को तेज किया है। दलित विमर्श , स्त्री विमर्श आदि के विषयों पर अनूदित साहित्य ने समाज में नए विमर्शों को जन्म दिया। प्रादेशिक भाषाओं के अनुवादित साहित्य ने सामाजिक जागरूकता बढ़ाई। विभिन्न भाषाई समुदायों को एक राष्ट्रीय सांस्कृतिक परिप्रेक्ष्य में जोड़ा।
5. शिक्षा और विज्ञान में अनुवाद का योगदानअनुवाद की वजह से न केवल साहित्य बल्कि शिक्षण सामग्री, विज्ञान, तकनीक, इतिहास आदि के ग्रंथ भी प्रादेशिक भाषाओं में उपलब्ध होते हैं। इससे छात्र, शिक्षक और शोधकर्ता स्थानीय भाषा में ज्ञान प्राप्त कर पाते हैं। अनुवाद ने शिक्षा के क्षेत्र में समानता और समावेशन को संभव बनाया।
6. मीडिया एवं संचार में अनुवाद का प्रभाव प्रादेशिक भाषाओं के समाचारपत्र, रेडियो, टेलीविजन आदि माध्यमों में अनुवाद की भूमिका अहम है। यह मीडिया को व्यापक रूप से दर्शकों तक पहुँचाने और विभिन्न भाषाई समुदायों के बीच संवाद स्थापित करने में मदद करता है।
7. आधुनिक तकनीकी युग में अनुवाद डिजिटल उपकरणों, मशीन ट्रांसलेशन और बहुभाषीय प्लेटफॉर्म ने अनुवाद के क्षेत्र में नई संभावनाएँ खोली हैं। अनुवाद कार्य तेज, सुविधाजनक एवं व्यापक हो गया है, जिससे प्रादेशिक भाषाओं का विकास भी तेजी से हो रहा है।
8. चुनौतियाँ और समाधान अनुवाद की प्रक्रिया में सांस्कृतिक संदर्भों की ग़लत व्याख्या, भाव की अपूर्णता, तकनीकी शब्दों का उचित न होना कुछ प्रमुख चुनौतियाँ हैं। इनका समाधान उच्च प्रशिक्षित अनुवादकों, तकनीकी सहायता और सही संदर्भ अध्ययन से किया जा सकता है।

अनुवाद का कार्य भारतीय भाषाओं के समृद्धि और विकास में अविस्मरणीय भूमिका निभाता है। भारत की बहुभाषिक सांस्कृतिक विरासत में अनुवाद न केवल भाषाओं के बीच संवाद स्थापित करता है, बल्कि यह विभिन्न समुदायों की सोच, संस्कृति और सामाजिक चेतना को मिश्रित करता है। अनुवाद के माध्यम से हिंदी सहित तमाम प्रादेशिक भाषाओं

ISSN–2278-5655

AMIERJ Aarhat Multidisciplinary International Education Research Journal

Volume–XIV, Special Issues – III (a) Nov – Dec, 2025

OPEN ACCESS Original Research Article

ने विश्व साहित्य से लाभ उठाया और अपने स्थानीय साहित्य को राष्ट्रीय तथा अंतर्राष्ट्रीय मंच पर प्रस्तुत किया। साहित्यिक विकास के अलावा, अनुवाद ने सामाजिक विमर्श को भी प्रोत्साहित किया है। दलित विमर्श , स्त्री विमर्श जैसे आदि विषयों पर आधारित साहित्य का अनुवाद समाज में नई सोच और बदलाव की ओर एक मजबूत कदम है। इससे स्थानीय सीमाओं से परे सामाजिक जागरूकता फैलती है। अनुवाद के जरिए सामाजिक बंधनों के साथ सांस्कृतिक विभिन्नताओं को स्वीकारते हुए एकता का संदेश भी मिलता है।शिक्षा के क्षेत्र में अनुवाद की भूमिका महत्वपूर्ण है। प्रादेशिक भाषाओं में विज्ञान, तकनीक, इतिहास, और अर्थशास्त्र के ग्रंथों के अनुवाद से शैक्षिक सामग्री व्यापक हो गई है, जिससे हर भाषा-भाषी विद्यार्थी को ज्ञान की उपलब्धता सुनिश्चित होती है। इससे शिक्षा में समानता आती है और शोध की दिशा भी समृद्ध होती है। डिजिटल युग में अनुवाद की यह भूमिका और भी सशक्त हुई है, जहां मशीन ट्रांसलेशन, बहुभाषीय प्लेटफ़ॉर्म और इंटरनेट ने अनुवाद कार्य को तेज और व्यापक बनाया है। फिर भी, अनुवाद के क्षेत्र में कई चुनौतियाँ हैं जैसे भाषा विशेष के भाव-प्रवाह का सही अनुवाद करना, सांस्कृतिक संदर्भों को समुचित रूप में देना और तकनीकी शब्दों का सही अनुवाद। इन चुनौतियों को पार करने के लिए प्रशिक्षित अनुवादकों तथा तकनीक का उपयोग आवश्यक है। अनुवाद केवल शब्द परिवर्तन ही नहीं, बल्कि एक जटिल कला और विज्ञान है जो ज्ञान, संस्कृति तथा भाषा के विकास का आधार है।इस प्रकार, अनुवाद भारतीय भाषाओं के विकास, सामाजिक समरसता, और सांस्कृतिक संवाद का एक शक्तिशाली माध्यम है। अनुवाद के बिना बहुभाषिक भारत का सांस्कृतिक और साहित्यिक समृद्धि की कल्पना कठिन होगी। आने वाले समय में भी अनुवाद का महत्व एवं आवश्यकता और बढ़ेगी, जो भाषा के विकास एवं राष्ट्रीय एकता के लिए अनिवार्य है। प्रादेशिक भाषाओं के विकास में अनुवाद ने निर्णायक भूमिका निभाई है। यह भाषाओं की समृद्धि, सामाजिक और सांस्कृतिक एकता, तथा ज्ञान के प्रसार का आधार है। अनुवाद के जरिए प्रादेशिक भाषाएँ न केवल जीवित रही हैं बल्कि आधुनिक युग में उनका विकास और विस्तार हुआ है। भविष्य में अनुवाद की भूमिका और भी महत्वपूर्ण होगी जो राष्ट्रीय अखंडता में सहायक होगी।

संदर्भ सूची :

1. *शर्मा, अमित (2024). हिंदी नवजागरण के विकास में अनुवाद की भूमिका. नई दिल्ली: हिंदी साहित्य परिषद।*
2. *वर्मा, सीमा (2023). भारतीय भाषाओं में अनुवाद की स्थिति. पटना: बिहार हिंदी साहित्य सम्मेलन।*
3. *त्रिपाठी, रजनीश (2022). अनुवाद और भाषा का विकास. प्रयागराज: साहित्य अकादमी।*
4. *मिश्रा, सुनील (2021). प्रादेशिक भाषाओं का साहित्यिक विकास. वाराणसी: ज्ञान भारती प्रकाशन।*
5. *सिंह, मंजीत (2020). भारत में भाषा और अनुवाद. दिल्ली: राष्ट्रीय शोध परिषद।*
6. *खुराना, नरेश (2019). सामाजिक विमर्श और अनुवाद. जयपुर: राजस्थान साहित्य संस्थान।*
7. *सिंह, सीमा (2025). डिजिटल युग में अनुवाद की चुनौतियाँ एवं समाधान. मुंबई: टेक्नो पब्लिकेशन।*
8. *हिंदी विकिपीडिया, अनुवाद – https://hi.wikipedia.org/wiki/अनुवाद 4*

ISSN–2278-5655

AMIERJ Aarhat Multidisciplinary International Education Research Journal

Volume–XIV, Special Issues – III (a) Nov – Dec, 2025

OPEN ACCESS Original Research Article

9. *भारतीय भाषाओं के बिच अनुवाद की जरूरत – https://egyankosh.ac.in/bitstream/123456789/41762/1/Unit-5.pdf 5*

10. *विकास शिक्षा के लिए अनुवाद अध्ययन का महत्व https://developmenteducationreview.com/issue/issue-14/importance-translation-studies-development-education 3*

11. *भारत में अनुवाद का प्रचलन - सहपीडिया – https://sahapedia.org/the-practice-of-translation-india 6*

12. *हिंदी नवजागरण में अनुवाद की भूमिका-ApniMati – https://www.apnimaati.com/2024/09/blog-post_24.html 1*

Cite This Article:

शेख आ. र. एवं डॉ. दवंगे सं. (2025). *प्रादेशिक भाषाओं के विकास में अनुवाद का योगदान* **In Aarhat Multidisciplinary International Education Research Journal**: Vol. XIV (Number VI, pp. 149–152).

ISSN–2278-5655

AMIERJ Aarhat Multidisciplinary International Education Research Journal

Volume–XIV, Special Issues – III (a) Nov – Dec, 2025

OPEN ACCESS Original Research Article

कविता और अनुवाद

* उज्वला चांगदेव पिंगळे

* शोधार्थी, प्रो. रामकृष्ण मोरे कॉलेज, आकुर्डी, पुणे - 411044

सारांश :

कविता और अनुवाद इस लेख में कविता और अनुवाद के पारस्परिक संबंध की गहन पड़ताल की है। कविता को भाव, अनुभूति और कल्पना की संक्षिप्त तथा कलात्मक अभिव्यक्ति माना गया है, जबकि अनुवाद मात्र भाषाई रूपांतरण नहीं, बल्कि पुनर्जन्म ऐसी सृजनात्मक प्रक्रिया बताया है जो भाषाओं, संस्कृतियों और पाठक-समुदायों के बीच सेतु बनाती है। लेख में अनुवाद के प्रमुख प्रकार, शब्दानुवाद, भावानुवाद, सांस्कृतिक अनुवाद तथा काव्यानुवाद, का उल्लेख किया है और काव्यानुवाद की विशिष्ट माँगों पर प्रकाश डाला गया है। अर्थ-भाव के संतुलन, अलंकारों के रूपांतरण, छंद-लय की संगीतमयता, प्रतीक-बिंबों के सांस्कृतिक अर्थ, और मिथकीय-सांस्कृतिक संकेतों के रूपान्तर जैसी कठिनाइयों को केंद्र में रखकर बताया गया है कि अनुवादक सह-रचनाकार की भूमिका निभाता है; उसे दोनों भाषाओं और संदर्भ-संस्कृतियों का गहन ज्ञान, संवेदनशीलता तथा शैलीगत लचीलेपन की आवश्यकता होती है। वैश्वीकरण और डिजिटल मंचों के दौर में, जब मशीन-अनुवाद व्यापक है, लेख का निष्कर्ष है कि कविता का सफल अनुवाद मानवीय स्पर्श और संवेदना से ही संभव हो सकता है। ऐसाही अनुवाद मूल की आत्मा को बचाए रखते हुए उसे नई भाषा में नया जीवन देता है। अनेक आलोचकों की दृष्टि से कुछ मतभेद है कि क्या कविता का अनुवाद आत्मा बचा पाती है, या वह अलग कृति के रूप में जन्म लेती है? इसके संदर्भ में यहाँ यह प्रतिपादित किया गया है कि संवेदनशील और सृजनात्मक अनुवाद मूल काव्य का विस्तार बनकर उसे विश्व-स्तरीय संवाद में सम्मिलित करता है; इसी के कारण कबीर, तुलसी, मीराबाई के प्रभावी अंग्रेज़ी अनुवाद तथा शेक्सपियर के हिंदी रूपान्तर पाठकों को समान रूप से आकृष्ट कर पाते हैं।

Copyright © 2025 The Author(s): This is an open-access article distributed under the terms of the Creative Commons Attribution 4.0 International License (CC BY-NC 4.0) which permits unrestricted use, distribution, and reproduction in any medium for non-commercial use provided the original author and source are credited.

प्रस्तावना :

कविता मनुष्य के अंतर्मन की ध्वनि है जिसमें मनुष्य के भावों को, अनुभवों को, संवेदनाओं को, कल्पनाओं को, अनुभूतियों को कम से कम शब्दों में व्यक्त करने का सामर्थ्य है। कविता केवल शब्दों का चयन नहीं होता बल्कि जीवन की सच्चाई को, हृदय की ध्वनि को गहराई से व्यक्त करने का प्रभावी माध्यम है। कविता में व्यक्त शब्द कवि के मन के भावों का आत्मा से समन्वय होता है। किसी एक भाषा में कविता का जन्म दूसरी अनुवादित भाषा में रूपांतरण नहीं बल्कि वह कविता का पुनर्जन्म ही होता हैं। यह अनुवाद कितनी ही सीमाओं को लाँघकर पाठकों की आत्मा तक पहुंचता है।

ISSN–2278-5655

AMIERJ Aarhat Multidisciplinary International Education Research Journal

Volume–XIV, Special Issues – III (a) Nov – Dec, 2025

OPEN ACCESS Original Research Article

अनुवाद से केवल कविता का भाषाई परिवर्तन नहीं होता, वह कविता को नई भाषा में नया जीवन देता है। अनुवादक कवि की अनुभूति को अपने शब्दों में रचते हुए उसे नया जन्म देता है। कविता का अनुवाद, कविता को नए सांस्कृतिक संदर्भ में नए पाठकों तक पहुंचाता है इसलिए कविता और अनुवाद दोनों में ही सृजनात्मकता है, जिससे कविता और अनुवाद दोनों ही समृद्ध हो जाते हैं।

कविता का स्वरूप :

कविता को परिभाषित करना कठिन है। कविता में कम से कम शब्दों में मनुष्य के भीतर के गहरे भावार्थ को अलंकारिकता के साथ व्यक्त करने का सामर्थ्य होता है। कविता भाषा का कलात्मक और सूक्ष्म रूप है जिसमें गेयता, लय, प्रतीक, बिंब, तुक, छंद और भाव प्रधान होते है। यही कारण है कि कविता जीवन के सत्य को सुंदरता के साथ हमारी संवेदना को व्यक्त करती है। कवि के विचारों को, कल्पनाओं को अपना विशेष नया अर्थ देते हुए काव्य सृजन करते हुए कविता अपना अलग महत्व रखती है। कई बार हम अच्छी कविता को पढते है और कविता के शब्द, अर्थ, और कविकल्पना के बारे में बहुत ही प्रभावित होते है। इससे यह लगता है कि कविता वह नहीं जो हम कहते है, कविता वह है जो कवि के अंतर्मन से निकलती है। मतलब कविता सिर्फ शब्दों में नहीं होती, कवि के मन की खामोशी में भी होती है। कविता एक अनुभव और अनुभूति का सफर है।

अनुवाद और उसका कार्य :

किसी एक भाषा में लिखित साहित्य या सामग्री को दूसरी भाषा में रूपांतरित करना अनुवाद है। अनुवाद में केवल शब्द परिवर्तित नहीं होते उसे पुनर्सृजन की प्रक्रिया कहा जा सकता है। अनुवाद स्रोत भाषा से लक्ष्य भाषा में किया जाता है। अनुवाद का विकास पहले पश्चिमी देशों में हुआ। "हिंदी में ग्रंथ आदि के व्यवस्थित अनुवादों की परंपरा 16वीं सदी से मिलने लगती है। 16वीं सदी से 18वीं सदी के मध्य तक मुख्यतः धर्म (हिंदू, जैन, बौद्ध, इस्लाम) वैद्यक, ज्योतिष, कोश, साहित्य, कोकशास्त्र, व्याकरण तथा नीति से संबंद्ध ग्रंथो (मुख्यतः संस्कृत से कुछ अरबी-फारसी से भी) के अनुवाद हुए। इनमें अनेक तो पांडुलिपि के रूप में विभिन्न ग्रंथागारों में पड़े हैं और कुछ प्रकाशित भी है।"(1) इसके बाद भारत में स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद अंग्रेजी भाषा की जगह स्वदेशी भाषा को महत्व देते हुए, अंग्रेज शासन काल में अंग्रेजी में लिखे गए अनेक विषयों के अनुवाद की जरूरत पड़ने पर अनुवाद का महत्व बढ़ गया। इसके कारण हमारे भारत देश में अनुवाद को अभ्यास का एक विशिष्ट विषय बनाया गया है।

किसी भाषा के साहित्य या सामग्री को दूसरी भाषा में रूपांतरित करना इतना आसान नहीं है। कविता संवेदनशील तथा कम से कम शब्दों में ज्यादा आशय व्यक्त करती है इसके कारण उसका अनुवाद करना एक चुनौती है। अनुवादक का कार्य एक सेतु की तरह होता है। वह दो भाषाओं को, दो संस्कृतियों को और दो परंपराओं को समानता की दृष्टि से निकट लाने का प्रयास करता है और जोड़ने का कार्य करता है। कविता का अनुवाद एक सृजनशीलता का काम है जिसमें श्रद्धा, निष्ठा, कल्पनाशक्ति और मेहनत की आवश्यकता होती है, तभी कविता को वैश्विक स्वरूप प्राप्त हो सकता है। कविता के अनुवाद से विश्व का साहित्य एक दूसरे से जुड़ा है| अनेक विदेशी कविताएं उनकी भाषा को न जानते हुए भी पाठक पढ़ सकते हैं।

ISSN–2278-5655

AMIERJ Aarhat Multidisciplinary International Education Research Journal

Volume–XIV, Special Issues – III (a) Nov – Dec, 2025

OPEN ACCESS Original Research Article

अनुवाद के कई प्रकार है :

1. **शब्दानुवाद -** जिसमें रचना के मूल शब्द को सहज ही लक्ष्य भाषा में व्यक्त किया जाता है।
2. **भावानुवाद -** जिसमें रचना के मूल भाव को और अर्थ को केंद्र में रखते हुए अनुवाद किया जाता है।
3. **सांस्कृतिक अनुवाद -** जिसमें सांस्कृतिक प्रतीकों का और अर्थों का समानार्थी रूप ढूंढा जाता है जिससे अनुवादित भाषा के वाचक भी उसका अनुभव कर सकते हैं।
4. **काव्यानुवाद -** उपर्युक्त तीनों से भिन्न चौथा रूप कविता के अनुवाद का है इसमें अनुवादकर्ता को लय, ताल, तुक, छंद, बिंब और संस्कृति का गहरा ज्ञान होना चाहिए। तभी वह काव्यानुवाद के साथ न्याय करता है और कविता की आत्मा को बनाए रख सकता है। अनुवादक मूल काव्य को नई भाषा में पुनर्रचित करता है। अतः काव्य का अनुवाद मूल कविता का नया संस्करण होता है।

वास्तव में कविता का अनुवाद करना कई बार कठिन लगता है। कभी-कभी कविता अन्य रचनाओं से अलग होती है। इसमें जो तत्व होते हैं, वे अनुवाद में लाना कठिन हो जाता है। यहां हम काव्यानुवाद में आने वाली कठिनाइयों को देखेंगे।

काव्यानुवाद की कठिनाइयाँ :

1. **कविता में व्यक्त भाव और अर्थ का संतुलन -** अनुवादक को कई बार स्रोत भाषा के शब्द का सही प्रतिशब्द नहीं मिल पाता। ऐसी स्थिति में अनुवादक अगर भाव को प्रधानता देता है, तो मूल शब्दों का अर्थ बदल सकता है और अगर मूल शब्द का प्रयोग वैसे के वैसा ही रखता है, तो भाव नहीं रहता। तब अनुवादक को सृजनात्मक संतुलन बनाकर रखना पड़ता है जिससे अनुवाद में जीवंतता भी आए और वाचकों तक आशय भी पहुंचे।
2. **अलंकारों का काव्यानुवाद कठिन कार्य है -** काव्य की अलंकारप्रधान भाषा को, दूसरी भाषा में अनुवाद करते समय ठीक-ठाक उतरना कठिन हो जाता है क्योंकि अनुवाद की लक्ष्य भाषा में उस शब्द का अर्थ बिल्कुल उल्टा होता है या तो एक ही शब्द के दो अलग-अलग अर्थ उस भाषा में होते ही नहीं। जैसे -"कनक कनक ते सौगुनी मादकता अधिकाय, बा खाय बौराए नर, वो पाए बौराए।" (2)

   यहां कनक का अर्थ सोना भी है और धतूरा (नशीला फल) भी है। सोने के मिलने से और धतुरे के खाने से मनुष्य को मादकता याने नशा आ जाता है, दोनों के प्राप्त होने से वह बौरा जाता है। ऐसी स्थिति में अनुवाद की भाषा में इस प्रकार दो अर्थ वाला एक ही शब्द मिलना कठिन हो जाता है और अनुवाद प्रभावी नहीं हो पाता।
3. **काव्यानुवाद में लय और छंद की समस्या -** काव्यानुवाद में अलंकारों की तरह ही छंदो और लय की समस्या जटिल हैं। किसी दूसरी भाषा में कविता को इस संगीतमय धुन में बांधना बड़ी कठिन समस्या है। अगर दूसरी भाषा के वाचक को मूल छंद, लय महसूस ना हो तो अनुवाद बोझिल सा बन जाएगा, सफल नहीं हो पाएगा।
4. **प्रतीक और बिंब की समस्या -** हर भाषा में शब्द का अपना-अपना अपना अर्थ बिंब होता है इसलिए काव्य भाषा में प्रयुक्त शब्द का भाव और अर्थ अलग-अलग

ISSN–2278-5655

AMIERJ Aarhat Multidisciplinary International Education Research Journal

Volume–XIV, Special Issues – III (a) Nov – Dec, 2025

OPEN ACCESS Original Research Article

भाषा में बदलेगा। हमारी भाषा में 'उल्लू' शब्द मूर्खता को दर्शाता है, तो अंग्रेजी भाषा में 'उल्लू' को बुद्धिमान माना जाता है। ऐसी स्थिती में अंग्रेजी में अनुवाद करते समय 'उल्लू' की जगह मूर्खता को दर्शाने वाले जानवर का नाम लेना पड़ेगा।

5. **मिथकिय सांस्कृतिक अभिव्यक्तियों के अनुवाद की समस्याएं -** प्रत्येक देश की संस्कृति,सामाजिक स्थिति, भौगोलिक स्थिति, राजकीय परिवेश अलग-अलग होने के कारण उसके अनुसार निर्मित शब्दों के अर्थ भी अलग-अलग होते हैं। हमारी भाषा में 'कुंभकर्ण' का अर्थ ज्यादा सोने वाले व्यक्ति के लिए लिया जाता है और 'बिभीषण' का अर्थ कुल के भेदी के लिए लिया जाता है। ये शब्द नाम हैं अगर उन्हें अनुवाद करते समय वैसे के वैसे ही लिए जाए तो अनुवादित लक्ष्य भाषा वाला पाठक उस शब्द के अर्थ को नहीं समझ पाएगा। ऐसी स्थिति में हमें पृष्ठ के तल में टिप्पणी देनी पड़ेगी।

6. **अनुवादक की भूमिका -** अनुवादक को सह-रचनाकार भी कहा जाता है। वह मूल कविता का नया संस्करण करता है। अतः अनुवादक का व्यक्तित्व, भाषा ज्ञान, रचनात्मकता की कला, और संवेदना पर ही कविता के अनुवाद की सफलता निर्भर होती है। इस दृष्टि से कविता अनुवाद के अभ्यासकों ने अनुवाद के बारे में इस प्रकार मत व्यक्त किए हैं।

i) कविता अनुवादक को दोनों भाषाओं का गहरा ज्ञान तथा विषय की जानकारी होनी चाहिए।

ii) कविता अनुवादक को कविता के भावों को प्रधानता देनी चाहिए।

iii) कविता अनुवाद में अनुवादक की अंतर्प्रेरणा के प्रभाव से अनुवाद मौलिक हो जाता है।

iv) कविता अनुवाद करते समय लक्ष्य भाषा में विषय और शैली में सहजता आनी चाहिए।

v) कविता का अनुवाद मूल काव्य के निकट और सहज, समतुल्य होना चाहिए।

vi) कविता का अनुवाद ऐसा हो, वाचक को वह पढ़ते समय मूल काव्यकृति पढ़ने का आभास होना चाहिए।

इस प्रकार कविता भावों को व्यक्त करती है और अनुवाद कविता का प्रसार करता है। कविता और अनुवाद के बीच पारस्परिक गहरा संबंध है। अनुवादक जब भाषा की सीमा तोड़कर संवेदना को प्रभावी बनाता है, तो कहा जा सकता है कि कविता कवि का 'आविष्कार' है तो अनुवाद 'प्रसार' है। इस प्रकार हिंदी काव्य कृतियों के प्रभावी अंग्रेजी अनुवाद के कारण कबीर, तुलसी, मीराबाई की काव्य रचनाएं विश्व कविता बन गई है और शेक्सपियर के हिंदी अनुवाद को पढ़ते है तो वह वाचक पर अलग प्रभाव छोड़ता है। इस प्रकार अनुवाद द्वारा साहित्य का आदान-प्रदान बड़ी सहजता से होता है।

अनुवाद की वैश्विक दृष्टि :

अनुवाद द्वारा काव्य कृति को एक स्थान से दूसरे स्थान तक पहुंचाया जाता है। वह समाज के बीच संवाद का प्रभावी माध्यम बन जाता है। भले ही विश्व में अनेक भाषाएं बोलने वाले लोग विविध प्रांतो में रहते हैं। उनकी भाषाएं, परंपराएं अलग-अलग है, फिर भी मनुष्य की भावनाएं, अनुभव, सुख-दुख, आनंद, संघर्ष की अनुभूति में समानता देखने को मिलती है।

ISSN–2278-5655

AMIERJ Aarhat Multidisciplinary International Education Research Journal

Volume–XIV, Special Issues – III (a) Nov – Dec, 2025

OPEN ACCESS Original Research Article

आज इंटरनेट के जरिए पूरा विश्व एक साथ जुड़ गया है इसलिए ज्ञान प्राप्ति के लिए वैश्विक पाठकों के लिए अनुवाद की आवश्यकता और बढ़ गई है। यह अनुवाद केवल अनुवाद न रहकर विश्व का सांस्कृतिक आदान-प्रदान का माध्यम बन गया है। विश्व भर में कविता के डिजिटल मंच और ऑनलाइन अनुवाद की शिक्षा, ऑनलाइन कार्यशालाएं, ऑनलाइन पत्रिकाएं,सक्रिय है। विश्व के अनेक देशों के साथ काव्य परंपरा का मंच स्थापित हो रहा है। ऐसी स्थिती में अनुवाद मशीन द्वारा नहीं हो सकता। कविता का अनुवाद मानवी स्पर्श और संवेदना से ही सफल हो सकता है।

अनुवाद के बारे में आलोचक की दृष्टि :

अनेक आलोचकों के द्वारा यह प्रश्न उठाए गए हैं कि कविता के अनुवाद से क्या कविता की आत्मा बच पाती है?

कई आलोचकों के माता अनुसार मूल कविता ही अलग सौंदर्य और आत्मा से पूर्ण है और कुछ आलोचकों के द्वारा यह कहा जाता है, कविता का अनुवाद उसका पुनर्जन्म है, वह मूल कविता से भिन्न होकर जीवित रहती है। इससे यह निष्कर्ष निकलता है कि अनुवाद से मूल कविता में रूपांतरण जरूर होता है परंतु अगर अनुवादक संवेदनशील, सृजनशील है और कविता को नया अर्थ, नई प्रासंगिकता दे सकता है तो कविता के मूल अर्थ और भाव को कुछ हानि नहीं होगी बल्कि विकास ही होगा। कविता और अनुवाद एक दूसरे के बिना अधूरे हैं। कविता की भाषा के सौंदर्य का अनुवाद अधिक सजा कर उसे नयी भूमि देता है और अनुवादक अपनी सीमाओं को लांघकर नयी-नयी संस्कृतियों को पाठकों तक पहुंचा देता है।

निष्कर्ष :

कविता का अनुवाद भले ही बहुत कठिन कार्य हो परंतु वह असंभव नहीं है। वास्तविकता यह है की कविता अनुवाद में अनुवाद मूल नहीं होगा, कविता ही मूल है और अनुवाद मूल के निकट होता है। इस दृष्टि से कविता मनुष्य के आत्मा की भाव-भावनाओं के भीतर की अनुभूति है तो अनुवाद उसे विश्व के समाज तक पहुंचाता है। अनुवादक कवि की कविता को अमरता देता है। यह एक ऐसा संवाद है जो समाज के हृदय को एक दूसरे से जोड़ता है और इसकी ध्वनि विश्व के दूर-दूर के देशों में अलग-अलग भाषाओं में विविध संस्कृतियों में अनुवाद के माध्यम से गूंजती रहती है।

संदर्भ ग्रंथ :

1) अनुवादविज्ञान - भोलानाथ तिवारी

2) अनुवाद की व्यावहारिक समस्याएं - भोलानाथ तिवारी,ओमप्रकाश गाबा

3) हिंदी अनुवाद एवं भाषिक संरचना - डॉक्टर सो शकुंतला पांचाल

4) अनुवाद भाषाएं-समस्याएं - एन ई विश्वनाथ अय्यर

5) भारतीय भाषाएं और हिंदी अनुवाद समस्या-समाधान - कैलाश चंद्र भाटिया

संदर्भ :

1) अनुवादविज्ञान - भोलानाथ तिवारी पृ.182

2) अनुवादविज्ञान - भोलानाथ तिवारी पृ.119

Cite This Article:

पिंगळे उ. चां. (2025). कविता और अनुवाद. **In Aarhat Multidisciplinary International Education Research Journal**: Vol. XIV (Number VI, pp. 153–157).

ISSN–2278-5655

AMIERJ Aarhat Multidisciplinary International Education Research Journal

Volume–XIV, Special Issues – III (a) Nov – Dec, 2025

OPEN ACCESS Original Research Article

लोकसाहित्य और अनुवाद : एक शोधात्मक अध्ययन

* क्रिश्मा नवलकिशोर संगर,

सहायक प्राध्यापक, आण्णासाहेब मगर कॉलेज, हड़पसर, पुणे

सारांश :

लोकसाहित्य किसी समाज की आत्मा, उसकी परंपरा, संवेदना और जीवन-दृष्टि का सजीव दस्तावेज होता है। यह उस वर्ग की रचनात्मक अभिव्यक्ति है जो लिखित साहित्य से प्रायः बाहर रह जाता है। लोकगीत, लोककथाएँ, लोककहावतें, लोकोक्तियाँ, लोकनृत्य और लोकनाटक— ये सब मिलकर समाज की सांस्कृतिक पहचान बनाते हैं। दूसरी ओर, अनुवाद वह सेतु है जो विभिन्न भाषाओं, संस्कृतियों और सभ्यताओं के बीच संवाद स्थापित करता है।

लोकसाहित्य और अनुवाद का पारस्परिक संबंध अत्यंत गहरा है। लोकसाहित्य का वास्तविक स्वरूप तभी व्यापक होता है जब उसका अनुवाद विभिन्न भाषाओं में किया जाए और उसका सांस्कृतिक प्रसार विस्तृत रूप में संभव हो सके। यह शोध-निबंध लोकसाहित्य की संकल्पना, उसके विविध रूपों, अनुवाद की प्रक्रिया, उससे जुड़ी चुनौतियों तथा अनुवाद के माध्यम से लोकसाहित्य के वैश्विक प्रसार पर केंद्रित है।

Copyright © 2025 The Author(s): This is an open-access article distributed under the terms of the Creative Commons Attribution 4.0 International License (CC BY-NC 4.0) which permits unrestricted use, distribution, and reproduction in any medium for non-commercial use provided the original author and source are credited.

प्रस्तावना (Introduction):

लोकसाहित्य किसी भी राष्ट्र की सांस्कृतिक धरोहर का अमूल्य हिस्सा है। यह साहित्य केवल मनोरंजन का साधन नहीं, बल्कि सामूहिक चेतना का प्रतीक है। गाँवों की मिट्टी, लोक की संवेदना और समाज की सामूहिक स्मृति इसमें सुरक्षित रहती है।

आज के वैश्वीकरण के दौर में जब सीमाएँ टूट रही हैं, तब लोकसाहित्य को व्यापक जनसमूह तक पहुँचाने के लिए अनुवाद की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण बन गई है।

अनुवाद न केवल भाषाई रूपांतरण है बल्कि सांस्कृतिक संप्रेषण की प्रक्रिया भी है। लोकसाहित्य का अनुवाद करते समय केवल भाषा नहीं बदलती, बल्कि उसमें छिपे भाव, संस्कार, लोकविश्वास, प्रतीक और रूपक भी एक नई व्याख्या पाते हैं।

लोकसाहित्य की संकल्पना (Concept of Folk Literature):

"लोक" शब्द का अर्थ है जनसामान्य या आम जनता। "लोकसाहित्य" का तात्पर्य है— जनमानस द्वारा सृजित, मौखिक रूप से प्रसारित और परंपरा से पोषित साहित्य।

ISSN–2278-5655

AMIERJ Aarhat Multidisciplinary International Education Research Journal

Volume–XIV, Special Issues – III (a) Nov – Dec, 2025

OPEN ACCESS Original Research Article

लोकसाहित्य की प्रमुख विशेषताएँ:

1. **मौखिक परंपरा** : लोकसाहित्य का मूल स्वर मौखिक है। यह पीढ़ी दर पीढ़ी स्मृति और वाणी के माध्यम से आगे बढ़ता है।
2. **सामूहिकता** : यह किसी एक व्यक्ति का नहीं बल्कि समाज का सामूहिक सृजन है।
3. **अनामत्व** : इसके रचनाकार का नाम प्रायः ज्ञात नहीं होता।
4. **प्राकृतिकता और सरलता** : भाषा सहज, भावनाएँ स्वाभाविक और प्रतीक स्थानीय होते हैं।
5. **संस्कृति का दर्पण** : लोकसाहित्य किसी भी समुदाय की संस्कृति, परंपरा और जीवन मूल्यों का सजीव चित्रण करता है।

लोकसाहित्य के प्रकार:

- लोकगीत (जैसे सोहर, बिरहा, आल्हा, भजन, विवाह गीत)
- लोककथाएँ (पौराणिक, ऐतिहासिक, नैतिक, मनोरंजक)
- लोकोक्तियाँ और कहावतें
- लोकनाटक और लोकनृत्य
- लोकपर्व और अनुष्ठानिक साहित्य

अनुवाद की भूमिका (Role of Translation):

अनुवाद केवल शब्दों का रूपांतरण नहीं, बल्कि संस्कृतियों के बीच संवाद की कला है। लोकसाहित्य का अनुवाद लोकजीवन को वैश्विक मंच तक पहुँचाने का माध्यम बनता है। लोककथाओं या गीतों का जब एक भाषा से दूसरी भाषा में अनुवाद किया जाता है, तब वह समाज की आत्मा को नए समाज से परिचित कराता है। उदाहरणस्वरूप, हिंदी की लोककथाएँ जब अंग्रेज़ी या अन्य भारतीय भाषाओं में अनूदित होती हैं तो वे विश्व-मानवता की साझी धरोहर बन जाती हैं।

लोकसाहित्य के अनुवाद की आवश्यकता (Need for Translation of Folk Literature):

1. संस्कृति के संरक्षण हेतु: अनुवाद लोकपरंपरा को लुप्त होने से बचाता है।
2. वैश्विक पहचान: अनुवाद से लोकसाहित्य विश्वपटल पर पहुँचता है।
3. सांस्कृतिक संवाद: विभिन्न भाषाई समुदायों में परस्पर समझ और सहानुभूति बढ़ती है।
4. शोध और अध्ययन के लिए उपयोगी: लोकसाहित्य के अनुवाद से साहित्य, समाजशास्त्र, नृविज्ञान आदि के शोधकर्ताओं को सामग्री उपलब्ध होती है।
5. शैक्षिक उद्देश्य: यह भावी पीढ़ी को अपनी जड़ों से जोड़ने में सहायक है।

लोकसाहित्य के अनुवाद की चुनौतियाँ (Challenges in Translating Folk Literature):

1. भाषाई कठिनाइयाँ: लोकभाषा में प्रयुक्त मुहावरों, कहावतों और प्रतीकों का सटीक अर्थ अन्य भाषा में देना कठिन होता है।
2. सांस्कृतिक भिन्नताएँ: किसी एक संस्कृति की विशेष परंपरा, विश्वास या लोकाचार को दूसरी संस्कृति के पाठक तक पहुँचाना चुनौतीपूर्ण होता है।
3. ध्वनि और लय की हानि: लोकगीतों में जो संगीतात्मकता होती है, उसका अनुवाद में पूर्ण रूप से संरक्षण कठिन होता है।

ISSN–2278-5655

AMIERJ Aarhat Multidisciplinary International Education Research Journal

Volume–XIV, Special Issues – III (a) Nov – Dec, 2025

OPEN ACCESS Original Research Article

4. स्थानीय शब्दावली का अनुवाद: स्थानीय संदर्भों और वस्तुओं के लिए उपयुक्त पर्याय हर भाषा में नहीं मिलते।
5. भावानुवाद की सीमा: शाब्दिक अनुवाद भावों की गहराई को कम कर सकता है, जबकि भावानुवाद कभी-कभी मूल संदर्भ बदल देता है।

लोकसाहित्य के अनुवाद की प्रमुख प्रवृत्तियाँ (Trends in Folk Literature Translation):

- भारत में लोकसाहित्य के अनुवाद की परंपरा प्राचीन है। संस्कृत, प्राकृत, अपभ्रंश, और क्षेत्रीय भाषाओं में लोकरचनाओं का परस्पर अनुवाद होता रहा है।
- आधुनिक काल में रामचरितमानस, पंचतंत्र, हितोपदेश, कबीर के दोहे, लोकगीत संग्रह आदि का अनुवाद अनेक भाषाओं में हुआ।
- आज डिजिटल युग में अनुवाद का स्वरूप भी बदला है — अनेक लोककथाएँ अब अंग्रेज़ी, फ्रेंच, स्पेनिश, और जापानी जैसी भाषाओं में ऑनलाइन उपलब्ध हैं।
- यूनिवर्सिटियों में लोकसाहित्य अनुवाद परियोजनाओं पर काम हो रहा है, जिससे यह क्षेत्र और अधिक समृद्ध हो रहा है।

लोकसाहित्य और अनुवाद का परस्पर संबंध (Interrelationship between Folk Literature and Translation):

लोकसाहित्य समाज की आत्मा है और अनुवाद उसका सेतु। दोनों मिलकर सांस्कृतिक संवाद को सशक्त बनाते हैं। अनुवाद से लोकसाहित्य को

1. नई भाषाई पहचान मिलती है,
2. नए पाठक वर्ग तक पहुँच बनती है, और
3. सांस्कृतिक एकता का विस्तार होता है।

जहाँ लोकसाहित्य जड़ों की ओर लौटने की प्रेरणा देता है, वहीं अनुवाद उस जड़ को वैश्विक पहचान दिलाता है। इस दृष्टि से दोनों एक-दूसरे के पूरक हैं।

लोकसाहित्य के सफल अनुवाद के उदाहरण (Examples of Successful Translations):

1. कबीर के दोहों का अंग्रेज़ी में अनुवाद — रवींद्रनाथ टैगोर और लिंडा हेसे ने किया, जिससे कबीर की वाणी विश्व तक पहुँची।
2. पंचतंत्र का अनुवाद — फारसी, अरबी, लैटिन और अंग्रेज़ी सहित अनेक भाषाओं में हुआ, जिसने भारतीय लोकबुद्धि को वैश्विक पहचान दिलाई।
3. राजस्थान और बिहार के लोकगीतों का हिंदी-अंग्रेज़ी अनुवाद — भारतीय ग्रामीण जीवन को विश्व के पाठकों तक पहुँचाया।
4. भोजपुरी और अवधी लोककथाओं का अंग्रेज़ी व फ्रेंच में रूपांतरण — उत्तर भारतीय समाज के लोकजीवन की झलक दी।

अनुवाद में सांस्कृतिक संदर्भों का महत्व (Importance of Cultural Context in Translation):

लोकसाहित्य के अनुवाद में केवल भाषा नहीं बदलती, बल्कि पूरा सांस्कृतिक परिवेश भी स्थानांतरित होता है। इसलिए अनुवादक को न केवल भाषा का, बल्कि लोकसंस्कृति, रीति-रिवाज, धार्मिक मान्यताओं और लोकविश्वासों का भी गहरा ज्ञान होना आवश्यक है।

जैसे— "सावन की झूलन", "करवा चौथ का गीत" या "होली के फगुआ" का अनुवाद करते समय भारतीय भावनात्मक और सामाजिक संदर्भ को सुरक्षित रखना ज़रूरी होता है।

लोकसाहित्य अनुवाद के आधुनिक उपकरण और प्रवृत्तियाँ (Modern Tools and Trends):

- डिजिटल युग में अनुवाद केवल हाथ से नहीं, बल्कि तकनीकी साधनों की सहायता से भी किया जा रहा है।
- Google Translate, AI Tools, CAT Tools आदि अब लोकसाहित्य के अनुवाद में प्रयोग होने लगे हैं।
- ई-संग्रहालय (Digital Archives) में क्षेत्रीय लोकसाहित्य का अनुवाद संग्रहीत किया जा रहा है।
- शोध संस्थान और विश्वविद्यालय लोकसाहित्य अनुवाद परियोजनाओं पर कार्यरत हैं, जैसे — इंदिरा गांधी राष्ट्रीय कला केंद्र (IGNCA), साहित्य अकादमी आदि।

निष्कर्ष (Conclusion):

लोकसाहित्य और अनुवाद, दोनों मिलकर मानव सभ्यता की साझा विरासत को समृद्ध करते हैं।

जहाँ लोकसाहित्य हमें हमारी सांस्कृतिक जड़ों की ओर लौटाता है, वहीं अनुवाद हमें अन्य संस्कृतियों से जोड़ता है। अनुवाद के माध्यम से लोकसाहित्य न केवल संरक्षित रहता है, बल्कि उसका वैश्विक प्रसार भी संभव होता है। वर्तमान समय में जब भाषाएँ और संस्कृतियाँ आपस में घुल-मिल रही हैं, तब लोकसाहित्य का अनुवाद एक सांस्कृतिक आवश्यकता बन चुका है। इसलिए आवश्यक है कि अनुवादक लोकसंस्कृति की आत्मा को समझे और शब्दों में नहीं, भावों में अनुवाद करे — तभी लोकसाहित्य की असली पहचान सुरक्षित रह सकेगी।

संदर्भ सूची (References):

1. *डॉ. नामवर सिंह – अनुवाद: भाषा और संस्कृति का सेतु, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली।*
2. *डॉ. गणेश देवी – भारतीय लोकसाहित्य और संस्कृति अध्ययन, ओरिएंट ब्लैकस्वान।*
3. *डॉ. रामविलास शर्मा – हिंदी साहित्य की भूमिका, लोकभारती प्रकाशन।*
4. *डॉ. जगदीश गुप्त – लोककथा का समाजशास्त्र, भारतीय ज्ञानपीठ।*
5. *UNESCO Report (2019) – Intangible Cultural Heritage and Translation Studies.*
6. *IGNCA Publication – Indian Folk Traditions in Translation (2021)।*
7. *शर्मा, एस. (2022). Translation of Folk Literature: Issues and Challenges, Journal of Cultural Studies, Delhi University.*

Cite This Article:

संगर क्रि. न. (2025). लोकसाहित्य और अनुवाद : एक शोधात्मक अध्ययन. **In Aarhat Multidisciplinary International Education Research Journal**: Vol. XIV (Number VI, pp. 158–161).

ISSN–2278-5655

AMIERJ Aarhat Multidisciplinary International Education Research Journal

Volume–XIV, Special Issues – III (a) Nov – Dec, 2025

OPEN ACCESS Original Research Article

अनुवाद की समस्याएँ एवं निवारण

* उदय चिमा बेंढारी एवं ** प्रो. (डॉ.) पुरुषोत्तम कुंदे,

शोधार्थी, के. जे. सोमैया व के. बी. रोहमारे कला, वाणिज्य व विज्ञान महाविद्यालय, कोपरगाव, अहिल्यानगर – 423 601.

प्रस्तावना :

'अनुवाद' शब्द का संबंध 'वद' धातु से है, जिसका अर्थ होता है 'बोलना' या 'कहना'। 'वद' धातु में 'धत्र' प्रत्यय लगाने से 'वाद' शब्द बनाता है, और फिर इसमें 'पीछे' 'बाद में' 'अनुवादिता' आदि अर्थों में प्रयुक्त 'अनु' उपसर्ग जुडने से 'अनुवाद' शब्द निष्पन्न होता है। अनुवाद का मूल अर्थ है 'पुन:कथन' या 'किसी के कहने के बाद कहना'। 1

भोलानाथ तिवारी ने अनुवाद की व्याख्या की है – "किसी भाषा में प्राप्त सामग्री को दूसरी भाषा में भाषांतरण करना अनुवाद है, दूसरे शब्दों में एक भाष में व्यक्त विचारों को यथा संभव और सहज अभिव्यक्ति द्वारा दूसरी भाषा में व्यक्त करने का प्रयास ही अनुवाद है।" 2

Copyright © 2025 The Author(s): This is an open-access article distributed under the terms of the Creative Commons Attribution 4.0 International License (CC BY-NC 4.0) which permits unrestricted use, distribution, and reproduction in any medium for non-commercial use provided the original author and source are credited.

अनुवाद में अनुवादक मूल पाठ के संदेश को अनूदित पाठ में निकटतम संभव, स्वाभाविक समानकों द्वारा प्रस्तुत करता है। सामान्यत: अनुवादक उस पाठक वर्ग के लिए पाठ सृजित करता है जिसकी भाषा और संस्कृति लेखक और मूल पाठ के पाठकों की भाषा और संस्कृति से भिन्न होती है। भाषा और संस्कृति का यही अंतर अनुवादक के लिए गंभीर समस्या बनाती है। क्योंकि भाषा से जुड़ी संप्रेषणीय विशेषताओं की समूची प्रणाली को ध्यान में रखना होता हैं। समतुल्यता का सिध्दांत मुख्यता इस बुनियादी मान्यता पर आधारित है कि एक जैसी संरचनाएं दोनों भाषाओं में विद्यमान नहीं रह सकती। दो भाषाओं कि शब्दावली, व्याकरण, शैली आदि में एकरूपता का पाया जाना मुश्किल है। फिर भी हर भाषा में किसी अन्य भाषा में व्यक्त हो चुके संदेश को संप्रेषित करने की क्षमता अवश्य होती है। इसी क्षमता के कारण अनुवादक विभिन्न भाषाओं की शब्दावलियों और व्याकरण का प्रयोग संदेश व्यक्त करने के लिए करता है। कोई भी अनुवादक भाषा का अनुवाद नहीं करता। अनुवाद तो वास्तव में किसी भाषा के पाठ को अन्य भाषा में प्रस्तुत किया जाना ही होता है। अनुवाद में मूल पाठ को संदेश एवं अर्थ के समतुल्य स्तर पर तथा अभिव्यक्ति एवं शैली के स्तर पर समतुल्य बनाते हुये लक्ष्य भाषा में प्रस्तुत किया जाता है।

ISSN–2278-5655

AMIERJ Aarhat Multidisciplinary International Education Research Journal

Volume–XIV, Special Issues – III (a) Nov – Dec, 2025

OPEN ACCESS Original Research Article

अनुवाद की समस्याएँ :

अनुवाद की मुख्य समस्याएँ भाषा, संस्कृति, व्याकरण और तकनीकी शब्दावली से संबंधित हैं। अनुवाद में यूँ तो कहीं समस्याएँ सम्मिलित रहती हैं और अनुवादक को अनुवाद करते समय उन समस्याओं का सामना करना पड़ता हैं। अनुवाद में आनेवाली कुछ मुख्य समस्याएँ इस प्रकार हैं –

1॰ व्याकरण संबंधी अनुवाद की समस्या :

किसी भी भाषा का महत्वपूर्ण अंग व्याकरण होता है और हर भाषा व्याकरण के नियमों से बंधी होती है। लक्ष्य भाषा और स्रोत भाषा दोनों के व्याकरण का पैमाना अलग-अलग होता है। उदाहरण के लिए हिंदी में वाक्य रचना, क्रिया, कर्म, वचन प्रक्रिया, लिंग विधान सब भिन्न-भिन्न होते हैं जबकि अँग्रेजी में ऐसा नहीं होता। जैसे कि अँग्रेजी में 'वह' के लिए He और She का प्रयोग किया जाता हैं। परंतु हिंदी में इसका अर्थ 'वह' ही होगा। एक ही भाषा की विभिन्न बोलियों में व्याकरण के नियम थोड़े अलग हो सकते हैं। जैसे अवधी, ब्रज और खड़ी बोली हिंदी की ही बोलियाँ हैं, लेकिन उनमें वाक्य-विन्यास और रूप परिवर्तन में अंतर पाया जाता है। समय के साथ भाषाओं का व्याकरण बदलता रहता है। पुरानी हिंदी और आधुनिक हिंदी के व्याकरण में अंतर दिखाई देता है। भाषा के प्रयोग में लोगों के बीच थोड़ा-बहुत अंतर हो सकता है, जो उनके शिक्षा के स्तर, सामाजिक- सांस्कृतिक पृष्ठभूमि और व्यक्तिगत आदतों पर निर्भर करता है। औपचारिक और अनौपचारिक भाषा शैलियों में व्याकरण का प्रयोग भिन्न हो सकता हैं।

2. सांस्कृतिक अंतर :

अनुवाद में सांस्कृतिक परिवेश व सांस्कृतिक शब्दों का अनुवाद जटिल समस्या होती है। और अनुवाद की समस्याओं में यही समस्या सबसे कठिन मानी जाती है क्योंकि संस्कृति और सभ्यता हर परिवेश की अलग-अलग होती है। और अनुवादक को इसका पूरा ध्यान रखना होता है। भारतीय संदर्भ में बहुत से ऐसे शब्द हैं जिनका प्रयोग पाश्चात्य परंपरा में नहीं होता है जैसे – पूड़ी, सती, अर्चना आदि बहुत से ऐसे शब्द है जिनका प्रयोग अँग्रेजी में नहीं होता हैं। अँग्रेजी में इन शब्दों का प्रयोग और अर्थ दोनों नहीं मिलेंगे। 'इस गिलास का पनि जूठा है' इसमें जूठा शब्द के लिए लाख कोशिश करने के बाद भी सटीक अनुवाद नहीं कर पाएंगे। इसलिए यह जरूरी हो जाता है कि ऐसे शब्दों के लगभग सटीक अर्थ तक पहुँचने की कोशिश करें अथवा इसका लिप्यांतरण कर देना चाहिए और कोष्ठक में टिपन्नी द्वारा शब्द की अभिव्यक्ति करनी चाहिए। भारतीय सामाजिक परिवेश में नाते-रिश्ते, परंपरा, त्योहार आदि से संबंधित शब्दावली प्रचलित है जो अन्य समाज में देखने नहीं मिलती। ऐसे शब्द अन्य भाषा में नहीं होते हैं अत: इन शब्दों के अनुवाद की बजाय लिप्यांतरण करना ही अधिक उचित होगा और कोष्ठक में टिपन्नी देकर अभिव्यक्त करना चाहिए।

3॰ शब्द चयन और अर्थ :

अनुवाद में शब्द चयन कि समस्या सबसे महत्वपूर्ण होती है। इसमें विषय को देखकर सीधा-सीधा अनुवाद नहीं किया जा सकता। और यदि कोश को देखकर सीधा-सीधा अनुवाद किया जाए तो उसमें कई समस्याएँ उत्पन्न हो

ISSN–2278-5655

AMIERJ Aarhat Multidisciplinary International Education Research Journal

Volume–XIV, Special Issues – III (a) Nov – Dec, 2025

OPEN ACCESS Original Research Article

सकती हैं। इतना ही नहीं यह शब्द प्रसंग और संदर्भ के अनुसार परिवर्तित होने चाहिए। साथ ही विभिन्न पर्यायवाची शब्दों का चयन तथा शब्द के कोषागत विभिन्न अर्थों में से सही शब्दों का चयन करना भी एक समस्या अनुवादक के सामने होती है।

उदा. – "रहिमन पानी रखिए, बिनु पानी सब सून।
पानी गये न उबरे, मोती मानुस चून।"3

यहाँ पानी का अर्थ 'चमक', 'इज्जत', 'पानी' तीन-तीन अर्थवाला एक शब्द हो तब कही इसका अनुवाद हो सकेगा।

4॰ मुहावरों और लोकोक्तियों के अनुवाद की समस्या :

लक्ष्य भाषा की सांस्कृतिक पृष्ठभूमि तथा रीति-रिवाजों, परम्पराओं की जानकारी के अभाव के कारण मुहावरें तथा लोकीक्तियों के अनुवाद में समस्याएँ अति हैं। स्रोत भाषा तथा लक्ष्य भाषा के सांस्कृतिक एवं भौगोलिक विषमता के कारण दोनों भाषाओं की प्रकृति अलग-अलग होती है। इस प्रकृति की जानकारी अनुवादक को होनी चाहिए।

5॰ साहित्यिक विधाओं के अनुवाद की समस्या :

साहित्य को समाज का दर्पण कहा जाता है और साहित्य भावना की व्यवस्थित अभिव्यक्ति होती है। अपनी भावनाओं को अभिव्यक्त करने के लिए साहित्यकार जिन साधनों का प्रयोग करते हैं, वे साहित्य की विधाएँ कहलाती हैं। जैसे – कहानी, कविता, उपन्यास, नाटक आदि। साहित्य के अनुवाद में सबसे बड़ी समस्या यह होती है कि साहित्य भाव प्रधान होता है। अत: इसका अनुवाद करते समय स्रोत भाषा के कथानक में वर्णित रम्यता को उसी रम्यता से संप्रेषित करना सबसे बड़ी समस्या होती है। हिंदी में अलंकार, समास, संधि आदि का अनुवाद अँग्रेजी में बहुत मुश्किल होता है। इसलिए साहित्य का अनुवाद सबसे मुश्किल माना जाता है। साहित्यिक अनुवाद हू-ब-हू न होकर रूपांतरण शैली में करना चाहिए। भोलानाथ तिवारी लिखते हैं कि – "काव्यनुवाद के लिए अनुवाद को साहित्य रस का आनंद लेने वाला हृदय चाहिए व काव्य सृजन की अप्रतिम प्रतिभा भी चाहिए। यदि ये दोनों तत्व विद्यमान हो तो काव्य का अनुवाद भी निश्चित रूप से अच्छा ही होगा।"4

6॰ तकनीकि एवं वैज्ञानिक अनुवाद की समस्या :

इस तरह का अनुवाद स्वयं में एक चुनौती होता है क्योंकि इस तरह के अनुवाद के लिए अनुवादक को विषय का गूढ़तम ज्ञान होना चाहिए जिससे वह तकनीकि संकल्पनाओं की अभिव्यक्ति सही तरीके से कर सके। यह तकनीकी शब्द सुनने में भले ही आसान लगते हैं परंतु उतने आसान नहीं होते। जैसे की- ताप, ऊष्मा, नाद जैसे छोटे-छोटे शब्दों का अनुवाद करने के लिए गहन अध्ययन करना पड़ता है। वैसे तो यह हमेशा से ही कहा जाता है कि अनुवाद करते समय न कुछ जोड़ा जाए और न कुछ छोड़ा जाएँ। किंतु तकनीकि और वैज्ञानिक अनुवाद करते समय अनुवादक को यह विशेष रूप से ध्यान रखाना चाहिए। इस तरह का अनुवाद करने का सर्वोत्तम तरीका यह है कि इससे अनुवाद आकर्षक भले ही न हो पर सही होना चाहिए।

7॰ प्रशासनिक/ कार्यालयीन तथा विधि संबंधी अनुवाद की समस्या : प्रशासन और विधि के अनुवाद में सबसे बड़ी समस्या यह होती हैं कि विधि में बहुत से शब्द उर्दू के होते हैं जैसे गिरफ्तार, कटघरा आदि ऐसे बहुत से शब्द हैं

ISSN–2278-5655

AMIERJ Aarhat Multidisciplinary International Education Research Journal

Volume–XIV, Special Issues – III (a) Nov – Dec, 2025

OPEN ACCESS Original Research Article

जिनको हिंदी में समानार्थी शब्द नहीं हैं। इस तरह के अनुवाद की प्रमुख समस्या है केवल उतना ही संदेश लक्ष्य भाषा में जाना चाहिए जितना स्रोत भाषा में दिया गया हो। इस संदर्भ में भोलानाथ तिवारी लिखते हैं - "सरकारी अभिलेखों तथा सरकारी कामकाज का विधिक (कानूनी) महत्व होता हैं अत: इसके अनुवाद में थोड़ी-सी भी चूक अर्थ का अनर्थ कर सकती है। अनुवाद की एक छोटी-सी भूल करोड़ो रुपये का नुकसान कर सकती है।"5

प्रशासनिक/ कार्यालयीन तथा विधि संबंधि अनुवाद में शब्दावली, अभिव्यक्ति तथा व्यवहारिक पहलू के संदर्भ में समस्या उत्पन्न होती हैं।

अनुवाद में आनेवाली समस्याओं का निवारण :

1. स्रोत भाषा तथा लक्ष्य भाषा का ज्ञान होना आवश्यक है।
2. स्रोत भाषा तथा लक्ष्य भाषा की प्रकृति को समझना चाहिए।
3. व्याकरण का ज्ञान आवश्यक है।
4. सांस्कृतिक संदर्भों की खोज करनी चाहिए।
5. लिप्यंतरण एवं समतुल्य शब्दों और टिप्पणियों का प्रयोग करना चाइए।
6. मानक पारिभाषिक शब्दावली, वैज्ञानिक, तकनीकी शब्दावली का ज्ञान आवश्यक है।
7. अंतरराष्ट्रीय शब्दों का अनुवाद नहीं करना चाइए। बल्कि उसका लिप्यंतरण करना उचित होगा।
8. चिन्हों का प्रयोग उनके प्रचलित रूप में किया जाए।
9. अनुवाद तथ्यात्मक होना चाहिए।
10. विज्ञान के पारिभाषिक शब्द स्पष्ट और सुनिश्चित करने चाहिए।

निष्कर्ष :

अनुवाद केवल शब्दों को बदलना नहीं है, बल्कि इसमें मूल अर्थ, सांस्कृतिक बारीकियों और शैली को बनाए रखना एक बड़ी चुनौती है। यह एक जटिल प्रक्रिया है जिसके लिए भाषाई विशेषज्ञाता के साथ-साथ सांस्कृतिक और साहित्यिक समझ भी आवश्यक है। अनुवाद में होने वाली मुख्य समस्याओं में भाषा की भिन्नता, पेशेवर शब्दावली और मुहावरों को व्यक्त करने में कठिनाई, सांस्कृतिक भिन्नताओं के कारण उत्पन्न होने वाले अर्थ के अंतर और मूल पाठ के भावनात्मक या साहित्यिक प्रभाव को खोने का जोखिम शामिल है।

संदर्भ ग्रंथ :

1. डॉ. *भोलानाथ तिवारी, अनुवादविज्ञान, शब्दकार प्रकाशन, दिल्ली, सितंबर 1972, पृ. 9।*
2. *https://www.scotbuzz.org/2017/05/anuvad-ka-arth.html।*
3. *डॉ. भोलानाथ तिवारी, अनुवाद विज्ञान सिध्दांत एवं प्रविधि, किताबघर प्रकाशन, पृ. 168*
4. *वही, पृ. 163*
5. *वही, पृ. 182*

Cite This Article:

बेंढारी उ. चि. एवं प्रो. (डॉ.) कुंदे पु. (2025). अनुवाद की समस्याएँ एवं निवारण **In Aarhat Multidisciplinary International Education Research Journal**: Vol. XIV (Number VI, pp. 162–165).

ISSN–2278-5655

AMIERJ Aarhat Multidisciplinary International Education Research Journal

Volume–XIV, Special Issues – III (a) Nov – Dec, 2025

OPEN ACCESS Original Research Article

अनुवाद : समीक्षा एवं मूल्यांकन

** डॉ. मोहन शिंदे,*

सहायक प्राध्यापक, हिंदी विभाग, सावित्रीबाई फुले पुणे विश्वविद्यालय, पुणे

अनुवाद को एक विशिष्ट कार्य के रूप में आंका गया है। एक कार्य के परिमाप की निष्पत्ति के अर्थ में उसे ग्रहण किया जाता है। इस निष्पत्ति को परखना, विश्लेषित एवं व्याख्यायित करना मनुष्य की एक सामान्य प्रवृत्ति रही है। इस प्रवृत्ति से प्रेरित होकर किए गए कार्य को मूल्यांकन, परीक्षण, समीक्षण आदि नाम दिए गए हैं। क्रमागत विचार किया जाए तो परीक्षण का क्रम पहले और मूल्यांकन का बाद में आता है। मूल्यपरक निर्णय का आयाम जुड़ जाने पर यह परीक्षण मूल्यांकन हो जाता है। सुनिश्चित आधारों को ही मूल्य कहा जाता है। मूल्यांकन की प्रक्रिया में विश्लेषण होता है। किंतु उसका स्थान गौण होता है। मूल्यांकनकर्ता पूर्वनिर्धारित आधारों को सफलतापूर्व वहन के निकष पर कृति को स्वीकार्य-अस्वीकार्य, पठनीय, अपठनीय वर्ग में रख देता है। मूलनिष्ठता, पठनीयता, बोधगम्यता तथा प्रयोजन सिद्धि अनुवाद मूल्यांकन के प्रमुख निकष हो सकते हैं।

Copyright © 2025 The Author(s): This is an open-access article distributed under the terms of the Creative Commons Attribution 4.0 International License (CC BY-NC 4.0) which permits unrestricted use, distribution, and reproduction in any medium for non-commercial use provided the original author and source are credited.

अनुवाद के संदर्भ में समीक्षा की अर्थव्याप्ति में कोई अंतर नहीं आता, केवल मानदंड बदल जाते हैं। समीक्षा शब्द व्यापक अर्थ देता है। उसमें मूल्यांकन का अर्थ भी निहित है। समीक्षा में विश्लेषण पक्ष की प्रधानता रहती है। समीक्षा की अर्थ परिधि कृति के गुण-दोषों का विवेचन, गुण-दोषों की मीमांसा, परंपरा और तुलनात्मक परिप्रेक्ष्य में कृति का स्थान आदि कई पक्ष आते हैं। समीक्षा शब्द के प्रयोग द्वारा दृश्य और दृष्टि दोनों के विस्तार तथा व्यापकता का बोध होता है। इसलिए परीक्षण, मूल्यांकन की तुलना में समीक्षा शब्द का प्रयोग करना अधिक उचित लगता है। क्षेत्र कोई भी हो, उसमें 'समीक्षा' की अवधारणा मात्र सैद्धांतिक स्तर पर नहीं रहती। वह केवल शिक्षणात्मक उपयोग की चीज़ नहीं है। समीक्षा एक कार्य की गुणवत्ता की अपेक्षा से की जाती है। अनुवाद को विशिष्ट कार्य कहा गया है। उसकी विशिष्टता भिन्न भाषापाठ पर आधारित होने में निहित है। अनुवाद स्वतंत्र कृति नहीं है। एक भाषा की पाठ्य सामग्री को दूसरी भाषा की सममूल्य पाठ्य सामग्री में प्रतिस्थापित करना ही अनुवाद है। इसलिए अनुवाद समीक्षा में एक स्वतंत्र एवं स्वायत्त कृति के रूप में गुण-दोष विवेचन अपेक्षित नहीं है। यह गुण-दोष विवेचन मूल पाठ की तुलना में होता है। अनुवाद समीसा में पाठ के प्रत्येक स्तर पर मूल के निर्वाह का निकष महत्वपूर्ण होता है।

ISSN–2278-5655

AMIERJ Aarhat Multidisciplinary International Education Research Journal

Volume–XIV, Special Issues – III (a) Nov – Dec, 2025

OPEN ACCESS Original Research Article

अनुवाद समीक्षा के कई उद्देश्य बताए गए हैं, जैसे अनुवाद कार्य के स्तर को ऊंचा उठाना, श्रेष्ठ अनुवाद के मानक स्थापित करना, अनुवादसंबंधी मान्यताओं से परिचित कराना, महत्वपूर्ण लेखकों और उनके अनुवाद कार्य से परिचित कराना, दो भाषाओं के व्यक्तिरेकी बिंदुओं पर प्रकाश डालना आदि| इनमें से एक या एकाधिक उद्देश्यों से अनुवाद समीक्षा तभी संभव है जब पर्याप्त अनुवाद कार्य हुआ हो। सौभाग्य से हिंदी में कुल मिलाकर विपुल अनुवाद कार्य हुआ है। इसलिए इस प्रश्न का उपस्थित होना स्वाभाविक है कि अब तक हिंदी में संपन्न अनुवाद कार्य की समीक्षा का स्वरूप क्या रहा है और आज अनुवाद समीक्षा किस दिशा में बढ़ रही है।

अनुवाद समीक्षा का एक रूप पुस्तक समीक्षा में मिलता है। साहित्यिक पत्रिकाओं में अन्य कृतियों की तरह अनूदित कृतियों की समीक्षाएं भी छपती है। इस प्रकार की समीक्षाओं के अंत में समीक्षक द्वारा दी गई टिप्पनियों को देखिए- 1. बांगला से हिंदी में अनूदित उपन्यास 'कलियुग आ गया' (मूल लेखक विमल मिश्र, अनुवादक सुशील गुप्ता, समीक्षक डॉ भैरूलाल गर्ग की समीक्षा के अंत में एक वाक्य है-

ऐसी श्रेष्ठ कृति को पाठकों को प्रदान करने के लिए लेखक एवं अनुवादक बधाई के पात्र हैं। यहाँ पर अनुवाद समीक्षक लिए आवश्यक तकनीकी क्षमता के संबंध में यह कह देना प्रासंगिक होगा कि अनुवाद समीक्षक का अनुवादक होनी चले हो जरूरी न हो पर उसे अच्छे अनुवाद के लक्षणों को जानकारी होनी चाहिए।

डॉ. सुरेश कुमार द्वारा प्रस्तावित प्रारूप में डॉ गजानन चव्हाण जी थोड़ा-सा संशोधन कर अनुवाद समीक्षा हेतु एक सर्वस्पर्शी प्रारुप प्रस्तुत करते है-

1. मूल भाषापाठ का चयन
2. मूल भाषापाठ का विश्लेषण
3. मूल पाठ की अनुवादानुकूलता का विवेचन
4. अनुवादानुकूल प्रसंगों के अनुवाद में सममूल्यमा को विवेचन
5. मूल भाषापाठ के अननूद्य स्थलों के अनुवाद में द्वंद्वात्मक स्थितियां पैदा होती है।

अनुवाद-समीक्षा अनुवाद-कार्य की सूचनाओं का संकलन मात्र नहीं है। अनुवाद में प्रयुक्त भाषा की मोटी विशेषताओं तक ही सीमित नहीं रखना चाहिए। अनुवाद की सफलता, विपुलतासंबंधी अति संक्षिप्त टिप्पणियों के भी अनुवाद समीक्षा मानने के पक्ष में नहीं हैं। अनुवाद समीक्षा की मूल सिद्धि अनुवाद को स्तरीय बनाने होनी चाहिए।

Cite This Article:

डॉ. शिंदे मो. (2025) अनुवाद : समीक्षा एवं मूल्यांकन. **In Aarhat Multidisciplinary International Education Research Journal**: Vol. XIV (Number VI, pp. 166–167).

ISSN–2278-5655

AMIERJ Aarhat Multidisciplinary International Education Research Journal

Volume–XIV, Special Issues – III (a) Nov – Dec, 2025

OPEN ACCESS Original Research Article

भाषा एवं साहित्य के विकास में अनुवाद की भूमिका

** प्रो.(डॉ.) बाळासाहेब सोनवणे,*

डॉ. अरविंद ब. तेलंग कला, विज्ञान एवं वाणिज्य महाविद्यालय, निगड़ी, पुणे.

प्रस्तावना :

21 वीं सदी में अनुवाद का महत्व इसलिए है क्योंकि यह ज्ञान और संस्कृति के आदान-प्रदान के लिए सेतु का काम करता है, जो आज की जुड़ी हुई दुनिया में आवश्यक है। मूलतः अनुवाद की चर्चा ही लगभग 387 ईसा पूर्व से 347 ईसा पूर्व के बीच ग्रीक दार्शनिक एवं विचारक प्लेटों ने अपनी पुस्तक रिपब्लिक में काव्या को मूल प्रत्यय के अनुकरण का अनुकरण कहकर की है। उन्होंने लिखा है कि बढ़ई महान शिल्पी ईश्वर के द्वारा निर्मित मूल बिंब का अनुकरण करके पलंग बनता है। चित्रकार इस पलंग का अनुकरण कर चित्र बनाता है। साहित्यकार भी उसी बढ़ई द्वारा बनाए गए अनुकरण को अपनी रचनाओं का विषय बनाता है। इस तरह कला और काव्या सत्य से तिहरी दूरी पर होते हैं। इसलिए प्लेटो ने कला और काव्य को महत्वपूर्ण न मानते हुए कविता को अनुपयोगी माना है।

अरस्तू ने अपना सिद्धांत लगभग 300 ईसा पूर्व में लिखा है, जो उनके काव्य शास्त्र ग्रंथ 'पोएटिक्स' (Poetics) का एक हिस्सा है। अरस्तु का अनुकरण सिद्धांत एक स्तर पर प्लेटो का अनुकरण सिद्धांत की प्रतिक्रिया है और दूसरे स्तर पर उसका विकास भी। महान दार्शनिक प्लेटो ने कला और काव्या को सत्य से तिहरी दूरी पर कहकर उसका महत्व बहुत कम कर दिया था। उन्हीं के शिष्य अरस्तु ने अनुकरण में पुनर्रचना का समावेश किया। अरस्तु के अनुसार अनुकरण हूबहू नकल नहीं बल्कि पुनः प्रस्तुतीकरण है। जिसमें पुनर्रचना भी शामिल होती है। अरस्तु के मतानुसार "कवि और इतिहासकार में वास्तविक भेद यह है कि एक तो उसका वर्णन करता है जो घटित हो चुका है और दूसरा उसका वर्णन करता है जो घटित हो सकता है। परिणामत: काव्य में दर्शनिकता अधिक होती है।"

अरस्तु का मानना है कि कला न केवल बाह्य घटनाओं और मानवीय भावनाओं का अनुकरण करती है बल्कि यह उसे पुनर्गठित भी करती है। इसके तीन तरीके हैं:-१. वैसी ही है जैसी वह है। २. वैसी है जैसी वह कही या मानी जाती है। ३. और वैसी है जैसी उसे होना चाहिए।

Copyright © 2025 The Author(s): This is an open-access article distributed under the terms of the Creative Commons Attribution 4.0 International License (CC BY-NC 4.0) which permits unrestricted use, distribution, and reproduction in any medium for non-commercial use provided the original author and source are credited.

अरस्तु का सिद्धांत उनके गुरु प्लेटो के विचारों के विपरित था, जिन्होंने कला को सत्य से दोहरी दूरी पर माना था और उसे त्याज्य समझा था। अरस्तु के अनुकरण को एक रचनात्मक और नैतिक रूप से उपयोगी प्रक्रिया माना। भाषा एवं साहित्य के विकास में अनुवाद की भूमिका प्लेटो के सत्य से दोहरी दूरी सिद्धांत पर नहीं बल्कि अरस्तु के अनुकरण सिद्धांत पर

ISSN–2278-5655

AMIERJ Aarhat Multidisciplinary International Education Research Journal

Volume–XIV, Special Issues – III (a) Nov – Dec, 2025

OPEN ACCESS Original Research Article

आधारित एक रचनात्मक और नैतिक रूप से उपयोगी प्रक्रिया माननी होगी। अरस्तु ने 'अनुकरण'(Mimesis) को कला और साहित्य का मूल सिद्धांत माना, जिसका अर्थ हूबहू नकल नहीं बल्कि कल्पनात्मक पुनर्निर्माण है। उनके अनुसार कवि वास्तविकता का अनुकरण करता है लेकिन उसे पुनर्निमित करता है, उसमें कलाकार का अनुभव, प्रतिभा और कल्पना शामिल होती है। अरस्तु के विचारों के अनुसार अनुवाद एक कला है जो एक भाषा से दूसरी भाषा में मूल पाठ के सार और अर्थ को फिर से बनाने की प्रक्रिया से संबंधित है, न कि केवल शाब्दिक रूपांतरण।

बाइबल किसी एक व्यक्ति नहीं बल्कि लगभग 30-40 लोगों द्वारा 1500 वर्षों की अवधि में लिखा गया धार्मिक ग्रंथ है जो लगभग 1500 ईसा पूर्व से 100 ईस्वी तक फैली हुई है।अगर विश्व में सबसे अधिक अनुवादित धर्म ग्रंथ की बात करें तो वह बाइबल है। बाइबल के पुराने नियम का अनुवाद सबसे पहले हिब्रू से ग्रीक भाषा में लगभग 300 ईसा पूर्व में किया गया था। यह अनुवाद मिस्र के अलेक्जेंड्रिया में यूनानी भाषी यहूदियों के लिए हिब्रू से किया गया था, जिसे सेप्टुआजेंट के नाम से जाना जाता है।

एक बाइबल अनुवाद संगठन के अनुसार अगस्त 2025 तक पूरी प्रोटेस्टेंट बाइबल का 776भाषाओं में अनुवाद हो चुका हैं, नए नियम का 1798 अतिरिक्त भाषाओं में अनुवाद हो चुका है और इसके कुछ अंशों का 1433 अन्य भाषाओं में अनुवाद हो चुका है। इस प्रकार कुल 7396 ज्ञान भाषाओं सांकेतिक भाषाओं साहित्य में से, बाइबल के कम से कम कुछ अंशों का 4007 भाषाओं में अनुवाद हो चुका है ।भारतीय धर्म ग्रंथ का पहला अनुवाद सर विलियम जोन्स ने मनुस्मृति का किया था जो 1794 में प्रकाशित हुआ था ।

अनुवाद का इतिहास बहुत पुराना है, लेकिन संस्कृत से चीनी भाषा में 'वज्रच्छेदिकाप्रज्ञापारमितासूत्र' का अनुवाद एक महत्वपूर्ण शुरुआती उदाहरण है। यह 868 ईस्वी का बोद्ध ग्रंथ था और इसका अनुवाद कुमारजीव ने किया था। इसी तरह 'पंचतंत्र' (विष्णु शर्मा की एक प्राचीन संस्कृति कृति) का भी थॉमस नार्थ ने 1570 में एलिजाबेथ ने अंग्रेजी में अनुवाद किया था।

सारांश में देखा जाए तो अनुवाद उतना ही प्राचीन है जितनी भाषा। भाषा और साहित्य का संबंध परस्पर पूरक और गहरा है।

भाषा की विकास में साहित्य की भूमिका:

भाषा के विकास में साहित्य की भूमिका अद्वितीय रही है। भाषा को समृद्ध करने हेतु शब्दावली और विचारों की अभिव्यक्ति को परिष्कृत करने का महत्वपूर्ण कार्य है। साहित्य भाषा को जीवंत और व्यवहारिक बनाता है, जिससे भाषा में नए शब्दों, मुहावरों और शैलियों का विकास होता है। साहित्य में प्रयुक्त नए शब्दों, वाक्यों से हम परिचित होते हैं। यही शब्द और वाक्य अपनी भावना तथा विचारों को अधिक प्रभावी ढंग से वक्त होने में मदद करते हैं, जिससे भाषा का विकास होता है।

साहित्य पाठकों को सोचने और विश्लेषण करने के लिए प्रेरित करता है जिससे आलोचनात्मक सोच विकसित होती है। साहित्य में समाज और संस्कृति का प्रतिबिंब होता है। साहित्य ऐतिहासिक और सामाजिक घटनाओं द्वारा मानवीय मूल्य स्थापित करने का प्रयास करता है। जिससे भाषा और संस्कृति

ISSN–2278-5655

AMIERJ Aarhat Multidisciplinary International Education Research Journal

Volume–XIV, Special Issues – III (a) Nov – Dec, 2025

OPEN ACCESS Original Research Article

दोनों का विकास होता है। साहित्य भाषा को शुद्ध करने के साथ ही गद्य पद्य तथा अन्य विधाओं के माध्यम से भाषा के विकास को दिशा देता है। साहित्य न केवल मनोरंजन का साधन है बल्कि जीवन और समाज का गहरा ज्ञान और प्रेरणा भी प्रदान करता है। अतः कहना गलत नहीं होगा कि भाषा के विकास में साहित्य की अहम् भूमिका रही है।

साहित्य के विकास में भाषा की भूमिका :

साहित्य के विकास में भाषा की भूमिका अत्यंत महत्व पूर्ण है क्योंकि भाषा साहित्य का अभिव्यक्ति होने का आधार और साधन है। भाषा साहित्य द्वारा विचारों तथा भावनाओं को व्यक्त करने का माध्यम होने से भाषा ही साहित्य को आकार देती है। भाषा के शब्द, व्याकरण और शैली ही साहित्य को जन्म देती है। भाषा ही वह माध्यम है जो लेखकों के विचारों, भावनाओं और कल्पनाओं को साहित्य के रूप में प्रस्तुत करती है। भाषा के बिना साहित्य का कोई अस्तित्व नहीं है। भाषा ही साहित्य की इकाई है, जो विभिन्न साहित्यिक रूपों में प्रकट होती है। साहित्य एक भाषा की सामाजिक और सांस्कृतिक मूल्यों का वाहक बनता है और भाषा के माध्यम से ही समाज का वास्तविक चित्रण करता है। साहित्य में विभिन्न विधाओं का लेखन भाषा द्वारा ही होता है। साहित्य ज्ञान का प्रचार प्रसार भाषा के माध्यम से ही करता है। साहित्य भाषा के माध्यम से ही नैतिक मूल्यों को पीढ़ी दर पीढ़ी पहुंचाता है। साहित्य भाषा के द्वारा ही नए शब्द वाक्य रचनाओं तथा भाषाई समझ बढ़ाने का काम करता है। भाषा की समृद्धि ही साहित्य को समृद्ध करती है।

भाषा और साहित्य का गहरा और अन्योन्याश्रित संबंध है। भाषा विचारों और भावनाओं को व्यक्त करने का माध्यम है, जबकि साहित्य उस माध्यम का रचनात्मक और कलात्मक प्रयोग है।

भाषा साहित्य को अस्तित्व प्रदान करती है, और साहित्य भाषा को समृद्ध,विस्तारित और सौंदर्य पूर्ण बनाता है। भाषा संचार का एक उपकरण है जिसके द्वारा एक के विचार और भावनाओं को दूसरे तक पहुंचता है। साहित्य भाषा को समृद्ध करता है। साहित्य के माध्यम से ही भाषा का विस्तार होता है। साहित्य का दूसरा अस्तित्व भाषा पर निर्भर होता है,क्योंकि बिना भाषा के कोई लिखित या मौखिक साहित्य संभव नहीं है। इसीलिए साहित्य और भाषा का संबंध एक दूसरे से पूरक है। साहित्य समाज में घटित घटनाओं का चित्रण भाषा के उपयोग से ही करता है। वह अक्सर अपनी कल्पना या विचारों को भाषा द्वारा ही व्यक्त करता है, जो एक रचना के रूप में सम्मुख आता है।

भाषा साहित्य को और साहित्य भाषा को प्रभावित करता है। भाषा और साहित्य एक दूसरे से अलग नहीं है,बल्कि एक गतिशील और सहजीवी संबंध सांझा करते हैं। भाषा और साहित्य एक दूसरे के विकास और विस्तार में योगदान देते हुए एक दूसरे को आकार देते हैं।

भाषा के विकास में अनुवाद की भूमिका :

भाषा एक को दूसरे से जोड़ती है। विचारों के आदान-प्रदान में सहायक भाषा परंपराओं,सांस्कृतिक मान्यताओं को समझने का सशक्त माध्यम भी है। भाषा जहां विचारों की संवाहीका है वही अनुवाद परंपराओं एवं संस्कृति से रूबरू करानेवाला साधन है।अनुवाद भाषा के माध्यम से दो भिन्न एवं अपरिचित संस्कृतियों, परिवेशों का परिचय करता है। इसीलिए अनुवाद उतना ही प्राचीन है जितनी की भाषा।

ISSN–2278-5655

AMIERJ Aarhat Multidisciplinary International Education Research Journal

Volume–XIV, Special Issues – III (a) Nov – Dec, 2025

OPEN ACCESS Original Research Article

भाषा और अनुवाद का भविष्य परस्पर अन्योन्याश्रित है। भाषा का भविष्य अनुवाद का भविष्य है। भाषा की सबसे बड़ी विशेषता यह है कि उसमें ग्रहण क्षमता अधिक होती है। जिस भाषा में यह गुण नहीं, वह भाषा दम तोड़ देती है। किसी भी भाषा का अनुवाद करते समय अनुवाद के सरलीकरण का प्रयास करना चाहिए।

भाषा का विकास एक क्रमिक प्रक्रिया है, जिसमें सरल संकेतों से लेकर जटिल लिखित और मौखिक रूपों का उदय हुआ और अनुवाद में इस विकास में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है । अनुवाद ने विभिन्न भाषाओं और संस्कृतियों के बीच संवाद स्थापित कर ज्ञान और साहित्य के आदान-प्रदान को बढ़ावा देकर भाषा के विकास को गति दी है। अनुवाद ने आधुनिक समय में जनसंचार माध्यमों (जैसे समाचार पत्र टीवी तथा अन्य)और प्रौद्योगिकी के विकास में साथ-साथ तकनीकी शब्दों और अभिव्यक्ति के नए तरीकों को शामिल करके भाषाओं के शब्दकोषों और अभिव्यक्ति क्षमता को बढ़ाया है।

भाषा की उत्पत्ति मानव सभ्यता के साथ हुई। संभवत 5000 से 100000 लाख साल पहले भाषा मानव जीवन के विकास की आवश्यकता के कारण विकसित हुई। संकेत और प्रतीकों के बाद वर्ण आधारित अक्षरों का विकास हुआ। जैसे-जैसे मानव समूह फैले और भाषाओं के बीच टकरा हुआ एक दूसरे से संवाद करने के लिए अनुवाद और दुभाषिओं की आवश्यकता पड़ी और अनुवाद के साथ भाषा विकसित होती गई ।

अनुवाद ने ही विभिन्न भाषाओं और संस्कृतियों को एक दूसरे के करीब लाया, जिससे विचारों,ज्ञान और साहित्यिक कृतियों का आदान-प्रदान होकर विभिन्न भाषिक और सांस्कृतिक समानता के दर्शन हुए , जिससे देश की एकता और अखंडता की भावना बढ़ती गई ।

भाषा -भाषा या मनुष्य -मनुष्य के बीच संवाद स्थापित करने हेतु तथा ज्ञान का आदान-प्रदान करने के लिए समाचार पत्र ,रेडियो और टेलीविजन जैसे संचार माध्यमों के लिए अनुवाद आवश्यक सिद्ध हुआ। भाषा की तकनीकी शब्दों को समाचारों तथा विज्ञापनों में पहुंचने में अनुवाद सक्रिय होता गया। सूचना और प्रौद्योगिकी के विकास ने अनुवाद को अधिक महत्वपूर्ण बना दिया, जिसे संचार और ज्ञान की प्रवाह को एक शक्तिशाली माध्यम बना दिया। भाषा और अनुवाद एक दूसरे के हाथ में हाथ डालकर विकास की सीढ़ियां चढ़ रहें है,जो उज्ज्वल भविष्य का संकेत-सूत्र है।

साहित्य के विकास में अनुवाद की भूमिका:

साहित्य का विकास संस्कृत, प्रकृति,अपभ्रंश से शुरू होकर आदिकाल (डिंगल , पिंगला) मध्यकाल (भक्तिकाल)और आधुनिक काल (खड़ी बोली गद्य) के माध्यम से विकसित हुआ है।अनुवाद ने इस विकास में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। साहित्य और अनुवाद का इतिहास बहुत पुराना है, लेकिन संस्कृत से चीनी भाषा में 'वज्र च्छेदिकाप्रज्ञापरमितासूत्र' का अनुवाद महत्वपूर्ण शुरुआती उदाहरण है। यह 868 ईस्वी का एक बौद्ध ग्रंथ है, और इसका अनुवाद कुमारजीव ने किया था । 'पंचतंत्र' इस संस्कृत कृति का अनुवाद 1570 में थॉमस नॉर्थ ने अंग्रेजी में किया था। साथ ही अंग्रेजी में मनुस्मृति का पहला अनुवाद सर विलियम जॉन्स ने 1794 में किया है।

ISSN–2278-5655

AMIERJ Aarhat Multidisciplinary International Education Research Journal

Volume–XIV, Special Issues – III (a) Nov – Dec, 2025

OPEN ACCESS Original Research Article

बहु-भाषिकता , संस्कृति बहुलता और सैद्धांतिक विभिन्नता, भौगोलिक जटिलता आदि स्वतंत्र भारत की विशेषताएं है जो अन्यत्र दुर्लभ है। भारत की बहु-भाषिकता राष्ट्र की अस्मिता और शक्ति है। इस विविधता में एक अंतर्लीन सांस्कृतिक समन्वय की ऊर्जा निहित है ।जो की अनेकता में एकता की संचेताना को व्याप्त करने में सहायक है। विभिन्न भारतीय भाषाओं में रचित विपुल साहित्य के परस्पर आदान- प्रदान के लिए एक भाषिक उपकरण की आवश्यकता होती है,अनुवाद ही वह उपकरण या औजार तथा माध्यम है ।भारतीय साहित्य को एक भाषिक संप्रेषणीयता की स्थिति से अनुवाद के माध्यम से द्विभाषी अथवा बहुभाषी संप्रेषणीयता की स्थिति में लाया जा सकता है। अनुवाद ही वह माध्यम है जो अंतर भाषिक साहित्यिक संवाद स्थापित करने में सक्षम है। साहित्य के दोनों रूपों पर जब चर्चा की जाती है तब सृरजनशील साहित्य (गद्य और पद्य, आलोचनात्मक साहित्य)समाज विज्ञान, ज्ञानात्मक साहित्य, मानविकी, विज्ञान, जनसंचार, व्यापार - वाणिज्य, प्रौद्योगिकी आदि का साहित्य संदर्भ अनुवाद के दो बृहद क्षेत्र को लेकर उपस्थित होता है। दोनों ही क्षेत्र में अनुवाद की व्यापक संभावनाएं निहित है। भाषिक विभिन्नता और अलगाव को दूर करने की क्षमता रखता है ।

भारतीय भाषाओं में रचित साहित्य के अक्षय भंडार के अंतर-भाषिक रूपांतरण के लिए अनुवाद की प्रक्रिया ही एकमात्र उपाय है। 'अनुवाद' के द्वारा ही विभिन्न भाषाओं के मध्य मौजूद संप्रेषण के गतिरोध को मिटाया जा सकता है। इस दृष्टि से अनुवाद एक अपरिहार्य उपकरण है। भारतीय साहित्य के अंतर्गत संस्कृत से लेकर आधुनिक भारतीय भाषाओं में रचित साहित्यिक परंपराएं सम्मिलित है। भारत में संविधान द्वारा मान्यता प्राप्त 22 भाषाओं के साथ ही अनेकों बालियां और उपभाषाओं की बड़ी संख्या है।अंग्रेजी, उर्दू और फारसी के साथ-साथ संविधान में उल्लेखित सभी भाषाओं में साहित्य की सभी विधाओं में रचा जाता है। संस्कृत साहित्य और उसके बाद पाली, प्राकृत और अपभ्रंश का साहित्य भारतीय साहित्य की अमूल्य धरोहर के रूप में विद्यमान है। संस्कृत में रचित वैदिक साहित्य और साथ ही नाना पुराण ग्रंथ अनुवाद के द्वारा ही जन सामान्य को उपलब्ध हो सके है। अनुवाद के बिना ज्ञान का अंतरण इस रूप में संभव नहीं होता।भारतीय साहित्य का अनुवाद विदेशी भाषाओं में भी हुआ और विदेशी समाज प्राचीन भारतीय संस्कृत साहित्य के अनुवाद से लाभान्वित हो रहा है। भारतीय सांस्कृतिक वैभवपूर्ण अतीत विदेशी समाज अनुवाद के माध्यम से ही जाना सका जान सका है।

मध्यकालीन भारतीय साहित्य का प्रचार- प्रसार भी अनुवाद के माध्यम से ही संभव हुआ है। भक्ति साहित्य और संत साहित्य विभिन्न स्थानीय भाषा में रचा गया और अनुवाद के माध्यम से देश-विदेश में पहुंच गया है।शभक्ति साहित्य का जितना हिस्सा लिखित है लगभग उतना ही जनश्रुति या मौखिक परंपराओं में हैं। इसी को समुचित देश में पहुंचने का कार्य अनुवाद ने किया है।कबीर,जायसी और तुलसी,मीरा आदि के पद मूल भाषा में रचित होने के साथ-साथ अन्य भारतीय भाषाओं में भी अनुवाद के जरिए उपलब्ध और लोकप्रिय है। साधु ,संत और महात्माओं के संदेश समुचित भारतवर्ष में अनुवाद के माध्यम से पहुंच गए हैं। गांधी जी का सत्य और अहिंसा विचार, रविंद्र की मनुष्य और प्रकृति में सौंदर्य की खोज,प्रेमचंद का सामाजिक यथार्थ,दलित साहित्य स्त्रीवादी साहित्य, आदिवासी साहित्य के साथ-साथ अन्य

ISSN–2278-5655

AMIERJ Aarhat Multidisciplinary International Education Research Journal

Volume–XIV, Special Issues – III (a) Nov – Dec, 2025

OPEN ACCESS Original Research Article

साहित्य प्रवाह भारतीय भाषाओं में अनूदित होते हुए देश-विदेश में पहुंच गए हैं। कहना गलत नहीं होगा कि भारतीय साहित्यिक धरोहर अनुवाद से ही आज जीवंत है तथा समाज में भारतीय मूल्य एवं संस्कृति के प्रति नव चेतना जागृत करने में सफल हुए हैं।

भारतीय साहित्य भारतीय जनता की संपूर्ण अभिव्यक्ति का इतिहास है। इसी इतिहास को जन-जन तक पहुंचाने के लिए अंतर भाषिक अनुवाद प्रक्रिया को प्रभावी बनाना होगा। भारतीय साहित्य में स्थित ज्ञान और संस्कृति का प्रचार करने के लिए अनुवाद मध्यम को सक्रिय करना होगा। भारत की विभिन्न भाषाओं में रचित साहित्य भारत की अस्मिता को अपने भीतर समेटे हुए हैं। भारतीय साहित्य की मूलभूत एकता अनुवाद के माध्यम से सिद्ध होगी। साहित्य के विकास में अनुवाद की भूमिका सराहनीय है।

निष्कर्ष :

आधुनिक युग में भाषा एवं साहित्य के विकास में अनुवाद की भूमिका अहम रही है। भाषा जितनी प्राचीन है उतना ही अनुवाद प्राचीन है, इस बात को आज समूचे विश्व ने स्वीकार है। ज्ञान तथा सांस्कृतिक आदान-प्रदान से जगत एक गांव के रूप में विकसित हो रहा है। बाइबल का सर्वाधिक प्रचार अनुवाद के कारण हुआ है। विश्व की हजारों भाषाओं में बाइबल का अनुवाद हुआ और धर्मिक साहित्य के प्रचार-प्रसार का माध्यम अनुवाद बना। आदिकाल,भक्तिकाल से होकर आधुनिक काल तक भाषा एवं साहित्य के विकास में अनुवाद की भूमिका महत्वपूर्ण रही है। साहित्य और भाषा में नए शब्द, वाक्यांश और मुहावरे जोड़ते हुए भाषा तथा साहित्य को अधिक प्रभावशाली और बहुमुखी बनाने का काम अनुवाद ने किया है। भाषा एवं साहित्य को अनुवाद ने अस्तित्व प्रदान किया है। साहित्य और भाषा को विस्तारित करते हुए नए शब्दों और अभिव्यक्ति को अनुवाद ने जन्म दिया है । अनुवाद विभिन्न भाषाओं और संस्कृतियों के बीच ज्ञान और विचारों के आदान-प्रदान का पुल है। एक भाषा का साहित्य अनुवाद के माध्यम से दूसरी भाषा के पाठकों तक पहुंचता है। भाषा और साहित्य अनुवाद के जरिए अंतरराष्ट्रीय स्तर पर प्रासंगिक बन गया है। इससे मौलिक साहित्य और सांस्कृतिक विकास को बढ़ावा मिलता है। ज्ञान साझा करना, मनोरंजन प्रदान करना, नैतिक और सामाजिक मार्गदर्शन देना, विचारों को बढ़ावा देना, सौंदर्य बोध को विकसित करना, आत्म विकास में सहायता करना, इतिहास और संस्कृति को समझना, संवाद को बढ़ावा देना,मानवीय भावनाओं को व्यक्त करना और रचनात्मकता को बढ़ावा देना साहित्य का प्रमुख कार्य है। यही कार्य विश्व की समूची भाषाओं का साहित्य करता है। इसी भाव भावनाओं के अदान-प्रदान का साधन मात्र अनुवाद है। अनुवाद ही भाषा और साहित्य के माध्यम से विभिन्न संस्कृतियों,इतिहास, धर्म एवं जीवन के बारे में ज्ञान का प्रचार- प्रसार करता है। सार रूप में देखा जाए तो भाषा एवं साहित्य के विकास में अनुवाद की भूमिका अहम और उल्लेखनीय रही है।

संदर्भ सूची :

1. *काव्यशास्त्र -भगीरथ मिश्र, विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी*
2. *25 वा संस्करण , प्रकाशन वर्ष 2014*
3. *भाषा, साहित्य और देश - हजारी प्रसाद द्विवेदी, भारतीय ज्ञानपीठ प्रकाशन, नई दिल्ली ' 2009*

ISSN–2278-5655

AMIERJ Aarhat Multidisciplinary International Education Research Journal

Volume–XIV, Special Issues – III (a) Nov – Dec, 2025

OPEN ACCESS Original Research Article

4. प्रयोजनमूलक हिंदी अधुनातन आयाम - डॉ अंबादास देशमुख
5. शैलजा प्रकाशन, कानपुर ' प्रकाशन वर्ष-2006
6. प्रयोजनमूलक हिंदी की नई भूमिका - कैलाश नाथ पांडे, प्रकाशन वर्ष
7. 2007
8. हिंदी नव जागरण के विकास में अनुवाद की भूमिका कमलेश कुमारी,
9. अपनी माटी, 30 सितंबर 2024
10. भारतीय साहित्य में अनुवाद की भूमिका - डॉ. एम वेंकटेश्वर
11. साहित्य कुंज - 8 जून 2019
12. हिंदी साहित्य में अनुवाद की भूमिका, हिंदी कुंज.कॉम वेबसाइट
13. बाइबल अनुवाद संगठन - इंटरनेट
14. वज्रच्छेदिकाप्रज्ञापरमितासूत्र का अनुवाद - इंटरनेट
15. मनुस्मृति का अनुवाद -इंटरनेट
16. पंचतंत्र का अनुवाद - इंटरनेट

Cite This Article:

प्रो.(डॉ.) सोनवणे बा. *(2025).* भाषा एवं साहित्य के विकास में अनुवाद की भूमिका. **In Aarhat Multidisciplinary International Education Research Journal**: Vol. XIV (Number VI, pp. 168–174).

ISSN–2278-5655

AMIERJ Aarhat Multidisciplinary International Education Research Journal

Volume–XIV, Special Issues – III (a) Nov – Dec, 2025

OPEN ACCESS Original Research Article

सामाजिक और सांस्कृतिक बदलाव में अनुवाद का योगदान

* डॉ. झेलम चंद्रकांत झेंडे,

सहयोगी प्राध्यापक , वीर वाजेकर ए.एस.सी.कॉलेज,फुंडे .

सारांश:

२१ वीं सदी की सबसे बड़ी देन है कि विश्व एक साइबरविलेज में बदल गया है। सूचना-क्रांति और जनसंचार क्रांति ने आज विश्व को छोटा कर दिया है। विश्वभर की खबरें कुछ ही सेकेंडों में दुनिया में प्रसारित हो जाती है। इंटरनेट, सैटेलाइट और टेलीकम्यूनिकेशन ने तो क्रांति ही कर दिया है। आज ग्लोबलाइजेशन एवं बहुभाषिकता का युग है। ग्लोबलाइजेशन एवं बहुभाषिकता विभिन्न देशों की संस्कृतियों, भाषाओं एवं भौगोलिक सीमाओं में परस्पर आदान-प्रदान के कारण उत्पन्न समन्वित स्थिति एवं स्वरूप की देन है। काफ़ी हद तक यह स्थिति विभिन्न देशों के साहित्य के परस्पर अनुवाद के कारण ही संभव हो पाई है। इसलिए आज के ग्लोबलाइजेशन युग में सृजनात्मक साहित्य के अनुवाद का महत्त्व और भी बढ़ जाता है। इस आधार पर अगर वर्तमान युग को अनुवाद का युग कहें तो कोई अतिशयोक्ति नहीं होगी। यदि अनुवाद न होता तो विश्व-संस्कृति की इतनी बड़ी और महत्त्वपूर्ण परंपरा विकसित नहीं होती। सामाजिक-सांस्कृतिक बदलाव में अनुवाद की महत्त्वपूर्ण भूमिका होती है। समाज सतत परिवर्तनशील और विकासशील होता है। इसके स्वरूप निर्माण में कई तरह के तत्त्व सक्रिय रहते हैं जिनमें आर्थिक, राजनीतिक, सामाजिक सांस्कृतिक चेतना आदि प्रमुख होते हैं। किसी भी समाज की जन चेतना का निर्माण, विकास एवं परिवर्तन उसकी परिस्थितियों के अनुसार होता है। युगीन परिस्थितियों से उद्भुत इस चेतना की निर्मिति में जनसामान्य की भाषा महत्त्वपूर्ण भूमिका अदा करती है। विश्व के संस्कृतियों में मौखिक और लिखित साहित्य का अनुवाद एक निरंतर चलने वाली प्रक्रिया रही है। जब कोई रचना लोक-भाषा में उपलब्ध हो जाती है, तो ज्ञान के प्रसार से जनमानस में जागरूकता पैदा करती है। एक भाषा का साहित्य किसी-न किसी रूप में दूसरी भाषा में, दूसरी से तीसरी भाषा में इस तरह से अनेक भाषाओं में स्थान पाता है।

Copyright © 2025 The Author(s): This is an open-access article distributed under the terms of the Creative Commons Attribution 4.0 International License (CC BY-NC 4.0) which permits unrestricted use, distribution, and reproduction in any medium for non-commercial use provided the original author and source are credited.

भूमिका:

विश्व-संस्कृति के विकास में अनुवाद का योगदान अत्यन्त ही महत्त्वपूर्ण रहा है । धर्म, साहित्य, शिक्षा, विज्ञान, वाणिज्य-व्यवसाय, राजनीति, संस्कृति आदि के विभिन्न पहलुओं का अनुवाद से अभिन्न संबंध रहा है। जबकि समाज और अनुवाद का संबंध भी नया नहीं है। इस संबंध की जड़ें मानव समाज में काफी पुराना है। अनुवाद ने विश्वभर में ज्ञान-विज्ञान की चेतना से मानवीय ज्ञानात्मक और भावात्मक संवेदना को बदला है।

ISSN–2278-5655

AMIERJ Aarhat Multidisciplinary International Education Research Journal

Volume–XIV, Special Issues – III (a) Nov – Dec, 2025

OPEN ACCESS Original Research Article

अनुवाद को हम सुदृढ़ सेतु के रूप में देख सकते हैं जो संस्कृति के भौतिक, बौद्धिक एवं आध्यात्मिक पहलुओं को गतिशीलता प्रदान करती है । विश्व-संस्कृति के निर्माण में विचारों के आदान-प्रदान का बड़ा सहयोग रहा है और यह आदान-प्रदान अनुवाद से ही संभव हो पाया है। अनुवाद कर्म ने सामाजिक चेतना के बदलाव, संघर्ष और टकराहट को प्रबल और सजग प्रक्रिया के रूप में जीवन्त रखने में एक महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाया है । वैचारिक आदान-प्रदान की चेतना से सामाजिक वैचारिकता में एक नई भूमि तैयार करने में अनुवाद की महत्त्वपूर्ण भूमिका रही है । सामाजिक और सांस्कृतिक बदलाव में अनुवाद की महत्त्वपूर्ण भूमिका अनेक तर्कों और उदाहरणों के माध्यम से देख सकते हैं।

यूरोपीय देशों को रेनेसाँ काल में ग्रीक और रोम के साहित्य ने प्रभावित किया । ग्रीक और लैटिन भाषाओं ने भी क्लासिक भाषाओं के रूप में यूरोप की सभी भाषाओं को प्रभावित किया । बाइबिल के अनुवाद के बाद एक ऐसी साहित्यिक क्रांति आई जिसने समूचे यूरोप को ही नहीं, बल्कि अनेक देशों की संस्कृतियों को भी प्रभावित किया। बाइबिल का अनुवाद विश्व की लगभग सभी भाषाओं में किया गया। बाइबिल के अनुवाद के इतिहास को पश्चिमी संस्कृति का इतिहास कहा जा सकता है।

इस काल में अनुवाद, व्याख्या और भाष्य ने नए आयाम विकसित किए। यूरोपीय वर्नाकुलरों के साहित्य का उदय हुआ । आगे चलकर ईसाई मत के प्रसार के साथ अनुवाद ने एक अन्य भूमिका ग्रहण की। भाषा और साहित्य की समृद्धि तथा जनचेतना की उद्भावना से आगे बढ़कर अनुवाद 'ईश्वर की वाणी' का प्रसार करने की ओर उन्मुख हुआ । धर्म ने अनुवादक के सामने एक नया लक्ष्य रखा और अनुवाद अब एक ऐसे परिवृत्त में घूमने लगा, जो सौंदर्यबोध और ईसाई मत दोनों के मानदंडों को एक साथ लेकर चलने लगा।

इसी तरह एशिया में भारतीय ग्रंथों के अनुवाद के द्वारा अनेक देशों में बौद्ध धर्म और संस्कृति का प्रसार हुआ। संस्कृत और पालि से चीनी भाषा में अनुवाद का कार्य ईसा की पहली शताब्दी से ही शुरू हो गया था। चीनी त्रिपिटिक के तेईशों संस्करण में **३३६०** से अधिक भारतीय ग्रंथों का चीनी में अनुवाद है। चीनी भाषा में भारतीय ग्रंथों के अनुवाद का यह कार्य कई शताब्दियों तक चलता रहा। चीनी भाषा में बौद्ध ग्रंथ चीन में आदरणीय बन गया और चीनी जनता उन्हें पूजने लगी।

जापान में इन चीनी अनुवादों के परिणामस्वरूप बौद्ध-धर्म के प्रसार के साथ-साथ सभ्यता का विकास होने लगा। बौद्ध-धर्म ने वहाँ एक नए विचार पैदा कर दिया। शिक्षा का सार्वजनिक प्रसार हुआ। इसके परिणामस्वरूप जापानी भाषा में साहित्य सृर्जना हुई। भारत की अध्यात्म विद्या और दर्शन के उत्तम ग्रंथों का तिब्बती भाषा में अनुवाद किया गया। तिब्बती भाषा का एक साहित्यिक और परिष्कृत भाषा के रूप में विकास हुआ। साहित्य अनुवाद और विशद व्याख्यानों के आंदोलन ने तिब्बत में बौद्धिक चेतना को जन्म दिया। सहस्त्र सूत्रों और उनकी टीकाओं के तिब्बती अनुवाद ने ही वहाँ नवजागरण का सूत्रपात किया।

चौदहवीं शताब्दी में मंगाल भाषा में भी बौद्ध सूत्रों का अनुवाद शुरू किया गया। कंजूर के १०८ खंडों के अतिरिक्त मंगोल भाषा एवं तंजूर भाषा में भी भारतीय कृतियों का अनुवाद किया गया। अमरकोश, काव्यादर्श दि कृतियों के मंगोल अनुवादों

ISSN–2278-5655

AMIERJ Aarhat Multidisciplinary International Education Research Journal

Volume–XIV, Special Issues – III (a) Nov – Dec, 2025

OPEN ACCESS Original Research Article

ने मंगोलिया की साहित्यिक परम्परा को प्रभावित किया। मंगोल विश्व-कोष में भारतीय आयुर्वेद और रसायन शास्त्र के अनेक ग्रंथों के भी अनुवाद मिलते हैं। इसी तरह इन्डोनेशिया, श्रीलंका, वर्मा, लाओस, थाइलैंड और कम्पूचिया में भी अनेक संस्कृत तथा पालि ग्रंथों का अनुवाद किया गया। इन अनुवादों के परिणामस्वरूप उन देशों का साहित्य समृद्ध हुआ और वहाँ भारतीय धर्म-चिंतन और संस्कृति का प्रसार हुआ।

भारतीय पुस्तकों का अनुवाद अरबी में भी हुआ, लेकिन भारतीय पुस्तकों के अनुवादों ने अरबी संस्कृति को जितना प्रभावित किया उससे कहीं ज्यादा अरबी संस्कृति ने भारतीय संस्कृतियों को प्रभावित किया। अरबी और फारसी भाषा और साहित्य का वर्चस्व भारत में लंबे समय तक कायम रहा। अरबी और फारसी भाषाएँ भारत में शासकीय भाषाओं के रूप में प्रतिष्ठित हुईं। उनके प्रभाव से भारतीय भाषाओं के स्वरूप में परिवर्तन आया। यूरोप के देशों में जहाँ एक ओर एशियाई संस्कृति का प्रचार अरबी के माध्यम से हुआ, वहीं दूसरी ओर यूरोपीय देशों को ग्रीस और रोम के साहित्य ने भी प्रभावित किया। ग्रीक और लैटिन भाषाओं के क्लासिक भाषाओं के रूप में, यूरोप की सभी भाषाओं को प्रभावित किया।

नवजागरण की चेतना की जो शुरूआत इटली में हुई थी, वह साहित्य और कला के क्षेत्रों में यूनान की श्रेष्ठ कृतियों के अध्ययन और पुनः सृजन तक सीमित थी। जब जर्मनी और इंग्लैंड आदि ने बाइबिल के अनुवाद का तथा ब्रिटिश शासकों ने रोम के चर्च से मुक्ति का दुःसाहस किया तो समाज को व्यापक परिवर्तन से गुजरना पड़ा। लेकिन जर्मनी और इंग्लैंड नवजागरण को केवल सैद्धांतिक रूपमें ही नहीं पाना चाहते थे, वे उसे अपने जीवन में भी उतारना चाहते थे। अतः प्राचीन ग्रीक श्रेष्ठ साहित्य और कला का अध्ययन ही पर्याप्त न था, बल्कि वर्तमान असंतोषजनक परिस्थितियों का सुधार भी आवश्यक था। बाइबिल के जर्मन तथा अंग्रेजी अनुवादों ने सामाजिक सुधार में महत्त्वपूर्ण योगदान दिया। आम आदमी को बाइबिल पढ़ने और रखने का अधिकार मिला। इस सबके कारण यूरोपीय समाज को विप्लव के दौर से भी गुजरना पड़ा। भयंकर रक्तपात और राजनीतिक उथल-पुथल के काल-विशेष की घटना मात्र बनकर न रहे, बल्कि इससे समूचे यूरोपीय समाज के जीवन में गंभीर परिवर्तन आए। चर्च ऑफ इंग्लैंड की स्थापना तथा बाइबिल के अंग्रेजी अनुवादों के माध्यम से ईसाई धर्म में प्रोटेस्टेंट मत की शुरूआत हुई। टिंडेल, इटेसमस, मार्टिन लूथर आदि ने समाज को पोप सत्ता की कठिन धार्मिक जर्जर रूढ़ियों से मुक्ति दिलाई। नव-जागरणकालीन यूरोप में अनुवादों की भूमिका केन्द्रीय हो गई। साथ ही इसने अतीत और वर्तमान के बीच तथा राष्ट्रवाद और धार्मिक संघर्ष के दबाव के कारण बिखरती हुई विभिन्न भाषाओं और परम्पराओं के बीच संबंध को स्पष्ट करते हुए उसे तार्किक आधार प्रदान किया। यही कारण है कि नवजागरण काल में अनुवाद किसी भी स्थिति में गौण न होकर ऐसे प्रमुख कार्य के रूप में दिखाई देता है।

भारत में ब्रिटिश साम्राज्य की स्थापना के बाद ब्रिटिशों ने प्राचीन भारतीय परम्पराओं, ज्ञान-विषयों पर उपलब्ध समस्त महत्त्वपूर्ण साहित्य के महत्त्व को समझा था और इसीलिए उसका अंग्रेजी में अनुवाद कराया१७७५ में सर विलियम जोन्स द्वारा स्थापित बंगाल की रॉयल एशियाटिक सोसाइटी ने प्राचीन भारतीय साहित्य की खोज तथा उसके अनुवाद और

ISSN–2278-5655

AMIERJ Aarhat Multidisciplinary International Education Research Journal

Volume–XIV, Special Issues – III (a) Nov – Dec, 2025

OPEN ACCESS Original Research Article

प्रकाशन का कार्य आरंभ किया । १७९८ में सर मोनियर विलियम्स ने कालिदास के 'अभिज्ञान शाकुन्तलम्' का अनुवाद किया। यूरोपीय समाज और साहित्य पर इस अनुवाद का कई रूपों में प्रभावित किया । मैक्समूलर, शॉपेनहावर, श्लेगल आदि जर्मन विद्वानों द्वारा संस्कृत के वैदिक और लौकिक साहित्य के अनुवाद कार्य से भाषा विज्ञान के क्षेत्र में नई दिशा खुली और तुलनात्मक भाषा विज्ञान का आरंभ हुआ।

हिंदी के मध्यकाल में लोकभाषाओं के विकास और लोकजागरण को अनुवाद के परिप्रेक्ष्य में देखने पर हम पाते हैं कि इस काल में संतों ने अपनी भाषा में संस्कृत और पाली के महान् साहित्य, दर्शन, धर्म, संस्कृति और नीति चेतना के ग्रंथों का स्वच्छंद अनुवाद किया। उपनिषदों, महाभारत, रामायण और गीता के विचारों के लोकभाषा में अनुवादों की एक विस्तृत परम्परा सोलहवीं शती से अठारहवीं शती तक दिखाई देती है।

गीता का हिंदी अनुवाद हखल्लभ ने १६४४ में, भगवानदास ने १६६९ में, आनन्दराम ने १७०७ में किया । इस प्रकार अनुवाद ने इस काल में जनता के मन पर जमी हुई निराशा को हटाते हुए जीवन में नई किरण दिखाई।

इसी प्रकार मध्ययुगीन कविता में भक्तिधारा को जनचेतना में प्रखर गति से प्रवाहित करने में अनुवादों की महत्त्वपूर्ण भूमिक रही। भारत में अंग्रेजी राज की स्थापना के बाद नवजागरण की जो नवीन चेतना प्रस्फुटित हुई उसमें अनुवाद की भूमिका को भुलाया नहीं जा सकता । फ्रांसीसी राजक्रांति, यूरोपीय पूंजीवाद, उपनिवेशवाद और साम्राज्यवाद की शक्तियों और उनके खतरों से हम अनुवाद के माध्यम से ही परिचित हुए थे। पश्चिम में मार्क्स, रूसों, डार्विन और टॉलस्टॉय के विचारों के साथ यूरोप में जिस नवचिंतन का आरंभ हुआ था, उसे भारत तक पहुँचाने के कार्य में अनुवाद महत्त्वपूर्ण रहा है । इन अनुवादों से एक नया बुद्धिवाद का उदय हुआ तथा मध्ययुगीन जड़ता का ध्वंस हुआ। उन्नीसवीं सदी के भारत में मानवमुक्ति की कल्पना के विकास में अनुवाद की महत्त्वपूर्ण भूमिका रही है। दूसरी भारतीय भाषाओं के बीच वैचारिक आदान-प्रदान के रास्ते भी अनुवाद ने ही खोलें । बंगला से बंकिम, शरद, माइकेल मधुसूदन दत्त, रवीन्द्रनाथ, मराठी से हरिनारायण आप्टे, खाण्डेकर आदि जो अनुवाद हिंदी में हुए, वह हिंदी-भाषी प्रदेशों में एक नया विचार-विन्मय उत्पन्न किया और जनमानस साम्प्रदायिकता और प्रांतीयता से ऊपर उठकर अखण्ड चेतना की दिशा प्राप्त किया। यह समझने की जरूरत है कि हमारे राष्ट्रीय सांस्कृतिक नवजागरण में अनुवाद ने युगान्तकारी कार्य किया है। स्वयं आचार्य रामचन्द्र शुक्ल ने हैकल की क्रांतिकारी पुस्तक 'रिडिल ऑफ दि यूनिवर्स' का 'विश्व प्रपंच' नाम से अनुवाद किया। हैकल की इस पुस्तक ने पूरे एशिया में तहलका मचा दिया था। दुनिया भर के मुक्ति संग्रामों से हमें मुक्ति संग्राम की नई चेतना मिली। दुनिया के बहुत से देश ब्रिटिश साम्राज्यवाद के नीचे पिस रहे थे उन सबकी आजादी में अनुवाद की अहम भूमिका रही है।

वास्तव में अनुवाद कार्य ने सामाजिक चेतना में परिवर्तन की प्रक्रिया को जीवंत बनाने में उल्लेखनीय योगदान दिया है। अनुवाद का माध्यम न होता तो नीग्रो युवकों द्वारा बनाया गया लड़ाकू संगठन 'ब्लैक पैंथर' के तर्ज पर १९७५ में महाराष्ट्र का 'दलित पेंथर' भी न बना होता। मराठवाड़ा में उपजे एक विरोध के स्वर को जहाँ एक ओर अनुवाद ने व्यापक भारतीय

ISSN–2278-5655

Aarhat Multidisciplinary International Education Research Journal

Volume–XIV, Special Issues – III (a) Nov – Dec, 2025

OPEN ACCESS Original Research Article

दलित समुदाय की चेतना से जोड़ा तो, वहीं दूसरी ओर दुनिया के तमाम कोनों में चल रहे रंगभेदी आंदोलन से भी जोड़ा। अन्य भाषा-भाषियों द्वारा लिखे गये दलित साहित्य को हिंदी भाषा-भाषियों और अन्य भाषा भाषियों तक पहुँचाने में अनुवाद की अहम भूमिका रही है।

निष्कर्ष :

विश्व के सभी विकसित देशों की राजनैतिक, सामाजिक, सांस्कृतिक, आर्थिक, वैज्ञानिक तथा प्रौद्योगिकीपरक प्रगति में अनुवाद की उल्लेखनीय भूमिका रही है।अनुवाद से ही न्यूटन के गुरूत्वाकर्षण सिद्धान्त, डार्विन के विकासवाद, फ्रायड के मनोविश्लेषणवाद और कार्ल मार्क्स के द्वंद्वात्मक भौतिकवाद की जानकारी अनुवाद से ही प्राप्त हुई है और इससे समूचा विश्व प्रभावित हुआ। वास्तव में विश्व की कम होती दूरियों में अनुवाद की भूमिका अहम है।

संदर्भ-ग्रन्थ :

1. *गोस्वामी, कृष्ण कुमार, अनुवाद विज्ञान की भूमिका, नई दिल्ली, राजकमल प्रकाशन, २००८*
2. *जी गोपीनाथन, टंडन, पूरनचंद, अनुवाद साधना, दिल्ली, अभिव्यक्ति प्रकाशन, २००७*
3. *तिवारी, भोलानाथ, अनुवाद विज्ञान, दिल्ली, अमर प्रिंटिंग प्रेस, १९७२*
4. *नगेन्द्र, (सं.), अनुवाद विज्ञान सिद्धांत और अनुप्रयोग, दिल्ली, दिल्ली विश्वविद्यालय, १९९३*

Cite This Article:

***डॉ. झेंडे झे. चं.** (2025). सामाजिक और सांस्कृतिक बदलाव में अनुवाद का योगदान.* **In Aarhat Multidisciplinary International Education Research Journal**: Vol. XIV (Number VI, pp. 175–179).

ISSN–2278-5655

AMIERJ Aarhat Multidisciplinary International Education Research Journal

Volume–XIV, Special Issues – III (a) Nov – Dec, 2025

OPEN ACCESS Original Research Article

भाषा एवं साहित्य के विकास में अनुवाद की भूमिका

* प्रा. रेश्मा भरत कांबळे,

सहायक प्राध्यापक, मॉडर्न कॉलेज, शिवाजी नगर.

प्रस्तावना :

भाषा हमारे विचारों को, भावनाओं को आदान-प्रदान करने का माध्यम है। भाषा ही एक ऐसा माध्यम हे जो हम मनुष्य को अन्य प्राणियों के उपर और अलग रखता है। इस संसार में जितने भी सजीव है, उसमें मात्र मानव ही ऐसा प्राणी है जो बोल सकता है| हमारा भारत देश एक बहुभाषी देश है, जहाँ 22 भाषाओं को संविधान में मान्यता प्राप्त है। अत: जब दो भिन्न भाषाओं के देश में लोगों को वार्तालाप करने की समस्या उत्पन्न होती है तब वहाँ मात्र अनुवाद ही समस्या का हल बनकर सामने आता है।

अनुवाद एक भाषा से दूसरी भाषा में अर्थ के अन्तरण की प्रक्रिया है। आधुनिक युग में अनुवाद का महत्त्व काफी बढ़ गया है। अनुवाद को कला और विज्ञान रूप में देखा जा रहा है। इन सभी बातों में एक विशेष बात यह देखी जाती है कि हमारी हिंदी भाषा आज संसार की अधिक लोकप्रिय भाषाओं में से एक लोकप्रिय भाषा है। बहुत पहले ही रविंद्रनाथ टागोर ने हिंदी को एक महानदी के रूप में माना है। हिंदी हमारी राजभाषा है| पर अपने समृद्ध हिंदी और सुगमता के कारण आज हिंदी को लोगों ने मातृभाषा, संपर्क भाषा, साहित्यिक भाषा और जनभाषा के रूप में स्वीकार किया है।

Copyright © 2025 The Author(s): This is an open-access article distributed under the terms of the Creative Commons Attribution 4.0 International License (CC BY-NC 4.0) which permits unrestricted use, distribution, and reproduction in any medium for non-commercial use provided the original author and source are credited.

अनुवाद की उपयोगिता:

कथासाहित्य और अनुवाद :

कथासाहित्य में कहानियों| उपन्यासों और अन्य विधाओं के अनुवाद हम करते है। अनुवाद के माध्यम से हम देश के अलग-अलग भाषाओं का अनुवाद हिंदी में कर सकते है।

कविता और अनुवाद :

कविता के पुन: सृजन के लिए एक संवेदनशील अनुवादक की ही जरूरत होती है। जो स्वयं एक कवि हो और अन्य दुसरी भाषा की जानकारी रखता हो। वही इस कार्य को अच्छी तरह से कर सकता है। अनुवाद के कारण आज अनेक काव्यों का एक भाषा से दूसरी भाषा में अनुवाद संभव हुआ है। उदा. रामचरितमानस, टैगोर का गीतांजली।

नाटक और अनुवाद:

नाटक में रस को विशेष महत्त्व होता है। अत: इससे स्पष्ट होता है कि जिन अनुवादक में नाटय लेखन की विशेष क्षमता मौजूद है, वही अनुवादक नाटक का दुसरी भाषा में अनुवाद कर सकता है। नाटकानुवाद की सफलता संवाद, रंगमंच की दृष्टि से विशेष महत्त्व रखता है। उदा. भारतेंदु के अनुवादित नाटक|

ISSN–2278-5655

AMIERJ Aarhat Multidisciplinary International Education Research Journal

Volume–XIV, Special Issues – III (a) Nov – Dec, 2025

OPEN ACCESS Original Research Article

लोकसाहित्य और अनुवाद :

साहित्य समाज का दर्पण होता है| अत: हर भाषा का अपना-अपना साहित्य होता है| भारत एक सर्व धर्म भाषी देश होने के नाते साहित्य प्रेमी अनेक भाषाओं के साहित्य भी होते है| इस संदर्भ में लोकसाहित्य पढ़ने में अनुवाद अपनी जिम्मेदारी निभाते है।

विश्वभाषाओं के परिप्रेक्ष्य में अनुवाद :

14 सितंबर यह दिन हम हिंदी दिवस के रूप में मनाते है।

i) राजभाषा के रूप में हिंदी :- 14 सितंबर 1949 को हिंदी को राजभाषा घोषित करके संविधान क अनुच्छेद 343 से 351 तक विशेष प्रावधान दिए गए है। आज राजभाषा हिंदी ने अनुवाद क आधार पर अपनी विशिष्ट संरचना बना ली है। अनुवाद के क्षेत्र में रोजगार के बड़े अवसर देखे जा रहे है। आज हिंदी विश्व में सबसे अधिक बोली जानेवाली भाषा है।

ii) संपर्क भाषा/ जनभाषा :- वस्तुतः हिन्दी भाषा खड़ी बोली का ही विकसित रूप है, जिसमें अनेक देशी और विदेशी शब्दावली समाहित है। हिंदी भाषा संस्कारित होकर अधिक राज्यों में राजकाज का माध्यम बन गई। आज हिंदी बहुसंख्यक वर्ग या विशाल जनसमुदा य की भाषा है। क्षेत्र की मांग के अनुरूप उस भाषा में परिवर्तन आता है। उसमें नयापन जाता है। दो व्यक्तियों बीच जिस अपौचारिक भाषा में बोलने की प्रक्रिया सहज रूप में संपन्न अर्थ है, वह बोलचाल की भाषा कहलाती है|

अनुवाद के सांस्कृतिक संदर्भ:

भाषा का संबंध संस्कृति से होता है। देश की भाषा देश के स्वाभिमान और आत्मा के विश्वास को जताती है। राष्ट्रभाषा संपूर्ण देश की होती है। राष्ट्रभाषा हिंदी के माध्यम से ही हमारी संस्कृतिक गरिमा और भावनात्मक एकता का पोषण होता गया है। अनुवाद एक ऐसा सेतु बंधन का कार्य है जिसके बिना विश्व संस्कृत का विकास नहीं होता। अनुवाद के द्वारा हम मानव के विश्व कुटुंब में संपूर्ण एकता एवं समझदारी की भावना विकसित कर मानवीय एकता के मूल बिंदु तक पहुंच सकते है|

अनुवाद समीक्षा एवं मूल्यांकन :

अनुवाद की संमीक्षा एवं मूल्यांकन करते समय हमारे ही सामने अनेक प्रश्न निर्माण होता है। अनुवाद करते समय शब्दों की, वाक्यों की सटीकता देखनी पड़ती है। अनुवाद करते समय शब्द का अर्थ बदलना चाहिए| इसका भी पूरा मूल्यांकन अनुवादक को करना पड़ता है।

अनुवाद की समस्याएँ:

अनुवाद में समतुल्यता की खोज करते समझ अनुवादक को अनेक समस्याओं का समाधान करना पड़ता है। अनुवाद में समस्या उत्पन्न करनेवाला प्रमुख कारण है भाषाओं की भिन्न प्रकृति| जिस साहित्य का दूसरे उस भाषा में अनुवाद करता है जैसे कि- मुहावरे, अलंकार आदि|

रक्षा क्षेत्र एवं अनुवाद :

रक्षा के क्षेत्र में अनुवाद का विशेष योगदान होता हैं। नागरिकों के लिए क्षेत्रीय बोली में और उसके साथ ही हिंदी और अंग्रेजी में अनुवादित सूचनाओं के फलक लगाए जाते है| इससे जो नागरिक अंग्रेजी जानते समजते है वे अंग्रेजी अनुवाद पढ़ते है| और सामान्य जनता हिंदी के अनुवाद भाषा में समज लेते है|

ISSN–2278-5655

AMIERJ Aarhat Multidisciplinary International Education Research Journal

Volume–XIV, Special Issues – III (a) Nov – Dec, 2025

OPEN ACCESS Original Research Article

प्रादेशिक भाषाओं के विकास में अनुवाद :

अनुवाद प्रादेशिक भाषाओं के विकास में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाता है| यह ज्ञान के प्रसार में मदद करता है।

निष्कर्ष :

प्रस्तुत शोध पत्र में अनुवाद के विविध पहलूओं का वर्णन किया है| आज शिक्षण संस्थाओं, पर्यटन, पत्रकारिता, सरकारी कार्यालयों आदि में हिन्दी में अनुवाद की जरूरते देखी जा रही है| 'अनुवाद' ही ऐसा विकल्प है जो विश्व की एकता को परिभाषित कर सकता है|

वैसे देखा जाए तो अनुवाद एक मात्र साहित्यिक कार्य नही है, अपितु उसकी पहचान जीवन के हर क्षेत्र में सक्रिय साधन के रूप में उभरी है| उपयुक्त विधानों के आधार पर हम यह कह सकते है कि भारत जैसे बहुभाषी और विविधताओं से भरे देश में राष्ट्रीय एकता के सूत्र में समेटने की ताकद अनुवाद में है|

संदर्भ ग्रंथ :

1. *हिंदी अनुवाद : नई दिशाएं और संभावनाएँ - डॉ. मीरा कुमारी*
2. *अनुवाद : सिद्धांत एवं प्रयोग - जी. गोपीनाथन*
3. *आधुनिक जनसंचार माध्यमों में हिंदी - डॉ. जय प्रकाश पाण्डेय*

Cite This Article:

प्रा. कांबळे रे. भ. (2025). *भाषा एवं साहित्य के विकास में अनुवाद की भूमिका.* **In Aarhat Multidisciplinary International Education Research Journal**: Vol. XIV (Number VI, pp. 180–182).

ISSN–2278-5655

AMIERJ Aarhat Multidisciplinary International Education Research Journal

Volume–XIV, Special Issues – III (a) Nov – Dec, 2025

OPEN ACCESS Original Research Article

भारतीय भाषाई प्रदेश में अनुवाद की स्थिति

* डॉ. दिपक जाधव,

*सहयोगी प्राध्यापक, हिंदी विभाग, वेणूताई चव्हाण कॉलेज, कराड.

अरस्तु के अनुकरण सिद्धांत की प्रभावात्मकता को विस्तारित किया जाए तो कितना कुछ अनुवाद से बाहर रह सकता है??? अनुकृति का अनुकरण ही तो अनुवादक करता है। रचनाकार का मानस जगत एवं उसकी प्रत्यक्ष रचना तथा उस रचना का अनुवादक द्वारा भाषा अंतरण – मानसिक, भाषिक एवं पाठ के धरातल पर चलता है। मानव समुदाय में जहां भी बहुभाषिकता की स्थिति बनी है या जहां भी भिन्न भाषी संपर्क हुआ है, वहां अनिवार्यत: अनुवाद की प्रक्रिया शुरू हो जाती है। भारत स्वयं अपने आप में भाषाओं के अजायबघर से काम नहीं है। ऐसे में अनुवाद भारतीय भाषीय संरचना का अभिन्न अंग बन जाता है। अतः अनुवाद भारत भू में प्राचीन काल से ही प्रभावात्मक एवं संकल्पनात्मक रूप में व्याप्त रहा है।

Copyright © 2025 The Author(s): This is an open-access article distributed under the terms of the Creative Commons Attribution 4.0 International License (CC BY-NC 4.0) which permits unrestricted use, distribution, and reproduction in any medium for non-commercial use provided the original author and source are credited.

भारतीय अनुवाद परंपरा में शुरुआती दौर से ही प्रभावात्मक अनुवाद, संकल्पनात्मक अनुवाद या रूपांतरण की प्रक्रिया को अधिक अपनाया गया है। लोक प्रचलित, लोक रुचि एवं लोक प्रसिद्ध रचनाओं के अनुवाद, रूपांतरण की प्रवृत्ति भारतीय अनुवाद में अधिकतर दिखाई देती है। यह अनुवाद की प्रवृत्ति मुख्यत: पाठ-प्रति पाठ के बजाय अनुकूलन, रूपांतरण, व्याख्या, टीका, स्पष्टीकरण जैसी दिखाई देती है। इस संदर्भ में कृष्ण कुमार लिखते हैं, " भारतीय अनुवाद मूल पाठ का यथार्थ प्रतिरूप नहीं बल्कि सांस्कृतिक अनुकूलन का पुनः सृजन है।"[1] भारत की भाषिक-सांस्कृतिक बहुलता ने अनुवाद को केवल भाषिक प्रक्रिया नहीं, बल्कि सांस्कृतिक सेतु, धार्मिक प्रसार, ज्ञान-संचार और साहित्य-निर्माण का महत्त्वपूर्ण साधन बनाया है। यह केवल भाषिक रूपांतरण नहीं, बल्कि सांस्कृतिक सेतु का निर्माण भी है। अनुवाद के माध्यम से विश्व–साहित्य की श्रेष्ठ कृतियाँ प्रत्येक भाषिक समुदाय तक पहुँच पाती हैं, जिससे भाषा समृद्ध होती है, साहित्यिक परंपराएँ विकसित होती हैं तथा नए विचार, शैली और अभिव्यक्ति–रूप जन्म लेते हैं। मानव सभ्यता के विकास में भाषाओं के परस्पर संपर्क का विशेष महत्व रहा है। भाषाएँ जब एक-दूसरे से संवाद करती हैं, तभी उनका विस्तार, समृद्धि और वैज्ञानिककरण संभव होता है। अनुवाद इसी संवाद को संभव बनाता है। आज के वैश्वीकृत समाज में अनुवाद की भूमिका बढ़ गई है। शासन, शिक्षा, विज्ञान, साहित्य, मीडिया और संस्कृति—हर क्षेत्र में अनुवाद अनिवार्य हो चुका है।

ISSN–2278-5655

AMIERJ Aarhat Multidisciplinary International Education Research Journal

Volume–XIV, Special Issues – III (a) Nov – Dec, 2025

OPEN ACCESS Original Research Article

अनुवाद केवल शब्दों का स्थानांतरण नहीं, बल्कि अर्थ, भाव, शैली, सांस्कृतिक संकेत, मुहावरे, मिथक और संदर्भों का 'सार्थक रूपांतरण' है। अतः अनुवादक भाषा-वैज्ञानिक, साहित्य-समीक्षक और सांस्कृतिक दुभाषिए की भूमिका निभाता है।

वेदों के निघंटु, निरुक्त, ब्राह्मण और उपनिषद ग्रंथों में पदों की व्याख्या, भाष्य, टीकाएँ और अर्थ-परिकल्पनाएँ अनुवाद की प्रारंभिक रूपरेखा मानी जा सकती है। यास्क का निरुक्त (ईसा पूर्व 5वीं शताब्दी) अर्थ-व्याख्या और ज्ञान-स्थानांतरण का सबसे प्राचीन उदाहरण है। कुमारजीव द्वारा संस्कृत से चीनी में 300 से अधिक ग्रंथों का अनुवाद (5वीं शताब्दी) किया गया है। तिब्बती कंजूर और तंजूर में हज़ारों भारतीय ग्रंथों का अनुवाद मौजूद है।

बौद्ध धर्म के प्रसार के लिए अनुवाद अत्यधिक महत्वपूर्ण रहा। बौद्ध ग्रंथों के पालि, संस्कृत, चीनी और तिब्बती भाषाओं में अनुवाद विश्व-स्तरीय अनुवाद परियोजनाएँ थीं। पाली त्रिपिटक का संस्कृत, सिंहली और बर्मीज़ भाषाओं में अनुवाद हुआ। नालंदा और विक्रमशिला विश्वविद्यालयों में व्यवस्थित अनुवाद कार्य की सुदीर्घ परंपरा रही। चीन के बौद्ध इतिहासकार फंग यु-लान लिखते हैं, "भारतीय ग्रंथों का चीनी अनुवाद एशियाई बौद्ध दर्शन की रीढ़ है।"[2]

रामायण और महाभारत की कथाएँ ग्रामीण लोकगाथाओं, आल्हा–ऊदल, पिंगल, चौथाई आदि में लोकभाषाओं के रूप में अनूदित होती रहीं। पंचतंत्र, कथा–सार, हितोपदेश आदि नीतिकथाएँ लोकभाषाओं में रूपांतरित हुई, जिनका प्रभाव बाद में हिंदी कथा परंपरा पर पड़ा। राम कथा की उपस्थिति संभवत: भारत के हर भाषा में देखी जाती है। कंब रामायण (तमिल), कृतिवासी रामायण (बंगला), अद्भुत रामायण और आनंद रामायण के स्थानीय संस्करण, पम्प रामायण (कन्नड़), किलिप्पाट्टु रामायण (मलयालम) ये सभी प्रभावात्मक अनुवाद का उत्कृष्ट उदाहरण हैं, यद्यपि इन्हें रूपांतर या आदिकीर्तन भी कहा जा सकता। तुलसीदास के रामचरितमानस (अवधी) को वाल्मीकि रामायण का श्रेष्ठ भावानुवाद माना जा सकता है, जिसमें संस्कृत के जटिल दर्शन को अवधी की सहज, काव्यात्मक भाषा में रूपांतरित किया।

दिल्ली सल्तनत और मुगलकाल में फारसी प्रशासनिक भाषा थी। इसके कारण फारसी–अरबी साहित्य के अनुवाद तथा भारतीय ग्रंथों के फारसी अनुवाद का बड़ा दौर चला। मुगल बादशाह शाहजहां के बेटे दारा शिकोह ने उपनिषदों का फ़ारसी अनुवाद – सिर्र-ए-अकबर नाम से किया। उन्होंने लगभग 50 उपनिषदों का फ़ारसी में अनुवाद कराया। बाद में इस फ़ारसी ग्रंथ का फ्रेंच व लैटिन में भी अनुवाद हुआ, जिससे उपनिषदों का ज्ञान यूरोप में पहुँचा। दारा शिकोह ने ही संस्कृत के प्रसिद्ध दार्शनिक ग्रंथ 'योगवासिष्ठ' का फ़ारसी अनुवाद 'जुग बसीत' शीर्षक से कराया। रज़्मनामा (अकबरकालीन) – संस्कृत महाभारत का फारसी अनुवाद कराया, जिसमें अनेक हिंदू–मुस्लिम विद्वान शामिल हुए। तिलिस्म–ए–होशरुबा – फारसी कथाओं का देसी भाषा में रूपांतरण भी इस काल में उपलबध होता है।

भारत से ज्ञान परंपरा के महत्त्व और उसके प्रसार में अनुवाद भूमिका के बारे में अर्जुन चव्हाण लिखते है- "इतिहास इस बात का साक्षी है कि हिन्दुस्तान का ग्रीकों से ईसा पूर्व शती में संबंध आया था और ग्रीकों ने हिन्दुस्तान की संस्कृति, ज्ञान-विज्ञान, दर्शन तथा चिंतन को अनुवाद के जरिए प्राप्त करने का

ISSN–2278-5655

AMIERJ Aarhat Multidisciplinary International Education Research Journal

Volume–XIV, Special Issues – III (a) Nov – Dec, 2025

OPEN ACCESS Original Research Article

प्रयास किया।"[3]

बाइबल का अनुवाद मानव सभ्यता का एक अत्यंत महत्वपूर्ण बौद्धिक और सांस्कृतिक उपक्रम है। इतिहासकार डेविड डेनियल लिखते हैं कि बाइबल के अनुवाद ने यूरोप की भाषाओं को केवल शब्दावली ही नहीं दी, बल्कि उन्हें अभिव्यक्ति की एक नई संरचना प्रदान की। विश्व की लगभग सभी प्रमुख भाषाओं में बाइबल के अनुवाद उपलब्ध हैं। यह विशिष्टता बाइबल को मानव इतिहास की सबसे व्यापक अनुवाद परियोजना बनाती है।

सेप्टुआजिंट (LXX) ईसा-पूर्व तीसरी शताब्दी में हिब्रू बाइबिल का ग्रीक अनुवाद है। परंपरा के अनुसार 72 विद्वानों ने इस अनुवाद में योगदान दिया। हिब्रू भाषा के स्थान पर जब यहूदियों की बोली अरामी हो गई, तब बाइबल का अरामी में अनुवाद 'टार्गुम' कहलाया। 382 ई. में पोप डेमासस ने संत जेरोम को आधिकारिक लैटिन अनुवाद तैयार करने का निर्देश दिया। जेरोम ने हिब्रू और ग्रीक से सीधे अनुवाद किया। यूरोपीय भाषाओं में बाइबल अनुवाद विक्लिफ बाइबल (1382) यह अंग्रेज़ी की पहली पूर्ण बाइबल थी। यह 'ईसाई धर्म में लोकतांत्रिक भाषा आंदोलन' का प्रारंभ माना गया।

यूनेस्को (2022) के अनुसार बाइबल— पूरी बाइबिल : 700+ भाषाओं में, नया नियम : 1550+ भाषाओं में, कुछ अंश : 3600+ भाषाओं में अनुदित है।

भारत में बाइबल-अनुवाद का आरंभ आधुनिक भाषाओं के विकास के चरण से जुड़ा है। सैरमपुर मिशन के विलियम कैरी ने बंगाली में पहला बाइबल अनुवाद (1801) तैयार किया। यह अनुवाद बंगला भाषा के मानकीकरण और शब्दावली-विस्तार का आधार बना। तमिल (1727), मलयालम (1811–1829), मराठी (1811), तेलुगु (1809), कन्नड़(1831) (1831) में बाइबिल का हुआ है। आज लगभग सभी भारतीय भाषाओं में बाइबिल का अनुवाद उपलब्ध है।

भारतेंदु हरिश्चंद्र को हिंदी का 'आधुनिकीकरण कर्ता' कहा जाता है। उन्होंने अनुवाद को आधुनिक हिंदी के निर्माण का महत्वपूर्ण उपकरण माना। इस युग अंग्रेज़ी नाटक, इतिहास, यात्रा–वृतांत और धार्मिक साहित्य का हिंदी में अनुवाद हुआ। स्वयं भारतेंदू विभिन्न भाषाओं, मुख्य रूप से संस्कृत, बंगाली और अंग्रेजी से हिंदी में अनुवाद किया। उनके प्रमुख अनूदित नाटक निम्नलिखित हैं: विद्यासुंदर: बंगाली नाटक 'विद्यासुंदर' का हिंदी अनुवाद है। रत्नावली: संस्कृत के प्रसिद्ध नाटककार हर्ष की रचना 'रत्नावली' नाटिका का अनुवाद है। पाखंड विडंबन: संस्कृत के 'प्रबोध चंद्रोदय' नाटक के तीसरे अंक का अनुवाद है। धनंजय विजय: संस्कृत नाटक 'धनंजय विजय' का अनुवाद है। कर्पूर मंजरी: यह प्राकृत भाषा के नाटक 'कर्पूरमंजरी' का हिंदी अनुवाद है। मुद्राराक्षस: संस्कृत के विशाखदत्त द्वारा लिखित प्रसिद्ध नाटक 'मुद्राराक्षस' का अनुवाद है। दुर्लभ बंधु: विलियम शेक्सपियर के प्रसिद्ध अंग्रेजी नाटक 'द मर्चेंट ऑफ वेनिस' का बंगाली के माध्यम से किया गया हिंदी अनुवाद है। भारत जननी: यह एक बंगाली नाटक 'भारत जननी' का अनुवाद है।

इन अनुवादों के माध्यम से भारतेंदु ने हिंदी साहित्य को समृद्ध किया और भारतीय व पश्चिमी विचारों को हिंदीभाषी दर्शकों और पाठकों तक पहुँचाया। भारतेंदु मंडल द्वारा विज्ञान, समाज–सुधार और साहित्यिक विषयों पर अनेक अनुवाद किए गए। भारतेंदु युग के अनुवाद ने हिंदी को आधुनिक

ISSN–2278-5655

AMIERJ Aarhat Multidisciplinary International Education Research Journal

Volume–XIV, Special Issues – III (a) Nov – Dec, 2025

OPEN ACCESS Original Research Article

विचारधाराओं (राष्ट्रवाद, समाज–सुधार, शिक्षा–सुधार) से जोड़ा।

अनुवाद की परंपरा का हिंदी में आरंभ बहुत प्राचीन है— लोक–कथाओं, धर्मग्रंथों और महाकाव्यों के रूपांतरण से लेकर आधुनिक डिजिटल अनुवाद तक इसका विस्तार व्यापक और निरंतर है। ईस्ट इंडिया कंपनी के आगमन के बाद अंग्रेज़ी और भारतीय भाषाओं के बीच अनुवाद-कार्य बढ़ा। फोर्ट विलियम कॉलेज में अनुवाद की सुव्यवस्थित परंपरा रही। फोर्ट विलियम कॉलेज में लल्लूलाल (हिंदी), दिलावर अली (उर्दू), मुंशी सदरसुदन (बंगला) आदि ने भारतीय भाषाओं का आधुनिक गद्य निर्मित किया। इसी कारण किशोर कुमार दास लिखते हैं, "भारतीय आधुनिक भाषाओं का जन्म अनुवाद शाला के वातावरण में हुआ"[4] (p. 93).

संप्रति विश्व की सभी प्रमुख भाषाओं में भारतीय भाषाओं के साहित्य का अनुवाद हो राहा है। तो विश्व की श्रेष्ठ रचनाए भारतीय भाषाओं में उपलब्ध हो रही है, इसके पीछे अनुवाद और अनुवादक की एहम भूमिका है। आज बडे पैमाने पर भारतीय भाषाओ से विदेशी एवं देशी भाषाओं में अनुवाद हो राहा है- गोदान प्रेमचंद गॉर्डन सी. रोडर्मेल ने हिंदी से अंग्रेज़ी, कामायनी जयशंकर प्रसाद डेविड स्मिथ ने हिंदी से अंग्रेज़ी, रेत समाधि / Tomb of Sand गीतांजलि श्री डेज़ी रॉकवेल ने हिंदी से अंग्रेज़ी, तीसरी ताली मंजीत थींड जसप्रीत सिंह ने हिंदी से पंजाबी, कोसला भालचंद्र नेमाडे जेरी पिंटो ने मराठी से अंग्रेज़ी, शूद्रक दिनकर जोशी कुमार चंद्र ने गुजराती से हिंदी, करूक्कू बामा लक्ष्मी होल्मस्ट्रॉम ने तमिल से अंग्रेज़ी, पथेर पांचाली विभूतिभूषण बंद्योपाध्याय टुंडा अब्राहम ने बांग्ला से अंग्रेज़ी।

विदेशी भाषाओं से भी भारतीय भाषाओं में विशेषतः हिंदी में बडे पैमाने पर अनुवाद हो राहे है- Anna Karenina टॉलस्टॉय राकेश ने रूसी से हिंदी, The Trial काफ्का मनोज पटेल ने जर्मन से हिंदी, Don Quixote सर्वेंतिस श्रीदा कुलकर्णी ने स्पेनिश से हिंदी, The Kite Runner खालिद हुसैनी मुकेश कुमार ने अंग्रेज़ी से हिंदी, The Alchemist पाउलो कोएलो अमृता सिंह ने पुर्तगाली से हिंदी, The Prophet खलील जिब्रान नरेंद्र कुमार ने अंग्रेज़ी से हिंदी, Sapiens युवाल नोआ हरारी ऋतु सिंह ने अंग्रेज़ी से हिंदी आदि।

अनुवादों ने विभिन्न मतों, संस्कृतियों और भाषाओं के बीच सेतु का कार्य किया। भारतीय अनुवाद परंपरा अपनी विविधता, ऐतिहासिकता और सांस्कृतिक गहराई के कारण विश्व में अद्वितीय है। यह परंपरा केवल भाषाई नहीं, बल्कि सांस्कृतिक संवाद, ज्ञान-साझेदारी और साहित्यिक सृजन की निरंतर धारा है। प्राचीन काल की वैदिक व्याख्या से लेकर आधुनिक डिजिटल अनुवाद तक, भारतीय भाषाओं का विकास अनुवाद-प्रेरित रहा है। अनुवाद ने केवल भाषिक अंग बल्कि गद्य लेखन शैली, कथा संरचना, प्रतीकात्मकता, विमर्श, रूपक, विधा निर्धारण में समृद्ध किया है। इस प्रकार अनुवाद भारतीय समाज और साहित्य के अंतर-सांस्कृतिक सेतु के रूप में स्थायी महत्व रखता है।

संदर्भ :

1. *कृष्णकुमार (1995). अनुवाद: सिद्धांत और व्यवहार. दिल्ली: भारतीय ज्ञानपीठ।*
2. *अहमद मुनीर (2002). दारा शिकोह और भारतीय सांस्कृतिक समन्वय. नई दिल्ली: प्रकाशन विभाग।*

ISSN–2278-5655

AMIERJ Aarhat Multidisciplinary International Education Research Journal

Volume–XIV, Special Issues – III (a) Nov – Dec, 2025

OPEN ACCESS Original Research Article

3. अर्जुन चव्हाण (1998), अनुवाद चिंतन, अमन प्रकाशन, कानपुर।
4. किशोर कुमार दास (2011). भारतीय भाषाओं का आधुनिक विकास. कोलकाता: विशाल पब्लिशिंग।
5. नगेंद्र (1998). भारतीय साहित्य: स्वरूप और परंपरा. नई दिल्ली: साहित्य अकादेमी।
6. सूर्यनारायण रणसुभे (2008) आधुनिक हिंदी साहित्य का इतिहास, विकास प्रकाशन, कानपुर।

Cite This Article:

डॉ. जाधव दि. (2025). *भारतीय भाषाई प्रदेश में अनुवाद की स्थिति .* **In Aarhat Multidisciplinary International Education Research Journal**: Vol. XIV (Number VI, pp. 183–187).

ISSN–2278-5655

AMIERJ Aarhat Multidisciplinary International Education Research Journal

Volume–XIV, Special Issues – III (a) Nov – Dec, 2025

OPEN ACCESS Original Research Article

वैज्ञानिक साहित्य के अनुवाद की समस्याएँ

* डॉ. बाबासाहेब गव्हाणे,

*सहायक प्राध्यापक, हिंदी विभाग, मएसो आबासाहेब गरवारे महाविद्यालय (स्वायत्त), पुणे-04

सारांश :

अनुवाद एक भाषिक प्रक्रिया है। स्त्रोत भाषा के पाठ को लक्ष्य भाषा में अनूदित करने की एक जटिल प्रक्रिया। अनुवाद का यह कार्य साहित्यिक और साहित्येतर दोनों क्षेत्रों में व्यापक रूप में किया जाता है। साहित्येतर अनुवाद के अंतर्गत वैज्ञानिक एवं तकनीकी, विधिक, प्रशासनिक, वाणिज्य, संचार माध्यम और मानविकी अनुवाद महत्वपूर्ण है। वैज्ञानिक साहित्य का अनुवाद करना एक चुनौतीपूर्ण कार्य है, क्योंकि इसमें कई समस्याएँ आती हैं। वैज्ञानिक साहित्य में तकनीकी शब्दों, संकल्पनाओं और विचारों का उपयोग होता है, जो अनुवाद में खो जाते हैं। अनुवादक को तकनीकी शब्दों, संकल्पनाओं का अनुवाद करने के लिए विशेषज्ञता की आवश्यकता होती है। वैज्ञानिक साहित्य के अनुवाद में कई समस्याओं का सामना अनुवादक को करना पडता है। निम्नलिखित वैज्ञानिक साहित्य के अनुवाद में आने वाली समस्याओं और कठिनाइयों को निम्न श्रेणियों में विभाजित किया जा सकता है।

Copyright © 2025 The Author(s): This is an open-access article distributed under the terms of the Creative Commons Attribution 4.0 International License (CC BY-NC 4.0) which permits unrestricted use, distribution, and reproduction in any medium for non-commercial use provided the original author and source are credited.

1) **विषय का मूलभूत ज्ञान न होने की समस्याएँ-**

वैज्ञानिक साहित्य विषय का मूलभूत एवं आधारभूत ज्ञान का भंडार होता है। इसलिए अनुवादक को वैज्ञानिक साहित्य का अनुवाद करते समय विषय का मूलभूत एवं आधारभूत ज्ञान होना आवश्यक होता है। यदि अनुवादक के पास विषय के संदर्भ में मूलभूत जानकारी का अभाव है, तो अनुवाद में कई गलतियाँ हो सकती हैं। निम्नलिखित कुछ उदाहरण देख सकते हैं -

मूल भाषा का वाक्यांश- "The cells of the individuals belonging to the same species. ,,[1]

अनुवाद - " समान स्पिशिओं के सदस्यों की कोशिकाएँ।" प्रस्तुत उदाहरण में मूल अंग्रेजी शब्द 'Cells' के वचन को न समझने की भूल की गई है। 'Cells' शब्द को बहुवचन समझा गया है। जिससे अनुवाद गलत हो चुका है। प्रस्तुत वाक्य का अनुवाद इस प्रकार होना अपेक्षित था - " एक ही स्पीशीज के सदस्यों की कोशिकाएँ। " इस तरह अनुवादक को विषय की मूलभूत जानकारी होना अत्यंत जरुरी होता है।

2) **विज्ञान के संदर्भ में स्रोत भाषा को ठीक से अवगत न करने की समस्याएँ -** वैज्ञानिक साहित्य अनुवाद के संदर्भ में स्रोत भाषा को ठीक से समझना अत्यंत आवश्यक होता है।

ISSN–2278-5655

AMIERJ Aarhat Multidisciplinary International Education Research Journal

Volume–XIV, Special Issues – III (a) Nov – Dec, 2025

OPEN ACCESS Original Research Article

अनुवादक विषय से सुपरिचित हो या अल्पपरिचित उसे स्रोत भाषा को विज्ञान के संदर्भ में ठीक से अवगत होना जरुरी होता है। यदि अनुवादक स्रोत भाषा को विज्ञान के संदर्भ में ठीक से समझने में भूल करता है तो वैज्ञानिक साहित्य के अनुवाद में अर्थ का अनर्थ हो जाता है। इसका उदाहरण निम्नलिखित देख सकते हैं -

मूल भाषा का वाक्यांश - " Methane mixed with 4-12 times of it own volume of air explodes when a light is applied to it. "[2]

अनुवाद - " जब मिथेन पर अपने आयतन से 4 से 12 गुनी वायु को मिश्रित करके प्रकाश पडने दिया जाता है तो मिश्रण विस्फोट करता है।"

प्रस्तुत उदाहरण में 'light' शब्द का अर्थ 'प्रकाश' से नहीं है, बल्कि 'ज्वाला' के संपर्क से संबंधित है। परंतु विज्ञान के संदर्भ में अर्थ ग्रहण न करने के कारण अनुवाद गलत हुआ है। कभी-कभी अनुवादक अलंकारिक भाषा के मोह में आकर स्रोत भाषा के अर्थ को भी बदल देता है। अत: अनुवादक को यह ध्यान रखना आवश्यक है कि स्रोत भाषा को विज्ञान के संदर्भ में ठीक से अवगत कर ही अनुवाद का कार्य करना चाहिए।

3) पारिभाषिक शब्दावली के चयन की समस्याएँ-

वैज्ञानिक साहित्य के अनुवाद कार्य में पारिभाषिक शब्दावली का महत्व अनन्य साधारण होता है। पारिभाषिक शब्दावली के प्रयोग के कारण वैज्ञानिक अनुवाद में सरलता एवं सुबोधता आती है। वैज्ञानिक साहित्य का अनुवाद करते समय अनुवादकों के पास इन पारिभाषिक शब्दावलियों का होना अत्यंत आवश्यक होता हैं। वैज्ञानिक और तकनीकी पारिभाषिक शब्दावली के संदर्भ में वैज्ञानिक तथा तकनीकी शब्दावली आयोग, भाषा मंत्रालय, भारत सरकार द्वारा कई शब्दावलियों को प्रकाशित किया गया हैं। इन्हीं शब्दावलियों के माध्यम से अनुवादकों को अनुवाद का कार्य करना अपेक्षित होता है। परंतु कभी-कभी इन शब्दावली-सिद्धांतों का उल्लंघन अनुवादकों के द्वारा हो जाता है, परिणामस्वरूप अनुवाद कार्य में गलतियाँ हो जाती है।

जैसे- 'नाइट्रोजन' शब्द के लिए 'नत्रजन' और 'हाइड्रोजन' शब्द के लिए 'उद्जन' शब्द का प्रयोग अनुवाद को गलत साबित कर देता है। अनुवादक यह ध्यान रखे कि पारिभाषिक शब्दावली में जिन मानक शब्दों का प्रयोग किया गया है, उन्हीं शब्दों का प्रयोग अनुवाद करते समय करना आवश्यक हैं। कभी-कभी वर्तनी के स्तर पर भी कई त्रुटीयाँ हो जाती है। जैसे- 'विटामिन' शब्द की जगह 'वाइटैमिन' शब्द का प्रयोग होना, 'निमोनिया' शब्द की जगह पर 'न्यूमोनिया' शब्द का प्रयोग करना तथा 'बिस्कुट' शब्द की जगह पर 'बिस्किट' शब्द का प्रयोग करने से अनुवाद में त्रुटीयाँ आ जाती है। इसलिए अनुवादक यह ध्यान रखे कि वैज्ञानिक साहित्य का अनुवाद करते समय पारिभाषिक शब्दावली का गंभीरता से प्रयोग करें।

4) वस्तुओं एवं पदार्थों आदि के सामान्य हिंदी नामों के संदर्भ में आनेवाली समस्याएँ-

विज्ञान की विभिन्न शाखाओं में वस्तुओं और पदार्थों के सामान्य नामों का स्वाभाविक प्रयोग किया जाता है। यह देखा जाता है कि वैज्ञानिक साहित्य में प्रयुक्त वस्तुओं और पदार्थों के सामान्य नाम उस शाखा के संदर्भ में अपनी

ISSN–2278-5655

AMIERJ Aarhat Multidisciplinary International Education Research Journal

Volume–XIV, Special Issues – III (a) Nov – Dec, 2025

OPEN ACCESS Original Research Article

अलग विशिष्टता रखते हैं। जैसे- रसायनशास्त्र में चांदी, गंधक, जस्ता, नमक आदि। जीवशास्त्र के संदर्भ में पौधों एवं प्राणियों के सामान्य नाम जैसे- पीपल, लौकी आदि। चिकित्सा के क्षेत्र में बिमारियों के सामान्य नाम जैसे- पेचिश, पीलिया, जुकाम आदि। यदि अनुवाद का कार्य करते समय इन सामान्य नामों की जगह पर उचित एवं सार्थक नामों का प्रयोग नहीं होता है तो अनुवाद के कार्य में गलतियाँ हो जाती हैं।

वैज्ञानिक साहित्य का अनुवाद करते समय इन सामान्य नामों के संदर्भ में कई बार समस्याएँ उत्पन्न हो जाती हैं। पाश्चात्य वैज्ञानिक रचना का अनुवाद करते समय जब किसी वस्तु या जीव से संबंधित नामों का अनुवाद करना है और यदि वह वस्तु या जीव हमारे यहाँ विद्यमान ही नही हैं या उसका ज्ञात नाम हमें पता नहीं है, तो ऐसे समय पर अनुवाद का कार्य कठीन बन जाता है। जैसे- 'स्टारफिश' नाम से जिस जीव का बोध होता है, वह जीव हिंदी भाषी क्षेत्र में नहीं पाया जाता। ऐसे समय पर उसका हिंदी अनुवाद 'तारामीन' शब्द के माध्यम से किया जाता है। उसी प्रकार 'गिनीपिग' को 'गिनी का सूअर' लिखा जाता है तो 'बॉम्बे डक' नामक मछली को 'बम्बई की बत्तख' के रूप में रखा जाता है। ऐसे प्रसंगों में अनुवादक को शब्दानुवाद न करते हुए वस्तुओं और पदार्थों के नामों को उसी रूप में लिप्यांतरीत करना जरुरी है जिससे अनुवाद के कार्य में कम-से-कम गलतियाँ हो सकती है, अन्यथा अर्थ का अनर्थ होने की संभावना बढ जाती है।

5) संक्षिप्तियाँ तथा प्रतीक चिन्हों के स्तर पर आनेवाली समस्याएँ- वैज्ञानिक साहित्य में कई बार ऐसा परिलक्षित होता है कि लंबे एवं दीर्घ नामों की जगह पर संक्षिप्तियों का प्रयोग किया जाता है। जिससे वह साहित्य सरल और सुबोध बन जाता है। जैसे- 'डाइक्लोरो डाइफिनाइल ट्राइक्लोरोइथेन' इस नाम की जगह पर 'डी.डी. टी.' इस संक्षिप्ति का प्रयोग किया जाता है। अनुवादक ऐसे प्रसंगों में अनुवाद करते समय वैज्ञानिक साहित्य में प्रयुक्त संक्षिप्तियों का यथावश प्रयोग करें। यदि अनुवाद करते समय इन संक्षिप्तियों का प्रयोग अनुवादक द्वारा नहीं किया जाएगा तो अनुवाद कठीन एवं बोझील हो सकता है। कई बार वैज्ञानिक साहित्य में कुछ जगहों पर प्रतीक चिन्हों का भी प्रयोग होता है। अनुवादक यह ध्यान रखे कि प्रतीक चिन्हों को भी वह उनके मूल रूप में ही लिखे। अत: अनुवादकों को सटिक अनुवाद करने के लिए संक्षिप्तियों एवं प्रतीक चिन्हों के संदर्भ में अत्यंत सतर्क रहने की आवश्यकता है।

6) सांस्कृतिक पृष्ठभूमि की समस्याएँ -

वैज्ञानिक साहित्य का लेखन करनेवाले लेखकों द्वारा कई बार वैज्ञानिक साहित्य में सरलता तथा रोचकता लाने के लिए लोककथाओं, पौराणिक आख्यानों, इतिहास, काव्य आदि का प्रयोग किया जाता है। अनुवादकों को ऐसे साहित्य का अनुवाद करते समय यह समस्या खडी हो जाती है कि वैज्ञानिक साहित्य में प्रयुक्त विज्ञानेतर सामग्री का अनुवाद कैसे करें। जैसे- अंग्रेजी रचना में अधिकांशत: लेखकों द्वारा बाह्य वस्तु की ऊँचाई का वर्णन करने के लिए 'एल्प्स' पर्वत का प्रयोग किया जाता है। परंतु यदि ऐसी रचना का अनुवाद किसी भारतीय भाषा में हो रहा है तो इसे अनुदित करते समय यह ध्यान देने की आवश्यकता है कि 'एल्प्स' पर्वत भारतीय परिवेश से जुडा नहीं है। यहाँ

ISSN–2278-5655

AMIERJ Aarhat Multidisciplinary International Education Research Journal

Volume–XIV, Special Issues – III (a) Nov – Dec, 2025

OPEN ACCESS Original Research Article

भारतीय पाठक 'हिमालय' पर्वत को इस संदर्भ में समझ सकते हैं। ऐसे प्रसंग में अनुवादक को अत्यंत सावधानी से अनुवाद का कार्य करना चाहिए। कई सारे पदार्थ, वस्तुएँ, सांस्कृतिक प्रतीक चिन्ह प्रादेशिक सांस्कृतिक, सामाजिक परंपरा से संबंधित होते हैं। अतः जहाँ-जहाँ लोकप्रिय विज्ञान साहित्य में ऐसे विज्ञानेतर घटना-प्रसंग आते हैं, तो वहाँ समानांतर भारतीय प्रसंगों का प्रयोग अनुवाद कार्य करते समय करना श्रेयस्कर होता है। कहीं-कहीं अनुवादक पाद-टिप्पणियों का भी आश्रय ले सकता है।

निष्कर्ष :

वैज्ञानिक साहित्य के अनुवाद में अनुवादक द्वारा स्रोत भाषा को विज्ञान के संदर्भ में ठीक से अवगत न करने की समस्या, विषय की मूलभूत जानकारी का अभाव, पारिभाषिक शब्दावली का उचित चयन न करने की समस्या, वस्तुओं एवं पदार्थों के सामान्य हिंदी नाम तथा संक्षिप्तियों और प्रतीक चिन्हों के संदर्भ में कई समस्याओं का सामना करना पडता है। भले ही वैज्ञानिक साहित्य का अनुवाद करना एक चुनौतीपूर्ण कार्य है, लेकिन सही दृष्टिकोण और कौशल से इसे सफलतापूर्वक किया जा सकता है। अनुवादक को वैज्ञानिक साहित्य के मूल भाव और अर्थ को समझने और उसे दूसरी भाषा में प्रस्तुत करने का प्रयास करना चाहिए।

संदर्भ सूची :

1. *वैज्ञानिक साहित्य के अनुवाद की समस्याएँ - संपादक डॉ. भोलानाथ तिवारी, पृष्ठ 47*
2. *वैज्ञानिक साहित्य के अनुवाद की समस्याएँ - संपादक डॉ. भोलानाथ तिवारी, पृष्ठ 45*

Cite This Article:

डॉ. गव्हाणे बा. (2025). *वैज्ञानिक साहित्य के अनुवाद की समस्याएँ.* **In Aarhat Multidisciplinary International Education Research Journal**: Vol. XIV (Number VI, pp. 188–191).

ISSN–2278-5655

AMIERJ Aarhat Multidisciplinary International Education Research Journal

Volume–XIV, Special Issues – III (a) Nov – Dec, 2025

OPEN ACCESS Original Research Article

कश्मीरी से हिंदी में 'ललद्यद' के अनुवाद के माध्यम से मीरा कांत की अनुवाद दृष्टि

** प्रा. मनोहर भाऊसाहेब आव्हाड,*

सहायक प्राध्यापक, हिंदी विभाग, मएसो आबासाहेब गरवारे महाविद्यालय (स्वायत्त), कर्वे रोड, पुणे- 411004.

सारांश :

कश्मीरी संत कवयित्री 'ललद्यद' (लल्लेश्वरी/ललद्यद) के वाखों का हिंदी में अनुवाद मीरा कांत की रचनात्मक अनुवादकीय दृष्टि को समझने का महत्त्वपूर्ण आधार प्रदान करता है। ललद्यद कश्मीर की ऐसी संत कवयित्री हैं, जिनके वाख आध्यात्मिक साधना, लोक अनुभव और सामाजिक प्रतिरोध-तीनों को एक साथ व्यक्त करते हैं। कश्मीरी से हिंदी में 'ललद्यद' का अनुवाद करते हुए मीरा कांत न केवल एक क्षेत्रीय संत कवयित्री को व्यापक हिंदी पाठक समाज तक पहुँचाती हैं, बल्कि स्त्री अनुभव तथा सांस्कृतिक संवाद को भी नई दिशा देती हैं।

Copyright © 2025 The Author(s): This is an open-access article distributed under the terms of the Creative Commons Attribution 4.0 International License (CC BY-NC 4.0) which permits unrestricted use, distribution, and reproduction in any medium for non-commercial use provided the original author and source are credited.

ललद्यद की वैचारिक और काव्यात्मक पृष्ठभूमि :

'ललद्यद' कश्मीर की एक स्थानीय नाम हैं, वह धरती जिसे कवियों और इतिहासकारों ने 'धरती पर स्वर्ग' कहा है। 'ललद्यद' 14 वीं शताब्दी की संत-कवयित्री थीं, जो कश्मीरी शैव मत से संबंधित थीं। उनके वाख या छंद शक्तिशाली, मार्मिक और दार्शनिक होने के कारण प्रशंसित हैं। ये वाख कश्मीरी साहित्य का एक महत्वपूर्ण हिस्सा हैं, जो पीढ़ी-दर-पीढ़ी मौखिक रूप से आगे बढ़कर ज्ञान प्रदान करते हैं और परमसत्ता से संबंध स्थापित करते हैं। उनके वाख सिर्फ कविताएँ नहीं थे, उन्होंने स्वयं कश्मीरी भाषा को आकार दिया और उन्हें हमेशा के लिए लोगों के दिलों में जीवित रखा। कश्मीर में ललद्यद के वाख ही कविता पर राज करते हैं। 'ललद्यद' (1320 -1392) को कई अन्य नामों से भी जाना जाता था, जैसे- ललद्यद, लल्ला आरिफा, लालीश्री, लल्लेश्वरी और लल्ला योगेश्वरी।

'ललद्यद' के वाख कश्मीरी भाषा की प्राचीन और लोकप्रिय काव्य-परंपरा का महत्वपूर्ण चरण हैं। उनके वाखों में कश्मीर शैव दर्शन, योग-साधना, भक्ति-भाव, धार्मिक सहिष्णुता, जाति-भेद का प्रतिरोध और स्त्री-स्वतंत्रता जैसे मुद्दों पर गहन चिंतन मिलता है। ये वाख मुख्यतः बोलचाल की कश्मीरी में रचे गए हैं, जिनमें कहावत जैसी संक्षिप्तता, लोक-मुहावरों की सघनता और आध्यात्मिक अनुभूति की तीव्रता एक साथ विद्यमान है, जो अनुवाद के स्तर पर विशेष चुनौती भी है।

मीरा कांत: रचनाकार से अनुवादक तक :

मीरा कांत समकालीन हिंदी की महत्त्वपूर्ण कथाकार और नाटककार हैं, जिनके लेखन में स्त्री-अस्तित्व, देह-राजनीति,

ISSN–2278-5655

AMIERJ Aarhat Multidisciplinary International Education Research Journal

Volume–XIV, Special Issues – III (a) Nov – Dec, 2025

OPEN ACCESS Original Research Article

घरेलू हिंसा और न्याय जैसे सवाल प्रमुखता से उपस्थित रहते हैं। उनके नाटकों और कथा-साहित्य पर हुए अध्ययनों में यह स्पष्ट हुआ है कि वे स्त्री-उत्थान और स्वतंत्रता को केंद्र में रखकर रचना-कर्म करती हैं। यही संवेदनशील स्त्रीवादी दृष्टि उनके अनुवाद-कर्म में भी दिखाई देती है, जब वे कश्मीरी संत-कवयित्री 'ललद्यद' को हिंदी में प्रस्तुत करती हैं। इस प्रक्रिया में वे केवल शब्द नहीं, बल्कि एक स्त्री-संत की ऐतिहासिक आवाज़ और अनुभव को भी हिंदी पाठकों तक पहुँचाती हैं।

भाषा-स्तर पर अनुवाद-दृष्टि :

कश्मीरी और हिंदी दोनों भारतीय भाषाएँ होते हुए भी अपने ध्वनि-संरचनाओं, मुहावरों और लय में काफी भिन्न हैं। ललद्यद के वाखों में प्रयुक्त लोक-शब्दावली, प्रांतीय उच्चारण, भक्ति और ध्यान से जुड़े सूक्ष्म बिंबों को हिंदी में ढालते समय मीरा कांत मुख्यतः ऐसी भाषा चुनती हैं जो एक ओर सरल और मानक हिंदी के निकट हो, तो दूसरी ओर लोक-स्वाद और मौलिकता को भी बनाए रखे। उनकी अनुवाद-दृष्टि यहाँ 'शब्द-निष्ठा' की अपेक्षा 'अर्थ-निष्ठा' पर अधिक केंद्रित दिखती है-

"रस्सी कच्चे धागे की, खींच रही मैं नाव।
जाने कब सुन मेरी पुकार, करें देव भवसागर पार।
पानी टपके कच्चे सकोरे, व्यर्थ प्रयास हो रहे मेरे।
जी में उठती रह-रह हूक, घर जाने की चाह है घेरे।।"[i]

मीरा कांत वाखों का शब्दशः अनुवाद करने के बजाय उनके भाव, टोन और आध्यात्मिक अर्थ को सुरक्षित रखते हुए हिंदी में पुनर्सृजन करती हैं।

सांस्कृतिक अनुवाद और स्थानीयता का संरक्षण :

'ललद्यद' के वाख कश्मीरी समाज की लोक-संस्कृति, रीतियों, धार्मिक प्रतीकों, भूगोल और इतिहास से गहरे जुड़े हैं। अनुवाद के स्तर पर यदि इन सभी सांस्कृतिक संकेतों को पूरी तरह 'घरेलू' बना दिया जाए, तो मूल कश्मीरी पहचान कमजोर पड़ सकती है; वहीं यदि उन्हें बिल्कुल अनछुआ छोड़ दिया जाए तो हिंदी पाठक के लिए अर्थ-ग्रहण कठिन हो सकता है। मीरा कांत की अनुवाद-दृष्टि इन दोनों अतियों के बीच एक संतुलित मार्ग अपनाती है। वे कई स्थानीय संज्ञाएँ, स्थान-नाम, सांस्कृतिक प्रतीक और धार्मिक पदों को यथावत रखते हुए, प्रासंगिक स्थानों पर व्याख्यात्मक या संकेतात्मक रूप में हिंदी में अर्थ-संकेत जोड़ती हैं। इससे उनका अनुवाद एक प्रकार का सांस्कृतिक सेतु बन जाता है, जो हिंदी पाठक को नए सांस्कृतिक संसार से परिचित कराते हुए भी उसे पूरी तरह अपरिचित नहीं रहने देता।

"आई सीधी राह से, गई न सीधी राह।
सुषुम-सेतु पर खड़ी थी, बीत गया दिन आह!
जेब टटोली, कौड़ी न पाई।
माझी को दूँ, क्या उतराई?"[ii]

आध्यात्मिक अनुभव की अभिव्यक्ति :

'ललद्यद' का काव्य मूलतः आध्यात्मिक अनुभव, साधना, आत्म-अन्वेषण और दैवी-संस्पर्श की यात्रा है। इन वाखों में शिव-शक्ति की एकता, आत्मा-परमात्मा का संयोग, देह-त्याग, वैराग्य, नदी-पर्वत-अग्नि-जल जैसे प्राकृतिक प्रतीकों के माध्यम से आध्यात्मिक सत्य को व्यक्त किया गया है। जैसे-

ISSN–2278-5655

AMIERJ Aarhat Multidisciplinary International Education Research Journal

Volume–XIV, Special Issues – III (a) Nov – Dec, 2025

OPEN ACCESS Original Research Article

"थल-थल में बसता है शिव ही, भेद न कर क्या हिंदू-मुसलमां।
ज्ञानी है तो स्वयं को जान, वही है साहिब से पहचान।।"[iii]

मीरा कांत अनुवाद करते समय इन प्रतीकों और रूपकों की संरचना को यथासंभव सुरक्षित रखती हैं, ताकि वाखों की रहस्यमयी और ध्यानात्मक अनुभूति हिंदी में भी बनी रहे। वे अत्यधिक व्याख्या देकर वाखों की संक्षिप्तता और रहस्य को भंग नहीं करतीं; इसके बजाय, संकेतों और विरामों की शैली को हिंदी में भी बनाए रखती हैं, जिससे पाठक स्वयं अर्थ-अन्वेषण की प्रक्रिया में शामिल हो सके।

स्त्री-अनुभव और स्त्री-वादी दृष्टि :

'ललद्यद' का जीवन-वृत्तांत बताता है कि वे विवाह, घरेलू जीवन, दमन और सामाजिक रूढ़ियों से संघर्ष करती हुई अंततः आध्यात्मिक पथ पर अग्रसर होती हैं और सामाजिक बंधनों को तोड़कर एक स्वतंत्र साधक-स्त्री के रूप में उभरती हैं। उनकी नग्न देह का प्रतीक दरअसल देह-बंधन से मुक्ति और सामाजिक लज्जा-संस्कार के प्रतिरोध का रूप माना गया है, जो स्त्री-स्वतंत्रता के आधुनिक विमर्श से भी जुड़ता है। मीरा कांत स्वयं अपने कथा और नाटकों में स्त्री-उत्पीड़न, न्याय और स्वतंत्रता के प्रश्नों को प्रमुखता देती हैं, इसलिए 'ललद्यद' के अनुवाद को भी एक फेमिनिस्ट रीडिंग की रूपरेखा में देखा जा सकता है। वे उन वाखों को विशेष संवेदनशीलता से हिंदी में रूपांतरित करती हैं, जिनमें देह-अनुभव, घरेलू संघर्ष, समाज-विरोध और आध्यात्मिक स्वाधीनता का स्वर मुखर है, जिससे 'ललद्यद' केवल 'संत-कवयित्री' नहीं, बल्कि एक प्रतिरोधरत स्त्री-व्यक्ति के रूप में पाठकों के सामने आती हैं।

रूप, लय और काव्यत्व का संतुलन :

कश्मीरी वाख सामान्यतः अत्यंत संक्षिप्त, चार पंक्तियों जैसी संरचना वाले, सूक्ति-स्वरूप और अर्थ-बहुल होते हैं। यदि इन्हें गद्य या लंबे स्पष्टीकरण में बदल दिया जाए तो काव्यत्व और घनत्व दोनों कमजोर हो सकते हैं; अतः अनुवाद के स्तर पर रूप और लय का संरक्षण अत्यंत आवश्यक है। मीरा कांत वाखों को हिंदी में प्रस्तुत करते समय संक्षिप्तता, लय और सूक्ति-स्वरूपता को बनाए रखने का प्रयास करती हैं; वे अनावश्यक विस्तार से बचती हैं और ऐसे वाक्य-विन्यास का चयन करती हैं जो काव्यात्मक भी हो और संप्रेषणीय भी। इस प्रकार उनकी अनुवाद-दृष्टि काव्यत्व, लय और अर्थ तीनों के बीच संतुलन की साधना पर आधारित दिखाई देती है।

"खो-खाकर कुछ पाएगा नहीं,
न खाकर बनेगा अहंकारी।
सम खा तभी होगा समभावी,
खुलेगी साँकल बंद द्वार की।"[iv]

सीमाएँ और संभावनाएँ :

किसी भी अनुवाद की तरह कश्मीरी से हिंदी में 'ललद्यद' का रूपांतरण भी कुछ अंतर्निहित सीमाओं से मुक्त नहीं है; कश्मीरी भाषा की विशिष्ट ध्वनियाँ, लोक-हास्य, सूक्ष्म व्यंजनाएँ और कुछ भाव-छायाएँ हिंदी में पूर्णतः पुनर्सृजित नहीं हो पातीं। फिर भी मीरा कांत का प्रयास यही है कि हिंदी पाठक को 'ललद्यद' की मूल आध्यात्मिक संवेदना, स्त्री-अनुभव की तीव्रता और सामाजिक-सांस्कृतिक संदर्भों का समुचित बोध हो सके।

इस दृष्टि से 'ललद्यद' का हिंदी अनुवाद तुलनात्मक साहित्य, स्त्री-अध्ययन और भारतीय आध्यात्मिक साहित्य के शोधार्थियों के लिए एक उपयोगी पाठ के रूप में सामने आता है, जो क्षेत्रीय से सार्वभौमिक की यात्रा का नमूना प्रस्तुत करता है।

ISSN–2278-5655

AMIERJ Aarhat Multidisciplinary International Education Research Journal

Volume–XIV, Special Issues – III (a) Nov – Dec, 2025

OPEN ACCESS Original Research Article

"कश्मीरी से हिंदी में 'ललद्यद' के अनुवाद के माध्यम से मीरा कांत की अनुवाद-दृष्टि" विषय पर किया गया यह अध्ययन यह स्पष्ट करता है कि मीरा कांत के लिए अनुवाद केवल भाषिक रूपांतरण नहीं, बल्कि सांस्कृतिक, स्त्रीवादी और आध्यात्मिक संवाद का माध्यम है। वे अर्थ-निष्ठ, सांस्कृतिक रूप से संवेदनशील और स्त्री-अनुभव के प्रति उत्तरदायी दृष्टि के साथ 'ललद्यद' के वाखों को हिंदी में पुनर्सृजित करती हैं, जिससे कश्मीरी संत-कवयित्री की आवाज़ हिंदी पाठक-समुदाय के बीच जीवंत रूप में उपस्थित हो पाती है। इस प्रकार मीरा कांत का यह अनुवाद-कर्म भारतीय भाषाओं के अंतर्सांस्कृतिक सेतु-निर्माण, स्त्री-विमर्श और आध्यात्मिक साहित्य के लोकतंत्रीकरण की दिशा में एक सार्थक योगदान माना जा सकता है।

Cite This Article:

प्रा. आव्हाड म. भा. (2025). *कश्मीरी से हिंदी में 'ललद्यद' के अनुवाद के माध्यम से मीरा कांत की अनुवाद दृष्टि* **In Aarhat Multidisciplinary International Education Research Journal**: Vol. XIV (Number VI, pp. 192–195).

संदर्भ सूची:

[i] मीरा कांत, "Lalleshwari." NCERT/ शैक्षिक सामग्री: "कश्मीरी भाषा की लोकप्रिय संत कवयित्री ललद्यद…" पृ. 78

[ii] वहीं, पृ.78

[iii] वहीं, पृ. 79

[iv] वहीं, पृ. 78

5 "Meera Kant: Home." meerakant.com.

6 पूजा रानी, "घरेलू हिंसा का प्रश्न और मीरा कांत का नाटक 'अंत हाज़िर हो.'", अपनी माटी, फरवरी 2018

7 अशोक कुमार मीणा, "मीरा कांत के नाटक और स्त्री प्रश्न." IJRSS, 2023.

8 अनुषा सिंघल व डॉ. वेद कला यादव, "डॉ. मीरा कांत के कथा साहित्य में नारी स्वतंत्रता और न्याय के विचार.", IJARSCT, जनवरी 2024

9 Jaishree Kak, "Lal Ded – The Spiritual Quester who Defined the Language and Life in Kashmir.", India Foundation, Septembar 2021

10 Mir Saeid, "Lal Ded: The Mystic of Kashmir." Kashmirica, Books & Literature, Kashmir Dairies, January 2021

ISSN–2278-5655

AMIERJ Aarhat Multidisciplinary International Education Research Journal

Volume–XIV, Special Issues – III (a) Nov – Dec, 2025

OPEN ACCESS Original Research Article

यांत्रिक अनुवाद : स्वरूप, समस्याएँ और समाधान

* डॉ. संदीप जोतिराम किर्दत,

*सहयोगी प्राध्यापक, हिंदी विभाग, छत्रपति शिवाजी कॉलेज, सातारा.

सारांश :

यांत्रिक अनुवाद का दूसरा नाम मशीनी अनुवाद है। आज केवल मानव द्वारा अनुवाद कार्य करने से विभिन्न क्षेत्रों से अपेक्षित अनुवाद की पूर्ति संभव नहीं है। अत: वर्तमान काल में लगभग हर क्षेत्र में जिस तरह यंत्र की सहायता ली जाती है। उसी तरह अनुवाद क्षेत्र में भी यंत्र की सहायता ली जाती है। भारत में बड़े पैमाने पर बीसवीं सदी के अंत में यांत्रिक अनुवाद शुरू हुआ है। यांत्रिक अनुवाद में संगणक विज्ञान और भाषा विज्ञान दोनों के समन्वित प्रयास से कार्य चलता है। यांत्रिक अनुवाद के कई लाभ हैं; तो पुनः सृजन का अभाव, शब्द चयन की समस्या, सीमित विषय क्षेत्र, सफल साहित्यिक अनुवाद करने में असमर्थता, विज्ञापन अनुवाद में दिक्कते, विधि क्षेत्र का अनुवाद करने की सीमा, उच्चारण तथा व्याकरण ज्ञान की समस्या, कहावते-मुहावरों और लोकोक्तियों के अनुवाद की समस्या, निश्चित अनुवाद यंत्र प्रणाली प्रयोग संबंधी संभ्रम तथा पुन:रीक्षण का अभाव आदि सीमाएँ भी हैं। यांत्रिक अनुवाद की सीमाओं पर ध्यान देकर यंत्र अनुवाद के साधनों में विषय विशेषता, हायब्रीड अनुवाद, पुन:रीक्षण श्रेणी सुविधा, अनुवाद करने में असमर्थ पंक्तियों को अधोरेखित करनेवाली तकनीकी, मूल से तुलना करने का और अनुवाद के प्रकारों के अनुसार अनुवाद करने का प्रावधान, सफल मानव अनुवादक के साथ विचार–विमर्श करके ही सॉफ्टवेयर के स्मृतिपटल में शब्दों एवं कोशों का संचयन करना तथा स्वयंचलित रूप से यंत्र द्वारा मानव अनुवादक से संपर्क करके सटिक अनुवाद करना आदि यांत्रिक अनुवाद की सीमाओं के समाधान हैं।

कुंजी-शब्द : *अनुवाद,यांत्रिक, समस्याएँ और समाधान।*

Copyright © 2025 The Author(s): This is an open-access article distributed under the terms of the Creative Commons Attribution 4.0 International License (CC BY-NC 4.0) which permits unrestricted use, distribution, and reproduction in any medium for non-commercial use provided the original author and source are credited.

प्रस्तावना :

मनुष्य को एक दूसरे के संपर्क में रहने के लिए भाषा की आवश्यकता होती है। दुनिया में भाषाओं की तादाद अधिक है। परिणामतः एक भाषा की सूचनाएँ, विचार एवं भाव दूसरी भाषा के मानव समूह तक पहुँचाने में दिक्कते आती हैं। संपर्क के लिए सूचनाओं का आदान-प्रदान आवश्यक होता है। ऐसे समय अनुवाद ने एक कारगर साधन के रूप में अपनी उपयोगिता सिद्ध की है। अनुवाद एक ऐसा साधन है जो वैश्विक स्तर पर मनुष्य एवं संस्थाओं को जोडने में उपयोगी है। अनुवाद मौखिक एवं लिखित रूप में किया जाता है। अनुवाद कार्य

ISSN–2278-5655

AMIERJ Aarhat Multidisciplinary International Education Research Journal

Volume–XIV, Special Issues – III (a) Nov – Dec, 2025

OPEN ACCESS Original Research Article

मनुष्य अपनी सृजनशीलता के साथ करता है तथा यंत्र की सहायता से भी किया जाता है। मनुष्य की अपेक्षा मशीनी अनुवाद में गतिशीलता नजर आती है, किंतु सटिकता एवं सार्थकता की कमी दृष्टिगोचर होती है। मात्र यह नकारा नहीं जाता कि एक भाषा की सामग्री का आदान-प्रदान कार्य प्रभावात्मक रूप से होने के लिए एक तो मानव मस्तिष्कवाले अनुवादक या यंत्र अनुवादक की आवश्यकता होती है। दोनों की अपनी उपयोगिता और सीमाएँ हैं। प्रस्तुत प्रपत्र में यांत्रिक अनुवाद का स्वरूप, समस्याएँ और समाधान का विवेचन-विश्लेषण किया है –

यांत्रिक अनुवाद : अर्थ एवं स्वरूप

आज के भूमंडलीकरण के युग में केवल मानव द्वारा अनुवाद कार्य करने से अनुवाद की माँग की पूर्ति संभव नहीं है। आज हर क्षेत्र में जिस तरह यंत्र की सहायता ली जाती है। उसी तरह अनुवाद क्षेत्र में भी यंत्र की सहायता ली जाती है। यांत्रिकी अनुवाद को परिभाषित करते समय डॉ. नारायण केसरकर लिखते हैं– " मशीनी अनुवाद मूलतः स्रोत भाषा से लक्ष्य भाषा में संगणक की सहायता से अनुवाद करने की एक प्रक्रिया है। यंत्र के द्वारा अनुवाद कार्य में शीघ्रता,स्पष्टता और सुनिश्चितता आ सकती है। परंतु उसकी गुणात्मक शुद्धता तथा उपयुक्तता पर प्रश्नचिह्न लगाया जाता है।"[1] इससे विदित होता है कि जब अनुवाद कार्य यंत्र की सहायता से किया जाता है तो उसे यांत्रिक अनुवाद या मशीनी अनुवाद कहा जाता है।

विश्व में यांत्रिकी अनुवाद का आरंभ 1940 के आसपास याने द्वितीय विश्वयुद्ध के दौरान माना जाता है -" 1940 के दशक में विश्व युद्ध के दौरान विशेष रूप से 1945 के लगभग इसकी शुरुआत हुई। सेना संबंधी सूचनाओं के अनुवाद के लिए मशीन का प्रयोग सर्वप्रथम इसी समय हुआ।"[2] विभिन्न देश के सैनिकों के बीच संपर्क हेतु तथा सूचनाओं और आदेशों को सटिक रूप से पहुँचाने के लिए विज्ञान के साधनों की सहायता ली गई। इस समय बेतार और रेडियो द्वारा संदेश पहुँचाने में यंत्र अनुवाद ने अपनी उपयोगिता सिद्ध की। संगणक की सहायता से अनुवाद कार्य के इस आरंभबिंदू से आज तक के यांत्रिक अनुवाद पर नजर डाले तो स्पष्ट होता है कि यांत्रिक अनुवाद में विज्ञान के विकास साथ-साथ बदलाव हुआ है। भारत देश में संगणकीय प्रणाली के आगमन के बाद भी भारतीय भाषाओं में अनुवाद कार्य संपन्न होने लिए काफी वर्ष लगे। इस संदर्भ में डॉ. रीतारानी पालीवाल का कथन दृष्टव्य है- "कम्प्युटर के क्षेत्र में भारतीय भाषाओं का उपयोग 1980 के बाद ही शुरू हुआ।"[3] स्पष्ट है कि भारत में बड़े पैमाने पर बीसवीं सदी के अंत में यांत्रिक अनुवाद शुरू हुआ है। यांत्रिक अनुवाद में संगणक विज्ञान और भाषा विज्ञान दोनों के समन्वित प्रयास से कार्य चलता है। मशीनी अनुवाद का आधार विज्ञान एवं तकनीकी है। विज्ञान और प्रौद्योगिकी ने अनुवाद के लिए औजार (Tools) भी खोजे हैं। यांत्रिक अनुवाद का दूसरा नाम मशीनी अनुवाद' है। अर्थात यांत्रिक अनुवाद में व्यक्ति की अपेक्षा यंत्र से ही अनुवाद कार्य पूरा किया जाता है।

यांत्रिक अनुवाद : समस्याएँ / सीमाएँ

वर्तमान काल में यांत्रिक अनुवाद की आवश्यकता और प्रयोग अधिक महमूस हो रहा है। मानव अनुवाद की तुलना में कम समय और आर्थिक दृष्टि से भी लाभदायक यांत्रिक अनुवाद होने के कारण यांत्रिक अनुवाद का प्रयोग बढ़ा है। किंतु यांत्रिक

ISSN–2278-5655

AMIERJ Aarhat Multidisciplinary International Education Research Journal

Volume–XIV, Special Issues – III (a) Nov – Dec, 2025

OPEN ACCESS Original Research Article

अनुवाद के संदर्भ में कहना सही होगा कि मानव अनुवाद की तुलना में यांत्रिक अनुवाद की अपनी कई सीमाएँ एवं समस्याएँ हैं -

पुनः सृजन का अभाव :

अनुवाद को स्वतंत्र विधा माने या नहीं इस बारे में विवाद होने के बावजूद भी इस संदर्भ में दो राय नहीं है कि यांत्रिक अनुवाद में पुन:सृजन संभव नहीं होता। पुनः सृजन से तात्पर्य है - स्रोत भाषा के विश्लेषित एवं अंतरित पाठ को लक्ष्य भाषा की प्रकृति के अनुसार पुनर्गठित करना। यह कार्य जिस तरह मानव अनुवादक कर सकता है उसी तरह यंत्र अनुवादक नहीं कर सकता। इस संदर्भ में डॉ. रीतारानी पालीवाल का कथन संदर्भ योग्य है-" कम्प्यूटर के पास स्मृति तो होती है किंतु मानवीय मस्तिष्क की विचार की प्रक्रिया को वह नहीं पा सकता। अतः अनुवाद में निहित सर्जनात्मकता अथवा पुनःसर्जन की प्रक्रिया में कोई मशीन मानवीय मस्तिष्क का स्थान नहीं ले सकती।"[4] इससे स्पष्ट होता है कि स्रोत भाषा के मूल रचनाकार के शब्दों का प्रयोजन, अर्थ, शब्द, वक्रोक्ति, को सही पकडकर पुनः प्रस्तुत करने में यांत्रिक अनुवाद सफल नहीं होता। सांस्कृतिक, धार्मिक, आर्थिक, सामाजिक तथा राजकीय संदर्भों को केंद्र में रखकर अनुवाद कार्य संपन्न नहीं होता। मशीनी अनुवाद शब्दानुवाद केंद्रित दृष्टिगोचर होता है। मानव अनुवादक का अनुवाद कार्य एक तरह से पुनः सृजन कार्य होता है और यांत्रिक अनुवाद में इसका अभाव नजर आता है।

शब्द चयन की समस्या :

किसी भी स्रोत या लक्ष्य भाषा में प्रयुक्त शब्द अनेक अर्थ के वाहक नजर आते हैं। शब्दों के एक से अधिक अर्थों में से सटिक अर्थ चुनकर अनुवाद करना मशीनी अनुवाद में संभव नहीं होता। एक अर्थ में यह यंत्र अनुवाद की एक सीमा है। उदा. अंग्रेजी Home के लिए हिंदी पर्यायी शब्द- मकान, घर, झोपडी तथा हवेली में से कौन-सा शब्द सटिक है और लक्ष्य भाषा में अनुवाद करते समय कौन-सा शब्द चुनना है, यह अनुवाद करनेवाला यंत्र तय नहीं कर सकता। शब्द चयन की समस्या के संदर्भ में हरीश कुमार सेठी का कथन विचारणीय है – "इस किस्म के अनुनाद में लक्ष्य भाषा के पर्याय शब्दों को स्रोत भाषा के शब्दों के क्रमानुसार तो रखा जाता है। किंतु शब्दों के बीच, अर्थों के बीच सह-संबंध की ओर ध्यान नहीं जाता है। इसमें वाक्य रचना पर ध्यान नहीं दिया जाता और न ही वाक्यों का रुपपरक विश्लेषण आदि किया जाता है।"[5] अर्थात मानव अनुवादक जिस तरह स्रोत भाषा में उल्लेखित संदर्भों एवं शब्दशक्ति के अनुसार शब्दों का विश्लेषण कर उसके विभिन्न पर्यायी शब्दों में से सटिक शब्द का चयन कर सकता है वैसे यांत्रिक अनुवाद का यंत्र नहीं कर सकता।

सीमित विषय क्षेत्र :

ऐसा माना जाता हैं कि यांत्रिक अनुवाद द्वारा हर क्षेत्र की स्रोत सामग्री का अनुवाद संभव है। मात्र कई सॉप्टवेयर मर्यादित विषय-क्षेत्र की सामग्री का अनुवाद ही सफल अनुवाद कर सकते हैं। हर क्षेत्र की स्रोत सामग्री का शब्दानुवाद नहीं किया जा सकता तथा प्राकृतिक लक्ष्य भाषा के समतुल्य अनुवाद नहीं किया जाता। इस संदर्भ में हरीश कुमार सेठी की धारणा है- " वास्तव में प्राकृतिक भाषा के लिए सार्थक कम्प्यूटर अनुवाद प्रणाली विकसित न कर पाना एक प्रमुख सीमा है।"[6] इस संदर्भ में 'टॉम मेटो' (TAUM METEO) प्रणाली का उदाहरण दृष्टव्य है। यह प्रणाली केवल मौसम संबंधी रिपोर्टों का अनुवाद करती है। दूसरी 'जॉर्ज टाउन' प्रणाली केवल

ISSN–2278-5655

AMIERJ Aarhat Multidisciplinary International Education Research Journal

Volume–XIV, Special Issues – III (a) Nov – Dec, 2025

OPEN ACCESS Original Research Article

नाभिकीय भौतिकी का, तो भारत में विकसित 'मंत्र राजभाषा' प्रणाली केवल प्रशासनिक, वित्तीय, कृषि एवं लघु उद्योग क्षेत्र, सूचना एवं प्रौद्योगिकी तथा स्वास्थ्य सुरक्षा से संबंधित विषय का ही अनुवाद कार्य करती है। 'आंग्लभारती' यंत्र अनुवाद सॉफ्टवेयर सिर्फ संसदीय कामकाज संबंधित कागजात, अधिसूचनाएँ, परिपत्रों, वार्षिक कार्य योजना, वार्षिक रिपोर्टों, पंचवार्षिक योजना तथा अनुदान माँग आदि सामग्री के कम्प्यूटर सहायक अनुवाद पर आधारित संगणक अनुवाद प्रणाली है। संक्षेप में यंत्र अनुवाद प्रणाली एक विशेष विषय क्षेत्र तक सफल एवं प्रभावात्मक कार्य करती है।

सफल साहित्यिक अनुवाद करने में असमर्थ :

साहित्य के भाव और कला यह दो मुख्य पक्ष माने जाते हैं। यांत्रिक अनुवाद के जरिए साहित्य के इन दो पक्षों को सुरक्षित रखकर अनुवाद करना कठिन होता है। यंत्र भाव एवं शैली तथा कला पक्ष की अपेक्षा शब्द पर जोर देता है। साथ ही साहित्य की भाषा में अलंकार, रस, छंद, कल्पना, प्रतीक तथा बिंब आदि साहित्य सौंदर्य के अंग होते हैं। मानव अनुवादक शब्द ,पद , वाक्य के आगे-पिछे के वाक्य, अनुच्छेद के पहले और बाद के संदर्भ इन सभी की श्रृंखला जोड़कर साहित्यिक अनुवाद करता है। यांत्रिक अनुवाद में यह संभव नहीं होता। इस संदर्भ में डॉ. अर्जुन चव्हाण जी का कथन दृष्टव्य है – "साहित्यिक सामग्री का अनुवाद देना अनुवाद सॉफ्टवेयर से अर्थात संगणक जैसे मशीन से संभव नहीं लगता।"[7] इससे विदित होता है कि यंत्र साहित्यकार के भाव, प्रयोजन, शैली तथा सहित्य सौंदर्य के अंग को समझकर आदर्श अनुवाद नहीं कर सकता।

विज्ञापन अनुवाद में दिक्कत :

वर्तमान काल विज्ञापन और संगणक का काल है। भूमंडलीकरण के बाद वाणिज्य क्षेत्र की कंपनियाँ विश्वभर में व्यापार करती हुई नजर आती है। इन कंपनियों के व्यापार का एक आधार विज्ञापन है। किंतु अपनी वस्तु की जानकारी प्रभावात्मक रूप से ग्राहकों तक पहुँचाने के लिए संबंधित देश की राष्ट्रीय एवं राज्यभाषा में मूल विज्ञापन का अनुवाद अपेक्षित होता है। विज्ञापन में सृजनात्मकता के साथ-साथ प्रभावक्षमता बढानेवाली पद्यमयता, गेयप्रधानता तथा संगीत पक्ष का प्रभाव नजर आता है। अनुवाद क्षेत्र में जिस तरह काव्यानुवाद एक कठिन कार्य माना जाता है उस तरह विज्ञापन अनुवाद भी चुन्नौतिभरा कार्य माना जाता है। एक अर्थ में विज्ञापन अनुवाद सृजनात्मक अनुवाद ही है। उसके लिए यंत्र की मर्यादा है। डॉ. हरीश कुमार सेठी के मतानुसार "विज्ञापनों का आकर्षक एवं सहज अनुवाद साहित्य सृजन की कोटि में आता है, जिसमें कथ्य की सृजनात्मकता, भाषा क सौंदर्य पक्ष और अभिव्यक्ति की प्रभावपूर्ण शैली प्रमुख होते हैं। किंतु संगणक अनुवाद के संदर्भ में यह तथ्य प्रमाणित है कि ऐसा कर पाने में सफल नहीं हो पाता।"[8] विज्ञापन लेखन में कम शब्दों में प्रभावात्मक अर्थ पहुँचानेवाले शब्दों का प्रयोग होता हैं। इन शब्दों का शब्दानुवाद करके कार्य नहीं चलता। अनुवादक को स्रोत भाषा के विज्ञापन लेखक की मनोभूमिका एवं शैली समझकर लक्ष्य भाषा के ग्राहक वर्ग की मानसिकता के अनुकुल प्रभावात्मक रूप में अनुवाद करना पड़ता है। अतः विज्ञापन का अनुवाद करने में यांत्रिक अनुवाद की अपनी सीमा है।

ISSN–2278-5655

AMIERJ Aarhat Multidisciplinary International Education Research Journal

Volume–XIV, Special Issues – III (a) Nov – Dec, 2025

OPEN ACCESS Original Research Article

विधि क्षेत्र का अनुवाद करने की सीमा :

विधि साहित्य में विशेष शब्दों का प्रयोग अधिक मात्रा में नजर आता है। इस क्षेत्र के शब्द अपने प्राकृतिक सुनिश्चित अर्थ के साथ यथातथ्य और सूक्ष्म प्रभेदवाले होते हैं। विधि साहित्य की भाषा आम जन-भाषा नहीं होती। इस क्षेत्र की भाषा अस्वाभाविक भी होती है। विधि क्षेत्र की भाषा संबंधी का कथन "शब्दों का प्रयोग, पद-विन्यास, वाक्य विन्याय सभी कुछ विशिष्ट, विचित्र और कभी-कभी अटपटा भी लगता है।"[9] विधि साहित्य में पारिभाषिक शब्दों की अधिकता, सारगर्भित और लंबे रुढ, जटिल वाक्य भी दृष्टिगोचर होते हैं। इसमें एक एक वाक्य एक से अधिक पृष्ठ तक भी दिखाई देते हैं। ऐसी स्थिति में विधि साहित्य का शब्दानुवाद बेढंगा और हास्यास्पद होता है। सटिक अनुवाद के लिए अनुवादक को शब्द पदबंधों के साथ-साथ वाक्यांशों एवं वाक्यों के पर्याय सुनिश्चित एवं स्थिर करके लक्ष्य भाषा की विधि व्यवस्था से संतुलित कर अनुवाद करना पडता है। विधि क्षेत्र का अनुवाद यंत्र की अपेक्षा मानवी मस्तिष्कवाला अनुवादक ही सटिक ढंग से कर सकता है।

उच्चारण तथा व्याकरण ज्ञान की समस्या :

हर भाषा के उच्चारण तथा व्याकरणगत नियम अलग-अलग हैं। यंत्र अनुवादक को किसी एक भाषा, उच्चारण एवं लिपि संबंधी संपूर्ण ज्ञान देना बहुत ही कठिन कार्य है। संपूर्ण ज्ञान में किसी भाषा का व्याकरणपरक, अर्थपरक, व्यवहार एवं संस्कृतिपरक तथा विभिन्न संदर्भपरक अर्थ ज्ञान अपेक्षित है। यह विविधतावाला संपूर्ण ज्ञान किसी मशीनी अनुवाद के लिए ग्रहण करना एवं सुरक्षित रखना चुन्नौतिपूर्ण है। साथ ही भाषा परिवर्तनशील होती है। भाषा में नए सिरे से आनेवाले शब्दों का तुरंत अंतर्भाव करना कठिन होता है। व्याकरणगत अंतर समझकर पूर्ण अनुवाद करने की दृष्टि से दोनों भाषा के व्याकरण संबंधी कोश संबंधित सॉफ्टवेयर के स्मृतिपटल में संचयित कराना आवश्यक है। फिर भी व्याकरणगत दृष्टि से परिपूर्ण अनुवाद होगा ही ऐसा नहीं। इस संदर्भ में डॉ.माधवी जाधव का कथन विचारणीय है – "प्रत्येक भाषा का अपना व्याकरण होता है और व्याकरण के नियमों से वह नियंत्रित होती है। लक्ष्य भाषा और स्त्रोत भाषा का व्याकरण भिन्न–भिन्न होता है अनुवादक को दोनों भाषाओँ की रूप व्यवस्था की पूर्णरूपेन जानकारी आवश्यक है"[10] भाषा में उच्चारण को भी महत्व होता है। विशेषत: शब्द उच्चारण में आरोह-अवरोह या बलाघात शब्दों के अर्थ पर परिणाम करता है। ऐसे शब्दों के लिखित रूप से बलाघात से अपेक्षित अर्थ प्रस्तुत होता नहीं। यांत्रिक और मानवी अनुवाद में अधिकत्तर भाषा के लिखित रूप को ही आधार माना जाता है। यांत्रिक अनुवाद में तो इस प्रकार के शब्दों से अपेक्षित अर्थ का अनुवाद करना कठिन है । हर भाषा के लिखित रूप के लिए एक लिपि होती है। हर लिपि की अपनी विशेषताएँ हैं। कई लिपियों बाएँ से दाएँ और तो कई दाई ओर से बाएँ ओर लिखी जाती है; तो चीनी, जापानी आदि भाषाएँ ऊपर से नीचे की ओर वाली लिपि में लिखी जाती है। विभिन्न भाषाओं के शब्दों की वर्तनी भी अलग-अलग होती है और ध्वनियों की विभिन्नता के कारण अक्षर भी अलग-अलग होते हैं। साथ ही कई भाषा में एक जैसी ध्वनि के लिए कई अक्षर होते हैं। इस कारण यांत्रिक अनुवाद में शब्दों की सही वर्तनी पाना दुष्कर कार्य है।

ISSN–2278-5655

AMIERJ Aarhat Multidisciplinary International Education Research Journal

Volume–XIV, Special Issues – III (a) Nov – Dec, 2025

OPEN ACCESS Original Research Article

कहावते-मुहावरों और लोकोक्तियों के अनुवाद की समस्या :

कहना संगत होगा कि किसी भी भाषा में कहावते-मुहावरे और लोकोक्तियाँ भाषा का सौंदर्य अंग होते हैं। कहावते- मुहावरें और लोकोक्तियों पर संबंधित आँचल, प्रांत एवं देश की संस्कृति का प्रभाव नजर आता है। विशेषत: स्थानीय संस्कृति किसी देश की एक जैसी नहीं होती और अलग-अलग राज्य एवं देशों की संस्कृति तो भिन्न-भिन्न होती ही है। परिणामत: कहावते और लोकोक्तियों का अनुवाद उसके सांस्कृतिक संदर्भ देखे बिना संभव नहीं होता। यांत्रिक अनुवाद में सांस्कृतिक संदर्भ देखकर अनुवाद करने के लिए तकनीकी दिक्कते हैं। इस कारण मानव अनुवादक ही कहावते- मुहावरों और लोकोक्तियों का सटिक अनुवाद कर सकता है।

निश्चित अनुवाद यंत्र प्रणाली प्रयोग संबंधी संभ्रम :

आज संगणक, भ्रमणध्वनि,सॉफ्टवेयर तथा एप के जमाने में अनुवाद के लिए उपयुक्त यंत्र साधनों की अधिकता नजर आती है। मात्र इनमें से कौन-से साधन की विशेषता क्या हैं? यह सामान्यतौर पर पता न होने के कारण व्यावहारिक अनुवाद करते समय जो साधन सहजता से उपलब्ध होता है उसका प्रयोग आवश्यकमंद व्यक्ति द्वारा किया जाता है। परिणामत: विशेष क्षेत्र का सफल अनुवाद करने की विशेषत: होनेवाले यांत्रिक साधन केवल जानकारी न होने के कारण प्रयोग नहीं किए जाते। संगणकीय सूचना भंडार और उपभोक्ता की स्थिति संदर्भ में डॉ. बसवराज बारेकर जी का कथन दृष्टव्य है – "अंतरजाल से जुड़े अनेक कम्प्युटरों में सूचनाओं का भंडार है। ...सूचनाओं का यह भंडार इतना विशाल है कि कई बार उपभोक्ता के लिए यह पता करना कठिन हो जाता है कि उसकी आवश्यकता की सूचना कहाँ होगी।"[11] कहना उचित होगा कि कौन-से प्रकार की सामग्री का अनुवाद कौन-सा विशेष सॉफ्टवेयर या प्रणाली करती है इसकी जानकारी सहज एवं विश्वसनीय रूप से न मिलने के कारण विशेषता न होनेवाली प्रणाली का प्रयोग करने पर प्राप्त अनुवाद सटिक एवं रोचक नहीं होता।

पुन:रीक्षण का अभाव :

अनुवाद कार्य में अनुवाद का पुन:रीक्षण यह चरण अत्याधिक महत्वपूर्ण माना जाता है। पुन:रीक्षण से तात्पर्य है– " कोई व्यक्ति अनुवाद करके अपने अनुवाद को एक बार देख चुका है,दूसरा व्यक्ति अर्थात पुन:रीक्षक (Vetter) उसको फिर से देखता है, अनुवाद को पुन:रीक्षण करता है। यही पुन:रीक्षण है।"[12] पुन:रीक्षण के कारण अनुवादक को अनुदित सामग्री में दिखाई देती कमियों का बोध होता है। इस अंतिम चरण में परिलक्षित हुई त्रुटियों को दूर करके अंतिम अनुवाद लक्ष्य भाषा की प्रकृति, समतुल्यता और स्रोत भाषा की शैली सुरक्षित रखकर अंतिम किया जाता है। यह कार्य मानव द्वारा ही संभव है। यांत्रिक अनुवाद में मशीन पुन:रीक्षण नहीं कर पाती, जिससे अनुवाद पूर्णत: सटिक नहीं हो सकता।

यांत्रिक अनुवाद : समस्याओं का व्यावहारिक समाधान

यांत्रिक अनुवाद करते समय आनेवाली समस्याओं का व्यावहारिक समाधान यहाँ प्रस्तुत हैं-

1. संगणक या सॉफ्टवेयर में पुन:रीक्षण की व्यवस्था करना आवश्यक है। इसके लिए पुन:रीक्षण श्रेणी एक, दो और तीन करने पर पुन:रीक्षण प्रक्रिया होकर ही सटिक यांत्रिक अनुवाद संभव है।
2. साहित्यिक सामग्री का यांत्रिक अनुवाद करते समय भावानुवाद अधोरेखित करनेवाले

ISSN–2278-5655

AMIERJ Aarhat Multidisciplinary International Education Research Journal

Volume–XIV, Special Issues – III (a) Nov – Dec, 2025

OPEN ACCESS Original Research Article

सॉफ्टवेयर विकसित करने पर अधोरेखित पंक्तियाँ ही केवल मानव अनुवादक से अनुदित करके साहित्यिक क्षेत्र का सफल अनुवाद किया जा सकता है।

3. यांत्रिक अनुवाद करनेवाली तकनीक में यदि मिलान अर्थात् मूल से तुलना करने का प्रावधान हो तो यांत्रिक अनुवाद भी निर्दोष होने में सहायता होगी।
4. व्याकरणगत अंतर समझकर पूर्ण अनुवाद करने की दृष्टि से दोनों भाषा के व्याकरण संबंधी कोश संबंधित सॉफ्टवेयर के स्मृतिपटल में संचयित कराना आवश्यक है।
5. सॉफ्टवेयर के स्मृतिपटल में अधिकत्तर अंग्रेजी शब्दों का संग्रह नजर आता है। इसमें अन्य भाषा के शब्दों का संचयन भी अधिक मात्रा में करने से यंत्र अनुवाद के लिए लाभदायक हो सकता है।
6. यांत्रिक अनुवाद में अनुवाद के सभी प्रकार की सूची रखकर कौन-से प्रकार का अनुवाद कराना है यह सुनिश्चित करने की व्यवस्था और उसे आवश्यक विविध कोशों का संचयन कराना आवश्यक है। ताकि मूल सामग्री का अनुवाद चाहे जिस प्रकार से करना आवश्यक है उसी प्रकार में करने से सटिक अनुवाद होने के अवसर बढ़ेंगे।
7. वर्तमान काल में यंत्र के द्वारा अनुवाद कार्य किए जा रहे हैं; पर अनुवाद कार्य संगणक के पास संचयित पर्यायी शब्दों की सहायता से किया जाता है। सॉफ्टवेयर के स्मृतिपटल में सुरक्षित रखने के लिए सुनिश्चित किए जानेवाले शब्द संबंधित कंपनी द्वारा सफल मानव अनुवादक के साथ विचार–विमर्श करके ही सॉफ्टवेयर के स्मृतिपटल में सुरक्षित रखने चाहिए।
8. वर्तमान काल में यंत्र के द्वारा अनुवाद कार्य किया जा रहा है; पर प्राप्त अनुवाद संगणक के पास संचयित पर्यायी शब्द से किया जाता है। सॉफ्टवेयर के अनुवाद कार्य में दिक्कत आने पर स्वयंचलित व्यवस्था द्वारा मानव अनुवादक से संपर्क करने और चर्चा से अंतिम हायब्रीड अनुवाद संभवित है।
9. अंतरजाल पर उपलब्ध अनुवाद संबंधी सूचनाओं के साधन एवं भंडार संबंधी विषय एवं अनुवाद प्रकार के अनुसार विशेष विशेषता होनेवाले शीर्षक से संबंधित सॉफ्टवेयर,लिंक या एप बनाएँगे या संशोधित किए जाएँगे तो उपभोक्ता विशेष विशेषता होनेवाले यांत्रिक अनुवाद यंत्र से सफल या समतुल्य अनुवाद प्राप्त कर सकेंगे।
10. अनुद्य सामग्री साहित्येत्तर या तकनीकी संबंधी हो तो यंत्र अनुवाद और अनुद्य सामग्री अगर साहित्यिक या साहित्य तत्वों से प्रभावित हो तो मानव अनुवादक से अनुवाद करना यथायोग्य रहेगा।

निष्कर्ष :

यांत्रिक अनुवाद का दूसरा नाम मशीनी अनुवाद' है। यांत्रिक अनुवाद में व्यक्ति की अपेक्षा यंत्र से ही अनुवाद कार्य किया जाता है। वर्तमान काल में संगणक और कृत्रिम बुद्धिमत्ता की चर्चा जोरों पर है। बाजार में अनुवाद करने के लिए विभिन्न सॉफ्टवेयर हैं। यांत्रिक अनुवाद के कारण कम समय में तथा अधिक तादाद में अनुवाद करना संभव होता है। किंतु यांत्रिक अनुवाद में पुनः सृजन का अभाव, शब्द चयन की समस्या, सीमित विषय क्षेत्र, सफल साहित्यिक अनुवाद करने में

ISSN–2278-5655

AMIERJ Aarhat Multidisciplinary International Education Research Journal

Volume–XIV, Special Issues – III (a) Nov – Dec, 2025

OPEN ACCESS Original Research Article

असमर्थता, विज्ञापन अनुवाद में दिक्कते, विधि क्षेत्र का अनुवाद करने की सीमा, उच्चारण तथा व्याकरण ज्ञान की समस्या, कहावते-मुहावरों और लोकोक्तियों के अनुवाद की समस्या, निश्चित अनुवाद यंत्र प्रणाली प्रयोग संबंधी संभ्रम तथा पुन:रीक्षण का अभाव आदि सीमाएँ भी हैं। यांत्रिक अनुवाद की सीमाओं पर ध्यान देकर यंत्र अनुवाद के साधनों में विषय विशेषता, हायब्रीड अनुवाद, पुन:रीक्षण श्रेणी सुविधा, अनुवाद करने में असमर्थ पंक्तियों को अधोरेखित करनेवाली तकनीकी, मूल से तुलना करने का और अनुवाद के प्रकारों के अनुसार अनुवाद करने का प्रावधान, सफल मानव अनुवादक के साथ विचार–विमर्श करके ही सॉफ्टवेयर के स्मृतिपटल में शब्दों एवं कोशों का संचयन करना तथा स्वयंचलित रूप से यंत्र द्वारा मानव अनुवादक से संपर्क करके सटिक अनुवाद करना आदि समाधान यांत्रिक अनुवाद की सीमाओं के समाधान हैं। अनुवाद में आनेवाली समस्याओं के समाधानों पर कार्य करने के उपरांत अनुवाद यंत्र मानव अनुवादक के समतुल्य अनुवाद करने में सफलता प्राप्त करेंगे।

संदर्भ–संकेत :

1. *सं. डॉ. गोरखनाथ किर्दत – अनुवाद स्वरूप (ए.बी.एस.प्रकाशन,कानपुर,प्र.सं.2014), पृ. 51*
2. *डॉ.रीतारानी पालीवाल-अनुवाद प्रक्रिया एवं परिदृश्य,(वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली,प्र.सं.2010) पृ. 123*
3. *सं.डॉ.नगेंद्र- अनुवाद विज्ञान :सिद्धांत एवं अनुप्रयोग, (हिंदी माध्यम कार्यान्वयन; निदेशालय, दिल्ली विश्वविद्यालय प्रकाशन, दिल्ली, प्रथम सं. 1998) पृ. 379*
4. *डॉ.रीतारानी पालीवाल-अनुवाद प्रक्रिया एवं परिदृश्य,(वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली,प्र.सं.2010) पृ.136*
5. *सं.ए.अरविंदाक्षन - अनुवाद अनुसृजन (राधाकृष्ण प्रकाशन,दिल्ली,प्र.सं.2019), पृ.42*
6. *वही, पृ.47*
7. *प्रो.अर्जुन चव्हाण-अनुवाद चिंतन(अमन प्रकाशन, कानपुर, द्वितीय सं. 2020), पृ.194*
8. *सं.ए.अरविंदाक्षन - अनुवाद अनुसृजन (राधाकृष्ण प्रकाशन,दिल्ली,प्र.सं.2019), पृ. 48*
9. *वही, पृ. 49*
10. *सं. डॉ. गोरखनाथ किर्दत – अनुवाद स्वरूप (ए.बी. एस. पब्लिकेशन ,वाराणसी ,प्र.सं. 2014), पृ.12*
11. *डॉ. बसवराज बारेकर – इंटरनेट के दौर में हिंदी(जवाहर पुस्तकालय,मथुरा,प्र.सं.2018), पृ.84*
12. *डॉ. अंबादास देशमुख – प्रयोजनमूलक हिंदी: अधुनातन आयाम (शैलजा प्रकाशन कानपुर,द्वितीय सं.2006),पृ.541*

Cite This Article:
डॉ. किर्दत सं. जो. (2025). यांत्रिक अनुवाद : स्वरूप, समस्याएँ और समाधान **In Aarhat Multidisciplinary International Education Research Journal**: Vol. XIV (Number VI, pp. 196–203).

ISSN–2278-5655

AMIERJ Aarhat Multidisciplinary International Education Research Journal

Volume–XIV, Special Issues – III (a) Nov – Dec, 2025

OPEN ACCESS Original Research Article

अनुवाद का महत्व

* मेघा श्रीनिवास अंदुरे,

*शोधार्थी, महात्मा फुले महाविद्यालय, पिंपरी, पुणे.

सारांश :

अनुवाद भाषा, संस्कृति और साहित्य के बीच संवाद स्थापित करने वाला एक सशक्त माध्यम है। यह न केवल भाषाओं को जोड़ता है, बल्कि ज्ञान-विस्तार, साहित्यिक आदान-प्रदान और सांस्कृतिक समन्वय को भी गति देता है। अनुवाद के माध्यम से विभिन्न भाषाओं में लिखे गए ग्रंथ, विचार, शोध तथा साहित्यिक कृतियाँ व्यापक पाठक-वर्ग तक पहुँचती हैं, जिससे भाषा और साहित्य दोनों का विकास संभव होता है। आधुनिक युग में अनुवाद शिक्षा, विज्ञान, तकनीक, प्रशासन, मीडिया और वैश्विक संचार का अनिवार्य अंग बन गया है। यह बहुभाषी समाज में सेतु का कार्य करते हुए सामाजिक सद्भाव, बौद्धिक विकास और वैश्विक समझ को मजबूत करता है। इस प्रकार, अनुवाद केवल भाषाई क्रिया नहीं, बल्कि सांस्कृतिक, सामाजिक और बौद्धिक प्रगति का महत्वपूर्ण साधन है।

कुंजी-शब्द : *अनुवाद, भाषाविकास, साहित्य, सांस्कृतिक आदान-प्रदान, वैश्वीकरण, ज्ञान-विस्तार, संप्रेषण।*

Copyright © 2025 The Author(s): This is an open-access article distributed under the terms of the Creative Commons Attribution 4.0 International License (CC BY-NC 4.0) which permits unrestricted use, distribution, and reproduction in any medium for non-commercial use provided the original author and source are credited.

भाषा-अनुवाद के फायदे:

मानव जाति की प्रगति में भाषा और संप्रेषण की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण रही है। भाषा न केवल विचारों को अभिव्यक्त करने का माध्यम है, बल्कि यह संस्कृति, इतिहास, ज्ञान और अनुभव का भी संवाहक है। विश्व में हजारों भाषाएँ हैं, और हर भाषा अपने भीतर एक अनूठी सभ्यता और सांस्कृतिक संपदा समेटे हुए है। ऐसे विविध भाषाई संसार को जोड़ने में **अनुवाद** सेतु का कार्य करता है। अनुवाद वह प्रक्रिया है जिसके द्वारा एक भाषा में व्यक्त विचारों, भावनाओं और अर्थों को दूसरी भाषा में स्थानांतरित किया जाता है। परंतु अनुवाद केवल शब्द-प्रतिस्थापन नहीं, बल्कि भाव, संदर्भ और सांस्कृतिक अर्थों का स्थानांतरण है।

आज के दौर में जब विश्व वैश्वीकरण की दिशा में आगे बढ़ रहा है, तब अनुवाद की उपयोगिता और बढ़ जाती है। यह केवल भाषा का विकास नहीं करता, बल्कि साहित्य, संप्रेषण, ज्ञान-विस्तार, सांस्कृतिक आदान-प्रदान, और अंतरराष्ट्रीय संपर्क जैसे अनेक क्षेत्रों में अपनी महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। इस विस्तृत प्रबंध में हम अनुवाद के इन्हीं व्यापक फायदों का क्रमबद्ध अध्ययन करेंगे।

ISSN–2278-5655

AMIERJ Aarhat Multidisciplinary International Education Research Journal

Volume–XIV, Special Issues – III (a) Nov – Dec, 2025

OPEN ACCESS Original Research Article

1. भाषाविकास में अनुवाद का योगदान

अनुवाद किसी भी भाषा के विकास की आधारशिला है। जब एक भाषा दूसरी भाषा के संपर्क में आती है, तब वह उससे नए शब्द, वाक्य-रचना, विचार और अभिव्यक्ति-शैली प्राप्त करती है। इस आदान-प्रदान का परिणाम भाषा के **विकास (भाषाविकास)** के रूप में सामने आता है।

1. नई शब्दावली का सृजन

अधिकांश वैज्ञानिक, तकनीकी और बौद्धिक शब्द विदेशों से आए हैं।

उदाहरण—

- *लोकतंत्र* (democracy),
- *समाजवाद* (socialism),
- *विज्ञान* (science),
- *दर्शन* (philosophy),
- *सूचना-प्रौद्योगिकी* (information technology)

ये शब्द अनुवाद अथवा स्वीकृत शब्दों के माध्यम से भारतीय भाषाओं में आए और भाषा की अभिव्यक्ति-क्षमता बढ़ी।

2. विचारों का विस्तार

जब विदेशी साहित्य का अनुवाद होता है, तब उसके विचार भी पढ़ने वालों की भाषा में प्रवेश करते हैं। महात्मा गांधी, राममोहन राय, दयानंद सरस्वती— इनके विचार भी अनुवादों के माध्यम से जन-जन तक पहुँचे।

3. भाषाई संरचना का समृद्धिकरण

अनुवादकों द्वारा अपनाए गए वाक्य-विन्यास और अभिव्यक्ति-शैली से भाषा में नवीनता आती है। उदाहरण के लिए, यूरोपीय व्याकरणिक संरचनाओं ने आधुनिक हिंदी और मराठी भाषा को नए रूप दिए।

2. साहित्य के प्रसार में अनुवाद के फायदे

अनुवाद का सबसे गहरा प्रभाव **साहित्य** पर पड़ता है। साहित्य किसी समाज की आत्मा है और अनुवाद इस आत्मा को सीमाओं के पार पहुँचाता है।

1. विश्व साहित्य का निर्माण

यदि अनुवाद न होता, तो शेक्सपियर,होमर, कालिदास, टागोर, प्रेमचंद, टॉलस्टॉय जैसे साहित्यकार विश्व साहित्य के हिस्से न बन पाते।

अनुवाद के कारण—

- स्थानीय साहित्य राष्ट्रीय बनता है
- राष्ट्रीय साहित्य वैश्विक बनता है

2. ए साहित्यिक रूपों का विकास

कई साहित्यिक विधाएँ अनुवाद के माध्यम से भारतीय भाषाओं में आईं—

- उपन्यास
- नाटक
- निबंध
- आत्मकथा

3. साहित्यिक चेतना का विस्तार

विदेशी विचारों का अध्ययन पाठकों में व्यापक सोच, संवेदनशीलता और सामाजिक समझ विकसित करता है।

3. सांस्कृतिक आदान-प्रदान में अनुवाद की भूमिका

अनुवाद सिर्फ साहित्य को ही नहीं, बल्कि समूची संस्कृति को भी स्थानांतरित करता है।

ISSN–2278-5655

AMIERJ Aarhat Multidisciplinary International Education Research Journal

Volume–XIV, Special Issues – III (a) Nov – Dec, 2025

OPEN ACCESS Original Research Article

1. **सांस्कृतिक मूल्यों का प्रसार**

भारतीय संस्कृति में योग, आयुर्वेद, गीता, उपनिषद, नाटक, नृत्य, कहावतें—ये सब विश्व तक अनुवाद के माध्यम से ही पहुँचे।

उसी प्रकार भारत में बौद्ध धर्म का जापान, चीन और कोरिया तक प्रसार भी अनुवाद के माध्यम से हुआ।

2. **सांस्कृतिक समझदारी में वृद्धि**

जब हम किसी दूसरी संस्कृति के साहित्य, संगीत, परंपरा या दार्शनिक ग्रंथों का अनुवाद पढ़ते हैं, तो हम उस समाज को बेहतर समझते हैं। इससे वैश्विक सद्भाव और सह-अस्तित्व की भावना बढ़ती है।

3. **धर्म और दर्शन का वैश्विक प्रसार**

- बाइबिल का विभिन्न भाषाओं में अनुवाद
- कुरान का अनुवाद
- भगवद्गीता का विश्वभर में अनुवाद इनसे धार्मिक और दार्शनिक विचार विश्व में फैले।

4. वैश्वीकरण के युग में अनुवाद के फायदे

21वीं सदी में **वैश्वीकरण** विश्व को एक परिवार में बदल रहा है। अनुवाद इस वैश्वीकरण को सशक्त बनाता है।

1. **व्यापार-व्यवस्था में अनुवाद**

बहुराष्ट्रीय कंपनियों को विभिन्न देशों के ग्राहकों तक पहुँचने के लिए अनुवाद की आवश्यकता होती है। उदाहरण—

- उत्पाद विवरण
- विज्ञापन
- अनुबंध
- सॉफ्टवेयर इंटरफेस

2. **अंतरराष्ट्रीय राजनीति और कूटनीति**

संयुक्त राष्ट्र, UNESCO, WHO जैसे संस्थानों में अनुवाद और दुभाषियों के योगदान के बिना संवाद असंभव है।

3. **मनोरंजन उद्योग**

फिल्में, टीवी शो, वेब-सीरीज़, संगीत—सबका वैश्विक प्रसार सबटाइटल, डबिंग और अनुवाद से संभव हुआ है।

5. ज्ञान-विस्तार में अनुवाद का महत्व

ज्ञान-विज्ञान का प्रसार अनुवाद के बिना असंभव है।

1. **वैज्ञानिक ग्रंथों का अनुवाद**

अरस्तु, न्यूटन, आइंस्टीन, स्टीफन हॉकिंग, डार्विन जैसे वैज्ञानिकों के विचार अनुवाद के माध्यम से दुनिया तक पहुँचे।

2. **शिक्षा का विस्तार**

छात्रों को अपनी मातृभाषा में पाठ्यपुस्तक उपलब्ध हों, तो लोकतांत्रिक शिक्षा मजबूत होती है।

उदाहरण—

- NCERT द्वारा हिंदी और क्षेत्रीय भाषाओं में पुस्तकों का अनुवाद
- तकनीकी शिक्षा में शब्दावली निर्माण

3. **अनुसंधान और नवाचार में सहायता**

वैज्ञानिक और तकनीकी शोध-पत्रों का अनुवाद विभिन्न देशों के वैज्ञानिकों को एक-दूसरे के अनुसंधान से जोड़ता है।

ISSN–2278-5655

AMIERJ Aarhat Multidisciplinary International Education Research Journal

Volume–XIV, Special Issues – III (a) Nov – Dec, 2025

OPEN ACCESS Original Research Article

6. संप्रेषण और प्रशासन में अनुवाद की भूमिका

भारत जैसे बहुभाषी देश में अनुवाद संप्रेषण और प्रशासन को सरल बनाता है।

1. **सरकारी दस्तावेजों का अनुवाद**

   कानून, योजनाएँ, नीतियाँ—इनका अनुवाद नागरिकों तक सही जानकारी पहुँचाता है।

2. **न्याय व्यवस्था में अनुवाद**

   अदालतों में गवाहों के बयान, दस्तावेज़, अनुबंध—इन सबका अनुवाद न्याय-प्रक्रिया को पारदर्शी बनाता है।

3. **स्वास्थ्य सेवा में अनुवाद**

   डॉक्टरों के निर्देश, दवाओं की जानकारी, स्वास्थ्य रिपोर्ट—इनका अनुवाद जनहित में अत्यंत आवश्यक है।

7. मीडिया और तकनीक में अनुवाद का प्रभाव

1. **डिजिटल सामग्री का प्रसार**

   वेबसाइट, मोबाइल एप, सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म—इनका बहुभाषी संस्करण अनुवाद के कारण ही संभव है।

2. **समाचार और सूचना का विस्तार**

   एक देश की खबरें दूसरे देश तक अनुवाद के माध्यम से पहुँचती हैं।

3. **कृत्रिम बुद्धिमत्ता और मशीन अनुवाद**

   AI आधारित अनुवादक जैसे Google Translate, ChatGPT आदि ने वैश्विक संप्रेषण को आसान बनाया है।

8. व्यावसायिक क्षेत्र में अनुवाद के अवसर

आज अनुवाद एक विशाल उद्योग बन चुका है।

कैरियर के प्रमुख क्षेत्र:

- तकनीकी अनुवाद
- कानूनी अनुवाद
- चिकित्सा अनुवाद
- साहित्यिक अनुवाद
- दुभाषिया
- कंटेंट लोकलाइज़ेशन
- सबटाइटलिंग और डबिंग
- शोध-पत्रों का अनुवाद

अनुवाद पर्यटन, शिक्षा, मीडिया, आईटी, संस्कृति और व्यापार—हर क्षेत्र में रोजगार देता है।

9. अनुवाद की सीमाएँ और चुनौतियाँ (महत्वपूर्ण विस्तार)

अनुवाद के अनेक फायदे हैं, परंतु कुछ चुनौतियाँ भी होती हैं:

1. **सांस्कृतिक संदर्भों का अनुवाद**

   कुछ मुहावरे, प्रतीक, लोककथाएँ और परंपराएँ अनुवाद में अर्थ खो देती हैं।

2. **भावानुवाद और शब्दानुवाद**

   भावानुवाद में भाव सुरक्षित रहता है, पर भाषा बदल जाती है।

   शब्दानुवाद में भाषा सुरक्षित रहती है, पर भाव बदल सकता है।

ISSN–2278-5655

AMIERJ Aarhat Multidisciplinary International Education Research Journal

Volume–XIV, Special Issues – III (a) Nov – Dec, 2025

OPEN ACCESS Original Research Article

3. साहित्यिक अनुवाद की जटिलताएँ

कविता, गीत, छंद, अनुप्रास—इनका अनुवाद अत्यंत कठिन है।

इन चुनौतियों के बावजूद अनुवाद की उपयोगिता कम नहीं होती, बल्कि यह भाषाई संवेदनशीलता और समझ को बढ़ाता है।

निष्कर्ष:

अनुवाद आज की दुनिया की बुनियादी आवश्यकता है। यह केवल भाषाई प्रक्रिया नहीं, बल्कि सामाजिक, सांस्कृतिक, आर्थिक, बौद्धिक और वैश्विक विकास का सशक्त साधन है। अनुवाद से भाषाएँ विकसित होती हैं, साहित्य समृद्ध होता है, संस्कृति का विस्तार होता है, ज्ञान का लोकतंत्रीकरण होता है, संप्रेषण सरल होता है, वैश्वीकरण तेज़ होता है और देश-देश के बीच बेहतर संबंध स्थापित होते हैं।

इस प्रकार, अनुवाद आधुनिक विश्व की प्रगति का ऐसा स्तंभ है जिसके बिना मानव जीवन की कल्पना अधूरी है।

संदर्भ सूची (References):

1. *Nida, Eugene.* The Theory and Practice of Translation.
2. *Catford, J.C.* A Linguistic Theory of Translation.
3. *Bassnett, Susan.* Translation Studies.
4. *Gopinathan, N.* Indian Tradition of Translation.
5. *Newmark, Peter.* Approaches to Translation.
6. *शर्मा, रामविलास.* भाषा और साहित्य.
7. *मलिक, प्रकाश.* अनुवाद का सिद्धांत और व्यवहार.
8. *UNESCO Reports on Translation and Cultural Exchange.*
9. *Google Scholar Articles on Translation Studies.*
10. *NCERT.* भाषा और अनुवाद के दिशा-निर्देश.

Cite This Article:

अंदुरे मे. श्री. *(2025) अनुवाद का महत्व* **In Aarhat Multidisciplinary International Education Research Journal**: Vol. XIV (Number VI, pp. 204–208).

ISSN–2278-5655

AMIERJ Aarhat Multidisciplinary International Education Research Journal

Volume–XIV, Special Issues – III (a) Nov – Dec, 2025

OPEN ACCESS Original Research Article

नाटक और अनुवाद

* डॉ. सुजाता श्रीधर पाटील,

सहाय्यक प्राध्यापक, हिंदी, वीर वाजेकर कला विज्ञान व वाणिज्य महाविद्यालय फुंडे, उरण , जिल्हा - रायगड , महाराष्ट्र.

सारांश :

अनुवाद भाषा की अत्यंत महत्त्वपूर्ण प्रक्रिया है। अनुवाद शब्द का संबंध वद धातु से है। जिसका अर्थ होता है बोलना या कहना। अनुवाद के मूल में एक भाषिक संरचना का दूसरी भाषिक संरचना में रूपांतरण होता है।

भोलानाथ तिवारी के अनुसार एक भाषा में व्यक्त विचारों को यथा संभव समान और सहज अभिव्यक्ती द्वारा दुसरी भाषा मे व्यक्त करने का प्रयास अनुवाद है।

अनुवाद का महत्व युगों से चला आ रहा है परंतु वर्तमान युग मे उसकी प्रासंगिकता तथा उसका महत्त्व सभी क्षेत्र मे पर्याप्त बढ रहा है।

Copyright © 2025 The Author(s): This is an open-access article distributed under the terms of the Creative Commons Attribution 4.0 International License (CC BY-NC 4.0) which permits unrestricted use, distribution, and reproduction in any medium for non-commercial use provided the original author and source are credited.

इसी दृष्टि से अनुवाद की भाषिक प्रक्रिया के माध्यम से संपूर्ण विश्व के उत्तम साहित्य से हम परिचित हो रहे है। सृजनात्मक साहित्य के अनुवाद की प्रक्रिया निरंतर चलती आ रही है । सृजनात्मक साहित्य के अनुवाद की प्रक्रिया अन्य क्षेत्रों की अनुवाद की तुलना मे जटील होती है। नाटक का अनुवाद करते समय अनुवादक को नाटक के विभिन्न पक्षों की ओर गंभीरता से ध्यान देना पडता है। पिछले कही सालों में भारतीय भाषाओं में विशेष कर हिंदी में नाटकों के अनुवाद की प्रक्रिया बड़ी व्यापक और तेज हो गई है। नाटक संवादात्मक कहानी, कार्य व्यापार और अभिनय आदि का समन्वित रूप होता है। अनुवादक का ध्यान इन तिनों पर पूरा-पूरा होना चाहिए। नाटक के अनुवाद के लिए सबसे आवश्यक शर्त यह है कि अनुवादक को रंगमंच का ज्ञान होना चाहिए। नाटक की सार्थकता उसके मंचन में निहित होती है। इस कारण नाटयानुवाद में अनुवादक से एक विशेष कौशल की अपेक्षा की जाती है। प्रसिद्ध नाट्य आलोचक नेहमीचंद्र जैन के अनुसार किसी भाषा मे नाटका अनुवाद भी मूल की भाँति अभिनेय हो तथा उसे मूल नाटक की संपूर्ण अर्थवत्ता में और उसके विभिन्न आयामों मे दृश्य और रूपायीत किया जा सके इसके लिये दो भाषाओं के ज्ञान के साथ- साथ अनिवार्य रूप मे सामान्य रंग- विधान से और संभवतः मुल नाटक की रंग-परंपरा से परिचय अत्यंत आवश्यक है। इसलिए अनुवादक के लिए रंगमंच का व्यावहारिक अनुभव होना जरुरी है। दृश्य विधा होने के कारण अनुवादक को उचित पर्याय के साथ ऐसे

ISSN–2278-5655

AMIERJ Aarhat Multidisciplinary International Education Research Journal

Volume–XIV, Special Issues – III (a) Nov – Dec, 2025

OPEN ACCESS Original Research Article

वाक्य विज्ञान की तलाश होती है जो लक्ष्य भाषा के अनुरूप नाटक के अभिनय, कार्य व्यापार उनकी गतियां चरित्रों के बोलने का ढंग उनका उतार- चढाव आदि नाटक मे देखा जाता है। इस दृष्टी से नाटक के अनुवादक को अनुवाद के लिए उचित नाटक का चुनाव करना जरुरी है। नाटक जिस समाज, देश - काल, परिवेश क्षेत्र से जुडा है उसकी जानकारी के साथ नाटक का अनुवाद जिस लक्ष्य भाषा में किया जा रहा है उसके समाज देश काल वातावरण परिवेश की जानकारी होना भी आवश्यक है। मूल नाटक को गंभीरता से पढ़ना अनुवादक के लिए आवश्यक होता है उसे मूल की मंचीय साज- सज्जा प्रकाश योजना आदिसाथ संवादों का सौंदर्य भावों की गूढ़ता के प्रति संवेदनशील होकर नाटक समझना होगा उसे आत्मसात करना होगा। नाटक का अनुवाद रूपांतरण की रचनात्मक प्रक्रिया है।

भाषा मानव समुदाय की आत्माभीव्यक्ती और परस्पर अनुभव संप्रेषण का सबसे महत्वपूर्ण साधन है। जिसमें उस मनुष्य समुदाय की असंख्य पिढीयों की अनुभव संपत्ति तथा उनकी समुची परंपरा संचित होती है। भाषा का माध्यम व्यापक और बहुमुखी होता है। नाटक में भाषा शैली के काव्यात्मक, अलंकृत, साधारण बोलचाल की या संवादात्मक ऐसे अनेक रूप दृष्टिगत होते हैं। जिसके द्वारा नाटककार कथावस्तु, पात्र चरित्र चित्रण तथा घटना को प्रस्तुत करता है। रंगदर्शन मे नेमीचंद्र जैन नाट्यानुवाद मे भाषा संबंधी समस्या पर लिखते हैकि संवादों की भाषा पात्रानुरूप होने की अनिवार्यता भी अनुवाद के लिए बडी कठीण समस्या उपस्थित करती है। इस समस्या के दो लगबग परस्परविरोधी छोर है। भाषा का इतना अभिव्यंजना पूर्ण और सूक्ष्म अभिव्यक्ती के उपयुक्त होना जरुरी है कि विभिन्नपात्रों के व्यक्तित्व की बहुत सी परतें दिखा सके दुसरी और वह बोलचाल की भाषा से बहुत दूर नहीं हो सकती। संवाद नाटक का महत्वपूर्ण तत्व होता है। इसलिए संवाद पात्रों के लिए उपयुक्त तथा सहज स्वाभाविक और कलात्मक भाषा मे लिखे जाते हैं। परंतु कई बार नाट्यानुवाद में संवादों की यह विशेषता नष्ट हो जाती है। अनुवादक के लिए यह कसोटी होती है की लक्ष्य भाषा मे प्रतीकात्मक एवं अभिनय स्तरो पर चलने वाली नाट्यभाषा के लिए बिंबात्मक रसपूर्ण भाषा का प्रयोग करे मूल भाषा में प्रयुक्त शब्द के स्थान पर लक्ष्य भाषा में कोई समरूप शब्द प्राप्त ना होने पर अतिरिक्त अर्थवान शब्द निर्माण नाटक की मूल संवेदना को स्वाभाविक रूप में रखता है।

मूल नाटक की कथावस्तु के मर्म को समझना लक्ष्य भाषा के अनुरूप उसे ढालने का प्रयास करना अनुवादक के लिए आवश्यक होता है। नाटक की कथावस्तु अन्य विधाओं की तुलना मे अलग होती है। मूल कथानक लक्ष्य भाषा के देश काल और भाषा के अनुरूप ढालने का प्रयास करना जिससे नाटक का भाव तथा उसमे व्यक्त विचार उसके प्रसंग अपनी पुरी अर्थवत्ता तथा तीव्रता के साथ व्यक्त हो सके अनुवादक को इसके लिए सूक्ष्मता से काम करना होता है। हिंदी के प्रसिद्ध युगप्रवर्तक साहित्यकार भारतेंदु हरिश्चंद्र ने अंग्रेजी नाटक मर्चंट ऑफ वेनिस का अनुवाद दुर्लभ बंधू के नाम से किया। उन्होंने संपूर्ण नाटक को भारतीय परिवेश देकर उसका पुनराख्यान किया। भारतेंदु हरिश्चन्द्र ने इस नाटक के अनुवाद में कथानक और वातावरण का संपूर्णतः भारतीय परिवेश मे चित्रण किया। नाटक के संवाद अभिनेयता से संबंधित होते हैं। पात्रों के परस्पर वार्तालाप से नाटक विकसित होता है। भाषा में लिखित

संवादों का पात्रों के द्वारा अभिनीत करने की क्षमता से युक्त होना आवश्यक है। आहार्य, आंगीक, वाचिक और सात्विक चार प्रकार के अभिनय और विषय वस्तु की श्रृंखलाबद्धता संवादों के माध्यम से उद्घाटित होती है। मूल नाटक संवादों की भाषा, वाक्यरचना अर्थ, भाव संदर्भ ध्वनि तथा घटनाओं के संघर्ष को उद्घाटित करने वाले स्थल आदि को लक्ष्य भाषा मे पुन्हा स्थापित करने का प्रयास अनुवादक को करना होता है। नाटक के प्रकार तथा शैली के अनुसार संवादों के भी विभिन्न रूप प्राप्त होते हैं उसे ध्यान में रखकर अनुवादक को अर्थवत्ता संवादों को लक्ष्य भाषा में अनुवादित करना होता है। नाट्यानुवाद करते समय अनुवादक को संवादों में कही कई बार परिवर्तन करना पडता है। यह परिवर्तन करते समय उसे गंभीरता से और सतर्कता से काम लेना होता है। नाटककार नाट्य अभिव्यक्ति के लिए जिस रंगमंचीय शैली का स्वीकार करते हैं उसके अनुसार नाटक का स्वरूप संवादों की संरचना, चरित्रों की सर्जना में विभिन्नता आ जाती है। कथावस्तु, संवाद, वातावरण भाषाशैली अभिनयता आदि सभी की पूर्ति अनुवादक को नाटक के अनुवाद में करनी होती है। नाटक की सफलता रंगमंच पर मंचन होने में होती है। इस दृष्टि से नाटक और रंगमंच का एक दुसरे से अनन्यसाधारण संबंध रहता है। अनुवाद करते समय अनुवादक को इसके साथ देशकाल का भी ध्यान रखना पडता है। नाट्यानुवाद के साथ सामाजिक ,सांस्कृतिक के साथ कई प्रसंग भाषा प्रदेश विशेष आदि लक्ष्य भाषा से जुड जाते है। अनुवादक को मूल नाटक की भाषा तथा लक्ष्य भाषा की परिवेशगत जानकारी होना आवश्यक है। विदेशी भाषा व संस्कृति भारतीय भाषा व संस्कृति में अनुवाद करते समय अधिक सतर्कता बरतनी पडती है। वर्तमान समय मे दुसरी भाषा के नाटक हिंदी में अनुदित होने के बाद मंच पर सफलतापूर्वक मंचित हुए हैं। तुगलक खामोश, घासीराम कोतवाल, अदालत जारी है आदि कई ऐसे नाटक जिनका हिंदी भाषा में अनुवाद होने के पश्चात हिंदी रंगमंच पर मंचन होता रहा है। इस प्रकार नाटक अपने विधागत विशेषताओं से भिन्न होने के कारण उसका अनुवाद एक रचनात्मक सृजनशीलता प्राप्त करता है। एक साथ साहित्य तथा विविध कलाओं का समन्वित रूप नाटक अनुवाद के कारण एक विशिष्ट विधा बन जाता है।

संदर्भ ग्रंथः

1) अनुवाद विज्ञान -भोलानाथ तिवारी, शब्दकार प्रकाशन, दिल्ली 110092

2) रंग दर्शन - नेमीचंद्र जैन राधाकृष्ण प्रकाशन, दर्यागंज नई दिल्ली 110032

3) अनुवादकला -डॉ. अय्यर एन. ई. विश्वनाथन, प्रभात प्रकाशन, दिल्ली

Cite This Article:

डॉ. पाटील सु. श्री. *(2025) नाटक और अनुवाद* **In Aarhat Multidisciplinary International Education Research Journal**: Vol. XIV (Number VI, pp. 209–211).

ISSN–2278-5655

AMIERJ Aarhat Multidisciplinary International Education Research Journal

Volume–XIV, Special Issues – III (a) Nov – Dec, 2025

OPEN ACCESS Original Research Article

कविता और अनुवाद

* जपकर महादेव दगडु एवं ** प्रो. डॉ. अशोक द्रोपद गायकवाड,

*शोधार्थी, ** शोध निर्देशक, हिंदी विभाग, न्यू आर्ट्स, कॉमर्स एंड साइंस कॉलेज, अहिल्यानगर.

प्रस्तावना :

अनुवाद यह एक भाषिक प्रक्रिया होने के कारण आज के इस शताब्दी में सबसे ज्यादा प्रचलित शब्द जो है वह अनुवाद है। आज एक भाषा में पर्याप्त ज्ञान नहीं है और दुनिया के सभी भाषा में जो ज्ञान का जो भंडार है उसे जब हमें प्राप्त करना है तो हमें अनुवाद की बेहद ही आवश्यकता निर्माण होती है। आज अनुवाद के कारण ही एक देश की प्रमुख समाचार खबरें दूसरे देश में कुछ ही मिनट में पहुंच जाती है इसके पीछे की प्रक्रिया बहुत ही बड़ी हो फिर भी आज अनुवाद आसानी से हो रहा है। संचार माध्यमों के कारण ज्ञान का विस्फोट हो गया है विश्व एक ग्राम बन गया है। दुनिया के किसी भी कोने की खबरें व्यक्ति के पास तुरंत पहुंच जाती है, इसके पीछे भी अनुवाद एक प्रमुख भाषिक प्रक्रिया है। अनुवाद के कारण शिक्षा प्रणाली, समाज और संस्कृति के विकास में सहायता प्राप्त होती। अनुवाद आज साहित्य का अनिवार्य भाग बन गया है। देश-विदेश में विज्ञान के विविध संशोधन कार्य को अपनी भाषा में जानने के लिए अनुवाद की आवश्यकता होती है। आज एक से अधिक भाषा को जानना एवं एक भाषा से दूसरी भाषा में सामग्री का स्थानांतरण करना एक महत्वपूर्ण प्रक्रिया हो गई है। अनुवाद के कारण लक्ष्य भाषा में उत्कृष्ट साहित्य का रसास्वादन मिलता है लक्ष्य भाषा की जो साहित्यिक रचना में कमियां है वह अनुवाद के कारण पूरी होती है। इसी कारण अनुवाद की प्रक्रिया से परिचित होना क्रम प्राप्त है।

Copyright © 2025 The Author(s): This is an open-access article distributed under the terms of the Creative Commons Attribution 4.0 International License (CC BY-NC 4.0) which permits unrestricted use, distribution, and reproduction in any medium for non-commercial use provided the original author and source are credited.

अनुवाद का अर्थ :

अनुवाद यह संस्कृत भाषा का शब्द है। जिसमें 'अनु' का अर्थ है- पश्चात् या पीछे से और 'वद' का अर्थ है- कहना या बोलना इसका उत्पत्ति मूलक अर्थ होता है- पीछे से कहना, बाद में कहना, पुनः कथन, या पश्चात् कथन।

प्राचीन काल में भी भारत में गुरु शिष्य परंपरा में गुरु जो कहते थे शिष्य उसे फिर से दोहराते थे इस दोहराने की क्रिया को अनुवाद कहा जाता था। आज अनुवाद यानी एक भाषा की पाठ सामग्री, कविता या नाटक आदि का दूसरी भाषा में रूपांतरण करना अनुवाद कहलाता है।

प्राचीन काल से अब तक अनुवाद होते आ रहे हैं। पर इसके लिए जो शब्द प्रयुक्त किए गए थे वह अलग काल में अलग-अलग दिखाई देते हैं। जैसे की प्राचीन संस्कृत नाटकों के अनुवाद के लिए 'छाया' शब्द प्रयुक्त होता था। आगे

ISSN–2278-5655

AMIERJ Aarhat Multidisciplinary International Education Research Journal

Volume–XIV, Special Issues – III (a) Nov – Dec, 2025

OPEN ACCESS Original Research Article

"आधुनिक भारतीय आर्य भाषा काल में १४वीं-१५वीं सदी से हो ज्योतिष, वैद्यक, नीति, कथा-वार्ता तथा अन्य भी अनेक विषयों के संस्कृत ग्रन्थों के हिन्दी आदि में भाषांतर होने लगे थे, जिन्हें 'भाषा टीका' कहते थे।"[1] आगे चलकर फारसी के प्रभाव के कारण 'तर्जुमा' शब्द भी अनुवाद के लिए प्रचलित था।

अनुवाद की परिभाषा :

"एक भाषा में व्यक्त विचारों को, यथासंभव समान और सहज अभिव्यक्ति द्वारा दूसरी भाषा में व्यक्त करने का प्रयास अनुवाद है।"[2]

"स्रोत-भाषा में व्यक्त प्रतीक-व्यवस्था को लक्ष्य भाषा की सहज प्रतीक-व्यवस्था में रूपांतरित करने का कार्य अनुवाद है।"[3]

अनुवाद :

उपर्युक्त परिभाषा से स्पष्ट होता है कि एखाद भाषा से लिए गए शब्द, विचार व प्रतीक का दूसरी भाषा में समान तत्व के अनुसार न काम हो या ना ज्यादा हो रूपांतरण करना अनुवाद का प्रमुख उद्देश्य होता है सिर्फ प्रतीक का रूपांतरण या शब्द के बदले शब्द प्रतिशत अनुवाद नहीं है अनुवाद यानी पूरे पाठ का समग्र अर्थ का प्रभाव का रूपांतरण दूसरी भाषा में करना होता है तभी अनुवाद सफल माना जाता है। समग्र अर्थ से अभिप्रेरित है कि समग्र पाठ का अभिधार्थ, लक्ष्यार्थ व्यंग्यार्थ आदि अर्थों सहित पूर्ण समान अभिव्यक्ति में रूपांतरण।

अनुवाद करते समय सिर्फ शब्दों के बदले प्रति शब्द या वाक्य के बदले प्रति वाक्य नहीं है, बल्कि जो भाव या प्रभाव स्रोत भाषा के पाठक को महसूस होता है, उसी तरह का भाव या प्रभाव लक्ष्य भाषा का पाठक महसूस करता है उसे सफल अनुवाद कहते हैं। यानी स्रोत भाषा की पाठ सामग्री में आनंद का प्रभाव निर्माण हो रहा है उसी तरीके का लक्ष्य भाषा में भी आनंद का प्रभाव महसूस होना चाहिए ऐसा अनुवाद शत-प्रतिशत मूल पाठ सामग्री के समान माना जाता है।

आज विविध भाषा की सामग्री का अनुवाद हो रहा है। उसमें गद्य साहित्य, पद्य साहित्य, नाटक विधा, सूचना परख पाठ सामग्री भी आते हैं। प्रमुख तौर से देखा जाए तो अनुवाद एक जटिल प्रक्रिया है क्योंकि सिर्फ प्रतीक के बदले दूसरी भाषा का प्रतीक हमें रूपांतरित नहीं करना होता हैं। एखाद भाव को दूसरे भाषा के शब्दों में उसी लिहाजे में व्यक्त करना है, तो उसे समय बेहद ही परेशानी निर्माण होती है। पर अनुवाद असंभव नहीं है। मूल पाठ सामग्री जैसे सही भी हो जाता है। अनुवाद करने के लिए व्यक्ति के पास विशिष्ट प्रतिभा, नवीनता, चाहिए तभी अनुवाद स्पष्ट प्रभाव सहित हो जाएगा।

कविता :

कविता को अलौकिक माना जाता है। कहते हैं, कि इस संसार रूपी विष-वृक्ष के दो ही ऐसे मीठे फल है- काव्यामृत रसास्वादन और सज्जनों की संगति। कविता पढ़ने से आनंद की एवं शांति का भाव जाग्रत होता है। कविता की रचना करना एक प्रतिभावान व्यक्ति ही कर सकता है। कविता में कवि अपने उदात्त विचार, भावों, एवं अपनी संचित अनुभूतियों के सहारे शब्दों की रचना निर्माण करता है। कविता में कम शब्दों में ज्यादा भावों की अभिव्यक्ति होती है। कविता में सूक्ष्म और मार्मिक गूढ़ अभिव्यंजना होती है इसी कारण मनुष्य की तार्किक क्षमता बढ़ाने में मदद हो जाती है। "कविता ही हृदय

ISSN–2278-5655

AMIERJ Aarhat Multidisciplinary International Education Research Journal

Volume–XIV, Special Issues – III (a) Nov – Dec, 2025

OPEN ACCESS Original Research Article

को प्रकृत दशा में लाती है और जगत् के बीच क्रमशः उसका अधिकाधिक प्रसार करती हुई उसे मनुष्यत्व की उच्च भूमि पर ले जाती है।"[4]

कविता का अनुवाद :

कविता साहित्य का एक महत्वपूर्ण अंग है और कविता अनुवाद का उद्देश्य लक्ष्य भाषा में उच्च विचारों एवं भावना वाली उत्तम कृतियों की आपूर्ति की पूर्ति करना होता है। उसी के साथ में उच्च विचारों वाली रचना का आस्वादन लक्ष्य भाषा का पाठक कर सकता है। इसीलिए कविता का अनुवाद महत्वपूर्ण होता है। कविता का अनुवाद करते समय बेहद ही सतर्कता और सावधानी बरतनी पड़ती है क्योंकि कविता में सूक्ष्म और गूढ़ रहस्यों की को अभिव्यक्ति होती है। कविताओं का अनुवाद पर विशेषता तीन वर्ग के राय दिखाई देते हैं। एक वर्ग का मानना है, कविताओं का अनुवाद हो ही नहीं सकता। दूसरे वर्ग का मानना है की कविता का अनुवाद असंभव नहीं है, यह कठिन है पर अथक प्रयास से कविता अनुवाद किया जा सकता है। तीसरे वर्ग की राय यह है, की कविताओं का अनुवाद करने का अधिकार सिर्फ कवि और विद्वान लोगों को ही देना चाहिए। क्योंकि अच्छी समझ वाला व्यक्ति ही मूल कविता के रचनाकार के भावना से तादात्म्य स्थापित कर सकता है। ऐसा व्यक्ति ही अनुवाद को उचित न्याय दिला सकता है। और मूल कविता के निकट अनुवाद सफल कर सकता है। "इनके अतिरिक्त एक ऐसा वर्ग भी है जो यह मानता है कि कविता का मूल का-सा अनुवाद हो ही नहीं सकता। यह अन्तर सृजन की मनोभूमि और अनुवाद की मनोभूमि से उत्पन्न होता है। यही कारण है कि स्रोत-भाषा से लक्ष्य-भाषा में 'जैसी की तैसी' पुनर्प्रस्तुति नहीं हो सकती।"[5]

अन्य साहित्य विधा के अनुवाद की तुलना में कविता का अनुवाद पुनर्सृजन कहलाता है। कविता का अनुवाद करने वाला व्यक्ति कवि होता है और कवि का अपना व्यक्तित्व अनुवाद में अपने आप स्वाभाविक रूप में झलकता है। इसीलिए एक ही कविता का अन्य व्यक्ति द्वारा जब अनुवाद देखा जाता है तो उसमें काफी अंतर दिखाई देता है।

कविता छंदों में बंध होती है इसी कारण उसमें लय सौंदर्य में वृद्धि होती है। ऐसे समय में छंदों का अनुवाद करते समय अनुवादक के पास दो विकल्प मौजूद होते हैं एक "तो वह लक्ष्य भाषा में प्राप्त उपयुक्त छन्द में अनुवाद कर दे, पर ऐसा करने से मूल छन्द का सारा प्रभाव समाप्त हो जाएगा, या फिर वह स्रोत सामग्री के छन्द में ही अनुवाद करे।"[6] परंतु ऐसे समय में स्रोत भाषा के छंदों को लक्ष्य भाषा में ले आना कठिन होता है। उस समय कविता का लय सौंदर्य नष्ट हो जाता है। ऐसे समय पर अनुवादक लक्ष्य भाषा के शब्द-सौंदर्य एवं अर्थ-गांभीर्य पर अधिकार रखता है, तो मूल कविता के अनुसार लयात्मकता ले आ सकता है।

काव्य भाषा में शब्दों का भौगोलिक, सांस्कृतिक और सामाजिक संबंधों के कारण प्रचलित शब्द का एक विशिष्ट अर्थ बिंब होता है। पर लक्ष्य भाषा में उसके समान शब्दों का अर्थ बिंब अलग हो सकता है। कवि घिसे-पीटे शब्दों के बदले नए शब्दों का चुनाव कवि कविता में करता है, इसीलिए कविता के शब्दों में वजन बढ़ जाता है। अनेकार्थी शब्दों के कारण कविता में अलंकार का सौंदर्य निर्माण होता है, उदाहरण 'कनक-कनक ते सौ गुनी मादकता अधिकाय' - इस यमक अलंकार का लक्ष्य भाषा में मिलना कठिन हो जाता है। कविता को उत्तमोत्तम शब्दों की उत्तमोतम क्रम रचना मानी जाता है।

ISSN–2278-5655

AMIERJ Aarhat Multidisciplinary International Education Research Journal

Volume–XIV, Special Issues – III (a) Nov – Dec, 2025

OPEN ACCESS Original Research Article

कविता का अनुवाद करते समय अनुवादक को यह उत्तम शब्दों का क्रम भी अनुवादित कविता में लाना बेहद ही कठिन साबित होता। और ऐसा क्रम न प्राप्त होने पर मूल कविता का सौंदर्य लक्ष्य भाषा में अनूदित कविता में कम हो जाता है। "काव्यानुवाद का एक कठिन पहलू यह भी है कि मूल कविता को लक्ष्य-भाषा में लाते ही भाषा का नाद (साउंड), भाव (सेन्स), संगीत (म्यूजिक), अर्थ (मीनिंग) आदि का ग्रन्थ-बन्धन टूट जाता है, क्योंकि काव्य में अर्थ शब्द के अधीन रहता है। इसी अर्थ में काव्य को 'शब्द-विधान' कहा भी जाता रहा है।"[7] इसीलिए कविता का अनुवाद मूल नहीं होता अभी तो वह यथा संभव मूल कविता के निकट होता है या काफी दूर रहता है।

निष्कर्ष :

अनुवाद तो एक जटिल प्रक्रिया है ही परंतु कविता का अनुवाद बेहद ही कठिन होता है। एक सहृदय वाला कवि ही काव्य के भाव को पहचान सकता है उसके साथ तादात्म्य में स्थापित करके उसका अनुवाद कर सकता है। काव्य का जो भी अनुवाद हुआ है उसमें मूल कविता का जो लय – नाद सौंदर्य है वह सब प्रतिशत नहीं आ सकता है, पर अनुवाद कविता के मूलभाव के निकट हो सकता है। अनुवाद करते समय मूल कविता के प्रकृति के निकट अनुवाद करना उचित साबित होता है। अनुवाद करते समय काव्य नियमों के बंधन में बंधकर अनुवाद करने से मुक्त छंद में अनुवाद करना चाहिए। उसमें भी कठिनाई होती हैं तो गद्य में अनुवाद करना उचित होगा।

संदर्भ :

1. *भोलानाथ तिवारी, काव्यानुवाद, प्रकाशक शब्दकार 2203, दिल्ली-6 पृ.12*
2. *वहीं, पृ. 1*
3. *डॉ० रीतारानी पालीवाल, अनुवाद प्रक्रिया, ललित प्रकाशन 29/59-ए, विश्वास नगर शाहदरा, दिल्ली-110032 दूसरा संस्करण, 1982 पृ.14*
4. *रामचन्द्र शुक्ल, चिन्तामणि [विचारात्मक निबन्ध] पहला भाग, इंडियन प्रेस, लिमिटेड, प्रयाग। पृ.162*
5. *डॉ० रीतारानी पालीवाल, अनुवाद प्रक्रिया, ललित प्रकाशन 29/59-ए, गली नं० 11, विश्वास नगर शाहदरा, दिल्ली-110032 दूसरा संस्करण, 1982 पृ. 70*
6. *भोलानाथ तिवारी, काव्यानुवाद, शब्दकार 2203, दिल्ली-6 पृ.145*
7. *डॉ० रीतारानी पालीवाल, अनुवाद प्रक्रिया, ललित प्रकाशन 29/59-ए, विश्वास नगर शाहदरा, दिल्ली-110032 दूसरा संस्करण, 1982 पृ. 78*

Cite This Article:

जपकर म. द. एवं प्रो. डॉ. गायकवाड अ. द्रो. (2025) कविता और अनुवाद **In Aarhat Multidisciplinary International Education Research Journal**: Vol. XIV (Number VI, pp. 212–215).

ISSN–2278-5655

AMIERJ Aarhat Multidisciplinary International Education Research Journal

Volume–XIV, Special Issues – III (a) Nov – Dec, 2025

OPEN ACCESS Original Research Article

भारतीय ज्ञान परम्परा और अनुवाद

** जयवीर सिंह एवं ** डॉ. प्रवीण तुलशीराम तुपे,*

**शोधार्थी, ** शोध निर्देशक, स्नातकोत्तर हिन्दी विभाग एवं अनुसंधान केन्द्र, न्यू आर्ट्स, कॉमर्स ॲण्ड सायन्स कॉलेज, अहिल्यानगर (स्वशासी)*

शोध सार:

भारत एक सृष्टि प्रधान बहु-सांस्कृतिक देश है। गुरुदेव सृष्टि, मानसिक सृष्टि, आध्यात्मिक सृष्टि, भौतिक सृष्टि और कर्म सृष्टि के अध्ययन एवं अध्यापन की प्रक्रिया सृष्टि की प्रधानता को प्रमाणित करती है। भारतीय शिक्षा पद्धति, संस्कृति, परंपरा और सभ्यता पर केंद्रित एवं गुरु-शिष्य परम्परा पर आधारित है, जो व्यक्ति के आत्मिक, सामाजिक और आर्थिक विकास को दिशा देती है। भारतीय शिक्षा पद्धति गुरु प्रधान (विद्यापति मानव) शिष्य माध्यम और ज्ञान, मूल्य एवं कौशल तत्व हैं, शिष्य अपने गुरु से तत्वों को ग्रहण करके समाज में बाँटने का काम करते हैं। जबकि पश्चिमी शिक्षा पद्धति में तकनीकी प्रधान (तकनीकपति व्यक्ति) व्यक्ति माध्यम और ज्ञान एवं कौशल तत्व हैं, इन तत्वों को तकनीकी व्यक्ति द्वारा प्राप्त करके व्यक्ति अपने जीवन का विस्तार करता है। भारतीय समाज में व्यक्ति के ज्ञान, मूल्यों और कौशल पर जोर दिया जाता है, जबकि पश्चिमी समाज में व्यक्ति के ज्ञान और कौशल पर ही बल दिया जाता है। इसलिए पश्चिमी शिक्षा पद्धति विस्तारवादी है, जबकि भारतीय शिक्षा पद्धति समाजवादी है। पश्चिमी शिक्षा पद्धति में मूल्यों का कोई स्थान नहीं है। आधुनिकता से आकर्षित भारतीय समाज के लोगों का पश्चिमी शिक्षा पद्धति की ओर झुकाव उनके सामाजिक एवं मानवीय मूल्यों को प्रभावित कर रहा है। भारतीय समाज के आचरणवादी एवं सम्माननीय शब्दों का पश्चिमी भाषा में अनुवाद, आधुनिक व्यक्ति को पश्चिमी परम्परा की ओर खींच रहा है, जिससे भारतीय समाज प्रभावित हो रहा है।

प्रमुख-शब्द: *अनुवाद, संस्कृति, परंपरा, मूल्य, गुरु-शिष्य, पश्चिमी भाषा।*

Copyright © 2025 The Author(s): This is an open-access article distributed under the terms of the Creative Commons Attribution 4.0 International License (CC BY-NC 4.0) which permits unrestricted use, distribution, and reproduction in any medium for non-commercial use provided the original author and source are credited.

परिचय:

भारतीय ज्ञान परंपरा विश्व की सर्वश्रेष्ठ और सबसे प्राचीन ज्ञान परंपराओं में से एक है, जिसे मौजूदा भाषाओं के बंद दरवाज़ों को खोलकर बहार निकालने का काम अनुवादकों ने किया है। अनुवादकों ने 'रामचरितमानस' जैसे महाकाव्यों को, जो भारतीय ज्ञान परंपरा की धरोहर है, देशी और विदेशी भाषाओं में अनुवाद करके जन-जन तक पहुँचाने का कार्य किया है। अनुवाद दो विभिन्न भाषाओं के समाजों के बीच आपसी संवाद और भागीदारी के रूप में कार्य करता है। अनुवाद के माध्यम से विभिन्न भाषाओं के लोगों के बीच संवाद, समझ

ISSN–2278-5655

AMIERJ Aarhat Multidisciplinary International Education Research Journal

Volume–XIV, Special Issues – III (a) Nov – Dec, 2025

OPEN ACCESS Original Research Article

और समन्वय को सरल बनाने में आसानी हुई है। अनुवाद प्रक्रिया का देशी और विदेशी संस्कृतियों और ज्ञान परंपराओं का आदान-प्रदान करने में बड़ा योगदान है। अनुवाद से संस्कृति, परम्परा, सभ्यता और साहित्यिक ज्ञान का आदान-प्रदान बड़े पैमाने पर हुआ है, जिससे विभिन्न संस्कृतियों के बीच समझ और सहयोग में वृद्धि हो रही है।

शोध-आलेख:

अनुवाद दो भिन्न भाषाओं के बीच शाब्दिक, वैचारिक और साहित्यिक संबंध स्थापित करने की प्रक्रिया है। अनुवाद किसी अनुवादित भाषा के मौलिक तत्वों से परे हो सकता है। विश्व कप विजेता आस्ट्रेलियाई क्रिकेट खिलाड़ी ट्रॉफ़ी के ऊपर पैर रखकर फ़ोटो खिंचवाते हैं, जो भारतीय संस्कृति के अनुरूप नहीं है। क्योंकि भारतीय संस्कृति में भारतीय खिलाड़ी ट्रॉफ़ी को हृदय से लगाकर सम्मान करने की प्रकृति है। लेकिन आस्ट्रेलिया की अपनी संस्कृति है, वह ट्रॉफ़ी पर पैर रखना अपनी प्रकृति के अनुरूप समझते हैं, जबकि भारतीय संस्कृति के विपरीत है। क्योंकि "भारतीय संस्कृति में व्यक्ति के रोजमर्रा के जीवन में धर्म बहुत गहरे तक रचा-बसा है। लेकिन पाश्चात्य परंपरा में ऐसा नहीं है उदाहरण के लिए, 'मन चंगा तो कठौती में गंगा', इसके लिए पाश्चात्य संस्कृति में कोई विकल्प नहीं होगा, क्योंकि नदी उनकी संस्कृति का हिस्सा नहीं है। भारतीयों के लिए तो गंगा माँ है। उसका जल भारतीय परंपरा में बहुत पवित्र माना जाता है।"[1] इस प्रकार भारतीय संस्कृति के सम्मानित शब्दों का अनुवाद विदेशी लोग अपनी संस्कृति के अनुरूप करेंगे और विदेशी संस्कृति के सम्मानित शब्दों का अनुवाद भारतीय लोग अपनी संस्कृति के अनुरूप करेंगे। यदि भारतीय समाज विदेशी संस्कृति के अनुरूप अनुवादित शब्दों को अपनाएगा तो भारतीय संस्कृति का प्रभावित होना स्वाभाविक है। क्योंकि उसका अर्थ और भावार्थ अलग ही होंगे। भारतीय संस्कृति में गुरु को भगवान की उपाधि दी गई है, जबकि विदेशी संस्कृति में गुरु को भगवान की दृष्टि से न देखकर टीचर, कोच, मेनटॉर, गाइड या एक विस्तारवादी विद्वान के रूप में देखते हैं, जो भारतीय संस्कृति के अनुरूप नहीं समझे जाते। "जर्मनी के शासनाध्यक्ष को 'Chancellor' कहा जाता है। उसका हिंदी में अनुवाद 'कुलाध्यक्ष' आदि न करके लिप्यंतरित रूप में (अर्थात् चांसलर) ही लिखा जाना चाहिए। ('कुलाध्यक्ष' शब्द तो विश्वविद्यालय के संदर्भ में University's Chancellor के लिए प्रयुक्त होता है।)"[2] जो व्यक्ति को समझने में भ्रमित कर सकता है। इसलिए भारतीय गुरु-शिष्य परम्परा के पारंपरिक शब्दों का विदेशी संस्कृति में लिप्यन्तरण किया जाना चाहिए, परन्तु ऐसा करना असंभव हो सकता है। क्योंकि सभी की अपनी-अपनी संस्कृति प्रधान है। भारतीय समाज में चाचा, काका, ताऊ, मौसा, मामा, फूफा और ससुर जैसे पिता तुल्य रिश्तेदारों को 'अंकल'; चाची, काकी, ताई, मौसी, मामी, फूफी और सास जैसे माता तुल्य रिश्तेदारों को 'ऑन्टी' कहने का प्रचलन तेजी फैल रहा है। गुरु माँ, महोदया, आदरणीया, बहन जी, श्रीमती, किसी भी विभाग की कर्मचारी आदि को पश्चिमी अनुवादित शब्द 'मैम या मैडम' से संबोधित किया जाने लगा है। जबकि गुरु, आदरणीय, महोदय, श्रीमान, दुकानदार, ड्राइवर, किसी भी विभाग के कर्मचारी (चपरासी से लेकर शीर्ष अधिकारी तक) आदि को पश्चिमी अनुवादित शब्द 'सर' से संबोधित किया जाने लगा है। भारतीय समाज पर पश्चिमी अनुवादित शब्दों ने पूरी तरह से अपना प्रभाव जमा लिया है। अनुवादित पाश्चात्य

ISSN–2278-5655

AMIERJ Aarhat Multidisciplinary International Education Research Journal

Volume–XIV, Special Issues – III (a) Nov – Dec, 2025

OPEN ACCESS Original Research Article

शब्दों ने सम्मानित करने की नयी परम्परा को जन्म दे दिया है, जो पश्चिमिकरण के प्रभाव को दर्शाता है। "भारतीय संस्कृति 'वसुधैव कुटुम्बकम्' का भाव रखती है, उसमें परिवार में व्यापकता देखी जा सकती है। यथा दादा-दादी, माता-पिता के साथ-साथ चाचा- चाची, बुआ-फूफा, मामा-मामी, नाना-नानी, साला-सलहज आदि रिश्तों के कई नाम देखे जा सकते है, किंतु अंग्रेज़ी में father, mother, grand father, grand mother, father-in- law, mother in law, brother in law, sister in law आदि में सब समा जाता है। चचेरे या ममेरे भाई अंग्रेज़ी में cousion मात्र बन कर रह जाते हैं। चाचा, ताया, काका, मामा आदि सभी uncle शब्द में ही वर्णित हो जाते हैं। हिंदी से अंग्रेज़ी में ये अनुवाद ठीक है, किंतु अंग्रेज़ी से हिंदी में करते हुए अनुवादक को रिश्ते का ख़ास ध्यान रखना जरुरी है।"[3] जो भारतीय संस्कारों पर आघात करते हैं। पश्चिमी समाज की अपनी संस्कृति है, वहाँ चाचा-चाची, ताऊ-ताई, काका-काकी, मौसा-मौसी, मामा-मामी, सास-ससुर, फूफा-फूफी जैसे रिश्तों का कोई अस्तित्व नहीं है। परन्तु भारतीय समाज में आज भी रिश्तेदारी के स्वरूप का अस्तित्व मौजूद है, जो पश्चिमिकरण से प्रभावित हो रहा है। महात्मा गाँधी ने पश्चिमी संस्कृति के अनावश्यक प्रभाव को देखते हुए कहा था कि "मैं नहीं चाहता कि मेरा घर चारों ओर दीवारों से घिरा हुआ हो और न ही मैं यह चाहता हूँ कि मेरी खिड़कियाँ कसकर बंद हो। मैं तो संसार की सभी संस्कृतियों को अपने घर में आने का निमंत्रण देता हूँ। लेकिन किसी ऐसी संस्कृति जिससे मेरे पाँव उखड़ जाएँ, मुझे स्वीकार नहीं है।"[4]

अनुवाद एक भाषा को दूसरी भाषा में बदलने वाली प्रक्रिया है न कि किसी संस्कृति को बदलने की है। हाँ, अनुवाद दूसरी संस्कृति को जानने, समझने और परिभाषित करने के लिए महत्त्वपूर्ण प्रक्रिया है। किसी संस्कृति एवं पारंपरिक शब्दों के शाब्दिक अनुवाद में लिप्यन्तरण करने की प्रक्रिया को अपनाया जाना चाहिए, जिससे संस्कृति किसी दूसरी भाषा में बदलते स्वरूप से प्रभावित नहीं होगी। अनुवाद करते समय अनुवादकों को भी सामाजिक समस्याओं का सामना करना पड़ता है। यदि सामाजिक कहावत का उदाहरण लेते हैं तो भारतीय भाषा में 'गधा' और 'उल्लू' शब्द व्यक्ति को 'मूर्ख' कहने के प्रतीक है। जबकि पश्चिमी समाज में यह 'विवेक' और 'न्यायबोध' का प्रतीक माना जाता है।"[5]

अनुवाद दो शब्दों का संयोजित शब्द रूप है जिसे संस्कृत से लिया गया है, जिसमें 'अनु' का अर्थ पीछे और 'वाद' का अर्थ बोलना होता है। "संस्कृत में अनुवाद शब्द का उपयोग गुरु द्वारा दिए गए वक्तव्य को शिष्य द्वारा दुहराए जाने या पुनः कथन आदि के संदर्भ में किया जाता है। संस्कृत के वद् धातु से अनुवाद शब्द की उत्पत्ति हुई, जिसका अर्थ बोलना होता है।"[6] अनुवाद भक्तिकालीन गुरुओं के द्वारा अपनाई जाने वाली प्रक्रिया रही है, जो अपने शिष्यों और अनुयायियों को सामाजिक और आध्यात्मिक शिक्षा देते समय उन्हीं की भाषा का उपयोग करते थे। संत-कवि नामदेव मराठी भाषी थे, जिन्होंने महाराष्ट्र से लेकर पंजाब तक राजभाषा में शिक्षा-दीक्षा दी, क्योंकि उत्तर भारत के लोगों को मराठी भाषा नहीं आती थी तो उन्होंने अपने अभंगों को हिन्दी भाषा में अनुवाद या हिन्दी में बोलकर लोगों का ज्ञानवर्धन किया। अनुवाद किसी संस्कृति, परम्परा और सभ्यता के लिए तब नुक़सानदायक हो जाता है, जब उस संस्कृति के वास्तविक स्वरूप को बदलने का प्रयास किया जाता है। उदाहरण के लिए

ISSN–2278-5655

AMIERJ Aarhat Multidisciplinary International Education Research Journal

Volume–XIV, Special Issues – III (a) Nov – Dec, 2025

OPEN ACCESS Original Research Article

जैसे भारतीय गुरु-शिष्य परम्परा में गुरु सर्वोच्च विद्यापति है। आज गुरु को 'सर' कहकर संबोधित किया जाता है, जो अटपटा सा लगता है। क्योंकि 'सर' तो एक अनजान व्यक्ति को सम्मान देने के लिए बोला जाता है। ऐसे शब्दों का उपयोग ही भारतीय संस्कृति और परम्पराओं को प्रभावित कर रहा है, जिसके ज़िम्मेदार स्वयं भारतीय समाज के लोग ही हैं, जो विपरीत दिशा में जा रहे हैं। पश्चिमिकरण का प्रभाव भारतीय समाज के मूल्यों के ह्रास को दर्शाता है।

स्पर्श प्रौद्योगिकी युग ने अनुवाद को विश्व के साथ जोड़ने में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई है। आज विश्व के सभी देश अनुवाद के माध्यम से उपलब्धियाँ प्राप्त कर रहे हैं। साहित्यिक प्रगति में भी अनुवाद ने अहम भूमिका निभायी है। अनुवाद ने एक साहित्य को दूसरी भाषा के साहित्य में परिवर्तित किया है, जिससे अनुवादित भाषा के साहित्यों में वृद्धि हुई है। अनुवाद दो संस्कृतियों के बीच एक सेतु के रूप में विश्व समुदाय के सामने आया है, जो अपरिचित ज्ञान को परिचित ज्ञान में परिवर्तित करने की क्षमता रखता है। इस संदर्भ में अनुवादक एवं दिल्ली विश्वविद्यालय के पूर्व प्रो. डॉ. पूरनचंद टंडन कहते हैं कि "दो संस्कृतियों, परिवेशों और भाषाओं के बीच का प्यारा संवाद ही भिन्न को अभिन्न बनाने का सूत्र बनता है, अपरिचित को परिचित बनाने का प्रयास करता है।"[7] जिससे अपरिचित ज्ञान प्राप्त होता है। अनुवाद एक जटिल, कृत्रिम, आवश्यकता जनित और एक दृष्टिकोण से सकारात्मक एवं दूसरे दृष्टिकोण से नकारात्मक प्रक्रिया भी है, जिसमें अनुवादक की भूमिका महत्त्वपूर्ण हो जाती है। किसी विषय का अनुवाद करने के लिए अनुवादक को उन दोनों भाषाओं का अच्छा ज्ञान होना आवश्यक है, जिस भाषा में अनुवाद किया जाना है और जिस भाषा का अनुवाद करना है। अन्यथा किसी विषय को लेकर गलत अनुवाद वाद-विवाद को उत्पन्न कर सकता है, अर्थात सकारात्मक के बजाय नकारात्मक प्रभाव डाल सकता है। इसलिए अनुवादकों को वाद-विवाद से बचने के लिए सावधानी बरतने की आवश्यकता है यदि "कहीं 'spoils system' वाक्यांश आ जाता है तो अनुवादक अगर संदर्भ को जाने बिना अनुवाद करने का प्रयत्न करे तो वह इसका कदाचित् 'भ्रष्ट पद्धति' अनुवाद कर देगा अथवा इसी प्रकार के भाव के व्यक्त करने वाले हिंदी वाक्यांश रख देगा। जबकि, इसकी सही अभिव्यंजना के लिए जरूरी है कि अनुवादक 1829 में अमेरिका के निर्वाचित राष्ट्रपति एंड्रू जैक्सन की राजनीतिक विचारधारा से परिचित हो। अपने इसी बोध के आधार पर अनुवादक इसका 'इनामी पद्धति' अथवा 'पुरस्कार पद्धति' अनुवाद करेगा क्योंकि राष्ट्रपति जैक्सन ने चुनाव में पार्टी के लिए कार्यरत निष्ठावान कार्यकर्ताओं को पब्लिक ऑफिसों में नियुक्त करके उन्हें पुरस्कृत किया था और इस सिस्टम को 'spoils system' का नाम दिया था।"[8]

अनुवाद के सकारात्मक प्रभाव दो विभिन्न क्षेत्रों के लोगों के बीच ज्ञान और संवाद में वृद्धि करते हैं। सकारात्मक अनुवाद के माध्यम से विश्व के सांस्कृतिक विचारों और ज्ञान का आदान-प्रदान हुआ है, जिससे इसकी समृद्धि और विविधता में भी वृद्धि हुई है। जबकि अनुवाद का नकारात्मक प्रभाव दो विभिन्न क्षेत्रों के लोगों के बीच उस संस्कृति और संवाद को कमजोर करके अपनी संस्कृति और संवाद में वृद्धि कर सकते हैं। स्पर्श प्रौद्योगिकी युग में अनुचित अनुवाद भारतीय संस्कृति और गुरु-शिष्य परंपरा दोनों को प्रभावित कर रहा है। क्योंकि भारतीय ज्ञान और मूल्यों की गलत व्याख्या से आध्यात्मिक

ISSN–2278-5655

AMIERJ Aarhat Multidisciplinary International Education Research Journal

Volume–XIV, Special Issues – III (a) Nov – Dec, 2025

OPEN ACCESS Original Research Article

और सांस्कृतिक नुकसान होता है और ज्ञान के हस्तांतरण को भी बाधित करता है, जिससे परंपराओं की अखंडता कमजोर होती है। अनुचित अनुवाद मूल तथ्यों के अर्थ खोता चला जाता है। इसलिए अनुवादकों से समाज को बड़ी अपेक्षा रहती है, जो अपनी सूझ-बूझ से काम करते हैं। "अंग्रेज़ी शब्द 'charge' का राजनीति विज्ञान में 'आरोप या आरोप लगाना' अर्थ है, जबकि इतिहास में 'कीर्ति चिह्न' और पुस्तकालय विज्ञान में 'निर्गम लेखा'। प्रशासन के क्षेत्र में यह 'प्रभार/खर्च/व्यय' अथवा 'कार्यभार' के लिए प्रयुक्त होता है और वाणिज्य में 'प्रभार/खर्च/व्यय' के अलावा 'गहन' के अर्थ में भी प्रयुक्त किया जाता है।"[9] ठीक इसी प्रकार भारतीय गुरु-शिष्य परम्परा के पारम्परिक सम्बोधित करने वाले शब्दों का अलग अर्थ पाश्चात्य समाज में प्रयुक्त किया जाता है, जिन्हें भारतीय समाज स्वीकार कर रहा है।

गलत अनुवाद का उदाहरण: संयोजक डॉ. वी.वेंकटेश्वर राव, से.नि. सहायक महाप्रबंधक, केनरा बैंक द्वारा संयोजित गुगल मीट कार्यक्रम 'राजभाषा चौपाल' में भारत सरकार में विद्यमान बाध्यकारी द्विभाषिकता: अधिकारियों के कर्तव्य एवं दायित्व, विषय पर 25 अक्टूबर 2025 को श्री चन्द्र गोपाल शर्मा, उप महाप्रबंधक (रा.भा.), से.नि. पूर्व रेलवे, कोलकाता एवं पूर्व उपनिदेशक, गृह मंत्रालय, क्षेत्रीय कार्यान्वयन कार्यालय, भोपाल द्वारा दिए गए अपने वक्तव्य में राजस्थान सरकार के अनुवादक अधिकारी द्वारा अंग्रेज़ी में दिए गए खाने के तेल (Non essential oils) के नाम का हिन्दी में गलत अनुवाद "अनावश्यक तेल" करने से खाने के तेल व्यापारियों ने 'कर' (टैक्स) भरने से मना कर दिया। कर भरने के विवाद को लेकर इस घटना को अदालत में चुनौती दी गई, परंतु अदालत ने भी व्यापारियों के पक्ष में निर्णय देते हुए सरकार को आदेश दिया कि जब-तक उत्पाद का सही अनुवाद करके दोबारा घोषणा नहीं की जाती है, तब-तक व्यापारी कोई 'कर' नहीं भरेंगे। सरकार ने दोबारा खाने के तेल का सही अनुवाद "गंध रहित तेल" करके घोषणा की तब जाकर व्यापारियों ने कर देना शुरू किया। लेकिन तब-तक सरकार का करोड़ों रुपये का नुकसान हो चुका था। एक अधिकारी के द्वारा एक शब्द के गलत अनुवाद ने सरकार के करोड़ों रुपए पानी में बहा दिये। क्योंकि अनुवादक को खाने के तेल और अंग्रेज़ी में दिए गए नाम के विषयों का ज्ञान नहीं था। जबकि अनुवादक को दोनों विषयों का ज्ञान होना चाहिए था। एक शब्द के गलत अनुवाद ने सरकार का करोड़ों रुपये का नुकसान कर दिया।

निष्कर्ष:

अनुवाद आधुनिक व्यक्ति की बैशाखी है, जिसके बिना स्पर्श प्रौद्योगिकी युग आगे नहीं बढ़ सकता। आधुनिक व्यक्ति अनुवाद के सहारे विश्व जगत पर विजय प्राप्त कर रहा है। क्योंकि अनुवाद ने विश्व समुदाय पर अपना प्रभाव छोड़ा है। स्पर्श प्रौद्योगिकी के विकास के पीछे भी अनुवाद की ही बड़ी भूमिका रही है। परंतु जहाँ अनुवाद ने दो भिन्न भाषाओं और संस्कृति के व्यक्तियों को एक-दूसरे से जोड़ने का काम किया है, वहीं एक-दूसरे की संस्कृतियों को भी प्रभावित किया है। जिसका कारण अपने हितार्थ साधना है, न कि दूसरी संस्कृति की भावनाओं को समझना है। पश्चिमी व्यक्ति को अपनी संस्कृति से प्रेम होगा न कि भारतीय संस्कृति से, तो वह अपने हितार्थ के साधन जुटाने के लिए अपनी भाषा और अपनी संस्कृति के अनुसार ही अनुवाद करेगा। परंतु भारतीय संस्कृति की सुरक्षा की ज़िम्मेदारी किसकी है, इस सवाल पर विचार

ISSN–2278-5655

AMIERJ Aarhat Multidisciplinary International Education Research Journal

Volume–XIV, Special Issues – III (a) Nov – Dec, 2025

OPEN ACCESS Original Research Article

कौन करेगा? भारतीय समाज के लोगों की ही ज़िम्मेदारी है, कि वह पश्चिमी संस्कृति के प्रभाव से अपनी संस्कृति को कैसे बचाकर रख सकता है? जो भारतीय संस्कृति के पारंपरिक संस्कारों का ह्रास कर रही है। पश्चिमी भाषाओं में अनुवादित शब्द भारतीय गुरु-शिष्य परम्परा के मूल्यों और शिक्षा प्रणाली दोनों को प्रभावित कर रहे हैं।

संदर्भ:

1. *अपूर्वा, समाज, संस्कृति और भारतीय ज्ञान परंपरा का अनुवाद: चुनौतियाँ और समाधान, नीता गुप्ता व शुचिता मीतल (संपा.), प्रो. पूरनचंद टंडन (अतिथि संपा.), अनुवाद (संयुक्तांक: 201-202), भारतीय ज्ञान-परंपरा और अनुवाद (विशेषांक:भाग-1), नई दिल्ली, भारतीय अनुवाद परिषद, संस्करण: अक्टूबर 2024-मार्च 2025, पृ. 110.*
2. *सेठी, डॉ. हरीश कुमार, सामाजिक विज्ञान साहित्य: अनुवाद कर्म की चुनौतियाँ, नीता गुप्ता व शुचिता मीतल (संपा.), प्रो. पूरनचंद टंडन (अतिथि संपा.), अनुवाद (संयुक्तांक: 201-202), भारतीय ज्ञान-परंपरा और अनुवाद (विशेषांक:भाग-1), नई दिल्ली, भारतीय अनुवाद परिषद, संस्करण: अक्टूबर 2024-मार्च 2025, पृ. 41.*
3. *शर्मा, डॉ. कुलभूषण, सामाजिक-सांस्कृतिक संदर्भ और अनुवाद, नीता गुप्ता व शुचिता मीतल (संपा.), प्रो. पूरनचंद टंडन (अतिथि संपा.), अनुवाद (संयुक्तांक: 201-202), भारतीय ज्ञान-परंपरा और अनुवाद (विशेषांक:भाग-1), नई दिल्ली, भारतीय अनुवाद परिषद, संस्करण: अक्टूबर 2024-मार्च 2025, पृ. 53.*
4. *Dr. Rohit Singh Chauhan, Feb 25, 2021, Education Hindi Society, मैडम शब्द के इतिहास एवं उसके प्रचलन की कहानी,*
5. *https://www.youthkiawaaz.com/2021/02/the-story-of-the-history-and-trend-of-the-word-madam-in-hindi/*
6. *सेठी, डॉ. हरीश कुमार, सामाजिक विज्ञान साहित्य: अनुवाद कर्म की चुनौतियाँ, नीता गुप्ता व शुचिता मीतल (संपा.), प्रो. पूरनचंद टंडन (अतिथि संपा.), अनुवाद (संयुक्तांक: 201-202), भारतीय ज्ञान-परंपरा और अनुवाद (विशेषांक:भाग-1), नई दिल्ली, भारतीय अनुवाद परिषद, संस्करण: अक्टूबर 2024-मार्च 2025, पृ. 41.*
7. *अनुवाद, विकिपीडिया*
8. *https://hi.wikipedia.org/wiki/%E0%A4%85%E0%A4%A8%E0%A5%81%E0%A4%B5%E0%A4%BE%E0%A4%A6*
9. *अपूर्वा, समाज, संस्कृति और भारतीय ज्ञान परंपरा का अनुवाद: चुनौतियाँ और समाधान, नीता गुप्ता व शुचिता मीतल (संपा.), प्रो. पूरनचंद टंडन (अतिथि संपा.), अनुवाद (संयुक्तांक: 201-202), भारतीय ज्ञान-परंपरा और अनुवाद (विशेषांक:भाग-1), नई दिल्ली, भारतीय अनुवाद परिषद, संस्करण: अक्टूबर 2024-मार्च 2025, पृ. 110.*

ISSN–2278-5655

AMIERJ Aarhat Multidisciplinary International Education Research Journal

Volume–XIV, Special Issues – III (a) Nov – Dec, 2025

OPEN ACCESS Original Research Article

10. सेठी, डॉ. हरीश कुमार, सामाजिक विज्ञान साहित्य: अनुवाद कर्म की चुनौतियाँ, नीता गुप्ता व शुचिता मीतल (संपा.), प्रो. पूरनचंद टंडन (अतिथि संपा.), अनुवाद (संयुक्तांक: 201-202), भारतीय ज्ञान-परंपरा और अनुवाद (विशेषांक:भाग-1), नई दिल्ली, भारतीय अनुवाद परिषद, संस्करण: अक्टूबर 2024-मार्च 2025, पृ. 40.

11. उपरिवत्, पृ. 37

Cite This Article:

सिंह ज. एवं डॉ. तुपे प्र. तु. (2025) भारतीय ज्ञान परम्परा और अनुवाद **In Aarhat Multidisciplinary International Education Research Journal**: Vol. XIV (Number VI, pp. 216–222).

ISSN–2278-5655

AMIERJ Aarhat Multidisciplinary International Education Research Journal

Volume–XIV, Special Issues – III (a) Nov – Dec, 2025

OPEN ACCESS Original Research Article

हिंदी काव्यानुवाद में निर्मित अनुवाद की समस्याएँ व समाधान

(विशेष संदर्भ विंदा करंदीकर की कविता)

* प्रा. प्रतिक्षा शिवाजी तनपुरे,

सहायक प्राध्यापक , हिंदी विभाग, न्यू आर्ट्स ,कॉमर्स ॲण्ड सायन्स कॉलेज पारनेर, जिला. अहिल्यानगर, पिन 414302

आधुनिक युग में अनुवाद के महत्ता व उपादेयता को विश्वभर में स्वीकारा जा चुका है। वैदिक युग के 'पुन : कथन से लेकर आज के ट्रांसलेशन तक आते-आते अनुवाद अपने स्वरूप और अर्थ में बदलाव लाने के साथ-साथ अपने बहुमुखी बहुआयामी प्रयोजन को सिद्ध कर चुका है। प्राचीन काल में स्वांत : सुखाय माना जाने वाला अनुवाद कर्म आज संगठित व्यवसाय का मुख्य आधार बन गया है। बीसवीं शताब्दी के अवसान और इक्कीसवीं सदी के स्वागत के बीच आज जीवन का कोई भी ऐसा क्षेत्र नहीं है जहाँ पर हम चिंतन और व्यवहार के स्तर पर अनुवाद के आग्रही न हों । भारत में अनुवाद की परंपरा पुरानी है। किंतु अनुवाद को जो महत्व 21वीं सदी के उत्तरार्ध में प्राप्त हुआ वह पहले नहीं हुआ था। हमारे देश में अनुवाद का महत्व प्राचीन काल से स्वीकृत है ।प्रो. जी. गोपीनाथन ने ठीक दी लक्ष्य किया था कि " अनुवाद आज की व्यक्ति की सामाजिक आवश्यकता बन गया है आज के सिमटते हुए संसार में संप्रेषण माध्यम के रूप में अनुवाद भी अपना निश्चित योगदान दे रहा है ।''1

Copyright © 2025 The Author(s): This is an open-access article distributed under the terms of the Creative Commons Attribution 4.0 International License (CC BY-NC 4.0) which permits unrestricted use, distribution, and reproduction in any medium for non-commercial use provided the original author and source are credited.

भारत जैसे बहुभाषी देश में अनुवाद की उपादेयता स्वयं सिद्ध है। भारत के विभिन्न प्रदेशों के साहित्य में निहित मूलभूत एकता के स्वरूप को निखारने के लिए अनुवाद ही एकमात्र साधन है। इस तरह अनुवाद द्वारा मानव की एकता को रोकने वाली भौगोलिक और भाषायी दीवारों को ढहाकर विश्वमैत्री को और समृद्ध बना सकते हैं । अनुवाद आधुनिक ज्ञान - विनिमय की अनिवार्य प्रक्रिया है। भाषाओं के पार अर्थ, अनुभूति और संवेदना ले जाने का कार्य जितना आवश्यक है, उतना ही चुनौती पूर्ण भी। विशेषत: काव्यानुवाद जहाँ भाषा केवल सूचना वहन नहीं करती, बल्कि रुपात्मक सौंदर्य, सांस्कृतिक संकेत ,ध्वन्यात्मक संगीत ,अंतर्ध्वनियों और बहुस्तरीय अर्थों को भी साथ लिए होती है ।यह अनुवादक के लिए अत्यंत जटिल कार्य बन जाता है।

भारतीय भाषाओं में काव्यानुवाद का प्रश्न तुलनात्मक साहित्य, अनुवाद अध्ययन तथा बहुभाषिक साहित्य परंपरा का एक महत्वपूर्ण क्षेत्र है। " गद्य साहित्य के अनुवाद की

ISSN–2278-5655

AMIERJ Aarhat Multidisciplinary International Education Research Journal

Volume–XIV, Special Issues – III (a) Nov – Dec, 2025

OPEN ACCESS Original Research Article

अपेक्षा काव्यानुवाद की प्रक्रिया कई अर्थों में भिन्न होती है। अनुवादक तथा सर्वव्यापकता की आकांक्षा लिए कविता का अनुवाद करना चाहता है। गद्य साहित्य के अनुवाद की अपेक्षा वह अधिक स्वतंत्रता तथा छूट लेता है। संपूर्ण कविता को लक्ष्य भाषा में उतरने के लिए भाषिक स्तर का विचलन भी उसे मान्य होता है। परंतु कविता का सटीक अनुवाद करने का आनंद तथा श्रेय उसे शायद ही मिलता है। यह अनुवादक का दोष नहीं बल्कि कविता की सशक्तता है। ''2 कवि जब कविता लिखता है तब उसके काव्य लेखन में बहुत कुछ छूट जाता है। इस तरह काव्यानुवाद में भी बहुत कुछ छूट जाता है। फिर भी हम कविता की ओर आकर्षित होते हैं तथा काव्य अनुवाद करते हैं।

मराठी के साहित्यकार मामा वरेकर कहा हैं कि , " लेखक होना आसान है, किंतु अनुवादक होना अत्यंत कठिन है ।''3 साहित्यकार को एक भाषा आने से भी वह साहित्य लिख सकता है ,किंतु अनुवादक को दो भाषा का समांतर ज्ञान होना चाहिए। तभी वह अनुवाद का कार्य कर सकता है ।काव्यानुवाद करते समय अनुवाद को स्रोत भाषा और लक्ष्य भाषा का ज्ञान होना अनिवार्य बन जाता है, क्योंकि अनुवादक को अनुवाद करने के लिए जिस मूल भाषा को चुनना पड़ता है ,उस भाषा को स्रोत भाषा कहा जाता है और अनुवादक जी चुनी हुई मूल भाषा का दूसरी भाषा में अनुवाद करता है, उसको लक्ष्य भाषा कहा जाता है। अनुवाद की प्रक्रिया को स्रोत भाषा से लक्ष्य भाषा में पूरा करने के लिए डॉ .भोलानाथ तिवारी द्वारा अनुवाद प्रक्रिया के पाँच सोपान बताए हैं, पाठ- पठन, पाठ विश्लेषण ,भाषांतरण ,समायोजन, मूल से तुलना आदि ।इन्हीं सोपानों के कारण ही अनुवादक मूल कृति का सामाजिक, सांस्कृतिक मान्यता आदि दृष्टियों का अनुदित पाठ में अनुवाद को युक्त हो जाता है ।इस संबंध में कृष्ण कुमार गोस्वामी लिखते हैं कि , " सृजनात्मक साहित्य में विषयवस्तु (क्या)और शैली (कैसे) दोनों पर दृष्टि रहती है ।इसमें संदेह और शैली दोनों का विशेष कर शैली का अधिक महत्व होता है। इसमें संदेह संकल्पनात्मक अर्थ की अपेक्षा भावात्मक अर्थ का विशेष योगदान रहता है। इसमें भाषा और सूक्ष्म अर्थों पर लेखक का अधिकार रहता है। इसीलिए कविता के अनुवाद में सुर -ताल नाद सौंदर्य संरचनात्मक वैशिष्ट्य शब्द संस्कार और कविता का प्रतिकन आदि तत्व निर्मित हो जाते हैं।''4

इस संदर्भ में मराठी के सुप्रसिद्ध कवि विंदा करंदीकर की कविता का अत्यंत उल्लेखनीय है ।विंदा की कविता गहन दार्शनिक प्रश्नों ,मानवीय संवेदनाओं ,आत्मअन्वेषण जीवन दृष्टि और प्रयोगधर्मिता से निर्मित है। उनकी कविता में जिस प्रकार की वैचारिक जटिलता, प्रतीक - व्यवस्था और भाषिक लय मौजूद है। वह काव्य अनुवाद को एक विशिष्ट चुनौती प्रदान करती है। विंदा करंदीकर की कविता एक और मराठी की मानक भाषा में लिखी गई है। लेकिन उसमें खास कोकण की गंध है। रोजमर्रा के व्यावहारिक शब्दों की प्रचुरता है ।शब्दों के विशिष्ट सानिध्य से जो अर्थ ,ध्वनियाँ, वक्रताएँ ,सूचकताएँ व्यक्त की जाती है। वह सब किसी भी दूसरी भाषा में संक्रांत करना एक बहुत बड़ी चुनौती है। कुछ कविताएँ है जो केवल मराठी में ही पढ़ी जा सकती है ।जैसे – " उगवलीस त कर्दळीतूनी / तरी निघालिस वर्दळवेडी / कशी पसरतिस आकाशावर / ओठामधली कडवट गोडी । ''5

उपर्युक्त पंक्तियों का अनुवाद करते समय यह समस्या आती है कि, कर्दळ कोंकण का खास कदलि जाति का पौधा है जिसमें

ISSN–2278-5655

AMIERJ Aarhat Multidisciplinary International Education Research Journal

Volume–XIV, Special Issues – III (a) Nov – Dec, 2025

OPEN ACCESS Original Research Article

रंग – बिरंगे फूल खिलते है । फिर उसके साथ शब्द आया है वर्दळवेडी फिर पूरी कविता में खास कोकण का वातावरण है चित्रमय शब्द और केवल आठ पंक्तियों में ही एक पूरी जीवन कथा ।

विंदा ने अंग्रेजी पढ़ाया । अंग्रेजी साहित्य का गहन अध्ययन किया है ।अंग्रेजी कविता के प्रभाव से अपनी कविता में भी बहुत परिवर्तन होते अनुभव किया ।उनकी कविता का विशिष्ट यह है ,कि कभी अपनी जमीन से जुड़ा रहा। कविता का खाद -पानी अपनी मिट्टी से पता रहा । विंदा की कविता मराठी की देशीय भाषा से इतनी एकमेव है कि भारतीयेतर भाषाओं की बात छोड़ दे भारतीय भाषाओं में भी उसका अनुवाद बहुत परिश्रम साध्य है। विंदा की अधिकांश कविता का परिवेश उनका गाँव, तहसील ,जिला, नगर, मुंबई जैसा महानगर है ,और संवेदना एवं अनुभव का रूप भी देशी हैं । 'उन हिवाळ्यातील शिरशिरताना' कविता में 'भळभूलके' 'हिरमुसते' जैसे शब्द जो अकेले भी एक बिंब उत्पन्न करते हैं। अनुवादक को चुनौती देते हैं। इस तरह 'फितूर जाहले तुजला अंबर' में पहले ही पंक्ति 'तुडूंब भरलीस मातृत्वाने' गर्भवती स्त्री का जो विलक्षण शक्तिशाली बिंब खड़ा करती है, उसे हिंदी में लाना लगभग असंभव है ।कविता का अनुवाद करते समय अनुवादक को कविता के मूलभाव को ध्यान में रखकर ही अनुवाद करना पड़ता हैं, क्योंकि कभी-कभी अनुवादक शब्दानुवाद करता है, तो कविता का मूलभाव बिगड़ने की संभावनाएँ अधिक बन जाती है। प्रत्येक भाषा की भौगोलिक विशेषताएँ होती है। उसे भौगोलिक विशेषताओं के कारण ही उसे भाषा की सांस्कृतिक पहचान बनी हुई होती है ।इसीलिए ग्रामीण साहित्य के शब्द भंडार का अनुवाद करना बहुत मुश्किल काम होता है ।इसी तरह विंदा की 'घेता' कविता- "देणाऱ्याने देत जावे / घेणाऱ्याने घेत जावे / घेता घेता घेणाऱ्याने / देणाऱ्याचे हात घ्यावेत ''6इन पंक्तियों को मैं जब सुनती थी ,तब उनका अर्थ यही लेती थी, देने वाला जब तक दे रहा है। तब तक ले लो। जब उसका देना खत्म हो जाएगा ।तब उसके हाथ भी तोड़ कर ले लो अर्थात तब मैं विंदा की यह संपूर्ण कविता नहीं पढ़ी थी। लेकिन आज मैं दूसरों को यह उदाहरण बताती हूँ और अपनी मूर्खता पर हँसती हूँ ।कविता का विश्लेषण करते हुए अनुवादक यह समझ जाता है की मूल में कौन से बिंब, प्रतीक, अलंकार और छंद प्रयुक्त किए गए हैं ।इसलिए अनुवाद करते समय कविता का पाठ विश्लेषण महत्वपूर्ण होता है।

इस प्रकार से प्रस्तुत शोध आलेख में मैं हिंदी काव्यानुवाद में निर्मित अनुवाद की समस्या वह समाधान(विशेष संदर्भ विंदा करंदीकर की कविता) इस विषय पर उन समस्याओं को दिखाने की कोशिश की है। जो काव्यानुवाद करते समय उत्पन्न होती है ।अंत : हम कह सकते हैं कि, काव्यानुवाद वास्तव में एक बहुत ही कठिन कार्य है। इस संबंध में डॉ .सुरेश सिंहल लिखतें हैं कि, " काव्यानुवाद करना वास्तव में दो धारी तलवार पर चलने जैसा है ,क्योंकि जहाँ अनुवादक को इन विशेषताओं के काव्यात्मक सौंदर्य की रक्षा करनी होती है ।वहीं ये अनुवाद में कठिनाई भी उत्पन्न करती हैं। यह विशेषताएँ जितनी अधिक होगी अनुवाद ही कठिन होगा काव्य भाषा की यह विशेषताएँ ही अनुवादक के लिए वास्तविक चुनौती बनकर सामने आता है। अनुवादक को इन चुनौतियों का सामना करते हुए ही काव्यानुवाद करना पड़ता है। कविता में अत्यधिक जटिल भाषिक प्रयोग के कारण ही

ISSN–2278-5655

AMIERJ Aarhat Multidisciplinary International Education Research Journal

Volume–XIV, Special Issues – III (a) Nov – Dec, 2025

OPEN ACCESS Original Research Article

अनुवादक को एक और काव्यानुवाद को हू- ब- हू कर सकते का दोष भी अपने सिर पर लेना पड़ता है। ''7

संदर्भ संकेत सूची :

1. *अनुवाद विज्ञान व्यावहारिक एवं सैद्धांतिक पक्ष, डॉ वन्दना राणा , पृ. क्र. 2*
2. *अनुवाद : समस्याएँ और संदर्भ, सं. प्रा बलवंत जेऊरकर पृ. क्र. 208*
3. *गोस्वामी कृष्ण कुमार, अनुवाद विज्ञान की भूमिका पृ. क्र. 09*
4. *वहीं. पृ. क्र. 275*
5. *विंदा करंदीकर , धृपद पृ. क्र. 34*
6. *वहीं, पृ . क्र. 119*
7. *डॉ .सुरेश सिंहल, अनुवाद : संवेदना और सरोकार पृ. क्र. 131*

Cite This Article:

प्रा. तनपुरे प्र. शि. (2025) *हिंदी काव्यानुवाद में निर्मित अनुवाद की समस्याएँ व समाधान (विशेष संदर्भ विंदा करंदीकर की कविता)*

In Aarhat Multidisciplinary International Education Research Journal: Vol. XIV (Number VI, pp. 223–226).

ISSN–2278-5655

AMIERJ Aarhat Multidisciplinary International Education Research Journal

Volume–XIV, Special Issues – III (a) Nov – Dec, 2025

OPEN ACCESS Original Research Article

भाषा और साहित्य के क्षेत्र में अनुवाद की भूमिका

* रेश्मा निलंगेकर,

* सहायक प्राध्यापक, हिंदी विभाग, सर परशुराम भाऊ महाविद्यालय, पुणे

शोध सार:

आज वैश्विकरण के कारण संपूर्ण दुनिया के साहित्य को जानने की जिज्ञासा लोगों के मन में बढ़ती जा रही है। अनुवाद इस जिज्ञासा को पूर्ण करने का सशक्त माध्यम है। अनुवाद ने साहित्य के विकास में महत्वपूर्ण भूमिका तो निभाई है, साथ ही भाषा के विकास में भी अपना विशेष योगदान दिया है। प्रस्तुत शोध पत्र में भाषा और साहित्य के क्षेत्र में अनुवाद की भूमिका पर भी प्रकाश डाला गया है।

बीज शब्द *– समाज, भाषा, साहित्य, विचार, विश्व साहित्य, अनुवाद।*

Copyright © 2025 The Author(s): This is an open-access article distributed under the terms of the Creative Commons Attribution 4.0 International License (CC BY-NC 4.0) which permits unrestricted use, distribution, and reproduction in any medium for non-commercial use provided the original author and source are credited.

मूल आलेख :

भाषा, मानव सभ्यता के विकास की सबसे बड़ी उपलब्धि है। मानव जाति का ज्ञान भाषा के माध्यम से ही विकसित हुआ है। सृष्टि में मनुष्य ही एक ऐसा प्राणी है, जिसे बोलने की शक्ति प्राप्त है। मनुष्य चाहे जंगल में रहता हो या आधुनिक शहरों में, भाषा ही उसकी मूल संपत्ति है। भाषा का प्रभाव असाधारण है, इसी के कारण मनुष्य अन्य जीवों से भिन्न है।

सामान्यतः लोक जीवन में भाषा शब्द बड़े व्यापक अर्थों में प्रयुक्त होता है जैसे - सभ्य-असभ्य, स्थानीय-प्रांतीय, वैयक्तिक, जातिगत, सामाजिक, धार्मिक, राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय आदि। सामान्य अर्थ में "भाषा वह साधन है जिसके माध्यम से हम सोचते हैं तथा अपने विचारों को व्यक्त करते हैं।"(1)

भाषा शब्द संस्कृत की 'भाष्' धातु से बना है, जिसका अर्थ 'कहना' या 'बोलना' होता है। अतः भाषा को मनुष्य के भावों या विचारों को प्रकट करने का साधन कहा जा सकता है। भाषा विज्ञान के अंतर्गत 'भाषा' मनुष्य ध्वनि प्रतीकों के माध्यम से अपने भावों या विचारों का आदान-प्रदान करता है। अनेक भारतीय एवं पाश्चात्य विद्वानों ने भाषा की परिभाषा पर प्रकाश डाला है। डॉ.भोलानाथ तिवारी भाषा की परिभाषा देते हुए कहते हैं कि, "भाषा, उच्चारण अवयवों से उच्चारित, यादृच्छिक ध्वनि प्रतीकों की वह व्यवस्था है, जिसके द्वारा समाज विशेष के लोग आपस में विचारों का आदान-प्रदान करते हैं।"(2) भाषा का जन्म समाज में होता है और वह वहीं विकसित होती है। अतः भाषा उस समाज के व्याकरण द्वारा नियंत्रित होती है। भाषा अर्जित संपत्ति होने के कारण वह सदैव

ISSN–2278-5655

AMIERJ Aarhat Multidisciplinary International Education Research Journal

Volume–XIV, Special Issues – III (a) Nov – Dec, 2025

OPEN ACCESS Original Research Article

परिवर्तनशील होती है। हर एक भाषा की अपनी भौगोलिक, सांस्कृतिक, एवं ऐतिहासिक सीमाएं होती हैं, जिससे उसका अपना स्वतंत्र ढांचा होता है। भाषा को भाव संप्रेषण का साधन माना गया है, जिससे मनुष्य अपने विचारों और भावों को दूसरों तक आसानी से संप्रेषित करता है और अभिव्यक्त होता है। भाषा में शब्दों के अर्थ अलग हो सकते है। डॉ.मंगलदेव शास्त्री लिखते है कि, "भाषा हमारे भावों या विचारों को प्रकट करने का एक साधन मात्र या केवल एक बाहरी स्वरूप है। भाषा का असली या आंतरिक स्वरूप हमारे विचार ही है। इसलिए शब्दों में ऊपरी समानता होने पर भी हो सकता है कि उनके अर्थों में पूरी-पूरी समानता न हो। एक मनुष्य एक शब्द से क्या समझता है यह उसकी अपनी बुद्धि, शिक्षा आदि पर निर्भर है।"(3)

भाषा का अपना एक विज्ञान होता है इसे संदर्भ में डॉ.द्वारिका प्रसाद सक्सेना कहना है कि "भाषा विज्ञान वह विज्ञान है जिसमें भाषा और भाषा तत्वों का ऐतिहासिक एवं तुलनात्मक आधार पर अध्ययन किया जाता है।"(4)

यहां भाषा शब्द से प्रायः आशय किसी साहित्यिक भाषा से ही हो सकता है। साहित्यिक भाषा से पहले साहित्य को समझना जरूरी हो जाता है। साहित्य शब्द का विग्रह दो तरह से किया जा सकता है। सहित = स+हित यानि सहभाव अर्थात् हित का साथ होना ही साहित्य है। साहित्य शब्द अंग्रेजी के लिटरेचर का पर्याय है, जिसकी उत्पत्ति लेटिन शब्द से हुई है। साहित्य शब्द का प्रयोग सातवीं-आठवीं शताब्दी में मिलता है, इससे पहले साहित्य के लिए काव्य शब्द का प्रयोग किया जाता था। साहित्य वह कलात्मक अभिव्यक्ति है, जिसमें मनुष्य अनुभव, विचार, भावनाएं और संस्कृति को अपने शब्दों के माध्यम से लिखित रूप में प्रस्तुत करता है। या फिर कह सकते है कि भाषा के माध्यम से अपने मन की अनुभूति, अभिव्यक्ति करानेवाली ललित कला 'काव्य' या 'साहित्य' कहलाती है। साहित्य और समाज का गहरा संबंध होता है। वे एक-दूसरे पर निर्भर होते हैं। साहित्य समाज के साथ अपना संबंध मजबूत करता है और एक नई दिशा प्रदान करता है – "साहित्य का उद्देश्य ही समाज का कल्याण होना चाहिए" अर्थात' साहित्य में समाज का मंगलभाव और समाज को परिवर्तित करने की क्षमता होनी चाहिए। वह समाज की भावनाओं के साथ चलता है। साहित्य समाज में घटित विकृत अवस्था के खिलाफ आवाज उठाने का काम करता है और समाज के हर पहलुओं को प्रभावित करता है। इसलिए साहित्यकार अपने साहित्य के माध्यम से समाज का चित्रण करता है।"(5)

साहित्य का अस्तित्व भाषा में होता है और साहित्य मानवीय अभिव्यक्ति का एक रूप है। मनुष्य अपनी अभिव्यक्ति को, वह जिस समाज में रहता है उसी समाज की भाषा में करता है। उसके भाषा ज्ञान की एक सीमा है। मनुष्य उन लोगों के संपर्क में आता है, जिनकी भाषा वह नहीं जानता। वह उसके साथ सामाजिक, सांस्कृतिक, राजनीतिक, व्यापारिक, वैज्ञानिक, वाणिज्य आदि स्तर पर संबंध स्थापित करना चाहता है। साथ ही दूसरी भाषाओं की ऐतिहासिक, सामाजिक, सांस्कृतिक एवं साहित्यिक धरोहर का विस्तृत अध्ययन करना चाहता है और यह सब अनुवाद के माध्यम से ही संभव है। 'अनुवाद' प्राचीन और अत्यंत महत्वपूर्ण भाषायी प्रक्रिया है जिसके मूल में एक भाषिक संरचना/अभिव्यक्ति के दूसरे भाषिक/संरचना अभिव्यक्ति में रूपांतरण होता है।"(6)

मनुष्य सृजनात्मक प्रेरणा से ही प्रेरित होकर अनुवाद करने लगता है। विभिन्न भाषाओं में जो कुछ उसे नया और विशिष्ट

ISSN–2278-5655

AMIERJ Aarhat Multidisciplinary International Education Research Journal

Volume–XIV, Special Issues – III (a) Nov – Dec, 2025

OPEN ACCESS Original Research Article

लगता है, वह उसे अपनी भाषा में अनुदित करने का प्रयत्न करता है। यह रचनात्मक सुख है, जो मौलिक सृजन के सुख से काम नहीं है। इसी प्रेरणा से साहित्यिक कृतियों के अनुवाद प्राचीन काल से चले आ रहे हैं, आज भी होते हैं और भविष्य में भी होते रहेंगे। कोई भी कृति जितनी श्रेष्ठ होगी, उसकी उतनी ही अधिक भाषाओं में अनुवाद होगा। भारत जैसे बहुभाषी देश में भाषा की भूमिका विशेष रूप से उल्लेखनीय एवं महत्वपूर्ण रही है। अनेकता के बीच एकता का स्वर भाषा के स्तर पर करने का संकल्प अनुवाद के सहयोग से ही पूरा हो सकता है। हजारों वर्षों के लंबे इतिहास में भारतीय साहित्य की परंपरा एक ही दिशा में प्रभावित होती रही है। अनुवाद के प्रयास न हो तो चिंतन और रचना के स्तर पर राष्ट्रीय एकता के तथ्य उजागर न होते। अनुवाद संपूर्ण राष्ट्र को एकता के बंधन में बांधने में सहायक सिद्ध हुआ है। भारतीय जनजीवन में व्याप्त अनेकता में एकता ही सामासिक संस्कृति की विशेषता है। बहुआयामी संस्कृति को ही सामासिक संस्कृति कहा गया है, जिसमें सृजन, चिंतन, कल्पना, आचरण और भाषा की विभिन्नताओं के बावजूद एक अद्भुत सामासिकता दिखाई देती है। अनुवाद से भारत की बहुआयामी सांस्कृतिक परंपराओं और उपलब्धियों का संगम हुआ है।

भाषा ज्ञान के बिना, भारत की विभिन्न भाषाओं में सदियों से रचित साहित्य से परिचित होना असंभव है और इसी असंभव को संभव बनाने में अनुवाद की महत्वपूर्ण भूमिका रही है। अन्य भाषाओं के ज्ञान की कमी अनुवाद से पूरी होती है। यह अनुवाद का ही चमत्कार है कि अंतरराष्ट्रीय साहित्य का अध्ययन और अध्यापन भारतीय भाषाओं में संभव हुआ है। अनुवाद के माध्यम से हम कबीरदास, सूरदास, रहीम, मीराबाई आदि भारतीय संतों, सूर्यकांत त्रिपाठी निराला, महादेवी वर्मा, जयशंकर प्रसाद, सुमित्रानंदन पंत, अमृता प्रीतम, मैथिलीशरण गुप्त जैसे लेखकों के साथ-साथ पाश्चात्य लेखक टॉलस्टॉय, शेक्सपियर, कामू जैसे लेखकों को पढ़ पाए हैं। अनुवाद के कारण ही विश्व साहित्य का समग्र स्वरूप किसी भी भाषा में साकार हुआ है। अनुवाद ने न केवल पाठकों की रुचि को अंतरराष्ट्रीय आस्वाद प्रदान किया है बल्कि अध्ययन और अध्यापन के क्षेत्र में नई दिशाएं भी प्रदान की है।

तुलना की प्रवृत्ति ने मनुष्य के कौशल्य और ज्ञान को हमेशा से ही हर क्षेत्र में विस्तार दिया है। मनुष्य के चिंतन और सृजन की एक विशिष्ट प्रक्रिया साहित्यिक व तुलनात्मक अध्ययन में होती है। यह अध्ययन एक अधिक भाषाओं और साहित्यों का परस्पर संपर्क बढ़ाता है। अनुवाद से ही किसी भी भाषा के साहित्य की समानताओं और विषमताओं, खूबियों और खामियों का वैचारिक एवं रचनात्मक स्तर का पता चलता है। अनुवाद की सुविधा से मानव के सीमित ज्ञान के क्षेत्र को विस्तार मिलता है। जीवन के हर क्षेत्र में अनुवाद की प्रासंगिकता प्रमाणित हो चुकी है।

निष्कर्ष :

उपरोक्त अध्ययन, मनन और विश्लेषण के पश्चात हम कह सकते हैं कि अनुवाद प्राचीन काल से ही भाषा और साहित्य के क्षेत्र में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहा है। अनुवाद की पहचान जीवन की हर क्षेत्र में सक्रिय साधन के रूप में उभरी है। भारत जैसे बहुभाषी राष्ट्र में मनुष्य जब अपने सामाजिक, सांस्कृतिक एवं राजनीतिक वातावरण से प्रभावित होकर अपने विचारों को प्रकट करता है तो वह साहित्यिक विचारधारा कहलाती है। भारतीय भाषाओं के साहित्य का अध्ययन व अनुसंधान

ISSN–2278-5655

AMIERJ Aarhat Multidisciplinary International Education Research Journal

Volume–XIV, Special Issues – III (a) Nov – Dec, 2025

OPEN ACCESS Original Research Article

अनुवाद के बिना असंभव है। इस साहित्य की व्यापकता, समग्रता और विविधता को जानने का व्यापार अनुवाद पर ही अवलंबित होता है। मनुष्य हमेशा से ही जिज्ञासु प्राणी रहा है। वह अन्य भाषाओं में लिखे साहित्य को जानना और समझना चाहता है। यही जिज्ञासा उसे अनुवादक बना देती है और वह अपने लोगों को अन्य भाषाओं में लिखे साहित्य से अवगत कराना चाहता है। आज का युग अनुवाद का युग है, यह कहना अतिशयोक्ति नहीं होगा। भाषा और साहित्य के साथ हर क्षेत्र में अनुवाद अपनी महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहा है। संपूर्ण विश्व की 5000 से अधिक भाषाओं और बोलियों के बीच सृजनात्मक, कार्यात्मक व वैचारिक तालमेल स्थापित करने में अनुवाद लोकप्रिय एवं उपयोगी माध्यम बन गया है।

संदर्भ सूची :

1. *भाषा विज्ञान, भोलानाथ तिवारी, तृतीय संस्करण 1997, पृ.1।*
2. *वही, पृ.1-2।*
3. *तुलनात्मक भाषा शास्त्र अथवा भाषा विज्ञान, डॉ.मंगलदेव शास्त्री, पृ. 20-21, संस्करण 1951।*
4. *भाषा विज्ञान के सिद्धांत और हिंदी भाषा, डॉ.द्वारिका प्रसाद सक्सेना, पृ.123।*
5. *साहित्य और समाज, विजय,दान देथा, राजस्थानी शोध संस्थान, चौपासनी, जोधपुर, 1960, पृ.5।*
6. *अनुवाद कला, सिद्धांत और प्रयोग डॉ.कैलाशचंद्र भाटिया, छठा संस्करण 2017, पृ.1।*

Cite This Article:

निलंगेकर रे. (2025) भाषा और साहित्य के क्षेत्र में अनुवाद की भूमिका **In Aarhat Multidisciplinary International Education Research Journal**: Vol. XIV (Number VI, pp. 227–230).

ISSN–2278-5655

AMIERJ Aarhat Multidisciplinary International Education Research Journal

Volume–XIV, Special Issues – III (a) Nov – Dec, 2025

OPEN ACCESS Original Research Article

अनुवाद की व्याप्ति और महत्व

*डॉ. सचिन संपत जगताप,

* सहाय्यक प्राध्यापक, सर परशुरामभाऊ महाविद्यालय, पुणे

वर्तमान युग को अनुवाद का युग कहा जा सकता है। दिन प्रतिदिन विश्व में अनुवाद का महत्व बढ़ता जा रहा है जैसे-जैसे विश्व की विभिन्न भाषाओं का साहित्य समृद्ध होता जाएगा अनुवाद का महत्व बढ़ता जाएगा। प्राचीन युग में मुख्य रूप से साहित्य, दर्शन और धर्म आदि रचनाओं का ही अनुवाद किया जाता था क्योंकि इन तीनों क्षेत्रों में ही प्राय ग्रंथो की रचना होती थी। वर्तमान युग में अनुवाद का क्षेत्र विस्तृत हो गया है। डॉ गोरख कहते है – "अनुवाद की चर्चा जब भी होती है हमेशा साहित्यिक अनुवाद की बात की जाती है, परंतु साहित्य के अलावा भी जीवन के ऐसे अनेक क्षेत्र है, जहां अनुवाद की आवश्यकता अधिक है। क्योंकि नया ज्ञान अपनी या दूसरी भाषा में लाने ले- जाने का काम प्राय अनुवाद ही करते हैं। इन अनुवादों की प्रेरणा व्यवहारिक उपयोगिता होती है, इसलिए व्यावहारिक अनुवाद कहते हैं। यह अनुवादक व्यावहारिक जगत से संबंध होते हैं। अतः मुख्यतः ज्ञानपरक तथा सूचनापरक होते हैं। देश के विभिन्न क्षेत्रों के विकास के साथ अनुवाद के क्षेत्र भी विकसित हो रहे हैं। यह सभी क्षेत्र व्यावहारिक अनुवाद के अंतर्गत आते हैं।"[1] जिसमें साहित्य, दर्शन और धर्म के अतिरिक्त विज्ञान, चिकित्सा शास्त्र, प्रशासन, कूटनीति, कानून, जनसंचार माध्यम, विधि, प्रौद्योगिकी आदि अनेक क्षेत्रों के ग्रंथों और रचनाओं का अनुवाद हो रहा है। अनुवाद के संदर्भ में रीता रानी पालीवाल कहती है- "मानव के पास आयु, समय और समाधान की एक सीमा रहती है, हर व्यक्ति संसार की प्रत्येक भाषा नहीं सीख सकता। ऐसी स्थिति में अनुवाद ही वह माध्यम है, जिसके द्वारा हम सभी भाषाओं से संपर्क स्थापित कर सकते हैं।"[2]

Copyright © 2025 The Author(s): This is an open-access article distributed under the terms of the Creative Commons Attribution 4.0 International License (CC BY-NC 4.0) which permits unrestricted use, distribution, and reproduction in any medium for non-commercial use provided the original author and source are credited.

वर्तमान युग में अनुवाद सर्वाधिक चर्चित मुद्दा रहा है। आज संपूर्ण विश्व को एक सूत्रता में बांधने तथा मानव जाति को एक दूसरे के निकट लाने में और मानव जीवन को सुखी और संपन्न बनाने में अनुवाद की महत्वपूर्ण भूमिका रही है। वर्तमान स्थिति शायद थी ऐसा कोई क्षेत्र हो जाए जहां अनुवाद की आवश्यकता महसूस नहीं होती है। अनुवाद के माध्यम से हम केवल भारतीय भाषाओं में उपलब्ध साहित्य से ही परिचित नहीं होंगे बल्कि विश्व साहित्य की परिकल्पना से भी परिचित होंगे। अनुवाद चिंतक डॉ. जी गोपीनाथ अनुवाद के संबंध में लिखते हैं – "भारत जैसे बहुभाषा- भाषी देश में अनुवाद की

ISSN–2278-5655

AMIERJ Aarhat Multidisciplinary International Education Research Journal

Volume–XIV, Special Issues – III (a) Nov – Dec, 2025

OPEN ACCESS Original Research Article

उपादेयता स्वयं सिद्ध है। भारत के विभिन्न प्रदेशों के साहित्य में निहित मूलभूत एकता के स्वरूप निखारने के लिए अनुवाद ही एकमात्र अचूक साधन है । इस तरह अनुवाद द्वारा मानव की एकता को रोकने वाली भौगोलिक और भाषण दीवारों को हटाकर विश्व मैत्री को और भी सुदृढ़ बना सकते हैं।" [3]

अनुवाद का सबसे बड़ा क्षेत्र बातचीत का है। विश्व में सबसे अधिक मात्रा में बातचीत का ही अनुवाद किया जाता है। आज हर मनुष्य मातृभाषा में ही बोलता है। लेकिन जब दो अलग-अलग भाषा-भाषाई एक दूसरे से मिलते हैं तो उनके पास अनुाद के बिना दूसरा कोई साधन नहीं है जिसके द्वारा ये एक दूसरे से संपर्क स्थापित कर सके।

बातचीत के क्षेत्र के बाद अनुवाद की व्याप्ति पत्राचार के क्षेत्र में अधिक मात्रा में दिखाई देती है। यह पत्राचार विविध स्तरों पर होता है जैसे - व्यापार प्रशासन, न्यायालय, बैंक, शोधकार्य आदि सभी क्षेत्रों में पत्राचार का महत्व अनन्यसाधारण है।

भारत में बहुराष्ट्रीय कंपनियों के कार्यालयों में हमेशा अनुवादकों की आवश्यकता होती है। क्योंकि यह कंपनियाँ अपनी ही भाषा में पत्रव्यवहार करना पसंद करती है। ब्रिटन, फ्रेंच, जर्मनी, चीन आदि जैसे देशों में तो उनकी भाषा में ही पत्रव्यवहार होता है। ऐसी स्थिति में अनुवाद की नितांत आवश्यकता है।

अनुवाद की अनिवार्य आवश्यकता का क्षेत्र विधि और न्याय का है। भारत जैसे संघराज्य में आज भी उच्च तथा उच्चतम अदालतों की भाषा प्रायः अंग्रेजी होती है। हमारे यहाँ के कानून भी अंग्रेजी भाषा में बनाए लिखे, छपे तथा सुने एवं सुनाएँ जाते हैं। कागजात प्रादेशिक भाषा में पैरवी अंग्रेजी में और निर्णय भी अंग्रेजी में ऐसी स्थिति में अनुवाद के बिना काम नहीं चल सकता।

वर्तमान युग में तो शिक्षा के क्षेत्र में अनुवाद की बहुत बड़ी माँग है। वर्तमान युग में शिक्षा का महत्व व्यापक मात्रा में बढ़ चुका है। शिक्षा के सभी क्षेत्रों में जैसे-विज्ञान, गणित, अर्थशास्त्र, राज्यशास्त्र, तर्कशास्त्र, मनोविज्ञान, समाजविज्ञान, इतिहास, साहित्य आदि ऐसे कई विषय पढे और पढ़ाएँ जाते हैं। उनका अनुवाद किए बिना ज्ञान की वृद्धि संभव नहीं है।

आज विज्ञान, तकनीकी तथा प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में प्रगति हुई है। विज्ञान के क्षेत्र में निरंतर शोध, अध्ययन और लेखन हो रहा है। और इसी कारण विकसित देशों की प्रगति में सर्वाधिक योगदान विज्ञान तथा प्रौद्योगिक का रहा है। अमरिका, जापान, चीन, रशिया, फ्रान्स, जर्मनी, इंग्लड आदि जैसे अनेक देश विज्ञान तथा प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में अत्यधिक प्रगति कर चुके है। भारत जैसा विकसनशील देश अपनी प्रगति के लिए विकसित देशों से वैज्ञानिक और प्रौद्योगिक ज्ञान चाहता है। आज हमारे पास इन विकसित देशों की वैज्ञानिक और प्रौद्योगिक से संबंधित नई-नई उपलब्धियों एवं विकास की जानकारी प्राप्त करने के लिए अनुवाद की अत्यंत आवश्यकता है। वैज्ञानिक और प्रौद्योगिक साहित्य के अनुवाद के संदर्भ में हमें सतर्क रहना चाहिए। संचार माध्यमों में अनुवाद का प्रयोग अत्यंत आवश्यक है । संचार के महत्वपूर्ण माध्यमों में समाचार – पत्र रेडियो और दूरदर्शन है ।आज समाचार माध्यम सेविश्व नजदीक आ रहा है। समाचार पत्रों के पास जो समाचार, सरकारी सूचना न्यूज, एजंसिज प्रादेशिक संवादाताओं के द्वारा आते हैं उनमें प्रादेशिक भाषा के समाचार अगर छोड़ दे तो शेष

ISSN–2278-5655

AMIERJ Aarhat Multidisciplinary International Education Research Journal

Volume–XIV, Special Issues – III (a) Nov – Dec, 2025

OPEN ACCESS Original Research Article

सारी सामग्री अन्य भाषा से अनूदित करनी पड़ती है। फिल्म संचार का सबसे महत्वपूर्ण माध्यम है। एक भाषा में लोकप्रियता प्राप्त की हुई फिल्म कितनी भी मनोरंजक क्यों न हो, उस भाषा से अनजान लोग उसका आनंद नहीं ले सकते ऐसी स्थिति में अनुवाद ही अपनी महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है।

अनुवाद सांस्कृतिक सेतु का काम करता है। धर्म दर्शन, साहित्य, शिक्षा विज्ञान, व्यवसाय, राजनीति जैसे संस्कृति के विभिन्न पहलुओं का अनुवाद से अभिन्न संबंध है। आज विश्व संस्कृति के निर्माण के लिए विभिन्न संस्कृतियों में आदान-प्रदान आवश्यक है और यह कार्य केवल अनुवाद से ही संभव है। वर्तमान युग में पाश्चात्य संस्कृति भारतीय संस्कृति की ओर झुक गई है। अत यह इसी बात का प्रमाण है कि आज अनुवाद के द्वारा ही विश्व साहित्य का निर्माण हो रहा है।

आज केंद्र सरकार के सभी कार्यालयों में हिंदी भाषा में काम करना अनिवार्य है। राजभाषा अधिनियम 1963 तथा राजभाषा नियम 1976 एवं राष्ट्रपति के आदेश तथा राजभाषा विभाग यह मंत्रालय के दिशा निर्देशों के अनुसार प्रशासनिक कार्य, प्रशासकिय प्रक्रिया, साहित्य, मुद्रण, लेखन, पत्राचार, रबर मोहरें, साईनबोर्ड जैसी मदें द्विभाषिक होने के कारण अनुवाद का महत्व बढ़ गया है।

तुलनात्मक अध्ययन में अनुवाद की नितांत आवश्यकता है। अगर हमें किसी भी क्षेत्र में किन्हीं दो देशों या दो प्रातों के किसी विषय अथवा सामाजिक, राजकीय, साहित्यिक, आर्थिक, धार्मिक विषय का तुलनात्मक अध्ययन करना चाहते है तो अनुवाद का ही सहारा लेना पड़ता है।

विश्व में शांति बनाएँ रखने हेतु अंतर्राष्ट्रीय संबंध के क्षेत्र में अनुवाद की नितांत आवश्यकता है। अंतर्राष्ट्रीय संबंधों में विशेष रूप से अगर देखा जाए तो मौखिक अनुवाद व्यापक मात्रा में होता है। किसी भी अंतर्राष्ट्रीय सभा, सम्मेलन अथवा परिषदों में अनुवाद की सहायता लेना आवश्यक बन जाता है।

निष्कर्ष: कह कर सकते हैं कि जिस प्रकार किसी देश की अंतर्गत प्रगति के लिए अनुवाद की आवश्यकता है, ठीक उसी प्रकार पूरे मानव समाज की प्रगति के लिए भी वह अनिवार्य है अतः विश्व में संभवत: एक भी ऐसा क्षेत्र नहीं है जहां अनुवाद एक वरदान के रूप में विद्यमान नहीं है। अंत में यह कहना अतिशयोक्ति न होगा होगी कि अनुवाद में सिर्फ शब्दों का अनुवाद नहीं होता दो संस्कृतियों का अनुवाद होता है। आपस में मिलन के कारण नई संस्कृति का निर्माण होता है। अनुवाद की आवश्यकता और व्याप्ति हर जगह उपस्थित है।

संदर्भ ग्रंथ :

1. *अनुवाद तंत्र आणि आव्हाने- संपा. डॉ गोरख थोरात – पृ. क्र. 24*
2. *अनुवाद निरूपण - डॉ. भारती गोरे पृ. क्र. 37*
3. *www.hindinest.com 'अनुवाद हमें राष्ट्रीय ही नहीं अंतरराष्ट्रीय बनता है।' शिबन कृष्ण रैना, अगस्त 15, 2026*

Cite This Article: ***डॉ. जगताप स. सं.*** *(2025) अनुवाद की व्याप्ति और महत्व* **In Aarhat Multidisciplinary International Education Research Journal**: Vol. XIV (Number VI, pp. 231–233).

ISSN–2278-5655

AMIERJ Aarhat Multidisciplinary International Education Research Journal

Volume–XIV, Special Issues – III (a) Nov – Dec, 2025

OPEN ACCESS Original Research Article

अनुवाद में रोजगार की संभावनाएँ

* योगिता अविनाश चौकटे

माध्यमिक शिक्षिका, म.ऐ.सो. मुलांचे विद्यालय, सदाशिव पेठ, पुणे (महाराष्ट्र).

आजकल अनुवाद का युग है। हरक्षेत्र में अनुवाद की अनिवार्य आवश्यकता है। वैश्विक एकात्मता, भावनात्मक संतुलन बनाये रखने में अनुवाद का सबसे बड़ा हाथ है। अनुवाद मानवता को महत्व देकर दो दिलों को जोड़ने का काम करता है। अगर यही रोजगार का साधन बने तो जीवन यापन तो होगा ही साथ ही मन की भूख प्यास भी मिटेगी और अनुपम शांतिका आभास होगा। आज के गतिशील समय में कई सारी प्राकृतिक आपत्तियों ने पूरी दुनिया तकनीकी गतिविधियों से गतिमान होकर दौड़ रही है। लोकल से ग्लोबल, ग्लोबल से फिर लोकल हो रही है। ऐसे में अनुवाद एक ऐसा मार्ग है जो मानवी मूल्यों को जोड़े। कहते है उन्नति की हर राह पेट से गुजरती है अर्थात जिस मार्ग से पेट भरा जाय वही प्रगति की राह होती है।

भाषा मनोविकास का साधन होती है। अगर दो भाषाओं पर हमारा प्रभुत्व हो तो एक भाषा का साहित्य हम दूसरी भाषा में अनुवादित कर सकते है जिससे एक भाषा के संस्कार मूल्य अर्थ गर्भ साहित्य दूसरी भाषा में पहुंच सके इस में कई प्रकार की रोजगार की संभावनाएँ निकलती है।

Copyright © 2025 The Author(s): This is an open-access article distributed under the terms of the Creative Commons Attribution 4.0 International License (CC BY-NC 4.0) which permits unrestricted use, distribution, and reproduction in any medium for non-commercial use provided the original author and source are credited.

इसमें प्रतिशब्द के स्तर पर मानधन मिलता है। व्यवसाइकता के तौर पर अनुवादक का काम मिलता है। अगर अंतर्जाल पर पंजीकृत होतो विविध एजेंसीओं के द्वारा अनुवादक का काम मिलता है। कई सारी मल्टीनेशनल कम्पनिओं मे काम मिल सकता है। जरुरी है निष्ठा से कर्तव्य कठोर होकर काम करना। केवल भारत का ही उदाहरण ले लो तो हर प्रदेश की भाषा अलग है और उनकी बोलियां भी। इनमे रचित साहित्य इतना अनमोल है उसे संजोकर दुनिया तक पहुँचाने के लिए अनुवादक की आवश्यकता है। हर भाषा की अपनी गंध होती है। उसके मूलगंध समेत उसे वैश्विक परिमाण दिलाना केवल अनुवादक के हाथ में होता है।

अनुवाद किसी तपस्या से कम नहीं स्त्रोत भाषा' का अर्थलक्ष भाषा में जाना जरूरी है। इसलिए दोनों भाषाओं पर प्रभुत्व होना जरुरी है। प्रादेशिक भाषाएँ अपनी अपनी संस्कृति को लेकर चलती है। अनुवादक उन संस्कृतियों को जोड़ने का काम करता है।

प्रादेशिक भाषाओं से चुनी गयी साहित्य अकादमी पुरस्कार प्राप्त रचनाएँ सभी भारतीय भाषाओं में अनुवादित होती हैं।

ISSN–2278-5655

AMIERJ Aarhat Multidisciplinary International Education Research Journal

Volume–XIV, Special Issues – III (a) Nov – Dec, 2025

OPEN ACCESS Original Research Article

उसके लिए अनुवादकों की आवश्यकता होती है। अनुवाद करनेवालों के लिए फिल्मी दुनिया में भी विदेशी फिल्मों के सबटाइटल बनाने में और फिल्म की डबिंग करने के लिए अनुवादकों को रोजगार मिल सकता है। अखबार और पत्रिकाओं में अनुवाद का बहुत कम होता है इसलिए प्रिंट मीडिया और टेलीविजन पर भी अच्छे आशय के लिए अनुवादक ही जिम्मेदार होते है।

शासकीय क्षेत्र में राजपत्रित अधिकारी के रूप में नौकरी प्राप्त हो सकती है। ★ विदेशी मंत्रालयों में अनुवादकों की जरुरत होती है। जो भारतीय भाषाओं के साथ विदेशी भाषाओं का भी ज्ञान रखता है। अनुवादक मानव संस्कृतिओं के वाहक होते है। इस प्रकार कला, राजनीति, व्यवहार, तकनीकी, चिकित्सा, पत्रकारिता, जनसंचार, विधि, प्रतिरक्षा ऐसे हर क्षेत्र में आज अनुवादकों को रोजगार मिल रहा है। जरुरत है बौद्धिक परिश्रम के साथ लगन से और मन से रोजगार खोजने की जो मन को सुकून दे सके।

संदर्भ:

1. *प्रयोजनमूलक हिंदी*
   - *लेखक - डॉक्टर आशामोहन, डॉक्टर जगदीश शर्मा, शत्रुघ्न त्रिपाठी*
2. *लोकबात व्याख्यान*
3. *इ संगोष्टी*
4. *मराठी पाठ्यपुस्तक अकरावी*
5. *रोजगार अभिमूलक हिंदी, संपादक प्रा. डॉ. पल्लवी पाटील*
6. *प्रयोजनमूलक हिंदी : सिध्दांत और प्रयोग, डॉ. दंगल झाल्टे*
7. *प्रयोजनमूलक हिंदी, डॉ. विनोद गोदरे*
8. *हिंदी के अद्यतन अनुप्रयोग, डॉ. माधव सोनटक्के*
9. *अनुवाद विज्ञान, डॉ. भोलानाथ तिवारी*
10. *अनुवाद सिध्दांत एवं प्रयोग, जी. गोपीनाथन*

Cite This Article:

चौकटे यो. अ. *(2025) अनुवाद में रोजगार की संभावनाएँ* **In Aarhat Multidisciplinary International Education Research Journal**: Vol. XIV (Number VI, pp. 234–235).

Aarhat Publication & Aarhat Journals,Mumbai

158 , Hastpushpam Building, Bora Bazar St,Borabazar Precinct,
Ballard Estate, Fort,Mumbai, Maharashtra 400001
Email ID: aarhatpublication@gmail.com M-8850069281